CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

16.3

२९६४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ

धर्मध्यान दीपक

द्रव्यदाता—

महावीरप्रसादजी जैन ठेकेदार

संस्थापकः—

महावीरप्रसाद चेरीटेवल ट्रस्ट

संकलनकर्ता

तथा

प्रकाशक—

ब्रह्मचारी सूरजमलजी जैन

श्री १०८ मुनि वीरसागर संघ

जयपुर

तृतीया वृत्ति १०००	वीर·नि० सं० २४८३	मूल्य स्वाध्याय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूज्य वर्णी जी संघ
ब्र. नाथूरामजी शास्त्री
ईसरी बा.र (हजारीबाग)

समर्पण

श्री परमपूज्य प्रातः स्मरणीय जगद्वंद्य स्वपर-हितकारी
आचार्य आगममार्गोपदेष्टा

श्री १०८ श्री चारित्रचक्रवर्ती

परमपूज्य स्वर्गीय आचार्य शांतिसागरजी

महाराज के प्रधानशिष्य

श्री १०८ श्री आचार्य वीरसागरजी महाराजके

कर कमलों में

महावीरप्रशाद की ओर से

यह 'धर्मध्यान दीपक' नामक ग्रन्थ

सादर समर्पित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

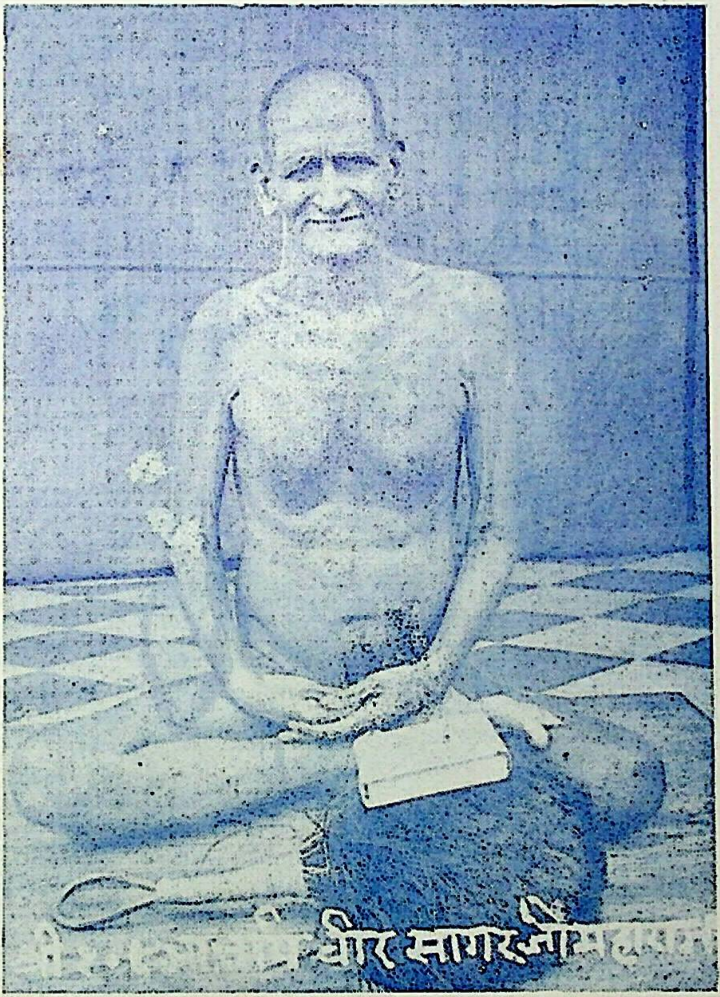

श्री १०८ आचार्य वीरसागरजी महाराज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५२४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री महावीरप्रसादजी जैन ठेकेदार, देहली

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्रव्यदाता

श्रीमान् लाला महावीरप्रशाद जी ठेकेदार का

संक्षिप्त परिचय

श्रीमान् धर्म प्रेमी ला० महावीरप्रशाद जी ठेकेदार देहली वालों से जनता अपरिचित है ऐसी कोई बात नहीं है प्रायः सभी जानते हैं, किन्तु फिर भी इस पुस्तिका में थोड़ा परिचय देना उचित समझता हूँ।

आपका जन्म दिगम्बर जैन अग्रवाल जाति में ला० बनारसीदास जी के घर वैसाख वदी १४ सम्वत् १६३५ में हुआ था। आपके बा० श्याम-लाल जी, अजितप्रशाद जी, महेन्द्रप्रसाद जी, आदि ५ पुत्र व ६ कन्यायें हैं। सर्वप्रथम लालाजी ने म्युनिसिपिल कमेटी देहली में खजांची का काम किया। फिर आपने अपनी भुजाओं के बल पर स्वतन्त्र व्यवसाय करने का मन में सोचा, तदनुसार ठेकेदारी एवं सिमेंटादिक का व्यापार किया उसमें आपको काफी लाभ हुआ। सन् १६१६ में १२ वर्ष की अवस्था में ही प्रथम पुत्र श्री श्यामलाल जी ने दुकान का कार्य सम्भाल लिया था। तभी से आपका गृहभार कुछ कम हो गया था। जब सन् १६३० में परमपूज्य चा० च० श्री १०८ आचार्य शान्तिसागर जी महाराज ने संघ सहित देहली में चातुर्मास किया था उस शुभावसर पर लाला जी व आप की धर्मपत्नी एवं श्यामलाल जी ने आचार्य श्री से पंचाणुव्रत ग्रहण किये थे, उसी समय से आपकी लगन धर्म की ओर बढ़ती चली। गुरुदेव के सन्मुख आपने देहली में ठेकेदारी के काम का भी त्याग किया था।

ला० महावीरप्रसादजी बड़े ही सरल स्वभावी निःछद्म धर्मप्रेमी सज्जन हैं, आपका मन सदैव धर्म में संलग्न रहा करता है। धन सम्पन्न एवं विपुल परिवारी होते हुए भी आपके मुखमंडल पर अभिमान (मद) का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंश भी नहीं झलकता है। आपकी संपत्ति प्रायः आहार, औषध, शास्त्र एवं अभयदान में ही लगा करती है। आज से दो वर्ष पहले आपने ५००००) का दान घोषित करके महावीरप्रसाद चेरिटिबिल ट्रस्ट स्थापित किया है और सन् १९४७ में आप के पुत्र श्यामलाल जी ने नई देहली में महावीर पारमार्थिक औषधालय के नाम से आयुर्वेदिक औषधालय खोला है।

अभी वि० सं० २०१२ में प० पू० चा० च० श्री १०८ आचार्य शांतिसागर जी महाराज के अन्तिम सल्लेखना के दर्शनार्थ श्री दि० जैन कुंथलगिरी सिद्ध क्षेत्र पर गये वहाँ आपने २५००) रुपयों का दान किया।

कुछ ही दिन पहले आपने एक बड़े ही सुन्दर मजबूत सजिल्द **'जैन पूजन पाठ संग्रह'** नामक गुटके की ५००० प्रति प्रकाशित करवाई जिसका मूल्य लालाजी ने स्वाध्याय मात्र ही रखा, वि० सं० २०१२ में जब पूज्य आचार्य वीरसागर जी महाराज ने जयपुर (खान्या में) ससंघ चौमासा किया उस समय आप सपरिवार देहली से दर्शनार्थ आहार दानार्थ आये थे, जिस दिन परम पूज्य आचार्य वीरसागर जी महाराज का आहार आप के यहां हुआ उस समय पर आपने आचार्य श्री से दूसरी व्रत प्रतिमा के व्रत सहर्ष ग्रहण किये उसके हर्षोपलक्ष्य में मुनिराज एवं त्यागी व्रतियों के पठन पाठन के लिए **"धर्म ध्यान दीपक"** नामक ग्रन्थ प्रकाशन करने के लिए पूज्य आचार्य श्री से आज्ञा ले ली। तदनुसार छपवा कर यह ग्रन्थ विना मूल्य ही वितरण किया जा रहा है, इस धार्मिक उदारता के लिए लाला जी की जितनी प्रशंसा की जावे, थोड़ी है।

वास्तव में आप परम धर्मात्मा मिलनसार सज्जन हैं। आपके सुपुत्र भी आपके सरीखे ही धर्म स्नेही गुरुभक्त सज्जन हैं। अतः आपकी औदार्यता एवं धर्म स्नेहता के लिए आपको कोटिशः धन्यवाद दिये बिना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहीं रहा जाता है। मैं भगवान् से प्रार्थना करूंगा कि आप सरीखे दानी महानुभाव इस भूतल पर सदैव बने रहें, और आपकी लक्ष्मी दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती रहे तथा आपके हाथों से यह संपदा सदुपयोग में लगती रहे यही सार्थक होगा।

मैं श्रीमान् दानी महानुभाव सज्जनों से निवेदन करूंगा कि उक्त लालाजी सा० का अनुकरण करके अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग करें। अब तो लालाजी ने अपनी दुकान से भी सम्बन्ध छोड़ दिया है, केवल धर्म साधन में ही संलग्न रहते हैं।

दोहा—लक्ष्मी का मद जो करे, सो है मूढ़ अज्ञान।
क्षण में लखपति होत है, क्षण निर्धन वह जान॥

ब्र० सूरजमल जैन
श्री १०८ आचार्य वीरसागर जी महाराज का संघ
जयपुर (राजस्थान)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय सूची

	पृष्ठ
१—नमस्कार मंत्र	१
२—तीर्थंकर नामावली	२
३—स्वयम्भूस्तोत्र	४
४—जिनसहस्रनाम	२२
५—भक्तामर स्तोत्र	४०
६—कल्याणमंदिर	४७
७—एकीभावस्तोत्र	५३
८—विषापहार स्तोत्र	५८
९—जिनचतुर्विंशतिका (भूपालस्तोत्र)	६३
१०—अकलंकस्तोत्र	६८
११—सुप्रभातस्तोत्र	७१
१२—महावीराष्टक	७३
१३—अर्घाष्टक	७६
१४—मंगलाष्टक	७७
१५—वीतरागस्तोत्र	७९
१६—परमानंदस्तोत्र	८१
१७—तत्त्वार्थसूत्र	८७
१८—सामायिक पाठ	१०३
१९—द्वात्रिंशतिका (सामायिक पाठ)	१०५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२०— लघुसामायिक पाठ १०६
२१—निर्वाणकांड १११
२२—कहां कौनसी भक्ति करनी चाहिये ११५
२३—ईर्यापथशुद्धि १२१
२४—सिद्धभक्ति १२७
२५—श्रुतभक्ति १२६
२६—चारित्रभक्ति १३२
२७—योगभक्ति १३५
२८—आचार्यभक्ति १३७
२९—पचगुरुभक्ति १३६
३०—तीर्थंकरभक्ति १४०
३१—शान्ति भक्ति १४२
३२—समाधिभक्ति १४५
३३—निर्वाणभक्ति १४८
३४—नन्दीश्वरभक्ति १५३
३५—चैत्यभक्ति १६०
३६—कल्याणालोयणा (प्राकृत) १६६
३७—चतुर्दिग्वंदना १७२
३८—सर्वदोष प्रायश्चित्तविधि १७३
३९—दैवसिकरात्रिकप्रतिक्रमण १७६
४०—प्रतिक्रमणपीठिका दंडक १८१
४१—पाक्षिकादि प्रतिक्रमण १८८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४२—सिद्धभक्ति २०१
४३—वीरभक्ति २५१
४४—श्रावक प्रतिक्रमण २७०
४५—दीक्षा नक्षत्र २६१
४६—दीक्षाग्रहणक्रिया २६२
४७—वृहद्दीक्षा विधि २६४
४८—क्षुल्लक दीक्षाविधि ३१६
४९—उपाध्याय पद स्थापन विधि ३२०
५०—आचार्य पद स्थापन विधि ३२१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ नमस्कार मन्त्र ॥

श्रीवीरनाथाय नमः

॥ धर्मध्यानदीपक ॥

नमस्कार मन्त्र

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरीयाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ॥१॥
मन्त्रं संसारसारं त्रिजगदनुपमं सर्वपापारिमन्त्रं,
संसारोच्छेदमन्त्रं विषमविषहरं कर्मनिर्मूलमन्त्रम् ।
मन्त्रं सिद्धिप्रदानं शिवसुखजननं केवलज्ञानमन्त्रं,
मन्त्रं श्रीजैनमन्त्रं जप जप जपितं जन्मनिर्वाणमन्त्रं ॥२॥
आकृष्टिं सुरसम्पदां विदधते मुक्तिश्रियो वश्यतां,
उच्चाटं विपदां चतुर्गतिभुवां विद्वेषमात्मैनसाम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्तम्भं दुर्गमनं प्रति प्रयततो मोहस्य सम्मोहनं,
पायात्पंचनमस्क्रियाक्षरमयी साराधनां देवता ॥३॥

अनन्तानन्तसंसार––सन्ततिच्छेदकारणम् ।
जिनराजपदाम्भोज–स्मरणं शरणं मम ॥४॥

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात्कारुण्यभावेन रक्ष रक्ष जिनेश्वर ॥५॥

न हि त्राता न हि त्राता न हि त्राता जगत्त्रये ।
वीतरागात्परो देवो न भूतो न भविष्यति ॥६॥

जिनेभक्तिर्जिनेभक्तिर्जिनेभक्तिर्दिने दिने ।
सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु भवे भवे ॥७॥

भूतकालतीर्थंकराः ।

१ श्रीनिर्वाण २ सागर ३ महासाधु ४ विमलप्र
५ श्रीधर ६ सुदत्त ७ अमलप्रभ ८ उद्धर ९ अंगिर १
सन्मति ११ सिंधु १२ कुसुमांजलि १३ शिवगण १
उत्साह १५ ज्ञानेश्वर १६ परमेश्वर १७ विमलेश्व
१८ यशोधर १९ कृष्णमति २० ज्ञानमति २१ शुद्धम
२२ श्रीभद्र २३ अतिक्रांत २४ शांताश्चेति भूतका
सम्बन्धिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमो नमः ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्तमानकालतीर्थंकराः ।

१ ऋषभ २ अजित ३ शम्भव ४ अभिनन्दन ५ सुमति ६ पद्मप्रभ ७ सुपार्श्व ८ चंद्रप्रभ ९ पुष्पदंत १० शीतल ११ श्रेयान् १२ वासुपूज्य १३ विमल १४ अनंत १५ धर्म १६ शांति १७ कुन्थु १८ अर १९ मल्लि २० मुनि-सुव्रत २१ नमि २२ नेमि २३ पार्श्व २४ वर्द्धमानाश्चेति वर्तमानकालसम्बन्धिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमो नमः ॥

भविष्यत्कालतीर्थंकराः ।

१ श्रीमहापद्म २ सुरदेव ३ सुपार्श्व ४ स्वयंप्रभ ५ सर्वात्मभूत ६ देवपुत्र ७ कुलपुत्र ८ उदंक ९ प्रौष्ठिल १० जयकीर्ति ११ मुनिसुव्रत १२ अर (अमम) १३ निष्पाप १४ निष्कषाय १५ विमल १६ निर्मल १७ चित्रगुप्त १८ समाधिगुप्त १९ स्वयंभू २० अनिवृत्तिक २१ जय २२ विमल २३ देवपाल २४ अनन्तवीर्याश्चेति भविष्यत्काल-सम्बन्धिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमो नमः ॥

विदेहक्षेत्रस्थविंशतितीर्थंकराः ।

१ सीमंधर २ युग्मंधर ३ बाहु ४ सुबाहु ५ सुजात

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६ स्वयम्प्रभु ७ वृषभानन ८ अनन्तवीर्य ६ सूरप्रभ १०
विशालकीर्ति ११ वज्रधर १२ चंद्रानन १३ भद्रबाहु १४
भुजंगम १५ ईश्वर १६ नेमप्रभ (नमि) १७ वीरषेण १८
महाभद्र १६ देवयश २० अजितवीर्यश्चेति विदेहक्षेत्रस्थ-
विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमो नमः ॥

वृहत्स्वयंभूस्तोत्र

स्वयम्भुवा भूतहितेन भूतले समञ्जसज्ञानविभूतिचक्षुषा ।
विराजितं येन विधुन्वता तमः क्षपाकरेणेव गुणोत्करैः करैः ॥
प्रजापतिर्यःप्रथमं जिजीविषुः शशास कृष्यादिषु कर्मसु प्रजाः ।
प्रबुद्धतत्वः पुनरद्भुतोदयो ममत्वतो निर्विविदे विदांवरः ॥
विहाय यः सागरवारिवाससं वधूमिवेमां वसुधावधूं सतीम् ।
मुमुक्षुरिक्ष्वाकुकुलादिरात्मवान् प्रभुःप्रवव्राज सहिष्णुरच्युतः ॥
स्वदोषमूलं स्वसमाधितेजसा निनाय यो निर्दयभस्मसात्क्रियाम् ।
जगाद तत्वं जगतेऽर्थिनेऽञ्जसा बभूव च ब्रह्मपदामृतेश्वरः ॥
स विश्वचक्षुर्वृषभोऽर्चितः सतां समग्रविद्यात्मवपुर्निरंजनः
पुनातु चेतो मम नाभिनन्दनोजिनो जितक्षुल्लकवादिशासनः ॥

इत्यादिजिनस्तोत्रम्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यस्य प्रभावात्त्रिदिवच्युतस्य क्रीडास्वपि क्षीवमुखारविन्दः ।
अजेयशक्तिर्भुवि बन्धुवर्गश्चकार नामाजित इत्यवन्ध्यम् ॥६॥
अद्यापि यस्याजितशासनस्य सतां प्रणेतुः प्रतिमङ्गलार्थम् ।
प्रगृह्यते नाम परं पवित्रं स्वसिद्धिकामेन जनेन लोके ॥७॥
यः प्रादुरासीत्प्रभुशक्तिभूम्ना भव्याशयालीनकलङ्कशान्त्यै ।
महामुनिर्मुक्तघनोपदेहो यथारविन्दाभ्युदयाय भास्वान् ॥८॥
येन प्रणीतं पृथुधर्मतीर्थं ज्येष्ठं जनाः प्राप्य जयन्ति दुःखम् ।
गाङ्गं ह्रदं चन्दनपङ्कशीतं गजप्रवेका इव घर्मतप्ताः ॥९॥
स ब्रह्मनिष्ठः सममित्रशत्रुर्विद्याविनिर्वान्तकषायदोषः ।
लब्धात्मलक्ष्मीरजितोऽजितात्मा जिनःश्रियं मे भगवान् विधत्ताम्

इत्यजितजिनस्तोत्रम्

त्वं शम्भवः संभवतर्षरोगैः संतप्यमानस्य जनस्य लोके ।
आसीरिहाकस्मिक एव वैद्यो वैद्यो यथानाथ रुजां प्रशान्त्यै ॥
अनित्यमत्राणमहंक्रियाभिः प्रसक्तमिथ्याध्यवसायदोषम् ।
इदं जगज्जन्मजरान्तकार्त्तं निरञ्जनां शान्तिमजीगमस्त्वम् ॥
शतह्रदोन्मेषचलं हि सौख्यं तृष्णामयाप्यायनमात्रहेतुः ।
तृष्णाभिवृद्धिश्च तपत्यजस्रं तापस्तदायासयतीत्यवादीः ॥
बंधश्चमोक्षश्च तयोश्च हेतुर्बद्धश्च मुक्तश्च फलं च मुक्तेः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्याद्वादिनो नाथ तवैव युक्तं नैकान्तदृष्टेस्त्वमतोऽसि शास्ता
शक्रोऽप्यशक्तस्तव पुण्यकीर्त्तेः स्तुत्यां प्रवृत्तः किमु मादृशोऽज्ञः
तथापि भक्त्या स्तुतपादपद्मो ममार्य देयाः शिवतातिमुच्चैः

इति शंभवजिनस्तोत्रम्

गुणाभिनन्दादभिनन्दनो भवान् दयावधूं क्षान्तिसखीम-
शिश्रियत् । समाधितन्त्रस्तदुपोपपत्तये द्वयेन नैर्ग्रन्थ्यगुणेन
चायुजत् ॥१६॥ अचेतने तत्कृतबन्धजेऽपि ममेदमित्या-
भिनिवेशकग्रहात् । प्रभङ्गुरे स्थावर निश्चयेन च क्षतं जगत्तत्त्व-
मजिग्रहद्भवान् ॥१७॥ क्षुदादिदुःखप्रतिकारतः स्थितिर्न
चेन्द्रियार्थप्रभवाल्पसौख्यतः । ततो गुणो नास्ति च देह-
देहिनोरितीदमित्थं भगवान् व्यजिज्ञपत् ॥१८॥ जनोऽति-
लोलोऽप्यनुबन्धदोषतो भयादकार्येष्विह न प्रवर्त्तते । इहाप्य-
मुत्राप्यनुबन्धदोषवित्कथं सुखे संसजतीति चाब्रवीत् ॥१६॥
स चानुबन्धोऽस्य जनस्य तापकृत्तृषोऽभिवृद्धिःसुखतो न च
स्थितिः । इति प्रभो लोकहितं यतो मतं ततो भवानेव गति
सतां मतः ॥२०॥

इत्यभिनन्दनजिनस्तोत्रम्

अन्वर्थसंज्ञः सुमतिर्मुनिस्त्वं स्वयं मतं येन सुयुक्तिनीतम्
यतश्च शेषेषु मतेषु नास्ति सर्वक्रियाकारकतत्त्वसिद्धिः ॥२१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनेकमेकं च तदेव तत्त्वं भेदान्वयज्ञानमिदं हि सत्यम् ।
मृषोपचारोऽन्यतरस्य लोपे तच्छेषलोपोऽपि ततोऽनुपाख्यम् ॥
सतः कथंचित्तदसत्वशक्तिः खे नास्ति पुष्पं तरुषु प्रसिद्धम् ।
सर्वस्वभावच्युतमप्रमाणं स्ववाग्विरुद्धं तव दृष्टितोऽन्यत् ॥२३
न सर्वथानित्यमुदेत्यपैति न च क्रियाकारकमत्र युक्तम् ।
नैवासतो जन्म सतो न नाशो दीपस्तमःपुद्गलभावतोऽस्ति
विधिर्निषेधश्च कथंचिदिष्टौ विवक्षया मुख्यगुणव्यवस्था ।
इति प्रणीतिः सुमतेस्तवेयं मतिप्रवेकः स्तुवतोऽस्तु नाथ ॥२५

इति सुमतिजिनस्तोत्रम्

पद्मप्रभः पद्मपलाशलेश्यः पद्मालयालिङ्गितचारुमूर्तिः ।
बभौ भवान् भव्यपयोरुहाणां पद्माकराणामिव पद्मबन्धुः ॥२६
बभार पद्मां च सरस्वतीं च भवान्पुरस्तात्प्रतिमुक्तिलक्ष्म्याः ।
सरस्वतीमेव समग्रशोभां सर्वज्ञलक्ष्मीं ज्वलितां विमुक्तः ॥२७
शरीररश्मिप्रसरः प्रभोस्ते बालार्करश्मिच्छविरालिलेप ।
नरामराकीर्णसभां प्रभावच्छैलस्य पद्माभमणेः स्वसानुम् ॥२८
नभस्तलं पल्लवयन्निव त्वं सहस्रपत्राम्बुजगर्भचारैः ।
पादाम्बुजैः पातितमोहदर्पो भूमौ प्रजानां विजहर्थ भूत्यै ॥२९
गुणाम्बुधेर्विप्रुषमप्यजस्रं नाखण्डलस्तोतुमलं तवर्षेः ।
प्रागेव मादृक्किमुतातिभक्तिर्मां बालमालापयतीदमित्थम् ॥३०

इति पद्मप्रभस्तोत्रम्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वास्थ्यं यदात्यन्तिकमेष पुंसां स्वार्थो न भोगः परिभंगुरात्मा।
तृषोऽनुषङ्गान्न च तापशांतिरितीदमाख्यद्भगवान् सुपार्श्वः ॥३
अजङ्गमं जङ्गमनेययन्त्रं यथा तथा जीवधृतं शरीरम्।
बीभत्सुपूति क्षयि तापकं च स्नेहो वृथात्रेति हितं त्वमाख्यः ॥
अलंघ्यशक्तिर्भवितव्यतेयं हेतुद्वयाविष्कृतकार्यलिङ्गा।
अनीश्वरो जन्तुरहंक्रियार्त्तः संहत्य कार्येष्विति साध्ववादीः ॥
बिभेति मृत्योर्नततोऽस्ति मोक्षोनित्यं शिवं वांछति नास्य लाभः
तथापि बालो भयकामवश्यो वृथा स्वयं तप्यत इत्यवादीः।
सर्वस्य तत्त्वस्य भवान् प्रमाता मातेव बालस्य हितानुशास्ता।
गुणावलोकस्य जनस्य नेता मयापि भक्त्या परिणूयसेऽद्य ॥

इति सुपार्श्वजिनस्तोत्रम्

चन्द्रप्रभं चन्द्रमरीचिगौरं चन्द्रं द्वितीयं जगतीव कान्तम्।
वन्देऽभिवन्द्यं महतामृषीन्द्रं जिनं जितस्वान्तकषायबन्धम् ॥
यस्याङ्गलक्ष्मीपरिवेशभिन्नं तमस्तमोरेरिव रश्मिभिन्नम्।
ननाश बाह्यं बहुमानसं च ध्यानप्रदीपातिशयेन भिन्नम् ॥
स्वपक्षसौस्थित्यमदावलिप्ता वाक्सिंहनादैर्विमदा बभूवुः।
प्रवादिनो यस्य मदार्द्रगण्डा गजा यथा केशरिणो निनादैः ॥
यः सर्वलोके परमेष्ठितायाः पदं बभूवाद्भुतकर्मतेजाः।
अनन्तधामाक्षरविश्वचक्षुः समेतदुःखक्षयशासनश्च ॥३९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स चन्द्रमा भव्यकुमुद्वतीनां विपन्नदोषाभ्रकलङ्कलेपः ।
व्याकोशवाङ्न्यायमयूखमालः पूयात् पवित्रो भगवान्मनो मे ॥

इति चन्द्रप्रभजिनस्तोत्रम्

एकान्तदृष्टिप्रतिषेधि तत्वं प्रमाणसिद्धं तदतत्स्वभावम् ।
त्वया प्रणीतं सुविधे स्वधाम्ना नैतत्समालीढपदं त्वदन्यैः ॥
तदेव च स्यान्न तदेव च स्यात्तथा प्रतीतेस्तव तत्कथंचित् ।
नात्यन्तमन्यत्वमनन्यता च विधेर्निषेधस्य च शून्यदोषात् ॥
नित्यं तदेवेदमिति प्रतीतेर्न नित्यमन्यत्प्रतिपत्तिसिद्धेः ।
न तद्विरुद्धं बहिरन्तरङ्गनिमित्तनैमित्तिकयोगतस्ते ॥४३॥
अनेकमेकं च पदस्य वाच्यं वृक्षा इति प्रत्ययवत्प्रकृत्या ।
आकांक्षिणः स्यादिति वै निपातो गुणानपेक्षे नियमेऽपवादः ॥
गुणप्रधानार्थमिदं हि वाक्यं जिनस्य ते तद्द्विषतामपथ्यम् ।
ततोऽभिवन्द्यं जगदीश्वराणां ममापि साधोस्तव पादपद्मम् ॥

इति सुविधिजिनस्तोत्रम्

न शीतलाश्चन्दनचन्द्ररश्मयो न गाङ्गमम्भो न च हारयष्टयः
यथा मुनेस्तेऽनघवाक्यरश्मयःशमाम्बुगर्भाःशिशिराविपश्चितां
सुखाभिलाषानलदाहमूर्च्छितं मनो निजं ज्ञानमयामृताम्बुभिः
विदिध्यपस्त्वं विषदाहमोहितं यथा भिषग्मन्त्रगुणैःस्वविग्रहं
स्वजीविते कामसुखे च तृष्णया दिवाश्रमार्त्ता निशि शेरते प्रजाः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्वमार्य्यं नक्तंदिवमप्रमत्तवानजागरेवात्मविशुद्धवर्त्मनि ॥
अपत्यवित्तोत्तरलोकतृष्णया तपस्विनः केचन कर्म कुर्वते ।
भवान्पुनर्जन्मजराजिहासया त्रयीं प्रवृत्तिं शमधीरवारुणत् ॥४९
त्वमुत्तमज्योतिरजः क्व निर्वृतः क्व ते परे बुद्धिलवोद्धवक्षताः
ततः स्वनिश्रेयसभावनापरैर्बुधप्रवेकैर्जिनशीतलेड्यसे ॥५०॥

इति शीतलजिनस्तोत्रम्

श्रेयान् जिनः श्रेयसि वर्त्मनीमाः श्रेयःप्रजाःशासदजेयवाक्यः
भवांश्चकासे भुवनत्रयेऽस्मिन्नेको यथा वीतघनो विवस्वान् ॥
विधिर्विषक्तप्रतिषेधरूपः प्रमाणमत्रान्यतरत्प्रधानम् ।
गुणो परो मुख्यनियामहेतुर्नयः सदृष्टांतसमर्थनस्ते ॥५२॥
विवक्षितो मुख्य इतीष्यतेऽन्यो गुणो विवक्षो न निरात्मकस्ते
तथारिमित्रानुभयादिशक्तिर्द्वयावधिः कार्य्यकरं हि वस्तु ॥
दृष्टांतसिद्धावुभयोर्विवादे साध्यं प्रसिद्ध्येन्न तु तादृगस्ति ।
युत्सर्वथैकान्तनियामदृष्टं त्वदीयदृष्टिर्विभवत्यशेषे ॥५४॥
एकान्तदृष्टिप्रतिषेधसिद्धिर्न्यायेषुभिर्मोहरिपुं निरस्य ।
असि स्म कैवल्यविभूतिसम्राट् ततस्त्वमर्हन्नसि मे स्तवार्हः ॥

इति श्रेयोजिनस्तोत्रम्

शिवासु पूज्योऽभ्युदयक्रियासु त्वं वासुपूज्यस्त्रिदशेन्द्रपूज्यः ।
मयापि पूज्योऽल्पधिया मुनीन्द्र दीपार्चिषा किं तपनो न पूज्यः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न पूजयार्थस्त्वयि वीतरागे न निन्दया नाथ विवान्तवैरे ।
तथापि ते पुण्यगुणस्मृतिर्नः पुनातु चित्तं दुरिताञ्जनेभ्यः ॥
पूज्यं जिनं त्वार्चयतो जनस्य सावद्यलेशो बहुपुण्यराशौ ।
दोषाय नालं कणिका विषस्य न दूषिका शीतशिवाम्बुराशौ ॥
यद्वस्तु बाह्यं गुणदोषसूतेर्निमित्तमभ्यन्तरमूलहेतोः ।
अध्यात्मवृत्तस्य तदङ्गभूतमभ्यन्तरं केवलमप्यलं ते ॥५६॥
बाह्येतरोपाधिसमग्रतेयं कार्येषु ते द्रव्यगतः स्वभावः ।
नैवान्यथामोक्षविधिश्च पुंसां तेनाभिवन्द्यस्त्वमृषिबुधानाम् ॥

इति वासुपूज्यस्तोत्रम्

य एव नित्यक्षणिकादयो नया मिथोऽनपेक्षाः स्वपरप्रणाशिनः ।
त एव तत्त्वं विमलस्य ते मुनेः परस्परेक्षाः स्वपरोपकारिणः ।
यथैकशः कारकमर्थसिद्धये समीक्ष्य शेषं स्वसहायकारकम् ।
तथैव सामान्यविशेषमातृका नयास्तवेष्टा गुणमुख्यकल्पतः ॥
परस्परेक्षान्वयभेदलिङ्गतः प्रसिद्धसामान्यविशेषयोस्तव ।
समग्रतास्ति स्वपरावभासकं यथा प्रमाणं भुवि बुद्धिलक्षणम् ॥
विशेषवाच्यस्य विशेषणं वचो यतो विशेष्यं विनियम्यते च यत् ॥
तयोश्च सामान्यमतिप्रसज्यते विवक्षितात्स्यादितितेऽन्यवर्जनम् ।
नयास्तव स्यात्पदसत्यलांछिता रसोपविद्धा इव लोहधातवः ॥
भवन्त्यभिप्रेतगुणा यतस्ततो भवान्तमार्याः प्रणिता हितैषिणः ।

इति विमलजिनस्तोत्रम्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनन्तदोषाशयविग्रहो ग्रहो विषङ्गवान्मोहमयश्चिरं हृदि ।
यतो जितस्तत्त्वरुचौ प्रसीदता त्वया ततोभूर्भगवाननन्तजित् ॥
कषायनाम्नां द्विषतां प्रमाथिनामशेषयन्नाम भवानशेषवित् ।
विशोषणं मन्मथदुर्मदामयं समाधिभैषज्यगुणैर्व्यलीनयन् ॥
परिश्रमाम्बुर्भयवीचिमालिनी त्वया स्वतृष्णासरिदार्य शोषिता ।
असंगघर्मार्कगभस्तितेजसा परं ततो निर्वृतिधाम तावकम् ॥
सुहृत्त्वयि श्री सुभगत्वमश्नुते द्विषंस्त्वयि प्रत्ययवत्प्रलीयते ।
भवानुदासीनतमस्तयोरपि प्रभो परं चित्रमिदं तवेहितम् ॥
त्वमीदृशस्तादृश इत्ययं मम प्रलापलेशोऽल्पमतेर्महामुने ।
अशेषमाहात्म्यमनीरयन्नपि शिवाय संस्पर्श इवामृताम्बुधेः ॥

इत्यनन्तजिनस्तोत्रम्

धर्मतीर्थमनघं प्रवर्त्तयन् धर्म इत्यनुमतः सतां भवान् ।
कर्मकक्षमदहत्तपोऽग्निभिः शर्म शाश्वतमवाप शङ्करः ॥७१॥
देवमानवनिकायसत्तमै रेजिषे परिवृतो वृतो बुधैः ।
तारकापरिवृतोऽतिपुष्कलो व्योमनीव शशलांछनोऽमलः ॥
प्रातिहार्यविभवैः परिष्कृतो देहतोऽपि विरतो भवानभूत् ।
मोक्षमार्गमशिषन्नरामरान्नापि शासनफलैषणातुरः ॥७३॥
कायवाक्यमनसां प्रवृत्तयो नाऽभवंस्तव मुनेश्चिकीर्षया ।
नासमीक्ष्य भवतः प्रवृत्तयो धीर तावकमचिन्त्यमीहितम् ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मानुषीं प्रकृतिमभ्यतीतवान् देवतास्वपि च देवता यतः ।
तेन नाथ परमासि देवता श्रेयसे जिनवृष प्रसीद नः ॥७५॥

इति धर्मजिनस्तोत्रम्

विधाय रक्षां परतः प्रजानां राजा चिरं योऽप्रतिमप्रतापः ।
व्यधात्पुरस्तात्स्वत एव शान्तिमुर्निर्दयामूर्त्तिरिवाघशान्तिम् ॥
चक्रेण यः शत्रुभयंकरेण जित्वा नृपः सर्वनरेन्द्रचक्रम् ।
समाधिचक्रेण पुनर्जिगाय महोदयो दुर्जयमोहचक्रम् ॥७७॥
राजश्रिया राजसु राजसिंहो रराज यो राजसु भोगतन्त्रः ।
आर्हन्त्यलक्ष्म्या पुनरात्मतन्त्रो देवासुरोदारसभे रराज ॥
यस्मिन्नभूद्राजनि राजचक्रं मुनौ दयादीधितिधर्मचक्रम् ।
पूज्ये मुहुः प्राञ्जलि देवचक्रं ध्यानोन्मुखे ध्वंसि कृतान्तचक्रम् ॥
स्वदोषशान्त्यावहितात्मशान्तिः शान्तेर्विधाता शरणं गतानाम् ।
भूयाद्भवक्लेशभयोपशान्त्यै शान्तिर्जिनो मे भगवान् शरण्यः

इति शान्तिजिनस्तोत्रम्

कुन्थुप्रभृत्यखिलसत्त्वदयैकतानः,
कुन्थुर्जिनो ज्वरजरामरणोपशान्त्यै ।
त्वं धर्मचक्रमिह वर्त्तयसि स्म भूत्यै,
भूत्वा पुरा क्षितिपतीश्वरचक्रपाणिः ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तृष्णार्चिषः परिदहन्ति न शान्तिरासा-
मिष्टेन्द्रियार्थविभवैः परिवृद्धिरेव ।
स्थित्यैव कायपरितापहरं निमित्त-
मित्यात्मवान्विषयसौख्यपराङ्मुखोऽभूत् ॥८२॥

बाह्यं तपः परमदुश्चरमाचरंस्त्व-
माध्यात्मिकस्य तपसः परिबृंहणार्थम् ।
ध्यानं निरस्य कलुषद्वयमुत्तरेऽस्मिन्
ध्यानद्वये ववृतिषेऽतिशयोपपन्ने ॥८३॥

हुत्वा स्वकर्मकटुकप्रकृतीश्चतस्रो
रत्नत्रयातिशयतेजसि जातवीर्य्यः ।
विभ्राजिषे सकलवेदविधेर्विनेता
व्यभ्रे यथा वियति दीप्तरुचिर्विवस्वान् ॥८४॥

यस्मान्मुनीन्द्र तव लोकपितामहाद्या
विद्याविभूतिकणिकामपि नाप्नुवन्ति ।
तस्माद्भवन्तमजमप्रतिमेयमार्याः
स्तुत्यं स्तुवन्ति सुधियः स्वहितैकतानाः ॥८५॥

इति कुन्थुजिनस्तोत्रम्

गुणस्तोकं सदुल्लंघ्य तद्बहुत्वकथा स्तुतिः ।
आनन्त्यात्ते गुणा वक्तुमशक्यास्त्वयि सा कथम् ॥८६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तथापि ते मुनीन्द्रस्य यतो नामापि कीर्तितम् ।
पुनाति पुण्यकीर्तेर्नस्ततो ब्रूयाम किंचन ॥८७॥
लक्ष्मीविभवसर्वस्वं मुमुक्षोश्चक्रलांछनम् ।
साम्राज्यं सार्वभौमं ते जरत्तृणमिवाभवत् ॥८८॥
तव रूपस्य सौन्दर्यं दृष्ट्वा तृप्तिमनापिवान् ।
द्व्यचक्षः शक्रः सहस्राक्षो बभूव बहुविस्मयः ॥८९॥
मोहरूपो रिपुः पापः कषायभटसाधनः ।
दृष्टिसम्पदुपेक्षास्त्रैस्त्वया धीर पराजितः ॥९०॥
कन्दर्पस्योद्धुरो दर्पस्त्रैलोक्यविजयार्जितः ।
ह्रेपयामास तं धीरे त्वयि प्रतिहतोदयः ॥९१॥
आयत्यां च तदात्वे च दुःखयोर्निर्निरुत्तरा ।
तृष्णानदी त्वयोत्तीर्णा विद्यानावा विविक्तया ॥९२॥
अन्तकः क्रन्दको नृणां जन्मज्वरसखा सदा ।
त्वामन्तिकान्तकं प्राप्य व्यावृत्तः कामकारतः ॥९३॥
भूषावेषायुधत्यागि विद्यादमदयापरम् ।
रूपमेव तवाचष्टे धीर दोषविनिग्रहम् ॥९४॥
समन्ततोऽङ्गभासां ते परिवेषेण भूयसा ।
तमो बाह्यमपाकीर्णमध्यात्मध्यानतेजसा ॥९५॥
सर्वज्ञज्योतिषोद्भूतस्तावको महिमोदयः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कं न कुर्यात् प्रणम्रं ते सत्त्वं नाथ सचेतनम् ॥९६॥
तव वागमृतं श्रीमत्सर्वभाषास्वभावकम् ।
प्रीणयत्यमृतं यद्वत् प्राणिनो व्यापि संसदि ॥९७॥
अनेकान्तात्मदृष्टिस्ते सती शून्यो विपर्ययः ।
ततः सर्वं मृषोक्तं स्यात्तदयुक्तं स्वघाततः ॥९८॥
ये परस्खलितोन्निद्राः स्वदोषेभनिमीलिनः ।
तपस्विनस्ते किं कुर्युरपात्रं त्वन्मतश्रियः ॥९९॥
ते तं स्वघातिनं दोषं शमीकर्त्तुमनीश्वराः ।
त्वद्द्विषः स्वहनो बालास्तत्त्वावक्तव्यतां श्रिताः ॥१००॥
सदेकनित्यवक्तव्यास्तद्विपक्षाश्च ये नयाः ।
सर्वथेति प्रदुष्यन्ति पुष्यन्ति स्यादितीहिते ॥१०१॥
सर्वथा नियमत्यागी यथादृष्टमपेक्षकः ।
स्याच्छब्दस्तावके न्याये नान्येषामात्मविद्विषाम् ॥१०२॥
अनेकान्तोऽप्यनेकान्तः प्रमाणनयसाधनः ।
अनेकान्तः प्रमाणात्ते तदेकान्तोऽर्पितान्नयात् ॥१०३॥
इति निरुपमयुक्तिशासनः प्रियहितयोगगुणानुशासनः ।
अरजिनदमतीर्थनायकस्त्वमिव सतां प्रतिबोधनायकः ॥१०४॥
मतिगुणविभवानुरूपतस्त्वयि वरदागमदृष्टिरूपतः ।
गुणकृशमपि किंचनोदितं मम भवताद्दुरिताशनोदितम् ॥१०५॥

इत्यरजिनस्तोत्रम्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यस्य महर्षेः सकलपदार्थप्रत्यवबोधः समजनि साक्षात् ।
सामरमर्त्यं जगदपि सर्वं प्राञ्जलिभूत्वा प्रणिपतति स्म ॥१०६॥
यस्य च मूर्तिः कनकमयीव स्वस्फुरदाभाकृतपरिवेषा ।
वागपि तत्त्वं कथयितुकामा स्यात्पदपूर्वा रमयति साधून् ॥१०७॥
यस्य पुरस्ताद्विगलितमाना न प्रतितीर्थ्या भुवि विवदन्ते ।
भूरपि रम्या प्रतिपदमासीज्जातविकोशाम्बुजमृदुहासा ॥१०८॥
यस्य समन्ताज्जिनशिशिरांशोः शिष्यकसाधुग्रहविभवोऽभूत् ।
तीर्थमपि स्वं जननसमुद्रत्रासितसत्त्वोत्तरणपथोऽग्रम् ॥१०९॥
यस्य च शुक्लं परमतपोऽग्निर्ध्यानमनन्तं दुरितमधाक्षीत् ।
तं जिनसिंहं कृतकरणीयं मल्लिमशल्यं शरणमितोऽस्मि ॥११०॥

इति मल्लिजिनस्तोत्रम् ॥ १९ ॥

अधिगतमुनिसुव्रतस्थितिर्मुनिवृषभो मुनिसुव्रतोऽनघः ।
मुनिपरिषदि निर्बभौ भवानुडुपरिषत्परिवीतसोमवत् ॥१११॥
परिणतशिखिकण्ठरागया कृतमदनिग्रहविग्रहाभया ।
तव जिन तपसः प्रसूतया ग्रहपरिवेषरुचेव शोभितम् ॥११२॥
शशिरुचिशुचिशुक्ललोहितं सुरभितरं विरजो निजं वपुः ।
तव शिवमतिविस्मयं यते यदपि च वाङ्मनसोऽयमीहितम् ॥११३॥
स्थितिजननिरोधलक्षणं चरमचरं च जगत्प्रतिक्षणम् ।
इति जिन सकलज्ञलाञ्छनं वचनमिदं वदतां वरस्य ते ॥११४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुरितमलकलंकमष्टकं निरुपमयोगबलेन निर्दहन् ।
अभवदभवसौख्यवान् भवान् भवतु ममापि भवोपशांतये ।

इति मुनिसुव्रतजिनस्तोत्रम् ॥२०॥

स्तुतिःस्तोतुः साधोः कुशलपरिणामाय स तदा,
भवेन्मा वा स्तुत्यः फलमपि ततस्तस्य च सतः ।
किमेवं स्वाधीनाज्जगति सुलभे श्रायसपथे,
स्तुयान्न त्वा विद्वान्सततमपि पूज्यं नमिजिनम् ॥११६

त्वया धीमन् ब्रह्मप्रणिधिमनसा जन्मनिगलं,
समूलं निर्भिन्नं त्वमसि विदुषां मोक्षपदवी ।
त्वयि ज्ञानज्योतिर्विभवकिरणैर्भाति भगवन् ।
अभूवन् खद्योता इव शुचिरवावन्यमतयः ॥११७

विधेयं वार्यं चानुभयमुभयं मिश्रमपि तत्,
विषेशैः प्रत्येकं नियमविषयैश्चापरिमितैः ।
सदान्योन्यापेक्षैः सकलभुवनज्येष्ठगुरुणा,
त्वया गीतं तत्वं बहुनयविवक्षेतरवशात् ॥११८

अहिंसा भूतानां जगति विदितं ब्रह्म परमं,
न सा तत्रारम्भोस्त्यणुरपि च यत्राश्रमविधौ ।
ततस्तत्सिद्ध्यर्थं परमकरुणो ग्रन्थमुभयं,
भवानेवात्याक्षीन्न च विकृतवेषोपधिरतः ॥११९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वपुर्भूषावेषव्यवधिरहितं शान्तिकरणं,
यतस्ते संचष्टे स्मरशरविषातंकविजयम् ।
विना भीमैः शस्त्रैरदयहृदयामर्षविलयं,
ततस्त्वं निर्मोहः शरणमसि नः शान्तिनिलयः ॥१२०॥

इति नमिजिन स्तोत्रम् ॥२१॥

भगवानृषिः परमयोगदहनहुतकल्मषेन्धनः ।
ज्ञानविपुलकिरणैः सकलं प्रतिबुद्धच बुद्धकमलायतेक्षणः ॥१२१॥
हरिवंशकेतुरनवद्यविनयदमतीर्थनायकः ।
शीलजलधिरभवो विभवस्त्वमरिष्टनेमिजिनकुञ्जरोऽजरः ॥१२२॥
त्रिदशेन्द्रमौलिमणिरत्नकिरणविसरोपचुम्बितम् ।
पादयुगलममलं भवतो विकसतकुशेशयदलारुणोदरम् ॥१२३॥
नखचन्द्ररश्मिकवचातिरुचिरशिखराङ्गुलिस्थलम् ।
स्वार्थनियतमनसः सुधियः प्रणमन्ति मन्त्रमुखरा महर्षयः॥१२४॥
द्युतिमद्रथाङ्गरविबिम्बकिरणजटिलांशुमण्डलः ।
नीलजलजदलराशिवपुः सह बन्धुभिर्गरुडकेतुरीश्वरः ॥१२५॥
हलभृच्च ते स्वजनभक्तिमुदितहृदयौ जनेश्वरौ ।
धर्मविनयरसिकौ सुतरां चरणारविन्दयुगलं प्रणेमतुः ॥१२६॥
ककुदं भुवः खचरयोषिदुषितशिखरैरलंकृतः ।
मेघपटलपरिवीततटस्तव लक्षणानि लिखितानि वज्रिणा ॥१२७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

वहतीति तीर्थमृषिभिश्च सततमभिगम्यतेऽद्य च ।
प्रीतिविततहृदयैः परितो भृषमूर्ज्जयन्त इति विश्रुतोऽचलः ॥
बहिरन्तरप्युभयथा च करणमविघाति नार्थकृत् ।
नाथ युगपदखिलं च सदा त्वमिदं तलामलकवद्विवेदिथ ॥
अत एव ते बुधनुतस्य चरितगुणमद्भुतोदयम् ।
न्यायविहितमवधार्य जिने त्वयि सुप्रसन्नमनसः स्थिता वयं ॥

इत्यरिष्टनेमिजिनस्तोत्रम् ॥२२॥

तमालनीलैः सधनुस्तडिद्गुणैः प्रकीर्णभीमाशनिवायुवृष्टिभिः
बलाहकैर्वैरिवशैरुपद्रुतो महामना यो न चचाल योगतः ॥
बृहत्फणामण्डलमण्डपेन यं स्फुरत्तडित्पिङ्गरुचोपसर्गिणं
जुगूह नागो धरणो धराधरं विरागसन्ध्यातडिदम्बुदो यथा ॥
स्वयोगनिस्त्रिंशनिशातधारया निशात्य यो दुर्जयमोहविद्विषं
अवापदार्हन्त्यमचिन्त्यमद्भुतं त्रिलोकपूजातिशयास्पदं पदम् ॥
यमीश्वरं वीक्ष्य विधूतकल्मषं तपोधनास्तेऽपि तथा बुभूषवः
वनौकसः स्वश्रमबन्ध्यबुद्धयः शमोपदेशं शरणं प्रपेदिरे ॥
स सत्यविद्यातपसां प्रणायकः समग्रधीरुग्रकुलाम्बरांशुमान्
मया सदा पार्श्वजिनः प्रणम्यते विलीनमिथ्यापथदृष्टिविभ्रमः ॥

इति पार्श्वजिनस्तोत्रम् ॥२३॥

कीर्त्या भुवि भासि तया वीर त्वं गुणसमुच्छ्रया भासितया ।
भासोडुसभासितया सोम इव व्योम्नि कुन्दशोभासितया ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नव जिन शासनविभवो जयति कलावपि गुणानुशासनविभवः ।
ोषकशासनविभवः स्तुवंति चैनं प्रभाक्त-शासनविभवः ॥१३७
नवद्यः स्याद्वादस्तव दृष्टेष्टाविरोधतः स्याद्वादः ।
तरो न स्याद्वादो सद्वितयविरोधान्मुनीश्वराऽस्याद्वादः ॥१३८
वमसि सुरासुरमहितो ग्रन्थिकसत्त्वाशयप्रणामामहितः ।
ोकत्रयपरमहितोऽनावरणज्योतिरुज्वलद्धामहितः ॥१३९॥
भ्यानामभिरुचितं दधासि गुणभूषणं श्रिया चारुचितम् ।
ग्नं स्वस्यां रुचिरं जयसि च मृगलांछनं स्वकान्त्या रुचितम् ।१४०
ं जिन गतमदमायस्तव भावानां मुमुक्षुकामदमायः ।
ंयान् श्रीमदमायस्त्वया समादेशि सप्रयामदमायः ॥१४१॥
ारभित्त्यवदानवतः श्रीमत इव दन्तिनः स्रवद्दानवतः ।
व शमवद्दानवतो गतमूर्जितमपगतप्रमादानवतः ॥१४२॥
हुगुणसंपदसकलं परमतमपि मधुरवचनविन्यासकलम् ।
य भक्त्यवतंसकलं तव देव मतं समन्तभद्रं सकलम् ॥१४३॥

इति वीरजिनस्तोत्रम् ॥२४॥

ो निःशेषजिनोक्तधर्मविषयः श्रीगौतमाद्यैः कृतः,
सूक्तार्थैरमलैः स्तवोयमसमः स्वल्पैः प्रसन्नैः पदैः ।
द्व्याख्यानमदो यथाह्यवगतः किञ्चित्कृतं लेशतः,
स्थेयांश्चन्द्रदिवाकरावधि बुधप्रह्लादचेतस्यलम् ॥१४४

इति बृहत्स्वयंभूस्तोत्रं समाप्तम्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीजिनसेनाचार्यकृतं

जिनसहस्रनामस्तोत्रम्

स्वयंभुवे नमस्तुभ्यमुत्पाद्यात्मानमात्मनि ।
स्वात्मनैव तथोद्भूतवृत्तयेऽचिंत्यवृत्तये ॥१॥

नमस्ते जगतां पत्ये लक्ष्मीभर्त्रे नमोऽस्तु ते ।
विदांवर नमस्तुभ्यं नमस्ते वदतांवर ॥२॥

कामशत्रुहणं देवमामनन्ति मनीषिणः ।
त्वामा नमन्सुरेण्मौलिभालाभ्यर्चितक्रमम् ॥३॥

ध्यानद्रु घणनिर्भिन्नघनघातिमहातरुः ।
अनन्तभवसन्तानजयादासीदनन्तजित् ॥४॥

त्रैलोक्यनिर्जयावाप्तदुर्दर्पमतिदुर्जयम् ।
मृत्युराजं विजित्यासीज्जिन ! मृत्युंजयो भवान् ॥५॥

विधूताशेषसंसारबन्धनो भव्यबांधवः ।
त्रिपुरारिस्त्वमेवासि जन्ममृत्युजरान्तकृत् ॥६॥

त्रिकालविषयाशेषतत्वभेदात्त्रिधोत्थितम् ।
केवलाख्यं दधच्चक्षुस्त्रिनेत्रोऽसि त्वमीशितः ॥७॥

त्वामन्धकान्तकं प्राहुर्मोहान्धासुरमर्द्दनात् ।
अर्द्धंते नारयो यस्मादर्धनारीश्वरोऽस्यतः ॥८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिवः शिवपदाध्यासाद् दुरितारिहरो हरः ।
शंकरः कृतशं लोके शंभवस्त्वं भवन्मुखे ॥९॥
वृषभोऽसि जगच्छ्रेष्ठः पुरुः पुरुगुणोदयैः ।
नाभेयो नाभिसंभूतेरिक्ष्वाकुकुलनंदनः ॥१०॥
त्वमेकः पुरुषस्कंधस्त्वं द्वे लोकस्य लोचने ।
त्वं त्रिधाबुद्धसन्मार्गस्त्रिज्ञस्त्रिज्ञानधारकः ॥११॥
चतुश्शरणमांगल्यमूर्तिस्त्वं चतुरः सुधीः ।
पञ्चब्रह्ममयो देव पावनस्त्वं पुनीहि माम् ॥१२॥
स्वर्गावतरणे तुभ्यं सद्यो जातात्मने नमः ।
जन्माभिषेकवामाय वामदेव नमोऽस्तु ते ॥१३॥
सुनिष्क्रान्तावघोराय पदं परममीयुषे ।
केवलज्ञानसंसिद्धावीशानाय नमोऽस्तु ते ॥१४॥
पुरस्तत्पुरुषत्वेन विमुक्तिपदभागिने ।
नमस्तात्पुरुषावस्थां भाविनीं तेऽद्य विभ्रते ॥१५॥
ज्ञानावरणनिर्ह्रासान्नमस्तेऽनन्तचक्षुषे ।
दर्शनावरणोच्छेदान्नमस्ते विश्वदृश्वने ॥१६॥
नमो दर्शनमोहघ्ने क्षायिकामलदृष्टये ।
नमश्चारित्रमोहघ्ने विरागाय महौजसे ॥१७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नमस्तेऽनन्तवीर्याय नमोऽनन्तसुखात्मने ।
नमस्तेऽनन्तलोकाय लोकालोकावलोकिने ॥१८॥

नमस्तेऽनन्तदानाय नमस्तेऽनन्तलब्धये ।
नमस्तेऽनन्तभोगाय नमोऽनन्तोपभोगिने ॥१९॥

नमः परमयोगाय नमस्तुभ्यमयोनये ।
नमः परमपूताय नमस्ते परमर्षये ॥२०॥

नमः परमविद्याय नमः परमतच्छिदे ।
नमः परमतत्वाय नमस्ते परमात्मने ॥२१॥

नमः परमरूपाय नमः परमतेजसे ।
नमः परममार्गाय नमस्ते परमेष्ठिने ॥२२॥

परमर्द्धिजुषे धाम्ने परमज्योतिषे नमः ।
नमः पारेतमः प्राप्त धाम्ने परतरात्मने ॥२३॥

नमः क्षीणकलंकाय क्षीणबंध नमोऽस्तु ते ।
नमस्ते क्षीणमोहाय क्षीणदोषाय ते नमः ॥२४॥

नमः सुगतये तुभ्यं शोभनां गतिमीयुषे ।
नमस्तेऽतीन्द्रियज्ञानसुखायानिन्द्रियात्मने ॥२५॥

कायबन्धननिर्मोक्षादकायाय नमोऽस्तु ते ।
नमस्तुभ्यमयोगाय योगिनामधियोगिने ॥२६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अच्छेदाय नमस्तुभ्यमकषायाय ते नमः।
नमः परमयोगीन्द्र वन्दितांघ्रिद्वयाय ते ॥२७॥
नमः परमविज्ञान नमः परमसंयतः।
नमः परमदृग्दृष्टपरमार्थाय ते नमः ॥२८॥
नमस्तुभ्यमलेश्याय शुक्ललेशांशकस्पृशे।
नमो भव्येतरावस्थाव्यतीताय विमोक्षिणे ॥२९॥
संज्ञयसंज्ञिद्वयावस्थाव्यतिरिक्तामलात्मने।
नमस्ते वीतसंज्ञाय नमः क्षायिकदृष्टये ॥३०॥
अनाहाराय तृप्ताय नमः परमभाजुषे।
व्यतीताशेषदोषाय भवाब्धेः पारमीयुषे ॥३१॥
अजराय नमस्तुभ्यं नमस्ते तीतजन्मने।
अमृत्यवे नमस्तुभ्यमचलायाक्षरात्मने ॥३२॥
अलमास्तां गुणस्तोत्रमनन्तास्तावका गुणाः।
त्वां नामस्मृतिमात्रेण पर्युपासिसिषामहे ॥३३॥
एवं स्तुत्वा जिनं देवं भक्त्या परमया सुधीः।
पठेदष्टोत्तरं नाम्नां सहस्रं पापशांतये ॥३४॥

इति पीठिका

प्रसिद्धाष्टसहस्रेद्धलक्षणं त्वां गिरां पतिम्।
नाम्नामष्टसहस्रेण तोष्टुमोऽभीष्टसिद्धये ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीमान्स्वयंभूर्वृषभः शंभवः शंभुरात्मभूः ।
स्वयंप्रभः प्रभुर्भोक्ता विश्वभूरपुनर्भवः ॥२॥
विश्वात्मा विश्वलोकेशो विश्वतश्चक्षुरक्षरः ।
विश्वविद्विश्वविद्येशो विश्वयोनिरनश्वरः ॥३॥
विश्वदृश्वा विभुर्धाता विश्वेशो विश्वलोचनः ।
विश्वव्यापी विधिर्वेधाः शाश्वतो विश्वतोमुखः ॥४॥
विश्वकर्मा जगज्ज्येष्ठो विश्वमूर्तिर्जिनेश्वरः ।
विश्वदृग्विश्वभूतेशो विश्वज्योतिरनीश्वरः ॥५॥
जिनो जिष्णुरमेयात्मा विश्वरीशो जगत्पतिः ।
अनन्तचिदचिन्त्यात्मा भव्यबन्धुरबन्धनः ॥६॥
युगादिपुरुषो ब्रह्मा पञ्चब्रह्ममयः शिवः ।
परः परतरः सूक्ष्मः परमेष्ठी सनातनः ॥७॥
स्वयंज्योतिरजोऽजन्मा ब्रह्मयोनिरयोनिजः ।
मोहारिविजयी जेता धर्मचक्री दयाध्वजः ॥८॥
प्रशान्तारिरनन्तात्मा योगी योगेश्वरार्चितः ।
ब्रह्मविद्ब्रह्मतत्वज्ञो ब्रह्मोद्याविद्यतीश्वरः ॥९॥
शुद्धो बुद्धः प्रबुद्धात्मा सिद्धार्थः सिद्धशासनः ।
सिद्धः सिद्धान्तविद्ध्येयः सिद्धसाध्यो जगद्धितः ॥१०॥
सहिष्णुरच्युतोऽनन्तः प्रभविष्णुर्भवोद्भवः ।
प्रभूष्णुरजरोऽजर्यो भ्राजिष्णुर्धीश्वरोऽव्ययः ॥११॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विभावसुरसंभूष्णुः स्वयंभूष्णुः पुरातनः ।
परमात्मा परंज्योतिस्त्रिजगत्परमेश्वरः ॥१२॥

इति श्रीमदादिशतम् ॥१॥

दिव्यभाषापतिर्दिव्यः पूतवाक्पूतशासनः ।
पूतात्मा परमज्योतिर्धर्माध्यक्षो दमीश्वरः ॥१॥
श्रीपतिर्भगवानर्हन्नरजा विरजाः शुचिः ।
तीर्थकृत्केवलीशानः पूजार्हः स्नातकोऽमलः ॥२॥
अनन्तदीप्तिर्ज्ञानात्मा स्वयंबुद्धः प्रजापतिः ।
मुक्तः शक्तो निराबाधो निष्कलो भुवनेश्वरः ॥३॥
निरञ्जनो जगज्ज्योतिर्निरुक्तोक्तिर्निरामयः ।
अचलस्थितिरक्षोभ्यः कूटस्थः स्थाणुरक्षयः ॥४॥
अग्रणीर्ग्रामणीर्नेता प्रणेता न्यायशास्त्रकृत् ।
शास्ता धर्मपतिर्धर्म्यो धर्मात्मा धर्मतीर्थकृत् ॥५॥
वृषध्वजो वृषाधीशो वृषकेतुर्वृषायुधः ।
वृषो वृषपतिर्भर्ता वृषभाङ्को वृषोद्भवः ॥६॥
हिरण्यनाभिर्भूतात्मा भूतभृद्भूतभावनः ।
प्रभवो विभवो भास्वान् भवो भावो भवान्तकः ॥७॥
हिरण्यगर्भः श्रीगर्भः प्रभूतविभवोद्भवः ।
स्वयंप्रभुः प्रभूतात्मा भूतनाथो जगत्प्रभुः ॥८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सर्वादिः सर्वदृक् सार्वः सर्वज्ञः सर्वदर्शनः ।
सर्वात्मा सर्वलोकेशः सर्ववित्सर्वलोकजित् ॥९॥
सुगतिः सुश्रुतः सुश्रुक् सुवाक् सूरिर्बहुश्रुतः ।
विश्रुतो विश्वतःपादो विश्वशीर्षः शुचिश्रवाः ॥१०॥
सहस्रशीर्षः क्षेत्रज्ञः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
भूतभव्यभवद्भर्ता विश्वविद्यामहेश्वरः ॥११॥

इति दिव्यादिशतम् ॥२॥

स्थविष्ठः स्थविरो ज्येष्ठः पृष्ठः प्रेष्ठो वरिष्ठधीः ।
स्थेष्ठो गरिष्ठो बंहिष्ठः श्रेष्ठो निष्ठो गरिष्ठगीः ॥१॥
विश्वभृट् विश्वसृट् विश्वेट् विश्वभुग्विश्वनायकः ।
विश्वाशीर्विश्वरूपात्मा विश्वजिद्विजितान्तकः ॥२॥
विभवो विभयो वीरो विशोको विजरो जरन् ।
विरागो विरतोऽसङ्गो विविक्तो वीतमत्सरः ॥३॥
विनेयजनताबन्धुर्विलीनाशेषकल्मषः ।
वियोगो योगविद्विद्वान्विधाता सुविधिः सुधीः ॥४॥
क्षान्तिभाक्पृथिवीमूर्तिः शान्तिभाक् सलिलात्मकः ।
वायुमूर्तिरसङ्गात्मा वह्निमूर्तिरधर्मधृक् ॥५॥
सुयज्वा यजमानात्मा सुत्वा सुत्रामपूजितः ।
ऋत्विग्यज्ञपतिर्यज्ञो यज्ञाङ्गममृतं हविः ॥६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व्योममूर्तिरमूर्तात्मा निर्लेपो निर्मलोऽचलः ।
सोममूर्तिः सुसौम्यात्मा सूर्यमूर्तिर्महाप्रभः ॥७॥
मन्त्रविन्मन्त्रकृन्मन्त्री मन्त्रमूर्तिरनन्तगः ।
स्वतन्त्रस्तन्त्रकृत्स्वान्तः कृतान्तान्तः कृतान्तकृत् ॥८॥
कृती कृतार्थः सत्कृत्यः कृतकृत्यः कृतक्रतुः ।
नित्यो मृत्युंजयोऽमृत्युरमृतात्माऽमृतोद्भवः ॥९॥
ब्रह्मनिष्ठः परंब्रह्म ब्रह्मात्मा ब्रह्मसम्भवः ।
महाब्रह्मपतिर्ब्रह्मेट् महाब्रह्मपदेश्वरः ॥१०॥
सुप्रसन्नः प्रसन्नात्मा ज्ञानधर्मदमप्रभुः ।
प्रशमात्मा प्रशान्तात्मा पुराणपुरुषोत्तमः ॥११॥

इति स्थविष्ठादिशतम् ॥३॥

महाशोकध्वजोऽशोकः कः स्रष्टा पद्मविष्टरः ।
पद्मेशः पद्मसंभूतिः पद्मनाभिरनुत्तरः ॥१॥
पद्मयोनिर्जगद्योनिरित्यः स्तुत्यः स्तुतीश्वरः ।
स्तवनार्हो हृषीकेशो जितजेयः कृतक्रियः ॥२॥
गणाधिपो गणज्येष्ठो गण्यः पुण्यो गणाग्रणीः ।
गुणाकरो गुणांभोधिर्गुणज्ञो गुणनायकः ॥३॥
गुणाकरो गुणोच्छेदी निर्गुणः पुण्यगीर्गुणः ।
शरण्यः पुण्यवाक्पूतो वरेण्यः पुण्यनायकः ॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अगम्यः पुण्यधीर्गण्यः पुण्यकृत्पुण्यशासनः ।
धर्मारामो गुणग्रामः पुण्यापुण्यनिरोधकः ॥५॥

पापापेतो विपापात्मा विपाप्मा वीतकल्मषः ।
निर्द्वंद्वो निर्मदः शांतो निर्मोहो निरुपद्रवः ॥६॥

निर्निमेषो निराहारो निष्क्रियो निरुपप्लवः ।
निष्कलंको निरस्तैना निर्द्धूतांगो निराश्रयः ॥७॥

विशालो विपुलज्योतिरतुलोऽचिंत्यवैभवः ।
सुसंवृतः सुगुप्तात्मा सुभृत्सुनयतत्ववित् ॥८॥

एकविद्यो महाविद्यो मुनिः परिवृढः पतिः ।
धीशो विद्यानिधिः साक्षी विनेता विहतांतकः ॥९॥

पिता पितामहः पाता पवित्रः पावनो गतिः ।
त्राता भिषग्वरो वर्यो वरदः परमः पुमान् ॥१०॥

कविः पुराणपुरुषो वर्षीयान्वृषभः पुरुः ।
प्रतिष्ठाप्रसवो हेतुर्भुवनैकपितामहः ॥११॥

इति महाशोकध्वजादिशतम् ॥४॥

श्रीवृक्षलक्षणः श्लक्ष्णो लक्षण्यः शुभलक्षणः ।
निरक्षः पुंडरीकाक्षः पुष्कलः पुष्करेक्षणः ॥१॥

सिद्धिदः सिद्धसंकल्पः सिद्धात्मा सिद्धसाधनः ।
बुद्धबोध्यो महाबोधिर्वर्द्धमानो महर्द्धिकः ॥२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वेदांगो वेदविद्वेद्यो जातरूपो विदांवरः ।
वेदवेद्यः स्वसंवेद्यो विवेदो वदतांवरः ॥३॥

अनादिनिधनो व्यक्तो व्यक्तवाग्व्यक्तशासनः ।
युगादिकृद्युगाधारो युगादिर्जगदादिजः ॥४॥

अतीन्द्रोऽतींद्रियो धींद्रो महेन्द्रोऽतींद्रियार्थदृक् ।
अनिंद्रियोऽहमिंद्राच्र्यो महेन्द्रमहितो महान् ॥५॥

उद्भवः कारणं कर्ता पारगो भवतारकः ।
अग्राह्यो गहनं गुह्यं परार्घ्यः परमेश्वरः ॥६॥

अनंतर्द्धिरमेयर्द्धिरचिंत्यर्द्धिः समग्रधीः ।
प्राग्र्यः प्राग्रहरोऽभ्यग्र्यः प्रत्यग्रोऽग्र्योऽग्रिमोऽग्रजः ।७।

महातपा महातेजा महोदर्को महोदयः ।
महायशा महाधामा महासत्त्वो महाधृतिः ॥८॥

महाधैर्यो महावीर्यो महासंपन्महाबलः ।
महाशक्तिर्महाज्योतिर्महाभूतिर्महाद्युतिः ॥९॥

महामतिर्महानीतिर्महाक्षांतिर्महोदयः ।
महाप्राज्ञो महाभागो महानंदो महाकविः ॥१०॥

महामहा महाकीर्तिर्महाकांतिर्महावपुः ।
महादानो महाज्ञानो महायोगी महागुणः ॥११॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महामहपतिः प्राप्तमहाकल्याणपंचकः ।
महाप्रभुर्महाप्रातिहार्याधीशो महेश्वरः ॥१२॥

इति श्रीवृद्धादिशतम् ॥५॥

महामुनिर्महामौनी महाध्यानी महादमः ।
महाक्षमो महाशीलो महायज्ञो महामखः ॥१॥
महाव्रतपतिर्मह्यो महाकांतिधरोऽधिपः ।
महामैत्रीमयोऽमेयो महोपायो महोमयः ॥२॥
महाकारुणिको मंता महामंत्रो महायतिः ।
महानादो महाघोषो महेज्यो महसां पतिः ॥३॥
महाध्वरधरो धुर्यो महौदार्यो महेष्टवाक् ।
महात्मा महसां धाम महर्षिर्महितोदयः ॥४॥
महाक्लेशांकुशः शूरो महाभूतपतिर्गुरुः ।
महापराक्रमोऽनंतो महाक्रोधरिपुर्वशी ॥५॥
महाभवाब्धिसंतारी महामोहाद्रिसूदनः ।
महागुणाकरः क्षांतो महायोगीश्वरः शमी ॥६॥
महाध्यानपतिर्ध्याता महाधर्मो महाव्रतः ।
महाकर्मारिहात्मज्ञो महादेवो महेशिता ॥७॥
सर्वक्लेशापहः साधुः सर्वदोषहरो हरः ।
असंख्येयोऽप्रमेयात्मा शमात्मा प्रशमाकरः ॥८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सर्वयोगीश्वरोऽचिंत्यः श्रुतात्मा विष्टरश्रवाः ।
दांतात्मा दमतीर्थेशो योगात्मा ज्ञानसर्वगः ॥९॥
प्रधानमात्मा प्रकृतिः परमः परमोदयः ।
प्रक्षीणबंधः कामारिः क्षेमकृत्क्षेमशासनः ॥१०॥
प्रणवः प्रणयः प्राणः प्राणदः प्रणतेश्वरः ।
प्रमाणं प्रणिधिर्दक्षो दक्षिणोऽध्वर्युरध्वरः ॥११॥
आनंदो नंदनो नंदो वंद्योऽनिंद्योऽभिनंदनः ।
कामहा कामदः काम्यः कामधेनुररिञ्जयः ॥१२॥

इति महामुन्यादिशतम् ॥६॥

असंस्कृतसुसंस्कारः प्राकृतो चै कृतांतकृत् ।
अंतकृत्कांतिगुः कांतश्चिंतामणिरभीष्टदः ॥१॥
अजितो जितकामारिरमितोऽमितशासनः ।
जितक्रोधो जितामित्रो जितक्लेशो जितांतकः ॥२॥
जिनेंद्रः परमानन्दो मुनींद्रो दुन्दुभिस्वनः ।
महेंद्रवंद्यो योगींद्रो यतींद्रो नाभिनन्दनः ॥३॥
नाभेयो नाभिजोऽजातः सुव्रतो मनुरुत्तमः ।
अभेद्योऽनत्ययोऽनाश्वानधिकोऽधिगुरुः सुगीः ॥४॥
सुमेधो विक्रमी स्वामी दुराधर्षो निरुत्सुकः ।
विशिष्टः शिष्टभुक् शिष्टः प्रत्ययः कामनोऽनघः ॥५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षेमी क्षेमंकरोऽक्षय्यः क्षेत्रधर्मपतिः क्षमी ।
अग्राह्यो ज्ञाननिग्राह्यो ध्यानगम्यो निरुत्तरः ॥६॥

सुकृती धातुरिज्यार्हः सुनयश्चतुराननः ।
श्रीनिवासश्चतुर्वक्त्रश्चतुरास्यश्चतुर्मुखः ॥७॥

सत्यात्मा सत्यविज्ञानः सत्यवाक्सत्यशासनः ।
सत्याशीः सत्यसंधानः सत्यः सत्यपरायणः ॥८॥

स्थेयान्स्थवीयान्नेदीयान्दवीयान्दूरदर्शनः ।
अणोरणीयाननणुर्गुरुराद्यो गरीयसाम् ॥९॥

सदायोगः सदाभोगः सदातृप्तः सदाशिवः ।
सदागतिः सदासौख्यः सदाविद्यः सदोदयः ॥१०॥

सुघोषः सुमुखः सौम्यः सुखदः सुहितः सुहृत् ।
सुगुप्तो गुप्तिभृद्गोप्ता लोकाध्यक्षो दमीश्वरः ॥११॥

इति असंस्कृतादिशतम् ॥७॥

बृहन्बृहस्पतिर्वाग्मी वाचस्पतिरुदारधीः ।
मनीषी धिषणो धीमाञ्छेमुशीषो गिरांपतिः ॥१॥

नैकरूपो नयस्तुंगो नैकात्मा नैकधर्मकृत् ।
अविज्ञेयोऽप्रतर्क्यात्मा कृतज्ञः कृतलक्षणः ॥२॥

ज्ञानगर्भो दयागर्भो रत्नगर्भः प्रभास्वरः ।
पद्मगर्भो जगद्गर्भो हेमगर्भः सुदर्शनः ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लक्ष्मीवांस्त्रिदशाऽध्यक्षो दृढीयानिन ईशिता ।
मनोहरो मनोज्ञांगो धीरो गम्भीरशासनः ॥४॥
धर्मयूपो दयायागो धर्मनेमिर्मुनीश्वरः ।
धर्मचक्रायुधो देवः कर्महा धर्मघोषणः ॥५॥
अमोघवागमोघाज्ञो निर्मलोऽमोघशासनः ।
सुरूपः सुभगस्त्यागी समयज्ञः समाहितः ॥६॥
सुस्थितः स्वास्थ्यभाक्स्वस्थो नीरजस्को निरुद्धवः ।
अलेपो निष्कलंकात्मा वीतरागो गतस्पृहः ॥७॥
वश्येन्द्रियो वियुक्तात्मा निःसपत्नो जितेन्द्रियः ।
प्रशान्तोऽनन्तधामर्षिर्मंगलं मलहाऽनघः ॥८॥
अनीदृगुपमाभूतो दिष्टिर्दैवमगोचरः ।
अमूर्तो मूर्तिमानेको नैको नानैकतत्त्वदृक् ॥९॥
अध्यात्मगम्योऽगम्यात्मा योगविद्योगिवन्दितः ।
सर्वत्रगः सदाभावी त्रिकालविषयार्थदृक् ॥१०॥
शंकरः शंवदो दान्तो दमी क्षांतिपरायणः ।
अधिपः परमानन्दः परात्मज्ञः परात्परः ॥११॥
त्रिजगद्वल्लभोऽभ्यर्च्यस्त्रिजगमंगलोदयः ।
त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्रिस्त्रिलोकाग्रशिखामणिः ॥१२॥

इति वृहदादिशतम् ॥८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्रिकालदर्शी लोकेशो लोकधाता दृढव्रतः ।
सर्वलोकातिगः पूज्यः सर्वलोकैकसारथिः ॥१॥
पुराणपुरुषः पूर्वः कृतपूर्वांगविस्तरः ।
आदिदेवः पुराणाद्यः पुरुदेवोऽधिदेवता ॥२॥
युगमुख्यो युगज्येष्ठो युगादिस्थितिदेशकः ।
कल्याणवर्णः कल्याणः कल्यः कल्याणलक्षणः ॥३॥
कल्याणप्रकृतिर्दीप्तकल्याणात्मा विकल्मषः ।
विकलंकः कलातीतः कलिलघ्नः कलाधरः ॥४॥
देवदेवो जगन्नाथो जगद्बन्धुर्जगद्विभुः ।
जगद्धितैषी लोकज्ञः सर्वगो जगदग्रजः ॥५॥
चराचरगुरुर्गोप्यो गूढात्मा गूढगोचरः ।
सद्योजातः प्रकाशात्मा ज्वलज्ज्वलनसप्रभः ॥६॥
आदित्यवर्णो भर्माभः सुप्रभः कनकप्रभः ।
सुवर्णवर्णो रुक्माभः सूर्यकोटिसमप्रभः ॥७॥
तपनीयनिभस्तुंगो बालार्काभोऽनलप्रभः ।
संध्याभ्रबभ्रुर्हेमाभस्तप्तचामीकरप्रभः ॥८॥
निष्टप्तकनकच्छायः कनत्काञ्चनसन्निभः ।
हिरण्यवर्णः स्वर्णाभः शातकुम्भनिभप्रभः ॥९॥
द्युम्नाभो जातरूपाभो तप्तजाम्बूनदद्युतिः ।
सुधौतकलधौतश्रीः प्रदीप्तो हाटकद्युतिः ॥१०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिष्टेष्टः पुष्टिदः पुष्टः स्पष्टः स्पष्टाक्षरक्षमः ।
शत्रुघ्नोऽप्रतिघोऽमोघः प्रशास्ता शासिता स्वभूः ॥११॥
शान्तिनिष्ठा मुनिज्येष्ठः शिवतातिः शिवप्रदः ।
शान्तिदः शान्तिकृच्छान्तिः कांतिमान्कामितप्रदः ॥१२॥
श्रेयोनिधिरधिष्ठानमप्रतिष्ठः प्रतिष्ठितः ।
सुस्थिरः स्थावरः स्थाणुः प्रथीयान्प्रथितः पृथुः ॥१३॥

इति त्रिकालदर्श्यादिशतम् ॥६॥

दिग्वासा वातरशनो निर्ग्रन्थेशो निरम्बरः ।
निष्किञ्चनो निराशंसो ज्ञानचक्षुरमोमुहः ॥१॥
तेजोराशिरनन्तौजा ज्ञानाब्धिः शीलसागरः ।
तेजोमयोऽमितज्योतिर्ज्योतिर्मूर्तिस्तमोऽपहः ॥२॥
जगच्चूडामणिर्दीप्तः सर्वविघ्नविनायकः ।
कलिघ्नः कर्मशत्रुघ्नो लोकालोकप्रकाशकः ॥३॥
अनिद्रालुरतंद्रालुर्जागरूकः प्रमामयः ।
लक्ष्मीपतिर्जगज्ज्योतिर्धर्मराजः प्रजाहितः ॥४॥
मुमुक्षुर्बंधमोक्षज्ञो जिताक्षो जितमन्मथः ।
प्रशांतरसशैलूषो भव्यपेटकनायकः ॥५॥
मूलकर्ताखिलज्योतिर्मलघ्नो मूलकारणः ।
आप्तो वागीश्वरः श्रेयाञ्छ्रायसोक्तिर्निरुक्तवाक् ॥६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रवक्ता वचसामीशो मारजिद्विश्वभाववित् ।
सुतनुस्तनुनिर्मुक्तः सुगतो हतदुर्नयः ॥७॥
श्रीशः श्रीश्रितपादाब्जो वीतभीरभयंकरः ।
उत्सन्नदोषो निर्विघ्नो निश्चलो लोकवत्सलः ॥८॥
लोकोत्तरो लोकपतिर्लोकचक्षुरपारधीः ।
धीरधीर्बुद्धसन्मार्गः शुद्धः सूनृतपूतवाक् ॥९॥
प्रज्ञापारमितः प्राज्ञो यतिर्नियमितेंद्रियः ।
भदन्तो भद्रकृद्भद्रः कल्पवृक्षो वरप्रदः ॥१०॥
समुन्मूलितकर्मारिः कर्मकाष्ठाशुशुक्षणिः ।
कर्मण्यः कर्मठः प्रांशुर्हेयादेयविचक्षणः ॥११॥
अनन्तशक्तिरच्छेद्यस्त्रिपुरारिस्त्रिलोचनः ।
त्रिनेत्रस्त्र्यम्बकस्त्र्यक्षः केवलज्ञानवीक्षणः ॥१२॥
समंतभद्रः शांतारिर्धर्माचार्यो दयानिधिः ।
सूक्ष्मदर्शी जितानंगः कृपालुर्धर्मदेशकः ॥१३॥
शुभंयुः सुखसाद्भूतः पुण्यराशिरनामयः ।
धर्मपालो जगत्पालो धर्मसाम्राज्यनायकः ॥१४॥

इति दिग्वासादिशतम् ॥ १० ॥

इत्यष्टाधिकसहस्रनामावली समाप्ता ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धाम्नां पते तवामूनि नामान्यागमकोविदैः ।
समुच्चितान्यनुध्यायन्पुमान्पूतस्मृतिर्भवेत् ॥१॥
गोचरोऽपि गिरामासां त्वमवाग्गोचरो मतः ।
स्तोता तथाप्यसंदिग्धं त्वत्तोऽभीष्टफलं लभेत् ॥२॥
त्वमतोऽसि जगद्बन्धुस्त्वमतोऽसि जगद्भिषक् ।
त्वमतोऽसि जगद्धाता त्वमतोऽसि जगद्धितः ॥३॥
त्वमेकं जगतां ज्योतिस्त्वं द्विरूपोपयोगभाक् ।
त्वं त्रिरूपैकमुक्त्यंगं स्वोत्थानंतचतुष्टयः ॥४॥
त्वं पंचब्रह्मतत्त्वात्मा पंचकल्याणनायकः ।
षड्भेदभावतत्त्वज्ञस्त्वं सप्तनयसंग्रहः ॥५॥
दिव्याष्टगुणमूर्तिस्त्वं नवकेवललब्धिकः ।
दशावतारनिर्धार्यो मां पाहि परमेश्वर ॥६॥
युष्मन्नामावलीदृब्धविलसत्स्तोत्रमालया ।
भवंतं वरिवस्यामः प्रसीदानुग्रहाण नः ॥७॥
इदं स्तोत्रमनुस्मृत्य पूतो भवति भाक्तिकः ।
यः स पाठं पठत्येनं स स्यात्कल्याणभाजनम् ॥८॥
ततः सदेदं पुण्यार्थी पुमान्पठति पुण्यधीः ।
पौरूहूतीं श्रियं प्राप्तुं परमामभिलाषुकः ॥९॥
स्तुत्वेति मघवा देवं चराचरजगद्गुरुं ।
ततस्तीर्थविहारस्य व्याधात्प्रस्तावनामिमाम् ॥१०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्तुतिः पुण्यगुणोत्कीर्तिः स्तोता भव्यः प्रसन्नधीः ।
निष्ठितार्थो भवांस्तुत्यः फलं नैश्रेयसं सुखं ॥११॥

यः स्तुत्यो जगतां त्रयस्य न पुनः स्तोता स्वयं कस्यचित्
ध्येयो योगिजनस्य यश्च नितरां ध्याता स्वयं कस्यचित्
यो नेतृन् नयते नमस्कृतिमलं नंतव्यपक्षेक्षणः ।
स श्रीमान् जगतां त्रयस्य च गुरुर्देवः पुरुः पावनः ॥१२॥

तं देवं त्रिदशाधिपार्चितपदं घातिक्षयानंतरं,
प्रोत्थानंतचतुष्टयं जिनमिमं भव्याब्जनीनामिनम् ।
मानस्तंभविलोकनानतजगन्मान्यं त्रिलोकीपतिं,
प्राप्ताचिंत्यबहिर्विभूतिमनघं भक्त्या प्रवंदामहे ॥१३॥

इति श्रीजिनसहस्रनामस्तवनं समाप्तम् ।

—❁—

श्रीमानतुङ्गाचार्यविरचितं

भक्तामरस्तोत्रम् ।

भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा,
मुद्योतकं दलितपापतमोवितानं
सम्यक्प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा,
वालंबनं भवजले पततां जनानां ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधादुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुर-लोकनाथैः। स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः स्तोष्ये किलाह-मपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥२॥ बुद्ध्या विनापि विबुधा-र्चितपादपीठ, स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहं। बालं विहाय जलसंस्थितमिंदुबिम्बमन्यःक इच्छति जनः सहसा गृहीतुम् ॥३॥ वक्तुं गुणान्गुणसमुद्र शशांककांतान् कस्ते क्षमःसुरगुरुप्रतिमो-ऽपि बुद्धया। कल्पांतकालपवनोद्धतनक्रचक्रं, को वा तरीतु-मलमंबुनिधिं भुजाभ्यां ॥४॥ सोऽहं तथापि तव भक्ति-वशान्मुनीश, कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः। प्रीत्यात्म-वीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं, नाभ्येति किं निजशिशोः परि-पालनार्थम् ॥५॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम, त्वद्भक्ति-रेव मुखरीकुरुते बलान्माम्। यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चाम्रचारुकलिकानिकरैकहेतु ॥६॥ त्वत्संस्तवेन भवि-संततिसंनिबद्धं पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम्। आक्रांत-लोकमलिनीलमशेषमाशु सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमंधकारम् ॥७॥ मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद-मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात्। चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु मुक्ताफलद्युति-मुपैति ननूदबिंदुः ॥८॥ आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्त दोषं त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति। दूरे सहस्रकिरणः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुरुते प्रभैव, पद्माकरेषु जलजानि विकासभांजि ॥९॥
नात्यद्भुतं भुवनभूषण भूतनाथ, भूतैर्गुणैर्भुवि भवंतमभि
ष्टुवन्तः। तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा, भूत्याश्रि
य इह नात्मसमं करोति ॥१०॥ दृष्ट्वा भवंतमनिमेषविलोक
नीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः। पीत्वा पयः शशि
करद्युतिदुग्धसिन्धोः, क्षारं जलं जलनिधेरसितुं क इच्छेत् ॥११
यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैक
ललामभूत। तावंत एव खलु ते ऽप्यणवः पृथिव्यां, यत्
समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥१२॥ वक्त्रं क्व ते सुर
नरोरगनेत्रहारि, निश्शेषनिर्जितजगत्त्रियोपमानम्। बिम्
कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य, यद्वासरे भवति पाण्डुपलाश
कल्पम् ॥१३॥ सम्पूर्णमण्डलशशांक कलाकलाप, शुभ्
गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयन्ति। ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर
नाथमेकं, कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ॥१४॥ चि
किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभिर्नीतं मनागपि मनो
विकारमार्गम्। कल्पांतकालमरुता चलिताचलेन, किं मन्
राद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥१५॥ निर्धूमवर्तिरपवर्जित
तैलपूरः, कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि। गम्यो
जातु मरुतां चलिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्
प्रकाशः ॥१६॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति । नाम्भोधरोदरनिरुद्ध-
महाप्रभावः, सूर्यातिशायिमहिमासि मुनीन्द्र लोके ॥१७॥
नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं, गम्यं न राहुवदनस्य न
वारिदानाम् । विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति-विद्योत-
यज्जगदपूर्वशशांकबिम्बम् ॥१८॥ किं शर्वरीषु शशिनान्हि
विवस्वता वा युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमःसु नाथ । निष्पन्नशालि-
वनशालिनि जीवलोके कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥१९॥
ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरादिषु
नायकेषु । तेजो महामणिषु याति यथा महत्वं, नैवं तु काच-
शकले किरणाकुलेऽपि ॥२०॥ मन्ये वरं हरिहरादय एव
दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति । किं वीक्षितेन भवता
भुवि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ भवान्तरेऽपि
॥२१॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्, नान्या
सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता । सर्वा दिशो दधति भानि सह-
स्त्ररश्मि, प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥२२॥
त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-मादित्यवर्णममलं तमसः
पुरस्तात् । त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं, नान्यः
शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र पंथाः ॥२३॥ त्वामव्ययं विभु-
मचिन्त्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥२४॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रयशंकरत्वात्। धातासि धीर शिवमार्गविधेर्विधानाद्, व्यक्तं त्वमेव भगवन्पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ, तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय। तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय, तुभ्यं नमो जिन भवोदधिशोषणाय ॥२६॥ को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषैस्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश। दोषैरुपात्तविविधाश्रय जातगर्वैः, स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥२७॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख-माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम्। स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं, बिम्बं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥२८॥ सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्। बिम्बं वियद्विलसदंशुलतावितानं, तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥२९॥ कुन्दावदातचलचामरचारुशोभं, विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम्। उद्यच्छशाङ्कशुचिनिर्झरवारिधारमुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥३०॥ छत्रत्रयं तव विभाति शशाङ्ककान्त-मुच्चैःस्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम्। मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं, प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वर-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्वम् ॥३१॥ गम्भीरताररवपूरितदिग्विभागस्त्रैलोक्य-लोकशुभसङ्गमभूतिदक्षः । सद्धर्मराजजयघोषणघोषकः सन्खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी ॥३२॥ मन्दारसुन्दरनमेरुसुपारिजात-सन्तानकादिकुसुमोत्करवृष्टिरुद्धा । गन्धोदबिन्दुशुभमन्दमरुत्प्रपाता दिव्या दिवः पतति ते वयसां ततिर्वा ॥३३॥ शुम्भत्प्रभावलयभूरिविभा विभोस्ते, लोकत्रये द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती । प्रोद्यद्दिवाकरनिरन्तरभूरिसंख्या दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोमसौम्याम् ॥३४॥ स्वर्गापवर्गगममार्गविमार्गणेष्टः । सद्धर्मतत्त्वकथनैकपटुस्त्रिलोक्याः दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थसर्व-भाषास्वभावपरिणामगुणप्रयोज्यः ॥३५॥ उन्निद्रहेमनवपङ्कजपुञ्जकान्ती, पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ । पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र धत्तः, पद्मानि तत्र विबुधा परिकल्पयन्ति ॥३६॥ इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र ! धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य । यादृक्प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा, तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकासिनोऽपि ॥३७॥ श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल-मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् । ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥३८॥ भिन्नेभकुंम्भगलदुज्ज्वलशोणिताक्तमुक्ताफल-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकरभूषितभूमिभागः। बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥३९॥ कल्पान्तकाल-पवनोद्धतवन्हिकल्पं, दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम्। विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं, त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥४०॥ रक्तेक्षणं समदकोकिलकण्ठनीलं क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम्। आक्रामति क्रमयुगेण निरस्तशंकस्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥४१॥ वल्गत्तुरंगगजगर्जितभीमनाद-माजौ बलं बलवतामपि भूप-तीनाम्। उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं, त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥४२॥ कुन्ताग्रभिन्नगजशोणितवारि-वाह-वेगावतारतरणातुरयोधभीमे। युद्धे जयं विजितदुर्जय-जेयपक्षास्त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥४३॥ अम्भो-निधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र-पाठीनपीठभयदोल्वणवाडवाग्नौ। रङ्गत्तरङ्गशिखरस्थितयानपात्रास्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्व्रजन्ति ॥४४॥ उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्नाः शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः। त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहा, मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥४५॥ आपाद कण्ठमुरुशृङ्खलवेष्टिताङ्गाः, गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघाः त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजा स्मरन्तः, सद्यः स्वयं विगतब

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न्धभया भवन्ति ॥४६॥ मत्तद्विपेन्द्रमृगराजदवानलाहि-संग्रामवारिधिमहोदरबन्धनोत्थम् । तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४७॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धां, भक्त्या मया विविधवर्णविचित्रपुष्पाम् । धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥४८॥

इति श्रीमानतुङ्गाचार्यविरचितं भक्तामरस्तोत्रम् ।

—※—

श्रीकुमुदचन्द्रप्रणीतं

कल्याणमन्दिरस्तोत्रम् ।

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि---भीताभयप्रदमनिन्दितमंघ्रिपद्मम् । संसारसागरनिमज्जदशेषजन्तु-पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥१॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम् । तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतोस्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥२॥ (युग्मम्) सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूपमस्मादृशाः कथमधीश भवन्त्यधीशाः । धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो, रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ मर्त्यो, नूनं गुणान्गणयितुं तव क्षमेत । कल्पान्तवान्तपयसः प्रकटोऽपि यस्मा- मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥४॥ अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ जडाशयोऽपि, कर्तुं स्तवं लसदसंख्यगुणाक- रस्य । बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य, विस्तीर्णं कथयति स्वधियाम्बुराशेः ॥५॥ ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश, वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः । जा- तदेवमसमीक्षितकारितेयं, जल्पन्ति वा निजगिरा न- पक्षिणोऽपि ॥६॥ आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन संस्तवस्ते नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति । तीव्रातपोपहतपान्- न्थजनान्निदाघे, प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥७॥ हृद्वर्तिनि त्वयि विभो शिथिलीभवन्ति, जन्तोः क्षणे- निविडा अपि कर्मबन्धाः । सद्यो भुजङ्गममया इव मध्य- भाग-मभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य ॥८॥ मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र, रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षि- तेऽपि । गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवा- शु पशवः प्रपलायमानैः ॥९॥ त्वं तारको जिन कथं भविनां त एव, त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः । यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून-मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥१०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इयां विधाय, दुःखांकुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥३९॥
निःसंख्यसारशरणं शरणं शरण्य-मासाद्य सादितरिपुप्रथि-
ावदानम् । त्वत्पादपङ्कजमपि प्रणिधानवन्ध्यो, वन्ध्योऽस्मि
द्भुवनपावन हा हतोऽस्मि ॥४०॥ देवेन्द्रवन्द्य विदिता-
खिलवस्तुसार, संसारतारक विभो भुवनाधिनाथ । त्रायस्व
व करुणाह्रद मां पुनीहि, सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बु-
राशे; ॥४१॥ यद्यस्ति नाथ भवदंघ्रिसरोरुहाणां, भक्तेः
फलं किमपि सन्ततसंचितायाः । तन्मे त्वदेकशरणस्य
रण्य भूयाः, स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥४२॥
इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र, सान्द्रोल्लसत्पुलक-
कञ्चुकिताङ्गभागाः त्वद्बिम्बनिर्मलमुखाम्बुजबद्धलक्ष्या,
ो संस्तवं तव विभो रचयन्ति भव्याः ॥४३॥ जननयन-
कुमुदचन्द्र, प्रभास्वराः स्वर्गसम्पदो भुक्त्वा । ते विग-
लितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥४४॥

इति कल्याणमन्दिरस्तोत्रम्

श्री वादिराजप्रणीतं

एकीभावस्तोत्रम्

एकीभावं गत इव मया यः स्वयं कर्मबन्धो, घोरं
खं भवभवगतो दुर्निवारः करोति । तस्याप्यस्य त्वयि जिन-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रवे भक्तिरुन्मुक्तये चेज्जेतुं शक्यो भवति न तया कोऽपरस्
स्तापहेतुः ॥१॥ ज्योतीरूपं दुरितनिवहध्वान्तविध्वंसहेतुं
त्वामेवार्हुर्जिनवर चिरं तत्त्वविद्याभियुक्ताः । चेतोवासे भव
च मम स्फारमुद्भासमानस्तस्मिन्नंहः कथमिव तमो वस्तुव
वस्तुमीष्टे ॥२॥ आनन्दाश्रुस्नपितवदनं गद्गदं चाभिजल्प
यश्चायेत त्वयि दृढमनाः स्तोत्रमन्त्रैर्भवन्तम् । तस्याभ्यस्त
दपि च सुचिरं देहवल्मीकमध्यान्निष्कास्यन्ते विविधविषम
व्याधयः काद्रवेयाः ॥३॥ प्रागेवेह त्रिदिवभवनादेष्यत
भव्यपुण्यात्, पृथ्वीचक्रं कनकमयतां देव निन्ये त्वयेदं
ध्यानद्वारं मम रुचिकरं स्वान्तगेहं प्रविष्टस्तत्किं चित्रं
वपुरिदं यत्सुवर्णीकरोषि ॥४॥ लोकस्यैकस्त्वमसि भ
वन्निर्निमित्तेन बन्धुस्त्वय्येवासौ सकलविषया शक्तिरप्रा
नोका । भक्तिस्फीतां चिरमधिवसन्मामिकां चित्तशय्यां
मय्युत्पन्नं कथमिव ततः क्लेशयूथं सहेथाः ॥५॥ जन्म
टव्यां कथमपि मया देव दीर्घं भ्रमित्वा, प्राप्तैवेयं तव
कथा स्फारपीयूषवापी । तस्या मध्ये हिमकरहिमव्यूह
नितान्तं, निर्मग्नं मां न जहति कथं दुःखदावोपतापाः ॥
पादन्यासादपि च पुनतो यात्रया ते त्रिलोकीं, हेमाभ
भवति सुरभिः श्रीनिवासश्च पद्मः । सर्वाङ्गेण स्पृशति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वंस्त्वय्यशेषं मनो मे, श्रेयः किं तत्स्वयमहरहर्यन्न मामभ्यु-
पैति ॥७॥ पश्यन्तं त्वद्वचनममृतं भक्तिपात्र्या पिबन्तं,
कर्मारण्यात्पुरुषमसमानन्दधाम प्रविष्टम् । त्वां दुर्वारस्मर-
मदहरं त्वत्प्रसादैकभूमिं, क्रूराकाराः कथमिव रुजाकण्टका
निर्लुठन्ति ॥८॥ पाषाणात्मा तदितरसमः केवलं रत्नमूर्ति-
र्मानस्तम्भो भवति च परस्तादृशो रत्नवर्गः । दृष्टिप्राप्तो
हरति स कथं मानरोगं नराणां, प्रत्यासत्तिर्यदि न भवत-
स्तस्य तच्छक्तिहेतुः ॥९॥ हृद्यः प्राप्तो मरुदपि भवन्मूर्ति-
शैलोपवाही, सद्यः पुन्सां निरवधिरुजाधूलिबन्धं धुनोति ।
ध्यानाहूतो हृदयकमलं यस्य तु त्वं प्रविष्टस्तस्याशक्यः क
इह भुवने देवलोकोपकारः ॥१०॥ जानासि त्वं मम भव-
भवे यच्च यादृक्च दुःखं, जातं यस्य स्मरणमपि मे
शस्त्रवन्निष्पिनष्टि । त्वं सर्वेशः सकृप इति च त्वामुपेतो-
ऽस्मि भक्त्या, यत्कर्तव्यं तदिह विषये देव एव प्रमाणम् ॥११॥
आपद्दैवं तव नुतिपदैर्जीवकेनोपदिष्टैः, पापाचारी मरण-
समये सारमेयोऽपि सौख्यम् । कः संदेहो यदुपलभते
वासवश्रीप्रभुत्वं, जल्पञ्जाप्यैर्मणिभिरमलैस्त्वन्नमस्कारचक्रम्
॥१२॥ शुद्धे ज्ञाने शुचिनि चरिते सत्यपि त्वय्यनीचा,
भक्तिर्नो चेदनवधिसुखावञ्चिका कुञ्चिकेयम् । शक्योद्घाटं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भवति हि कथं मुक्तिकामस्य पुन्सो, मुक्तिद्वारं परिदृढम
मोहमुद्राकवाटम् ॥१२॥ प्रच्छन्नः खल्वयमघमयैरन्धका
समन्तात्, पन्था मुक्तेः स्थपुटितपदः क्लेशगर्तैरगाधै
तत्कस्तेन व्रजति सुखतो देव तत्त्वावभासी, यद्यग्रेऽपि
भवति भवद्भारतीरत्नदीपः ॥१४॥ आत्मज्योतिर्निधिरनवा
द्रष्टुरानन्दहेतुः, कर्मक्षोणीपटलपिहितो योऽनवाप्यः
षाम्। हस्ते कुर्वन्त्यनतिचिरतस्तं भवद्भक्तिभाजः, स्त
बन्धप्रकृतिपुरुषोद्दामधात्रीखनित्रैः ॥१५॥ प्रत्युत्पन्ना
हिमगिरेरायताचामृताब्धेः, या देव त्वत्पदकमलयोः स
भक्तिगङ्गा। चेतस्तस्यां मम रुचिवशादाप्लुतं क्षालित
कल्माषं यद्भवति किमियं देव संदेहभूमिः ॥१६॥
भूत स्थिरपदसुख त्वामनुध्यायतो मे, त्वय्येवाहं स
मतिरुत्पद्यते निर्विकल्पा। मिथ्यैवेयं तदपि तनुते तृ
श्लेषरूपां, दोषात्मनोऽप्यभिमतफलास्त्वत् प्रसादाद्भ
॥१७॥ मिथ्यावादं मलमपनुदन्सप्तभङ्गीतरंगैर्वागम्भोधि
वनमखिलं देव पर्येति यस्ते। तस्यावृत्तिं सपदि वि
श्चेतसैवाचलेन, व्यातन्वन्तः सुचिरममृतासेवया तृप्नु
॥१८॥ आहार्येभ्यः स्पृहयति परं यः स्वभावादहृद्यः,
ग्राही भवति संततं वैरिणा यश्च शक्यः। सर्वाङ्गेषु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्मिन्हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः, सोऽपि त्वया रतिपतिः
पितः क्षणेन । विध्यापिता हुतभुजः पयसाथ येन, पीतं
किं तदपि दुर्धरवाडवेन ॥११॥ स्वामिन्ननल्पगरिमाण-
पि प्रपन्नास्, त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः ।
न्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन, चिन्त्यो न हन्त महतां
दि वा प्रभावः ॥१२॥ क्रोधस्त्वया यदि विभो प्रथमं
रस्तो, ध्वस्तास्तदा वद कथं किल कर्मचौराः । प्लोष-
मुत्र यदि वा शिशिरापि लोके, नीलद्रुमाणि विपिनानि
किं हिमानी ॥१३॥ त्वां योगिनो जिन सदा परमात्म-
प-मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुजकोषदेशे । पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि
किमन्य-दक्षस्य सम्भवपदं ननु कर्णिकायाः ॥१४॥
ानाज्जिनेश भवतो भविनः क्षणेन, देहं विहाय परमा-
दशां व्रजन्ति । तीव्रानलादुपलभावमपास्य लोके,
ामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदाः ॥१५॥ अन्तः सदैव
न यस्य विभाव्यसे त्वं, भव्यैः कथं तदपि नाशयसे
रीरस् । एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्तिनो हि, यद्विग्रहं प्रशम-
न्ति महानुभावाः ॥१६॥ आत्मा मनीषिभिरयं त्वद-
दबुद्ध्या, ध्यातो जिनेन्द्र भवतीह भवत्प्रभावः । पानी-
मप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं, किं नाम नो विषविकारम-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाकरोति ॥१७॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि, नूनं
विभो हरिहरादिधिया प्रपन्नाः । किं काचकामलिभिरी
सितोऽपि शङ्खो, नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥१
धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा-दास्तां जनो भवति ते त
रप्यशोकः । अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि, किं
विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥१९॥ चित्रं विभो कथ
वाङ्मुखवृन्तमेव, विष्वक्पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः । त्व
गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश ! गच्छन्ति नूनमध
हि बन्धनानि ॥२०॥ स्थाने गभीरहृदयोदधिसम्भवा
पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति । पीत्वा यतः पर
मदसंगभाजो, भव्या व्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वम् ॥२
स्वामिन्सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो, मन्ये वदन्ति शु
सुरचामरौघाः । येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुङ्गवाय,
नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥२२॥ श्यामं गभीरगि
मुज्ज्वलहेमरत्न-सिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्त्वा
आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चैश्चामीकराद्रिशिरसीव
वाम्बुवाहम् ॥२३॥ उद्गच्छता तव शितिद्युतिमण्ड
लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव । सांनिध्यतोऽपि यदि
तव वीतराग ! नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि ॥२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भो भोः प्रमादमवधूय भजध्वमेन-मागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति
सार्थवाहम् । एतन्निवेदयति देव जगत्त्रयाय, मन्ये नद-
न्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते ॥२५॥ उद्द्योतितेषु भवता
भुवनेषु नाथ, तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः । मुक्ता-
कलापकलितोरुसितातपत्र-व्याजात्त्रिधाधृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः
॥२६॥ स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिण्डितेन, कान्तिप्रतापयश-
सामिव संचयेन । माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन, साल-
त्रयेण भगवन्नभितो विभासि ॥२७॥ दिव्यस्रजो जिन
नमत्त्रिदशाधिपाना-मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबन्धान् ।
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वापरत्र, त्वत्सङ्गमे
सुमनसो न रमन्त एव ॥२८॥ त्वं नाथ
जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोऽपि, यत्तारयस्यसुमतो निज पृष्ठ-
लग्नान् । युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव, चित्रं विभो
यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥२९॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक
दुर्गतस्त्वं, किंवाक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश । अज्ञानवत्यपि
सदैव कथंचिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकासहेतु ॥३०॥
प्राग्भारसम्भृतनभांसि रजांसि रोषा-दुत्थापितानि कमठेन
शठेन यानि । छायापि तैस्तव न नाथ हता हताशो,
ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥३१॥ यद्गर्जदूर्जित-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घनौघमदभ्रभीम-भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारम् । दैत्ये
मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे, तेनैव तस्य जिन दुस्तरवा
कृत्यम् ॥३२॥ ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुण्ड-प्रालं
भृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः । प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरि
यः, सोऽस्याभवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः ॥३३॥ धन्या
एव भुवनाधिप ये त्रिसन्ध्य-माराधयन्ति विधिवद्विधुता
कृत्याः । भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः, पादद्वयं
विभो भुवि जन्मभाजः ॥३४॥ अस्मिन्नपार भववारि
मुनीश, मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि । आकर्णि
तु तव गोत्रपवित्रमन्त्रे, किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति ॥३
जन्मांतरेऽपि तव पादयुगं न देव, मन्ये मया महितमीहि
दानदक्षम् । तेनेह जन्मनि मुनीश ! पराभवानां, ज
निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥३६॥ नूनं न मोहतिमि
वृतलोचनेन, पूर्वं विभो सकृदपि प्रविलोकितोऽसि । मर्म
विधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः, प्रोद्यत्प्रबन्धगतयः कथम
थैते ॥३७॥ आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽ
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या । जातोऽस्मि
जनबान्धव दुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलंति न भा
शून्याः ॥३८॥ त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल हे शर
कारुण्यपुण्यवसते वशिनां वरेण्य । भक्त्या नते मयि म

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्ववृद्धिनिःश्वासनिमेषभाजि, प्रत्यक्षमात्मानुभवेऽपि मूढः ।
किं चाखिलज्ञेयविवर्तिबोध-स्वरूपमध्यक्षमवैति लोकः ॥२२॥
तस्यात्मजस्तस्य पितेति देवः त्वां येऽवगायन्ति कुलं प्रकाश्य ।
तेऽद्यापि नन्वाश्मनमित्यवश्यं, पाणौ कृतं हेम
पुनस्त्यजन्ति ॥२३॥ दत्तस्त्रिलोक्यां पटहोऽभिभूताः,
सुरासुरास्तस्य महान्स लाभः । मोहस्य मोहस्त्वयि को
विरोद्धुर्मूलस्य नाशो बलवद्विरोधः ॥२४॥ मार्गस्त्वयैको
दद्दशे विमुक्तेश्चतुर्गतीनां गहनं परेण । सर्वं मया दृष्टमिति
स्मयेन त्वं मा कदाचिद्भुजमालुलोके ॥२५॥ स्वर्भानुर-
र्कस्य हविर्भुजोऽम्भः, कल्पान्तवातोम्बुनिधेर्विघातः । संसार-
भोगस्य वियोगभावो विपक्षपूर्वाभ्युदयास्त्वदन्ये ॥२६॥
अजानतस्त्वां नमतः फलं यत्तज्ज्ञानतोऽन्यं न तु देवतेति । हरि-
न्मणिं काचधिया दधानस्तं तस्य बुद्ध्या वहतो न रिक्तः ॥२७॥
प्रशस्तवाचश्चतुराः कषायैः, दग्धस्य देवव्यवहारमाहुः ।
गतस्य दीपस्य हि नन्दितत्वं, दृष्टं कपालस्य च मङ्गलत्वम्
॥२८॥ नानार्थमेकार्थमदस्त्वदुक्तं, हितं वचस्ते निशमय्य
वक्तुः । निर्दोषतां के न विभावयन्ति, ज्वरेण मुक्तः सुगमः
स्वरेण ॥२९॥ न क्वापि वाञ्छा ववृते च वाक्ते, काले
क्वचित्कोऽपि तथा नियोगः । न पूरयाम्यम्बुधिमित्युदंशुः,
स्वयं हि शीतद्युतिरभ्युदेति ॥३०॥ गुणा गभीराः परमाः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रसन्ना, बहुप्रकारा बहवस्तवेति । दृष्टोऽयमन्तः स्तवेन च
तेषां, गुणो गुणानां किमतः परोऽस्ति ॥३१॥ स्तुत्या
परं नाभिमतं हि भवत्या, स्मृत्या प्रणत्या च ततो भजामि
स्मरामि देवं प्रणमामि नित्यं, केनाप्युपायेन फलं
साध्यम् ॥३२॥ ततस्त्रिलोकीनगराधिदेवं, नित्यं परं ज्योति
रनन्तशक्तिम् । अपुण्यपापं परपुण्यहेतुं, नमाम्यहं वन्द्य
वन्दितारम् ॥३३॥ अशब्दमस्पर्शमरूपगन्धं, त्वां नीर
तद्विषयावबोधम् । सर्वस्य मातारममेयमन्यैर्जिनेन्द्रमस्मार्य
नुस्मरामि ॥३४॥ अगाधमन्यैर्मनसाऽप्यलंघ्यं, निष्किंचनं
र्थितमर्थवद्भिः । विश्वस्य पारं तमदृष्टपारं, पतिं जिनानां शरणं
व्रजामि ॥३५॥ त्रैलोक्यदीक्षागुरवे नमस्ते, यो वर्धमानोऽपि
निजोन्नतोऽभूत् । प्राग्गण्डशैलः पुनरद्रिकल्पः, पश्चान्न
मेरुः कुलपर्वतोऽभूत् ॥३६॥ स्वयं प्रकाशस्य दिवा निशा
वा, न बाध्यता यस्य न बाधकत्वम् । न लाघवं गौरवमेकरूपं
वन्दे विभुं कालकलामतीतम् ॥३७॥ इति स्तुतिं देव विधाय
दैन्याद्वरं न याचे त्वमुपेक्षकोऽसि । छाया तरुं संश्रयतः
स्वतः स्यात्, कश्छायया याचितयात्मलाभः ॥३८॥
अथास्ति दित्सा यदि वोपरोधस्त्वय्येव सक्तां दिश भक्ति
बुद्धिम् । करिष्यते देव तथा कृपां मे को वात्मपोष्ये
सुमुखो न सूरिः ॥३९॥ वितरति विहिता यथा कथं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चिज्जिन विनताय मनोषितानि भक्तिः। त्वयि नुतिविषया
र्नविशेषाद्दिशनि सुखानि यशो धनं जयं च ॥ ४० ॥

इति श्रीधनंजयकृतं विषापहारस्तोत्रम्।

श्री भूपालकविप्रणीता

जिनचतुर्विंशतिका

श्रीलीलायतनं महीकुलगृहं कीर्तिप्रमोदास्पदं, वाग्देवी-रतिकेतनं जयरमाक्रीडानिधानं महत्। सः स्यात्सर्वमहोत्सवैकभवनं यः प्रार्थितार्थप्रदं प्रातः पश्यति कल्पपादपदलच्छायं जिनांघ्रिद्वयम्। ॥१॥ शान्तं वपुः श्रवणहारि वचश्चरित्रं, सर्वोपकारि तव देव ततः श्रुतज्ञाः। संसारमारवमहास्थलरुद्रसान्द्र-च्छायामहीरुह भवन्तमुपाश्रयन्ते ॥२॥ त्वामिन्नद्य विनिर्गतोऽस्मि जननीगर्भान्धकूपोदरा-दद्योद्घाटितदृष्टिरस्मि फलवज्जन्मास्मि चाद्य स्फुटम्। त्वामद्राक्षमहं यदक्षयपदानन्दाय लोकत्रयीनेत्रेन्दीवरकाननेन्दुममृतस्यन्दिप्रभाचन्द्रिकम् ॥ ३ ॥ निःशेषत्रिदशेन्द्रशेखरशिखारत्नप्रदीपावली——-सान्द्रीभूतमृगेन्द्रविष्टरतटीमाणिक्यदीपावलिः। क्वेयं श्रीः क्व च निःस्पृहत्व मिदमित्यूहातिगस्त्वा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दृशः, सर्वज्ञानदृशश्चरित्रमहिमा लोकेश लोकोत्तरः ॥ ४ ॥
राज्यं शासनकारिनाकपति यत्त्यक्तं तृणावज्ञया, हेलानिर्द
लतत्रिलोकमहिमा यन्मोहमल्लो जितः । लोकालोकमपि स्व
बोधमुकुरस्यान्तः कृतं यत्त्वया, सैषाऽऽश्चर्यपरम्परा जिन
वर क्वान्यत्र संभाव्यते ॥ ५ ॥ दानं ज्ञानधनाय दत्तमस
कृत्पात्राय सद्वृत्तये, चीर्णान्युग्रतपांसि तेन सुचिरं पूजाश्च
बह्व्यः कृताः । शीलानां निचयः सहामलगुणैः सर्वः स
मासादितो, दृष्टस्त्वं जिन येन दृष्टिसुभगः श्रद्धापरेण क्षण
॥ ६ ॥ प्रज्ञापारमितः स एव भगवान्पारं स एव श्रुतस्क
न्धाब्धेर्गुणरत्नभूषण इति श्लाघ्यः स एव ध्रुवम्
नीयन्ते जिन येन कर्णहृदयालंकारतां त्वद्गुणाः, संसारा
हिविषापहारमणयस्त्रैलोक्यचूडामणे ॥ ७ ॥ जयति दिवि
जवृन्दान्दोलितैरिन्दुरोचिर्निचयरुचिभिरुच्चैश्चामरैर्वीज्यमा-
नः । जिनपतिरनुरज्यन्मुक्तिसाम्राज्यलक्ष्मी-युवतिनवकटाक्ष
क्षेपलीलां दधानैः ॥ ८ ॥ देवः श्वेतातपत्रत्रयचमरिरुह
शोकभाश्चक्रभाषा-पुष्पौघासारसिंहासनसुरपटहैरष्टभिः प्रा
तिहार्यैः । साश्चर्यैर्भ्राजमानः सुरमनुजसभाम्भोजिनीभा
माली, पायान्नः पादपीठीकृत-सकलजगत्पादमौलिर्जिनेन्द्र
॥ ९ ॥ नृत्यत्स्वर्दन्तिदन्ताम्बुरुहवनटन्नाकनारीनिकाय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुभगस्त्वं न शक्यः परेषां, तत्किं भूषावसनकुसुमैः किं च शस्त्रैरुदस्त्रैः ॥१९॥ इन्द्रः सेवां तव सुकुरुतां किं तया श्लाघनं ते, तस्यैवेयं भवलयकरी श्लाघ्यतामातनोति । त्वं निस्तारी जननजलधेः सिद्धकान्तापतिस्त्वं, त्वं लोकानां प्रभुरिति तव श्लाघ्यते स्तोत्रमित्थम् ॥२०॥ वृत्तिर्वाचामपरसदृशी न त्वमन्येन तुल्यस्तुत्युद्गाराः कथमिव ततस्त्वय्यमी नः क्रमन्ते । मैवं भूवंस्तदपि भगवन्भक्तिपीयूषपुष्टास्ते भव्यानामभिमत-फलाः पारिजाता भवन्ति ॥२१॥ कोपावेशो न तव न तव क्वापि देव प्रसादो, व्याप्तं चेतस्तव हि परमो पेक्षयैवान-पेक्षम् । आज्ञावश्यं तदपि भुवनं संनिधिर्वैरहारी, क्वैवं भूतं भुवनतिलक ! प्राभवं त्वत्परेषु ॥२२॥ देव स्तोतुं त्रिदि-वगणिकामण्डलीगीतकीर्तिं, तोतूर्ति त्वां सकलविषय-ज्ञानमूर्तिं जनो यः । तस्य क्षेमं न पदमटतो जातु जोहूर्ति पन्थास्तत्त्वग्रन्थस्मरणविषये नैष मोमूर्ति मर्त्यः ॥२३॥ चित्ते कुर्वन्निरवधिसुखज्ञानदृग्वीर्यरूपं, देव त्वां यः समय-नियमादादरेण स्तवीति । श्रेयोमार्गं स खलु सुकृती तावता पूरयित्वा, कल्याणानां भवति विषयः पंचधा पंचि-तानाम् ॥२४॥ भक्तिप्रह्वमहेन्द्र-पूजितपद ! त्वत्कीर्तने न

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षमाः, सूक्ष्मज्ञानदृशोऽपि संयमभृतः के हन्त मन्द
वयम् । अस्माभिः स्तवनच्छलेन तु परस्त्वय्यादरस्तन्यते
स्वात्माधीनसुखैषिणां स खलु नः कल्याणकल्पद्रुमः
॥२५॥ वादिराजमनु शाब्दिकलोको, वादिराजमनु तार्कि
कसिंहः । वादिराजमनु काव्यकृतस्ते, वादिराजमनु भव्य
सहायः ॥२६॥

इति श्रीवादिराजकृतमेकीभावस्तोत्रम्

-- --

अथ श्रीधनञ्जयकविप्रणीतं

विषापहारस्तोत्रम् ।

स्वात्मस्थितः सर्वगतः समस्त-व्यापारवेदी विनिवृत्तसङ्गः
प्रवृद्धकालोऽप्यजरो वरेण्यः पायादपायात्पुरुषः पुराणः ॥१॥
परैरचिन्त्यं युगभारमेकः, स्तोतुं वहन्योगिभिरप्यशक्यः
स्तुत्योऽद्य मेऽसौ वृषभो न भानोः, किमप्रवेशे विशति प्रदीपः
तत्याज शक्रः शकनाभिमानं, नाहं त्यजामि स्तवनानुबन्धम्
स्वल्पेन बोधेन ततोऽधिकार्थं, वातायनेनेव निरूपयामि ॥
त्वं विश्वदृश्वा सकलैरदृश्यो, विद्वानशेषं निखिलैरवेद्यः
वक्तुं कियान्कीदृशमित्यशक्यः, स्तुतिस्ततोऽशक्तिकथा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिवास्तु ॥४॥ व्यापीडितं बालमिवात्मदोषैरुल्लाघतां लोक-
मवापिपस्त्वम् । हिताहितान्वेषणमान्द्यभाजः सर्वस्य
जन्तोरसि बालवैद्यः ॥५॥ दाता न हर्ता दिवसं विवस्वा-
नद्य श्व इत्यच्युतदर्शिताशः । सव्याजमेवं गमयत्यशक्तः
क्षणेन दत्सेऽभिमतं नताय ॥६॥ उपैति भक्त्या सुमुखः
सुखानि, त्वयि स्वभावाद्विमुखश्च दुःखम् । सदावदातद्यु-
तिरेकरूपस्तयोस्त्वमादर्श इवाऽवभासि ॥७॥ अगाध-
ताऽब्धेः स यतः पयोधिर्मेरोश्च तुङ्गा प्रकृतिः स यत्र ।
द्यावापृथिव्योः पृथुता तथैव, व्याप त्वदीया भुवनान्तराणि
॥८॥ तवानवस्था परमार्थतत्त्वं, त्वया न गीतः पुनरागमश्च ।
दृष्टं विहाय त्वमदृष्टमैषीर्विरुद्धवृत्तोऽपि समञ्जसस्त्वम् ॥९॥
स्मरः सुदग्धो भवतैव तस्मिन्नुद्धूलितात्मा यदि नाम
शम्भुः । अशेत वृन्दोपहतोऽपि विष्णुः, किं गृह्यते येन भवा-
नजागः ॥१०॥ स नीरजा स्यादपरोऽघवान्वा, तद्दोषकी-
र्त्यैव न ते गुणित्वम् । स्वतोऽम्बुराशेर्महिमा न देव,
स्तोकापवादेन जलाशयस्य ॥११॥ कर्मस्थिति जन्तुरनेक-
भूमिं, नयत्यमुं सा च परस्परस्य । त्वं नेतृभावं हि तयो-
र्भवाब्धौ, जिनेन्द्र नौनाविकयोरिवाख्यः ॥१२॥ सुखाय
दुःखानि गुणाय दोषान् धर्माय पापानि समाचरन्ति ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तैलाय बालाः सिकतासमूहं, निपीडयन्ति स्फुटमत्वदीय
॥१३॥ विषापहारं मणिमौषधानि, मन्त्रं समुद्दिश्य रसा
यनं च । भ्राम्यन्त्यहो न त्वमिति स्मरन्ति, पर्यायनामा
तवैव तानि ॥१४॥ चित्ते न किञ्चित्कृतवानसि त्वं, दे
कृतश्चेतसि येन सर्वम् । हस्ते कृतं तेन जगद्विचित्रं, सुखे
जीवत्यपि चित्तबाह्यः ॥१५॥ त्रिकालतत्त्वं त्वमवैस्त्रिलोकी
स्वामीति संख्या नियतेरमीषाम् । बोधाधिपत्यं प्रति ना
विष्यंस्तेऽन्येऽपि चेद्व्याप्स्यदमूनपीदम् ॥१६॥ नाकस्य
पत्युः परिकर्म रम्यं, नागम्यरूपस्य तवोपकारि । त
हेतुः स्वसुखस्य भानोरुद्बिभ्रतश्छत्रमिवादरेण ॥१
क्वोपेक्षकस्त्वं क्व सुखोपदेशः, स चेत् किमिच्छाप्रतिकूलवा
क्वासौ क्व वा सर्वजगत्प्रियत्वं, तन्नो यथातथ्यमवे
ते ॥१८॥ तुङ्गात्फलं यत्तदकिंचनाच्च, प्राप्यं समृद्ध
धनेश्वरादेः । निरम्भसोऽप्युच्चतमादिवाद्रेर्नैकापि निय
धुनी पयोधेः ॥१९॥ त्रैलोक्यसेवानियमाय दण्डं,
यदिन्द्रो विनयेन तस्य । तत्प्रातिहार्यं भवतः कुत
तत्कर्मयोगाद्यदि वा तवास्तु ॥२०॥ श्रिया परं प
साधु निःस्वः, श्रीमान्न कश्चित्कृपणं त्वदन्यः ।
प्रकाशस्थितमन्धकार-स्थायीक्षतेऽसौ न तथा तमःस्थम् ॥२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्यस्त्रैलोक्ययात्रोत्सवकरनिनदातोद्यमाद्यन्निलिम्पः। हस्ता-
म्भोजातलीलाविनिहितसुमनोद्दामरम्यामरस्त्री-काम्यः कल्या-
णपूजाविधिषु विजयते देव देवागमस्ते। ॥१०॥ चक्षुष्मान-
हमेव देव भुवने नेत्रामृतस्यन्दिनं, त्वद्वक्त्रेन्दुमतिप्रसाद-
सुभगैस्तेजोभिरुद्भासितम्। येनालोकयता मयाऽनतिचिरा-
च्चक्षुः कृतार्थीकृतं, द्रष्टव्यावधिवीक्षणव्यतिकरव्याजृम्भ-
माणोत्सवम् ॥११॥ कन्तोः सकान्तमपि मल्लमवैति कश्चि-
न्मुग्धो मुकुन्दमरविन्दजमिन्दुमौलिम्। मोघीकृतत्रिदशयो-
षिदपाङ्गपातस्तस्य त्वमेव विजयी जिनराजमल्लः ॥१२॥
किसलयितमनल्पं त्वद्विलोकाभिलाषात्कुसुमितमतिसान्द्रं
त्वत्समीपप्रयाणात्। मम फलितममन्दं त्वन्मुखेन्दोरिदानीं,
नयनपथमवाप्ताद्देव पुण्यद्रुमेण ॥१३॥ त्रिभुवनवनपुष्प्य-
त्पुष्पकोदण्डदर्पप्रसरदनवाम्भोमुक्तिसूक्तिप्रसूतिः। स जयति
जिनराजव्रातजीमूतसङ्घः, शतमखशिखिनृत्यारम्भनिर्बन्धब-
न्धुः ॥१४॥ भूपालः स्वर्गपालप्रमुखनरसुरश्रेणिनेत्रालिमा-
लालीलाचैत्यस्य चैत्यालयमखिलजगत्कौमुदीन्दोर्जिनस्य।
उत्तंसीभूतसेवाञ्जलि पुटनलिनीकुड्मलास्त्रिः परीत्य, श्रीपाद-
च्छाययापस्थितभवदवथुः संश्रितोऽस्मीव मुक्तिम् ॥१५॥
न त्वदंघ्रिनखमण्डलदर्पणेऽस्मिन्नघ्र्ये निसर्गरुचिरे चिर-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हृष्टवक्त्रः । श्रीकीर्तिकान्तिधृतिसङ्गमकारणानि, भव्यो
कानि लभते शुभमङ्गलानि ॥१६॥ जयति सुरनरेन्द्र
सुधानिर्झरिण्याः, कुलधरणिधरोऽयं जैनचैत्याभिरामः
प्रविपुलफलधर्मानोकहाग्रप्रवाल-प्रसरशिखरशुम्भत्केतनः श्री
निकेतः ॥ १७ ॥ विनमदमरकान्ताकुन्तलाक्रान्तकान्ति
स्फुरितनखमयूखद्योतिताशान्तरालः । दिविजमनुजराजव्रा
पूज्यक्रमाब्जो, जयति विजितकर्मारातिजालो जिने
॥ १८ ॥ सुप्तोत्थितेन सुमुखेन सुमङ्गलाय, द्रष्टव्यम
यदि मङ्गलमेव वस्तु । अन्येन किं तदिह नाथ तवैव व
त्रैलोक्यमङ्गलनिकेतनमीक्षणीयम् । ॥१९॥ त्वं धर्मोदय
पसाश्रमशुकस्त्वं काव्यबन्धक्रम-क्रीडानन्दनकोकिलस्त्व
चितः श्रीमल्लिकाषट्पदः । त्वं पुन्नागकथारविन्दसरस
सस्त्वमुत्तंसकैः, कैर्भूपाल न धार्यसे गुणमणिस्रङ्मालि
मौलिभिः ॥ २० ॥ शिवसुखमजरश्रीसङ्गमं चाभिल
स्वमभिनिगमयन्ति क्लेशपाशेन केचित् । वयमिह तु व
भूपतेर्भावयन्तस्तदुभयमपि शश्वल्लीलया निर्विशामः ॥२
देवेन्द्रास्तव मज्जनानि विदधुर्देवाङ्गना मङ्गलान्यापेठुः
दिन्दुनिर्मलयशो गन्धर्वदेवा जगुः । शेषाश्चापि यथा
गमखिलाः सेवां सुराश्चक्रिरे, तत्किं देव वयं विदध्म

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्चित्तं तु दोलायते ॥ २२ ॥ देव त्वज्जननाभिषेकसमये
मोञ्चसत्कञ्चुकैः, देवेन्द्रैर्यदनर्ति नर्तनविधौ लब्धप्रभावैः
कुटम् । किंचान्यत्सुरसुन्दरीकुचतटप्रान्तावनद्धोत्तम-प्रेङ्खद्व-
लकिनादझंकृतमहो तत्केन संवर्ण्यते ॥ २३ ॥ देव त्व-
तिबिम्बमम्बुजदलस्मेरेक्षणं पश्यतां, यत्रास्माकमहो महो-
वरसो दृष्टेरियान्वर्तते । साक्षात्तत्रभवन्तमीक्षितवतां क-
णकाले तदा, देवानामनिमेषलोचनतया वृत्तः स किं
र्ण्यते ॥ २४ ॥ दृष्टं धाम रसायनस्य महतां दृष्टं निधी-
पदं, दृष्टं सिद्धरसस्य सद्मसदनं दृष्टं च चिन्तामणेः ।
दृष्टेरथवानुषङ्गिकफलैरेभिर्मयाद्य ध्रुवं दृष्टं मुक्तिविवाह-
ङ्गलगृहं दृष्टे जिनश्रीगृहे ॥ २५ ॥ दृष्टस्त्वं जिनराजचन्द्र
कसद्भूपेन्द्रनेत्रोत्पलैः, स्नातं त्वन्नुतिचन्द्रिकाम्भसि भव-
द्वकोरोत्सवे । नीतश्चाद्य निदाघजः क्लमभरः शांति म-
गस्यते, देव त्वद्गतचेतसैव भवतो भूयात्पुनर्दर्शनम्
२६ ॥

इति जिनचतुर्विंशतिका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अकलंकस्तोत्रं

शार्दूलविक्रीडितछंदः।

त्रैलोक्यं सकलं त्रिकालविषयं सालोकमालोकितं, साक्षाद्येन यथा स्वयं करतले रेखात्रयं सांगुलि। रागद्वेषभयामयान्तकजरालोलत्वलोभादयो, नालं यत्पदलंघनाय स महादेवो मया वंद्यते॥ १॥ दग्धं येन पुरत्रयं शरभुवा तीव्रार्चिषा वह्निना, यो वा नृत्यति मत्तवत्पितृवने यस्यात्मजो वा गुहः। सोऽयं किं मम शंकरो भयतृषारोषार्तिमोहक्षयं, कृत्वा यः स तु सर्ववित्तनुभृतां क्षेमंकरः शंकरः॥ २॥ यत्नाद्येन विदारितं कररुहैर्दैत्येन्द्रवक्षःस्थलं, सारथ्येन धनंजयस्य समरे योऽमारयत्कौरवान्। नासौ विष्णुरनेककालविषयं यज्ज्ञानमव्याहतं, विश्वं व्याप्य विजृंभते स तु महाविष्णुः सदेष्टो मम॥ ३॥ उर्वश्यामुदपादि रागबहुलं चेतो यदीयं पुनः, पात्रींदंडकमंडलुप्रभृतयो यस्याकृतार्थस्थितिम्। आविर्भावयितुं भवंति स कथं ब्रह्मा भवेन्मादृशां, क्षुत्तृष्णाश्रमरागरोगरहितो ब्रह्मा कृतार्थोऽस्तु नः॥ ४॥ जग्ध्वा पिशितं समत्स्यकवलं जीवं च शून्यं वदन्, कर्ता कर्मफलं न भुंक्त इति यो वक्ता स बुद्धः कथम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

र्णावर्त्तिवस्तुसकलं ज्ञातुं न शक्तं सदा, यो जानन्युगपज्जग-
त्रयमिदं साक्षात्स बुद्धो मम ॥ ५ ॥

स्रग्धरा छन्द ।

ईशः किं छिन्नलिंगो यदि विगतभयः शूलपाणिः कथं
स्यात्, नाथः किं भैक्ष्यचारी यतिरिति स कथं सांगनः
सात्मजश्च । आर्द्राजः किंत्वजन्मा सकलविदिति किं वेत्ति
नात्मान्तरायं, संक्षेपात्सम्यगुक्तं पशुपतिमपशुः कोऽत्र धीमा-नु
पास्ते ॥ ६ ॥ ब्रह्मा चर्माक्षसूत्री सुरयुवतिरसावेशविभ्रान्त-
चेताः, शम्भुः खट्वांगधारी गिरिपतितनयापांगलीलानुविद्धः ।
विष्णुश्चक्राधिपः सन्दुहितरमगमद्गोपनाथस्य मोहा-दर्हन्वि-
ध्वस्तरागो जितसकलभयः कोऽयमेष्वाप्तनाथः ॥ ७ ॥ एको
नृत्यति विप्रसार्य कुकुभां चक्रे सहस्रं भुजा-नेकः शेषभुजंग-
भोगशयने व्यादाय निद्रायते । दृष्टुं चारुतिलोत्तमामुखमगा-
देकश्चतुर्वक्त्रता-मेते मुक्तिपथं वदंति विदुषामित्येतदत्यद्-
भुतम् ॥ ८ ॥ यो विश्वं वेद वेद्यं जननजलनिधेर्भंगिनः पार-
दृश्वा, पौर्वापर्याविरुद्धं वचनमनुपमं निष्कलंकं यदीयम् । तं
वन्दे साधुवंद्यं सकलगुणनिधिं ध्वस्तदोषद्विषन्तं, बुद्धं वा
वर्द्धमानं शतदलनिलयं केशवं वा शिवं वा ॥ ९ ॥ माया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नास्ति जटाकपालमुकुटं चन्द्रो न मूर्द्धावली, खट्वांगं न
वासुकिर्न च धनुः शूलं न चोग्रं मुखं । कामो यस्य
कामिनी न च वृषो गीतं न नृत्यं पुनः, सोऽस्मान्पातु नि
जनो जिनपतिः सर्वत्र सूक्ष्मः शिवः ॥ १० ॥ नो ब्रह्मांकि
भूतलं न च हरेः शम्भोर्न मुद्रांकितं, नो चन्द्रार्क्ककरांकि
सुरपतेर्वज्रांकितं नैव च । षड्वक्त्रांकितबौद्धदेवहुतभुग्यक्ष
गैर्नांकितं, नग्नं पश्यत वादिनो जगदिदं जैनेन्द्रमु
कितं ॥ ११ ॥ मौञ्जीदंडकमंडलुप्रभृतयो नो लाञ्छनं ब्रह्म
रुद्रस्यापि जटाकपालमुकुटं कोपीनखट्वांगना । विष्णोश्
गदादिशंखमतुलं बुद्धस्य रक्ताम्बरं, नग्नं पश्यत वा
जगदिदं जैनेन्द्रमुद्रांकितं ॥ १२ ॥ नाहंकारवशीकृतेन म
न द्वेषिणा केवलं, नैरात्म्यं प्रतिपद्यनश्यति जने कारुण्यबु
मया । राज्ञः श्रीहिमशीतलस्य सदसि प्रायो विदग्धात्
बौद्धौघान्सकलान् विजित्य स घटः पादेन विस्फालितः ॥१
खट्वांगं नैव हस्ते न च हृदि रचिता लम्बते मुण्डमा
भस्मांगं नैव शूलं न च गिरिदुहिता नैव हस्ते कपा
चन्द्रार्द्धं नैव मूर्द्ध न्यपि वृषगमनं नैव कंठे फणीन्द्रः, तं
त्यक्तदोषं भवभयमथनं चेश्वरं देवदेवं ॥ १४ ॥ किं
भगवानमेयमहिमा देवोऽकलंकः कलौ, काले यो जनता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निहितो देवोऽकलंको जिनः । यस्य स्फारविवेकमुद्रलहरीजाले प्रमेयाकुला, निर्मग्ना तनुतेतरां भगवतीताराशिरःकम्पनम् ॥ १५ ॥ सा तारा खलु देवता भगवती मन्यापि मन्यामहे, षण्मासावधिजाड्यसांख्यभगवद्भट्टाकलंकप्रभोः । वाक्कल्लोलपरम्पराभिरमते नूनं मनोमज्जन-व्यापारं सहते स्म विस्मितमतिः सन्ताडितेतस्ततः ॥ १६ ॥

इति अकलंकस्तोत्रम् ।

सुभातस्तोत्रम्

यत्स्वर्गावतरोत्सवे यदभवज्जन्माभिषेकोत्सवे, यद्दीक्षाग्रहणोत्सवे यदखिलज्ञानप्रकाशोत्सवे । यन्निर्वाणगमोत्सवे जिनपतेः पूजाद्भुतं तद्भवैः, संगीतस्तुतिमंगलैः प्रसरतां मे सुप्रभातोत्सवः ॥ १ ॥ श्रीमन्नतामरकिरीटमणिप्रभाभिरालीढपादयुगदुर्द्धरकर्मदूर । श्रीनाभिनन्दन जिनाजितशंभवाख्य, त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ॥२॥ छत्रत्रयचलचामरवीज्यमान देवाभिनंदनमुने सुमते जिनेंद्र, पद्मप्रभा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रुणमणिद्युतिभासुरांग, त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभा-
तम् ॥३॥ अर्हन् सुपार्श्व कदलीदलवर्णगात्र, प्रालेयतारगिरि-
मौक्तिकवर्णगौर। चंद्रप्रभस्फटिकपाण्डुरपुष्पदंत, त्वद्ध्यान-
तोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ॥४॥ संतप्तकांचनरुचे जिनशी-
ताख्य श्रेयान्विनष्टदुरिताष्टकलंकपंक। बंधूकबंधुररुचे जिन
वासुपूज्य, त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ॥५॥ उद्दं-
दर्पकरिपो विमलामलांग स्थेमन्ननंतजिदनंतसुखांबुराशे
दुष्कर्मकल्मषविवर्जित धर्मनाथ, त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम
सुप्रभातम् ॥ ६ ॥ देवामरोकुसुमसन्निभ शांतिनाथ, कुं
दयागुणविभूषणभूषितांग। देवाधिदेव भगवन्नरतीर्थ-
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ॥७॥ यन्मोहमल्ल-
भंजनमल्लिनाथ, क्षेमंकरावितथशासनसुव्रताख्य। यत्सं-
प्रशमितो नमिनामधेय, त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्र-
तम् ॥ ८ ॥ तापिच्छगुच्छरुचिरोज्ज्वल नेमिनाथ, घोरो-
सर्गविजयिन् जिनपार्श्वनाथ। स्याद्वादसूक्तिमणिदर्पणवर्द्धमा-
त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं मम सुप्रभातम् ॥ ९ ॥ प्रालेयनी-
हरितारुणपीतभासं, यन्मूर्तिमव्ययसुखावसथं मुनींद्राः
ध्यायंति सप्ततिशतं जिनवल्लभानां, त्वद्ध्यानतोऽस्तु सततं
मम सुप्रभातम् ॥ १० ॥ सुप्रभातं सुनक्षत्रं, मांगल्यं प-
कीर्तितम्। चतुर्विंशतितीर्थानां, सुप्रभातं दिने दिने ॥ १

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रभातं सुनक्षत्रं श्रेयः प्रत्यभिनंदितम् । देवता ऋषयः सिद्धाः,
प्रभातं दिने दिने ॥ १२ ॥ सुप्रभातं तवैकस्य, वृषभस्य
हात्मनः । येन प्रवर्तितं तीर्थं, भव्यसत्त्वसुखावहम् ॥ १३ ॥
प्रभातं जिनेंद्राणां, ज्ञानोन्मीलितचक्षुषां । अज्ञानतिमिरां-
िनां, नित्यमस्तमितो रविः ॥ १४ ॥ सुप्रभातं जिनेंद्रस्य,
रः कमललोचनः । येन कर्माटवी दग्धा, शुक्लध्यानोग्रव-
ना ॥ १५ ॥ सुप्रभातं सुनक्षत्रं, सुकल्याणं सुमंगलम् ।
लोक्यहितकर्तृणां, जिनानामेव शासनम् ॥ १३ ॥

इति सुप्रभातस्तोत्रम्

पं० भागचन्द्रविरचितं

महावीराष्टकस्तोत्रम्

शिखरिणी

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः, समं भांति
व्ययजनिलसंतोन्तरहिताः । जगत्साक्षी मार्गप्रगटनपरो
नुरिव यो, महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः)
॥ अताम्रं यच्चक्षुः कमलयुगलं स्पंदरहितं, जनान्को-
यं प्रकटयति वाभ्यंतरमपि । स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमित-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मयी वातिविमला, महावीर० ॥ २ ॥ नमन्नाकेन्द्रालीमुकु
मणिभाजालजटिलं, लसत्पादांभोजद्वयमिह यदीयं तनुभृतां
भवज्वालाशांत्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि, महावीर० ॥ ३
यदर्च्चाभावेन प्रमुदितमना दर्दुर इह, क्षणादासीत्स्वर्गी गु
गणसमृद्धः सुखनिधिः । लभंते सद्भक्ताः शिवसुखसमाजं
तदा, महावीर० ॥ ४ ॥ कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगततनुज्ञा
निवहो, विचित्रात्माप्येको नृपतिवरसिद्धार्थतनयः । अजन्मा
श्रीमान् विगतभवरागोद्भुतगतिर्, महावीर० ॥ ५ ॥ यदी
वाग्गंगा विविधनयकल्लोलविमला, वृहज्ज्ञानांभोभिर्ज
जनतां या स्नपयति । इदानीमप्येषा बुधजनमरालैः परिचि
महावीर० ॥ ६ ॥ अनिर्वारोद्रेकस्त्रिभुवनजयी कामसुभ
कुमारावस्थायामपि निजबलाद्येन विजितः । स्फुरन्नित्या
प्रशमपदराज्याय स जिनः, महावीर०॥७॥ महामोहातङ्क
मनपराकस्मिकभिषग्, निरापेक्षो बंधुर्विदितमहिमामङ्गलक
शरण्यः साधूनां भवभयभृतामुत्तमगुणो, महावीर० ॥ ८

महावीराष्टकं स्तोत्रं, भक्त्या भागेन्दुना कृतं ।
यः पठेच्छ्रुणुयाच्चापि स याति परमां गतिम् ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ दृष्टाष्टकस्तोत्रम्

दृष्टं जिनेन्द्रभवनं भवतापहारि, भव्यात्मनां विभवसंभव-
रि हेतुः । दुग्धाब्धिफेनधवलोज्वलकूटकोटि-नद्धध्वजप्रकर-
ाजिविराजमानम् ॥ १ ॥ दृष्टं जिनेन्द्रभवनं भुवनैकलक्ष्मीः,
ामर्द्धिवर्द्धितमहामुनिसेव्यमानम् । विद्याधरामरवधूजनमुक्त-
व्य-पुण्याञ्जलिप्रकरशोभितभूमिभागम् ॥ २ ॥ दृष्टं जिनेन्द्र-
वनं भवनादिवास—विख्यातनाकगणिकागणगीयमानम् ।
नामणिप्रचयभासुररश्मिजाल-व्यालीढनिर्मलविशालगवाक्ष-
लम् ॥ ३ ॥ दृष्टं जिनेन्द्रभवनं सुरसिद्धयक्ष-गन्धर्वकिन्नर-
र्पितवेणुवीणा । संगीतमिश्रितनमस्कृतधीरनादै-रापूरि-
म्बरतलोरुदिगन्तरालम् ॥ ४ ॥ दृष्टं जिनेन्द्रभवनं विल-
द्विलोल—मालाकुलालिललितालकविभ्रमाणम् । माधुर्यवाद्य-
नृत्यविलासिनीनां, लीलाचलद्वलयनूपुरनादरम्यम् ॥ ५ ॥
ं जिनेन्द्रभवनं मणिरत्नहेम-सारोज्वलैः कलशचामरदर्प-
द्यैः । सन्मंगलैः सततमष्टशतप्रभेदै-र्विभ्राजितं विमल-
क्तिकदामशोभम् ॥ ६ ॥ दृष्टं जिनेन्द्रभवनं वरदेवदारु-
रचन्दनतरुस्कसुगन्धिधूपैः । मेघायमानगगने पवनाभिघात-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चञ्चच्चलद्विमलकेतनतुङ्ग शालम् ॥ ७ ॥ दृष्टं जिनेन्द्रभव-
धवलातपत्र-च्छायानिमग्नतनुयक्षकुमारवृन्दैः । दोधूयमान-
सितचामरपंक्तिभासं, भामंडलंद्युतियुतप्रतिमाभिरामम् ॥ ८
दृष्टं जिनेन्द्रभवनं विविधप्रकार-पुष्पोपहाररमणीयसुरत्नभूमि
नित्यं वसंततिलकश्रियमादधानं, सन्मंगलं सकलचन्द्रमुनी-
वन्द्यम् ॥९॥ दृष्टं मयाद्यमणिकाञ्चनचित्रतुङ्गसिंहासनादि
जिनबिम्बविभूतियुक्तम् । चैत्यालयं यदतुलं परिकीर्तितं
सन्मंगलं सकलचन्द्रमुनीन्द्रवन्द्यम् ॥ १० ॥

❀ अथाद्याष्टकस्तोत्रम् ❀

अद्य मे सकलं जन्म नेत्रे च सफले मम ।
त्वामद्राक्षं यतो देव हेतुमक्षयसम्पदः ॥ १

अद्य संसारगम्भीरपारावारः सुदुस्तरः ।
सुतरोऽयं क्षणेनैव जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ २

अद्य मे क्षालितं गात्रं नेत्रे च विमले कृते ।
स्नातोऽहं धर्मतीर्थेषु जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥३

अद्य मे सफलं जन्म प्रशस्तं सर्वमंगलम् ।
संसारार्णवतीर्णोऽहं जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अद्य कर्माष्टकज्वालं विधूतं सकषायकम् ।
दुर्गतेर्विनिवृत्तोऽहं जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ ५ ॥
अद्य सौम्या ग्रहाः सर्वे शुभाश्चैकादश स्थिताः ।
नष्टानि विघ्नजालानि जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥६॥
अद्य नष्टो महाबन्धः कर्मणां दुःखदायकः ।
सुखसंगमसमापन्नो जिनेन्द्र तव दर्शनात् ।
अद्य कर्माष्टकं नष्टं दुःखोत्पादनकारकम् ।
सुखाम्भोधिनिमग्नोऽहं जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥८॥
अद्य मिथ्यान्धकारस्य हन्ता ज्ञानदिवाकरः ।
उदितो मच्छरीरेऽस्मिन् जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥९॥
अद्याहं सुकृती भूतो निर्धूताशेषकल्मषः ।
भुवनत्रयपूज्योऽहं जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ १० ॥
अद्याष्टकं पठेद्यस्तु गुणानन्दितमानसः ।
तस्य सर्वार्थसंसिद्धिर्जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ ११ ॥

मङ्गलाष्टकम्

श्रीमन्नम्रसुरासुरेंद्रमुकुटप्रद्योतरत्नप्रभाभास्वत्पादनखेंदवः
वचनांभोधींदवः स्थायितः । ये सर्वे जिनसिद्धसूर्यनुगतास्ते

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाठकाः साधवः, स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वंतु मंगलम् ॥ १ ॥ सम्यग्दर्शनबोधवृत्तममलं रत्नत्रयं पाव मुक्तिश्रीनगराधिनाथजिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः । धर्मः सूक्ति च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्र्यालयं, प्रोक्तं च त्रि चतुर्विधममी कुर्वंतु मे मंगलम् ॥ २ ॥ नाभेयादिजिना पास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशतिः, श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृ ये चक्रिणो द्वादश । ये विष्णुप्रतिविष्णुलांगलधराः सप्तो विंशति-स्त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्ठिपुरुषाः कुर्वन्तु मंगलम् ॥ ३ ॥ देव्योष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादि देवताः, श्रीतीर्थंकरमातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यस्तथ द्वात्रिंशत्त्रिदशाधिपास्तिथिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्ट दिक्पाला दश चेत्यमी सुरगणाः कुर्वंतु मे मंगलम् ॥ ४ ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगताः पञ्च ये, चाष्टांगमहानिमित्तकुशला येऽष्टाविधाश्चारणाः । पञ्च ज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः । सप्त सकलार्चिता गणभृतः कुर्वंतु मे मंगलम् ॥ ५ ॥ कैलं वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे, चम्पायां वसुपू सज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम् । शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो, निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वंतु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लम् ॥ ६ ॥ ज्योतिर्व्यन्तरभावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ
ा, जम्बूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा वक्षाररूप्याद्रिषु ।
वाकारगिरौ च कुंडलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे, शैले ये
जोत्तरे जिनगृहाः कुर्वंतु मे मंगलम् ॥ ७ ॥ यो गर्भा-
रोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो, यो जातः परिनि-
मेण विभवो यः केवलज्ञानभाक् । यः कैवल्यपुरप्रवेश-
हिमा संभावितः स्वर्गिभिः, कल्याणानि च तानि पंच
तं कुर्वंतु मे मंगलम् ॥ ८ ॥
थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्यसम्पत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः ।
शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि ॥ ९ ॥

—*—

वीतरागस्तोत्रम्

(मिश्रित भाषा)

त्वं शुद्धबुद्धं परं विश्वनाथं,
न देवो न बन्धुर्न कर्ता न कर्म ॥
अंगं न सङ्गं न स्वेच्छा न कायम्,
चिदानन्दरूपं नमो वीतरागम् ॥ १ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न बन्धो न मोक्षो न रागादिलोभं,
न योगं न भोगं न व्याधि न शोकम् ॥
न कोपं न मानं न मायं न लोभम्,
चिदानन्दरूपं नमो वीतरागम् ॥ २ ॥

न हस्तौ न पादौ न घ्राणं न जिह्वा,
न चक्षुर्न कर्णं न वक्त्रं न निद्रा ॥
न स्वामी न भृत्यं न देवो न मर्त्यः,
चिदानन्दरूपं नमो वीतरागम् ॥ ३ ॥

न जन्म न मृत्युः न मोदो न चिन्ता,
न क्षुद्रो न भीतो न कार्श्यं न तन्द्रा ॥
न स्वेदं न खेदं न वर्णं न मुद्रा,
चिदानन्दरूपं नमो वीतरागम् ॥ ४ ॥

त्रिदंडे त्रिखंडे हरे विश्वनाथम्,
हृषिकेशविध्वस्तपरमारिजालम् ॥
न पुण्यं न पापं न चाक्षादिपापम्,
चिदानन्दरूपं नमो वीतरागम् ॥ ५ ॥

न बालो न वृद्धो न तुच्छो न मूढो,
न खेदं न भेदं न मूर्तिर्न स्वेदः ।
न कृष्णं न शुक्लं न मोहं न तन्द्रा,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चिदानन्दरूपं नमो वीतरागम् ॥६॥

न आद्यं न मध्यं न अन्तं न मन्या ।
न द्रव्यं न क्षेत्रं न कालो न भावः
न गुरुर्न शिष्यो न हीनं न दीनम्,
चिदानन्दरूपं नमो वीतरागम् ॥ ७ ॥

ज्ञानस्वरूपं स्वयं तत्ववेदी,
न पूर्णं न शून्यं न चेत्यं स्वरूपी ॥
न चान्योन्यभिन्नं न परमार्थमेकम्,
चिदानन्दरूपं नमो वीतरागम् ॥ ८ ॥

आत्मारामगुणाकरं गुणनिधिं चैतन्यरत्नाकरं ।
सर्वे भूतगतागते सुखदुखे ज्ञाते त्वया सर्वगे ॥
त्रैलोक्याधिपते स्वयं स्वमनसा ध्यायन्ति योगीश्वराः ।
वंदे तं हरिवंशहर्षहृदयं श्रीमान् हृदाभ्युद्यताम् ॥ ९ ॥

अथपरमानन्दस्तोत्रम्

परमानन्दसंयुक्तं, निर्विकारं निरामयम् ॥
ध्यानहीना न पश्यन्ति, निजदेहे व्यवस्थितम् ॥
अनंतसुखसंम्पन्नं, ज्ञानामृतपयोधरम् ॥
अनंतवीर्यसम्पन्नं, दर्शनं परमात्मनः ॥ २ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निर्विकारं निरावाधं, सर्वसंगविवर्जितम् ।
परमानन्दसम्पन्नं, शुद्धचैतन्यलक्षणम् ॥ ३ ॥

उत्तमा स्वात्मचिंता स्यात्, मोहचिंता च मध्यमा ।
अधमा कामचिंता स्यात्, परचिंताधमाधमा ॥ ४ ॥

निर्विकल्पसमुत्पन्नं, ज्ञानमेव सुधारसम् ।
विवेकमंजलिं कृत्वा, तं पिबंति तपस्विनः ॥ ५ ॥

सदानन्दमयं जीवं, यो जानाति स पंडितः ।
स सेवते निजात्मानं, परमानंदकारणम् ॥ ६ ॥

नलिनाच्च यथा नीरं, भिन्नं तिष्ठति सर्वदा ।
सोऽयमात्मा स्वभावेन, देहे तिष्ठति निर्मलः ॥ ७ ॥

द्रव्यकर्ममलैर्मुक्तं, भावकर्मविवर्जितम् ।
नोकर्मरहितं सिद्धं, निश्चयेन चिदात्मकम् ॥ ८ ॥

आनंदं ब्रह्मणो रूपं, निजदेहे व्यवस्थितम् ।
ध्यानहीना न पश्यन्ति, जात्यन्धा इव भास्करम् ॥ ९

सद्ध्यानं क्रियते भव्यं, मनो येन विलीयते ।
तत्क्षणं दृश्यते शुद्धं, चिच्चमत्कारलक्षणम् ॥ १० ॥

ये ध्यानलीना मुनयः प्रधानाः, ते दुःखहीना नियमाद्भवं[ति]
सम्प्राप्य शीघ्रं परमात्मतत्वं, व्रजन्ति मोक्षं क्षणमेकमेव ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आनंदरूपं परमात्मतत्वं, समस्तसंकल्पविकल्पमुक्तम् ।
स्वभावलीना निवसंति नित्यं, जानाति योगी स्वयमेव तत्वं
निजानंदमयं शुद्धं, निराकारं निरामयम् ।
अनन्तसुखसम्पन्नं, सर्वसंघविवर्जितम् ॥ १३ ॥
लोकमात्रप्रमाणोयं, निश्चये न हि संशयः ।
व्यवहारे तनुमात्रः, कथितः परमेश्वरैः ॥ १४ ॥
यत्क्षणं दृश्यते शुद्धं, तत्क्षणं गतविभ्रमः ।
स्वस्थचित्तः स्थिरीभूत्वा, निर्विकल्पसमाधितः ॥ १५ ॥
स एव परमं ब्रह्म, स एव जिनपुंगवः ।
स एव परमं तत्वं, स एव परमो गुरुः ॥ १६ ॥
स एव परमं ज्योतिः, स एव परमं तपः ।
स एव परमं ध्यानं, स एव परमात्मकः ॥ १७ ॥
स एव सर्वकल्याणं, स एव सुखभाजनम् ।
स एव शुद्धचिद्रूपं, स एव परमं शिवः ॥ १८ ॥
स एव परमानंन्द, स एव सुखदायकः ।
स एव परमज्ञानं, स एव गुणसागरः ॥ १९ ॥
परमाल्हादसंपन्नं, रागद्वेषविवर्जितम् ।
सोहं तं देहमध्येषु, यो जानाति स पंडितः ॥ २० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आकाररहितं शुद्धं, स्वस्वरूपे व्यवस्थितम् ।
सिद्धमष्टगुणोपेतं, निर्विकारं निरंजनम् ॥ २१ ॥
तत्सदृशं निजात्मानं, यो जानाति स पंडितः ।
सहजानंदचैतन्यप्रकाशाय महीयसे ॥ २२ ॥
पाषाणेषु यथा हेमं, दुग्धमध्ये यथा घृतम् ।
तिलमध्ये यथा तैलं, देहमध्ये तथा शिवः ॥ २३ ॥
काष्ठमध्ये यथा वह्निः, शक्तिरूपेण तिष्ठति ।
अयमात्मा शरीरेषु, यो जानाति स पंडितः ॥ २४ ॥

आचार्य शांतिसागरस्तुतिः ।

पूज्यातिपूज्यैर्यतिभिस्सुवंद्यं, संसारगंभीरसमुद्रसेतुम्
ध्यानैकनिष्ठागरिमागरिष्ठं, आचार्यवर्यं प्रणमामि नित
॥१॥ ध्यानादिसैन्यं परिवर्ध्य पूर्णं, कर्मारिवर्गं प्रणि
वेगात् । नीरागस्वातंत्र्यपदे प्रतिष्ठं, आ० ॥२॥ यो मु
सूरिर्मुनिनायकानां, आचारपारं गतवान्समग्रं । ध्यानप्र
वेन प्रवृद्धदीप्तिः, आ० ॥ ३ ॥ दुर्जेयकं द्वादशधा क
जित्वा निजात्मानुभवैकशुद्धया । षष्ठे गुणे सप्तमके ग
आ० ॥ ४ ॥ आभ्यन्तरो बाह्य उपाधिभारः, दूरीकृतो
वितृष्णभावात् । दैगम्बरं सुन्दरदिव्यकायं, आ० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धर्मामृतं पाययति प्रभूतं, यो भव्यजीवान् करुणास्वरूपः। स्वात्मस्वरूपं च चकार तेभ्यः, आ० ॥ ६ ॥ योऽनेकसाधून् विषयेष्वरक्तान्, निर्ग्रंथलिंगे विधिना चकार। गुरूपरागोपि च वीतरागः, आ० ॥ ७ ॥ महागंभीर विशदीकृतार्थं, शास्त्राब्धिपारं गतवान् समग्रम्। तथापि प्रज्ञामदताविरक्तः, आ० ॥ ८ ॥ यथा कुन्दकुन्दः सुरैर्वंद्यपादः, अभूत्साधुसंसेव्यमानप्रपादः। तथैवाधुना लोकपूज्यं यतीन्द्रं भजे सूरिवर्यं सदा साधुवंद्यम् ॥ ९ ॥ यथादुष्टजीवेन घोरोपसर्गाः, कृताः पार्श्वनाथे त्रिलोकैकपूज्ये। तथा दुष्टलोकोपसर्गं सहिष्णुं, भजे० ॥ १० ॥ यतीनामनेके यथा शिष्यवर्गाः, प्रभोः कुन्दकुन्दस्य सूरेरभूवन्। तथैवाधुना साधुसंदोहशिष्यम्, भजे० ॥ ११ ॥ यथा सूत्रचिन्हं हि रत्नत्रयस्य, पुरा भारते पूर्वपूज्यैर्निरुक्तम्। तथैवाधुना सूत्रचिन्हं ददानं भजे० ॥ १२ ॥ शांतेरगारं विनष्टारिमारं, जगत्कञ्जमित्रं गुणाढ्यं पवित्रम्। वरिष्ठैः सुपूज्यं गरिष्ठप्रधानं, भजे० ॥ १४ ॥ भीमगौडा महाशक्तिशाली, स्वमाता सती सत्यरूपा सुरूपा। तयोःपुत्ररत्नं जिताक्षारियत्नं, भजे० ॥ १५ ॥ जगद्वल्लरीं कर्तयित्वा कृपाणीं, गृहीत्वा शुभध्यानरूपां स्वभावाम्। प्रपेदे गुणं सप्तमञ्चैकहीनं, भजे० ॥ १६ ॥ गुणारा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मनोरं भवाम्भोधितीरं, सदा निर्विकारं गृहीतात्मसारम्
कषायादिदुर्दण्डदोर्दण्डभेदं, भजे० ॥१६॥ महद्ध्याननि
महत्सु प्रकृष्टं, महर्षिप्रतिष्ठं वचो यस्य मिष्टम् । चिदानं
रूपे स्वरूपे प्रविष्टं, भजे० ॥१७॥ निर्ग्रंथसाधुमधुपव्रजर
जमाना, त्वत्पादपद्मकलिका धवलाभिरामा । नक्षत्रवृन्दपा
वेष्ठितचन्द्रबिम्बः, देवैः सुदृष्टिरुचिभि र्मघवा यथा वा ॥१८
यत्पादसेवनरता खलु भव्यलोकाः, संसारतो झटि
यांति विरक्तबुद्धिम् । यद्गीः प्रशस्यमहनीयसहेतुका
पंचाननस्य समतां सदसि व्यनक्ति ॥ १९ ॥ मिथ्यान्धक
रपटलं प्रविहाय शीघ्रं, तत्त्वप्रसारकिरणैः सुखदैः समन्त
त् । श्रद्धापरायणजनाम्बुजकोरकांश्च, सन्तोषयन् विगतत
रविस्त्वमेव ॥ २० ॥ मिथ्यान्धकारपरिमर्दनरश्मिजालं, ज्ञ
प्रकाशितजगत्प्रविकाशिसूर्यम् । ध्यानैकताननियतं मुनिर
सेव्यं, आचार्यवर्यगुरुपादमहं नमामि ॥ २१ ॥ गुणास्
दीयाः धवलाः गभीराः, सुरेन्द्रनागेन्द्रनरेन्द्रपूज्याः । विभ
सूरे ! तव दिव्यदेहे, ततोसि पूज्यः खलु विश्वलोके ।२२।
दर्शं सूरिशान्तस्वरूपं पायं पायं वाक्यपीयूषधाराम् । स्मा
तद्गुणान् स्पष्टपादाः, जाताः शान्ताः साधवोऽक्षेष्वर
॥ २३ ॥ चित्ते चित्ते शान्तमूर्तेःसुबोधः, बोधे बोधे त

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पानुरूपम् । रूपे रूपे स्वात्मवृत्तौ प्रवृत्तिः, वृत्तौ वृत्तौ कुन्थुनेमीन्दुवीराः ॥ २४ ॥ आसीद्यः खलु दक्षिणायनकरः पश्चादुदीच्यां गतः, ज्ञानध्यानतपःप्रभामयवपुः संधारयन् दीप्तिमान् । सम्यग्ज्ञानमरीचिभिर्विकसिता आशाश्च येनाखिलाः, सोऽयं सूरिरपूर्वभानुरुदितो लोके सदा शान्तिदः ॥२५॥ सुखदयाखिलबोधविधानया, विधिविशाखिकठोरकुठारया । विगतरागगुरुर्जिनदीक्षया, तरति तारयति भ्रमजालतः ॥२६॥

आचार्यश्रीमदुस्वामिविरचितं

तत्वार्थसूत्रम् ।

मोक्षमार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्मभूभृताम् ।
ज्ञातारं विश्वतत्वानां, वन्दे तद्गुणलब्धये ॥ १ ॥

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः ॥ १ ॥ तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ॥ २ ॥ तन्निसर्गादधिगमाद्वा ॥ ३ ॥ जीवाजीवास्रवबन्धसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ॥ ४ ॥ नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ॥ ५ ॥ प्रमाणनयैरधिगमः ॥ ६ ॥ निर्देशस्वामित्वसाधनाऽधिकरणस्थितिविधानतः ॥७॥ सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च ॥ ८ ॥ मतिश्रुतावधिमनःपर्य्ययकेवलानि ज्ञानम्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥९॥ तत्प्रमाणे ॥१०॥ आद्ये परोक्षम् ॥११॥ प्रत्यक्षमन्यत्
॥ १२ ॥ मतिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ताऽभिनिवोध इत्यनर्थान्त
रम् ॥१३॥ तदिन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तम् ॥१४॥ अवग्रहेहावा
यधारणाः ॥ १५ ॥ बहुबहुविधक्षिप्राऽनिःसृताऽनुक्तध्रुवाणां
सेतराणाम् ॥१६॥ अर्थस्य ॥१७॥ व्यञ्जनस्यावग्रहः ॥१८
न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम् ॥ १९ ॥ श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादश
भेदम् ॥२०॥ भवप्रत्ययोऽवधिर्देवनारकाणाम् ॥२१॥ क्षयो
पशमनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम् ॥२२॥ ऋजुविपुलमत
मनःपर्ययः ॥२३॥ विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः ॥ २४
विशुद्धिक्षेत्रस्वामिविषयेभ्योऽवधिमनःपर्यययोः ॥ २५ ॥ मति
श्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु ॥२६॥ रूपिष्ववधेः ॥२७
तदनन्तभागे मनःपर्ययस्य ॥ २८ ॥ सर्वद्रव्यपर्यायेषु केव
स्य ॥ २९ ॥ एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतु
॥३०॥ मतिश्रुतावधयो विपर्ययश्च ॥३१॥ सदसतोरविशे
द्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ॥३२॥ नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्र
ब्दसमभिरूढैवंभूता नयाः ॥ ३३ ॥

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वत
मौदयिकपारिणामिकौ च ॥१॥ द्विनवाष्टादशैकविंशतित्रि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यथाक्रमम् ॥२॥ सम्यक्त्वचारित्रे ॥३॥ ज्ञानदर्शन-दानलाभभोगोपभोगवीर्याणि च ॥४॥ ज्ञानाज्ञानदर्शनल-लब्धयश्चतुस्त्रित्रिपञ्चभेदाः सम्यक्त्वचारित्रसंयमासंयमाश्च ॥ ५ ॥ गतिकषायलिङ्गमिथ्यादर्शनाऽज्ञानासंयताऽसिद्धले-श्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैकषड्भेदाः ॥ ६ ॥ जीवभव्याऽभ-व्यत्वानि च ॥ ७ ॥ उपयोगो लक्षणम् ॥ ८ ॥ स द्विविधो-ऽष्टचतुर्भेदः ॥ ९ ॥ संसारिणो मुक्ताश्च ॥ १० ॥ समनस्का-ऽमनस्काः ॥११॥ संसारिणस्त्रसस्थावराः ॥१२॥ पृथिव्यप्ते-जोवायुवनस्पतयः स्थावराः ॥१३॥ द्वीन्द्रियादयस्त्रसाः ॥१४॥ पञ्चेन्द्रियाणि ॥१५॥ द्विविधानि ॥ १६ ॥ निर्वृत्त्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम् ॥१७॥ लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम् ॥१८॥ स्पर्शन-रसनघ्राणचक्षुःश्रोत्राणि ॥ १९ ॥ स्पर्शरसगन्धवर्णशब्दास्त-दर्थाः ॥ २० ॥ श्रुतमनिन्द्रियस्य ॥ २१ ॥ वनस्पत्यन्तानामे-कम् ॥ २२ ॥ कृमिपिपीलिकाभ्रमरमनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि ॥ २३ ॥ संज्ञिनः समनस्काः ॥ २४ ॥ विग्रहगतौ कर्मयोगः ॥ २५ ॥ अनुश्रेणिगतिः ॥ २६ ॥ अविग्रहा जीवस्य ॥२७॥ विग्रहवती च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः ॥२८॥ एकसमयाऽविग्रहा ॥ २९ ॥ एकं द्वौ त्रीन्वानाहारकः ॥ ३० ॥ सम्मूर्छनगर्भोपपादा जन्म ॥ ३१ ॥ सचित्तशीतसं-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वृताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः ॥ ३२ ॥ जरायुजाण्ड-जपोतानां गर्भः ॥३२॥ देवनारकाणामुपपादः ॥ ३४ ॥ शेषाणां सम्मूर्छनम् ॥३५॥ औदारिकवैक्रियिकाहारकतैजस-कार्मणानि शरीराणि ॥ ३६ ॥ परं परं सूक्ष्मम् ॥ ३७ ॥ प्रदेशतोऽसंख्येयगुणं प्राक् तैजसात् ॥ ३८ ॥ अनन्तगुणे परे ॥ ३९ ॥ अप्रतीघाते ॥ ४० ॥ अनादिसम्बन्धे च ॥ ४१ ॥ सर्वस्य ॥ ४२ ॥ तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ॥ ४३ ॥ निरुपभोगमन्त्यम् ॥ ४४ ॥ गर्भसम्मूर्छनजमाद्यम् ॥४५॥ औपपादिकं वैक्रियिकम् ॥४६॥ लब्धिप्रत्ययं च ४७ तैजसमपि ॥ ४८ ॥ शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं प्रमत्त संयतस्यैव ॥ ४९ ॥ नारकसम्मूर्छिनो नपुंसकानि ॥ ५० ॥ न देवाः ॥ ५१ ॥ शेषास्त्रिवेदाः ॥ ५२ ॥ औपपादिकचरम-चरमोत्तमदेहाः संख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः ॥५३॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

रत्नशर्करावालुकापङ्कधूमतमोमहातमःप्रभा भूमयो घनाम्बुवाताकाशप्रतिष्ठाः सप्तधोऽधः ॥१॥ तासु त्रिंशत्पंचविंशतिपंचदशदशत्रिपंचोनैकनरकशतसहस्राणि पंच चैव यथा-क्रमम् ॥ २ ॥ नारका नित्याशुभतरलेश्यापरिणामदेहवेदना-विक्रियाः ॥३॥ परस्परोदीरितदुःखाः ॥ ४ ॥ संक्लिष्टासुरोदी-रितदुःखाश्च प्राक्चतुर्थ्याः ॥ ५ ॥ तेष्वेकत्रिसप्तदशसप्त...

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शद्वाविंशतित्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा सत्वानां परा स्थितिः ॥६॥ जम्बूद्वीपलवणोदादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः ॥ ७ ॥ द्विर्द्वि-र्विष्कम्भाः पूर्वपूर्वपरिक्षेपिणो वलयाकृतयः ॥ ८ ॥ तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजनशतसहस्रविष्कम्भो जम्बूद्वीपः ॥ ९ ॥ भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि १० तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमवन्महाहिमवन्निषधनीलरु-क्मिशिखरिणो वर्षधरपर्वताः ॥ ११ ॥ हेमार्जुनतपनीयवैडू-र्यरजतहेममयाः ॥ १२ ॥ मणिविचित्रपार्श्वा उपरिमूले च तुल्यविस्ताराः ॥ १३ ॥ पद्ममहापद्मतिगिञ्छकेसरिमहापुण्ड-रीकपुण्डरीका ह्रदास्तेषामुपरि ॥१४॥ प्रथमो योजनसहस्रा-यामस्तदर्द्धविष्कम्भो ह्रदः ॥१५॥ दशयोजनावगाहः ॥१६॥ तन्मध्ये योजनं पुष्करम् ॥१७॥ तद्द्विगुणद्विगुणा ह्रदा पुष्क-राणि च ॥१८॥ तन्निवासिन्यो देव्यः श्रीह्रीधृतिकीर्तिबुद्धिल-क्ष्म्यः पल्योपमस्थितयः ससामानिकपरिषत्काः ॥ १९ ॥ गंगासिन्धुरोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकान्तासीतासीतोदानारीनर-कान्तासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदाः सरितस्तन्मध्यगाः ॥२०॥ द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः ॥ २१ ॥ शेषास्त्वपरगाः ॥ २२ ॥ चतुर्दशनदीसहस्रपरिवृता गङ्गासिन्ध्वादयो नद्यः ॥ २३ ॥ भरतः षड्विंशतिपञ्चयोजनशतविस्तारः षट्चैकोनविंशति-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

र्भागा योजनस्य ॥१४॥ तद्द्विगुणद्विगुणविस्तारा वर्षधरवर्षा
विदेहान्ताः ॥२५॥ उत्तरा दक्षिणतुल्याः ॥ २६ ॥ भरतैरा-
वतयोर्वृद्धिह्रासौ षट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभ्याम्
॥२७॥ ताभ्यामपरा भूमयोऽवस्थिताः ॥ २८ ॥ एकद्वित्रिप-
ल्योपमस्थितयो हैमवतकहारिवर्षकदैवकुरवकाः ॥२९॥ तथो-
त्तराः ॥३०॥ विदेहेषु संख्येयकालाः ॥३१॥ भरतस्य
विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य नवतिशतभागः ॥ ३२ ॥ द्विर्धातकी
खण्डे ॥३३॥ पुष्करार्द्धे च ॥३४॥ प्राङ्मानुषोत्तरान्मनुष्याः
॥ ३५ ॥ आर्य्या म्लेच्छाश्च ॥ ३६ ॥ भरतैरावतविदेहा
कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्यः ॥३७॥ नृस्थिती परावरे
त्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते ॥ ३८ ॥ तिर्यग्योनिजानां च ॥ ३९

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

देवाश्चतुर्णिकायाः ॥ १ ॥ आदितस्त्रिषु पीतान्तलेश्या
॥२॥ दशाष्टपञ्चद्वादशविकल्पाः कल्पोपपन्नपर्यन्ताः ॥ ३
इंद्रसामानिकत्रायस्त्रिंशपारिषदात्मरक्षलोकपालानीकप्रकीर्ण-
भियोग्यकिल्किषिकाश्चैशः ॥ ४ ॥ त्रायस्त्रिंशल्लोकपालव-
व्यन्तरज्योतिष्काः ॥५॥ पूर्वयोर्द्वीन्द्राः ॥ ६ ॥ कायप्रवीचा-
आऐशानात् ॥७॥ शेषाः स्पर्शरूपशब्दमनः प्रवीचाराः ॥
परेऽप्रवीचाराः ॥ ९ ॥ भवनवासिनोऽसुरनागविद्युत्सुप-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्निवातस्तनितोदधिद्वीपदिक्कुमाराः ॥१०॥ व्यन्तराः किन्नर-किम्पुरुषमहोरगगन्धर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचाः ॥१२॥ ज्योतिष्काः सुर्य्याँचन्द्रमसौ ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णकतारकाश्च ॥ १२ ॥ मेरुप्रदक्षिणा नित्यगतयो नृलोके ॥१३॥ तत्कृतः कालविभागः ॥१४॥बहिरवस्थिताः ॥१५॥ वैमानिकाः ॥१६॥ कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च ॥१७॥ उपर्युपरि ॥१८॥ सौधर्म्मैशानसानत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मब्रह्मोत्तरलान्तवकापिष्टशुक्रमहाशुक्रसतारसहस्रारेष्वानतप्राणतयोरारणाच्युतयोर्नवसुग्रैवेयकेषु विजयवैजयन्तजयन्तापराजितेषु सर्वार्थसिद्धौ च ॥१९॥ स्थितिप्रभावसुखद्युतिलेश्याविशुद्धीन्द्रियावधिविषयतोऽधिकाः ॥ २० ॥ गतिशरीरपरिग्रहाभिमानतो हीनाः ॥ २१ ॥ पीतपद्मशुक्ललेश्याः द्वित्रिशेषेषु ॥२२॥ प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः ॥२३॥ ब्रह्मलोकालया लौकान्तिकाः ॥ २४ ॥ सारस्वतादित्यवन्ह्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधारिष्टाश्च ॥२५॥ विजयादिषु द्विचरमाः ॥२६॥ औपपादिकमनुष्येभ्यः शेषास्तिर्यग्योनयः ॥ २७ ॥ स्थितिरसुरनागसुपर्णद्वीपशेषाणां सागरोपमत्रिपल्योपमार्द्धहीनमिताः ॥ १८ ॥ सौधर्मैशानयोः सागरोपमे अधिके ॥ २९ ॥ सानत्कुमारमाहेन्द्रयोः सप्त ॥३०॥ त्रिसप्तनवैकादशत्रयोदशपञ्चदशभिरधिकानि तु ॥ ३१ ॥ आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धौ च ॥३२॥ अपरा पल्योपममधिकम् ॥३३॥ परतः परतः पूर्वा पूर्वानन्तरा: ॥३४॥ नारकाणां च द्वितीयादिषु ॥३५॥ दशवर्षसहस्राणि प्रथमायाम् ॥३६॥ भवनेषु च ॥२७॥ व्यन्तराणां च ॥३८॥ परा पल्योपममधिकं ॥३९॥ ज्योतिष्काणां च ॥४०॥ तदष्टभागोऽपरा ॥४१॥ लौकान्तिकानामष्टौ सागरोपमाणि सर्वेषाम् ॥४३॥

इति तत्वार्थधिगमे मोक्षशास्त्रे चतुर्थोऽध्याय: ॥४॥

अजीवकाया धर्म्माधर्म्माकाशपुद्गला: ॥१॥ द्रव्याणि ॥२॥ जीवाश्च ॥३॥ नित्यावस्थितान्यरूपाणि ॥४॥ रूपिण पुद्गला: ॥५॥ आआकाशादेकद्रव्याणि ॥६॥ निष्क्रियाणि च ॥७॥ असंख्येया: प्रदेशा: धर्म्माधर्मैकजीवानाम् ॥८ आकाशस्यानन्ता: ॥९॥ संख्येयासंख्येयाश्च पुद्गलाना ॥१०॥ नाणो: ॥११॥ लोकाकाशेऽवगाहः ॥१२ धर्म्माधर्मयो: कृत्स्ने ॥१३॥ एकप्रदेशादिषु भाज पुद्गलानाम् ॥१४॥ असङ्ख्येयभागादिषु जीवाना ॥१५॥ प्रदेशसंहारविसर्प्पाभ्यां प्रदीपवत् ॥१६ गतिस्थित्युपग्रहौ धर्म्माधर्म्मयोरुपकार: ॥१७॥ आका स्यावगाहः ॥१८॥ शरीरवाङ्मनःप्राणापाना: पुद्गलान ॥१९॥ सुखदुःखजीवितमरणोपग्रहाश्च ॥२०॥ परस्परोपग्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीवानाम् ॥२१॥ वर्तनापरिणामक्रियापरत्वापरत्वे च कालस्य ॥२२॥ स्पर्शरसगन्धवर्णवन्तः पुद्गलाः ॥२३॥ शब्दबन्धसौक्ष्म्यस्थौल्यसंस्थानभेदतमश्छायाऽतपोद्योतवन्तश्च ॥२४॥ अणवः स्कन्धाश्च ॥२५॥ भेदसङ्घातेभ्य उत्पद्यन्ते ॥२६॥ भेदादणुः ॥२७॥ भेदसंघताभ्यां चाक्षुषः ॥२८॥ सद्द्रव्यलक्षणम् ॥२९॥ उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत् ॥३०॥ तद्भावाव्ययं नित्यम् ॥३१॥ अर्पितानर्पितसिद्धेः ॥३२॥ स्निग्धरूक्षत्वाद्बन्धः ॥३३॥ न जघन्यगुणानाम् ॥३४॥ गुणसाम्ये सदृशानाम् ॥३५॥ द्व्यधिकादिगुणानां तु ॥३६॥ बन्धेऽधिकौ च पारिणामिकौ च ॥३७॥ गुणपर्य्ययवद्द्रव्यम् ॥३८॥ कालश्च ॥३९॥ सोऽनन्तसमयः ॥४०॥ द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः ॥४१॥ तद्भावः परिणामः ॥४२॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे पंचमोऽध्यायः ॥५॥

कायवाङ्मनः कर्म्म योगः ॥१॥ स आस्रवः ॥२॥ शुभः पुण्यस्याशुभः पापस्य ॥३॥ सकषायाकषाययोः साम्परायिकेर्य्यापथयोः ॥४॥ इन्द्रियकषायाव्रतक्रियाः पञ्चचतुः पञ्चपञ्चविंशतिसंख्याः पूर्वस्यभेदाः ॥५॥ तीव्रमन्दज्ञाताज्ञातभावाधिकरणवीर्यविशेषेभ्यस्तद्विशेषः ।६। अधिकरणं जीवाजीवाः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥७॥ आद्यं संरम्भसमारम्भारम्भयोगकृतकारितानुमतकषाय-विशेषैस्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः ॥८॥ निर्वर्तनानिक्षेपसंयोगनि-सर्गा द्विचतुर्द्वित्रिभेदाः परम् ॥९॥ तत्प्रदोषनिह्नवमात्सर्यान्त-रायासादनोपघाताज्ञानदर्शनावरणयोः ॥१०॥ दुःखशोक-तापाक्रंदनवधपरिवेदनान्यात्मपरोभयस्थानान्यसद्वेद्यस्य ॥११॥ भूतवृत्त्यनुकम्पादानसरागसंयमादियोगः क्षान्तिः शौचमिति सद्वेद्यस्य ॥१२॥ केवलिश्रुतसंघधर्म्मदेवावर्णवादो दर्शनमोह-स्य ॥१३॥ कषायोदयात्तीव्रपरिणामश्चारित्रमोहस्य ॥१४॥ बह्वारम्भपरिग्रहत्वं नारकस्यायुषः ॥१५॥ माया तैर्यग्योनस्य ॥१६॥ अल्पारम्भपरिग्रहत्वं मानुषस्य ॥१७॥ स्वभावमार्दवं च ॥१८॥ निःशीलव्रतत्वं च सर्वेषाम् ॥१९॥ सरागसंयमसंय-मासंयमाकामनिर्ज्जराबालतपांसि दैवस्य ॥२०॥ सम्यक्त्वं च ॥२१॥ योगवक्रताविसंवादनं चाशुभस्य नाम्नः ॥२२॥ तद्विपरीतं शुभस्य ॥२३॥ दर्शनविशुद्धिर्विनयसम्पन्नता शील-व्रतेष्वनतीचारोऽभीक्ष्णज्ञानोपयोगसंवेगौ शक्तितस्त्यागतपसी साधुसमाधिर्वैयावृत्त्यकरणमर्हदाचार्यबहुश्रुतप्रवचनभक्तिराव-श्यकापरिहाणिर्मार्गप्रभावना प्रवचनवत्सलत्वमिति तीर्थ-करत्वस्य ॥२४॥ परात्मनिन्दाप्रशंसे सदसद्गुणोच्छादनो-द्भावने च नीचैर्गोत्रस्य ॥२५॥ तद्विपर्ययौ नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य ॥२६॥ विघ्नकरणमन्तरायस्य ॥२७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे षष्ठोऽध्यायः ॥६॥

हिंसानृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम् ॥१॥ देशसर्वतोऽणुमहती ॥२॥ तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पञ्च पञ्च ॥३॥ वाङ्मनोगुप्तीर्यादाननिक्षेपणसमित्यालोकितपानभोजनानि पंच ॥ ४ ॥ क्रोधलोभभीरुत्वहास्यप्रत्याख्यानान्यनुवीचीभाषणंच पंच ॥५॥ शून्यागारविमोचितावासपरोपरोधाकरणभैक्ष्यशुद्धिसधर्म्माविसंवादाः पंच ॥६॥ स्त्रीरागकथाश्रवणतन्मनोहराङ्गनिरीक्षणपूर्वरतानुस्मरणवृष्येष्टरसस्वशरीरसंस्कारत्यागाः पंच ॥७॥ मनोज्ञामनोज्ञेन्द्रियविषयरागद्वेषवर्जनानि पञ्च ॥८॥ हिंसादिष्विहामुत्रापायावद्यदर्शनं ॥९॥ दुःखमेव वा ॥१०॥ मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्थ्यानि च सत्वगुणाधिकक्लिश्यमानाविनयेषु ॥११॥ जगत्कायस्वभावौ वा संवेगवैराग्यार्थम् ॥१२॥ प्रमत्तयोगात्प्राणव्यपरोपणं हिंसा ॥१३॥ असदभिधानमनृतं ॥१४॥ अदत्तादानं स्तेयम् ॥१५॥ मैथुनमब्रह्म ॥१६॥ मूर्च्छा परिग्रहः ॥ १७ ॥ निःशल्यो व्रती ॥ १८ ॥ अगार्यनगारश्च ॥१९॥ अणुव्रतोऽगारी ॥२०॥ दिग्देशानर्थदण्डविरतिसामायिकप्रोषधोपवासोपभोगपरिभोगपरिमाणातिथिसंविभागव्रतसम्पन्नश्च ॥२१॥ मारणान्तिकीं सल्लेखनां जोषिता ॥२२॥ शङ्काकाङ्क्षाविचिकित्सान्यदृष्टिप्रशंसासंस्तवाः सम्यग्दृष्टेरती-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चाराः ॥ २३ ॥ व्रतशीलेषु पंच पंच यथाक्रमम् ॥ २४
बन्धवधच्छेदातिभारारोपणान्नपाननिरोधाः ॥२५॥ मिथ्
पदेशरहोभ्याख्यान कूटलेख क्रियान्यासापहारसाकारमन्त्र भे
॥ २६ ॥ स्तेनप्रयोगतदाहृतादानविरुद्धराज्यातिक्रमहीनाधि
मानोन्मानप्रतिरूपकव्यवहाराः ॥२७॥ परविवाहकरणेत्व
कापरिगृहीतापरिगृहीतागमनानङ्गक्रीडाकामतीव्राभिनिवेश
॥ २८ ॥ क्षेत्रवास्तुहिरण्यसुवर्णधनधान्यदासीदासकु
प्रमाणातिक्रमाः ॥ २९ ॥ ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यतिक्रमक्षेत्रवृ
स्मृत्यन्तराधानानि ॥ ३० ॥ आनयनप्रेष्यप्रयोगशब्दरू
नुपातपुद्गलक्षेपाः ॥ ३१ ॥ कन्दर्पकौत्कुच्यमौखर्यास
क्ष्याधिकरणोपभोगपरिभोगानर्थक्यानि ॥३२॥ योगदुःप्र
धानानादरस्मृत्यनुपस्थानानि ॥ ३३ ॥ अप्रत्यवेक्षिता
र्जितोत्सर्गादानसंस्तरोपक्रमणानादरस्मृत्यनुपस्थानानि ॥
सचित्तसम्बन्धसम्मिश्राभिषवदुःपक्काहाराः ॥ ३५ ॥ स
निक्षेपापिधानपरव्यपदेशमात्सर्यकालातिक्रमाः ॥३६॥ जी
मरणाशंसामित्रानुरागसुखानुबन्धनिदानानि ॥ ३७ ॥
हार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम् ॥३८॥ विधिद्रव्यदातृपात्रवि
त्तद्विशेषः ॥३९॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे सप्तमोऽध्यायः ॥७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादकषाययोगा बन्धहेतवः ॥१॥ सकषायत्वाज्जीवः कर्म्मणो योग्यान्पुद्गलानादत्ते स बन्धः ॥२॥ प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशास्तद्विधयः ॥ ३ ॥ आद्यो ज्ञानदर्शनावरणवेदनीयमोहनीयायुर्नामगोत्रान्तरायाः ॥४॥ पंचनवद्व्यष्टाविंशतिचतुर्द्विचत्वारिंशद्द्विपंचभेदा यथाक्रमम् ॥ ५ ॥ मतिश्रुतावधिमनःपर्य्ययकेवलानां ॥ ६ ॥ चक्षुचक्षुरवधिकेवलानां निद्रानिद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचलास्त्यानगृद्धयश्च ॥७॥ सदसद्वेद्ये ॥ ८ ॥ दर्शनचारित्रमोहनीयाकषायकषावेदनीयाख्यास्त्रिद्विनवषोडशभेदाः सम्यक्त्वमिथ्यात्वतदुभयान्यकषायकषायौ हास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुन्नपुंसकवेदा अनन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनविकल्पाश्चैकशः क्रोधमानमायालोभाः ॥ ९॥ नारकतैर्यग्योनमानुषदैवानि ॥१०॥ गतिजातिशरीराङ्गोपाङ्गनिर्माणबन्धनसङ्घातसंस्थानसंहननस्पर्शरसगन्धवर्णानुपूर्व्यगुरुलघूपघातपरघातापोद्योतो—च्छ्वासविहायोगतयः प्रत्येकशरीरत्रसशुभगसुस्वरशुभसूक्ष्मपर्याप्तिस्थिरादेययशःकीर्तिसेतराणि तीर्थंकरत्वं च ॥ ११ ॥ उच्चैर्नीचैश्च ॥१२॥ दानलाभभोगोपभोगवीर्याणाम् ॥१३॥ आदितस्तिसृणामन्तरायस्य च त्रिंशत्सागरोपमकोटीकोट्यः परा स्थितिः ॥१४॥ सप्ततिर्मोहनीयस्य ॥१५॥ विंशतिर्नाम-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गोत्रयोः ॥ १६ ॥ त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुषः ॥ १७ ॥
अपरा द्वादश मुहूर्ता वेदनीयस्य ॥ १८ ॥ नामगोत्रयोरष्टौ
॥१९॥ शेषाणामन्तर्मुहूर्ताः ॥२०॥ विपाकोऽनुभवः ॥२१
स यथानाम ॥ २२ ॥ ततश्च निर्जरा ॥ २३ ॥ नामप्रत्ययाः
सर्वतो योगविशेषात्सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाहस्थिताः सर्वात्मप्रदेशे
ष्वनन्तानन्तप्रदेशाः ॥ २४ ॥ सद्वेद्यशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्य
॥२५॥ अतोऽन्यत्पापम् ॥२६॥

इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रेऽष्टमोऽध्यायः ॥८॥

आस्रवनिरोधः संवरः ॥१॥ स गुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षापरी
षहजयचारित्रैः ॥२॥ तपसा निर्ज्जरा च ॥ ३ ॥ सम्यग्यो
निग्रहो गुप्तिः ॥४॥ ईर्य्याभाषैषणादाननिक्षेपोत्सर्गाः समित
॥५॥ उत्तमक्षमामार्दवार्जवसत्यशौचसंयमतपस्त्यागाकिंच
ब्रह्मचर्य्याणि धर्म्मः ॥ ६ ॥ अनित्याशरणसंसारैकत्वा
त्वाशुच्यास्रवसंवरनिर्ज्जरालोकबोधिदुर्ल्लभधर्म्मस्वाख्यात
त्वानुचिंतनमनुप्रेक्षाः ॥७॥ मार्गाच्यवननिर्ज्जरार्थं परिषोढ
परीषहाः ॥ ८ ॥ क्षुत्पिपासाशीतोष्णदंशमशकनाग्न्यारति
चर्यानिषद्याशय्याक्रोशवधयाञ्चालाभरोगतृणस्पर्शमलसत्
पुरस्कारप्रज्ञाज्ञानादर्शनानि ॥९॥ सूक्ष्मसाम्परायछद्मस्थ
रागयोश्चतुर्दश ॥ १० ॥ एकादश जिने ॥ ११ ॥ बाद

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

म्पराये सर्वे ॥१२॥ ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने ।१३। दर्शनमोहा-
न्तराययोरदर्शनालाभौ ॥१४॥ चारित्रमोहे नाग्न्यारतिस्त्री-
निषद्याक्रोशयाञ्चासत्कारपुरस्काराः ।१५। वेदनीये शेषाः
॥१६॥ एकादयो भाज्या युगपदेकस्मिन्नेकोर्नाविंशतिः ॥१७॥
सामायिकच्छेदोपस्थापनापरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसाम्पराययथा—
ख्यातमिति चारित्रम् ।१८। अनशनावमौदर्यवृत्तिपरिसंख्या-
नरसपरित्यागविविक्त शय्यासनकायक्लेशा वाह्यं तपः ।१९।
प्रायश्चित्तविनयवैयावृत्त्यस्वाध्यायव्युत्सर्गध्यानान्युत्तरम् ।२०।
नवचतुर्दशपञ्चद्विभेदा यथाक्रमं प्राग्ध्यानात् ॥ २१ ॥ आ-
लोचनप्रतिक्रमणतदुभयविवेक व्युत्सर्गतपश्छेद परिहारोपस्था-
पनाः ॥२२॥ ज्ञानदर्शनचारित्रोपचाराः ॥ २३ ॥ आचार्यो-
पाध्यायतपस्विशैक्ष्यग्लानगणकुलसङ्घसाधुमनोज्ञानाम् ॥२४॥
वाचनापृच्छनानुप्रेक्षाम्नायधर्मोपदेशाः ॥ २५ ॥ बाह्याभ्यन्त-
रोपध्योः ॥२६॥ उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिन्तानिरोधो ध्यानमा-
न्तर्मुहूर्तात् ॥२७॥ आर्त्तरौद्रधर्म्यशुक्लानि ॥२८॥ परे मोक्ष-
हेतू ॥ २९ ॥ आर्तममनोज्ञस्य सम्प्रयोगे तद्विप्रयोगाय
स्मृतिसमन्वाहारः ॥३०॥ विपरीतं मनोज्ञस्य ॥३१॥ वेदना-
याश्च ॥३२॥ निदानं च ॥ ३३ ॥ तदविरतदेशविरतप्रमत्त-
संयतानाम् ॥ ३४ ॥ हिंसानृतस्तेयविषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रम-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विरतदेशविरतयोः ॥ ३५ ॥ आज्ञापायविपाकसंस्थानविचयाय
धर्म्यम् ॥३६॥ शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः ॥ ३७ ॥ परे केवलिन
॥ ३८ ॥ पृथक्त्वैकत्ववितर्कसूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिव्युपरतक्रिया
निवर्तीनि ॥३९॥ त्र्येकयोगकाययोगायोगानाम् ॥४०॥ एका
श्रये सवितर्कवीचारे पूर्वे ॥४१॥ अवीचारं द्वितीयम् ॥४२
वितर्कः श्रुतम् ॥४३॥ वीचारोऽर्थव्यञ्जनयोगसंक्रान्तिः ॥४४
सम्यग्दृष्टिश्रावकविरतानन्तवियोजकदर्शनमोहक्षपकोपशमको
शान्तमोहक्षपकक्षीणमोहजिनाः क्रमशोऽसंख्येयगुण
निर्ज्जराः ॥४५॥ पुलाकवकुशकुशीलनिर्ग्रन्थस्नातका निर्ग्रं
॥ ४६ ॥ संयमश्रुतप्रतिसेवनातीर्थलिङ्गलेश्योपपादस्थानवि
ल्पतः साध्याः ॥ ४७ ॥

इति तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे नवमोऽध्यायः ॥९॥

मोहक्षयाज्ज्ञानदर्शनावरणान्तरायक्षयाच्च केवलम् ॥१॥ ब
हेत्वभावनिर्जराभ्यां कृत्स्नकर्म्मविप्रमोक्षो मोक्षः ॥२॥
शमिकादिभव्यत्वानां च ॥ ३ ॥ अन्यत्र केवलसम्यक्त्व
दर्शनसिद्धत्वेभ्यः ॥४॥ तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्यालोकान्तात्
पूर्वप्रयोगादसङ्गत्वाद्बन्धच्छेदात्तथागतिपरिणामाच्च ॥
आविद्धकुलालचक्रवद्व्यपगतलेपालाबुवदेरण्डबीजवदग्निशि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वच्च ॥ ७ ॥ धर्मास्तिकायाभावात् ॥ ८ ॥ क्षेत्रकालगतिलिङ्गतीर्थचारित्रप्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानावगाहनान्तरसंख्याल्पबहुत्वतः साध्याः ॥ ९ ॥

अक्षरमात्रपदस्वरहीनं व्यञ्जनसन्धिविवर्जितरेफम् ।
साधुभिरत्र मम क्षन्तव्यं को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे ॥
दशाध्याये परिच्छिन्ने तत्वार्थे पठिते सति ।
फलं स्यादुपवासस्य भाषितं मुनिपुङ्गवैः ॥२॥
तत्त्वार्थसूत्रकर्तारं गृध्र-पिच्छोपलक्षितम् ।
वन्दे गणीन्द्रसंयातमुमास्वामिमुनीश्वरम् ॥३॥

॥ इति तत्वार्थ सूत्रं समाप्तम् ॥

—:०:—

अथ सामायिक पाठ

सिद्धवस्तुवचो भक्त्या, सिद्धान् प्रणमतः सदा ।
सिद्धकार्याः शिवं प्राप्ताः, सिद्धिं ददतु नोऽव्ययाम् ॥ १ ॥
नमोस्तु धौतपापेभ्यः, सिद्धेभ्यः ऋषिसंसदि ।
सामायिकं प्रपद्येऽहं, भवभ्रमणसूदनम् ॥ २ ॥
साम्यं मे सर्वभूतेषु, वैरं मम न केनचित् ।
आशां सर्वां परित्यज्य, समाधिमहमाश्रये ॥ ३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रागद्वेषान्ममत्वाद्वा, हा मया ये विराधिताः ।
क्षमन्तु जन्तवस्ते मे, ते मां क्षमयन्तु सर्वदा ॥ ४ ॥
तेभ्यः क्षमास्यहं पुनः कृतकारितसम्मतैः ।
रत्नत्रयभवं दोषं, गर्हे निन्दामि वर्जये ॥ ५ ॥
तैरश्चं मानवं दैव-मुपसर्गं सहेऽधुना ।
कायाहारकषायादीन्, संत्यजामि त्रिशुद्धितः ॥ ६ ॥
रागद्वेषं भयं शोकं, प्रहर्षौत्सुक्यदीनताः ।
व्युत्स्रजामि त्रिधा सर्वमरतिं रतिमेव च ॥ ७ ॥
जीवने मरणे लाभेऽलाभे योगे विपर्यये ।
बन्धावरौ सुखे दुःखे, सर्वदा समता मम ॥ ८ ॥
आत्मैव मे सदा ज्ञाने, दर्शने चरणे तथा ।
प्रत्याख्याने ममात्मैव, तथा संवरयोगयोः ॥ ९ ॥
एको मे शाश्वतश्चात्मा, ज्ञानदर्शनलक्षणः ।
शेषा बहिर्भवा भावाः, सर्वे संयोगलक्षणाः ॥ १० ॥
संयोगमूला जीवेन, प्राप्ता दुःखपरम्परा ।
तस्मात्संयोगसम्बन्धं, त्रिधा सर्वं त्यजाम्यहम् ॥ ११ ॥
एवं सामायिकात्सम्यक् सामायिकमखंडितम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्तते मुक्तिमानिन्या, वशभूताय ते नमः ॥ १२ ॥

इति सामायिक पाठः

श्रीअमितगतिसूरिविरचिता

द्वात्रिंशतिका ।

(सामायिक पाठ)

सत्वेषु मैत्रीं गुणिषु प्रमोदं, क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वम् । माध्यस्थ्यभावं विपरीतवृत्तौ, सदा ममात्मा विदधातु देव. ॥१॥ शरीरतः कर्त्तुमनन्तशक्तिं, विभिन्नमात्मानमपास्तदोषम् । जिनेन्द्र कोषादिव खड्गयष्टिं, तव प्रसादेन ममास्तु शक्तिः ॥ २ ॥ दुःखे सुखे वैरिणि बन्धुवर्गे, योगे वियोगे भवने वने वा । निराकृताशेषममत्वबुद्धेः, समं मनो मेऽस्तु सदापि नाथ ॥ ३ ॥ मुनीश ! लीनाविव कीलिताविव, स्थिरौ निषाताविव बिंबिताविव । पादौ त्वदीया मम तिष्ठतां सदा, तमोधुनानौ हृदि दीपकाविव ॥ ४ ॥ एकेन्द्रियाद्या यदि देव देहिनः, प्रमादतः संचरता इतस्ततः । क्षताः-विभिन्ना मिलिता निपीडिताः, दतस्तु मिथ्या दुरनुष्ठितं तदा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ ५ ॥ विमुक्तिमार्गप्रतिकूलवर्त्तिना मया कषायाक्षवशेन दुधिया। चारित्रशुद्धेर्यदकारि लोपनं, तदस्तु मिथ्या मम दुष्कृतं प्रभो ॥ ६ ॥ विनिन्दनालोचनगर्हणैरहं, मनोवचःकायकषायनिर्मितम्। निहन्मि पापं भवदुःखकारणं, भिषग्विषं मन्त्रगुणैरिवाखिलम् ॥ ७ ॥ अतिक्रमं यद्विमतेर्व्यतिक्रमं, जिनातिचारं सुचरित्रकर्म्मणः। व्यधामनाचारमपि प्रमादतः, प्रतिक्रमं तस्य करोमि शुद्धये ॥ ८ ॥ क्षति मनःशुद्धिविधेरतिक्रमं, व्यतिक्रमं शीलवृतेविलंघनम्। प्रभोऽतिचारं विषयेषु वर्तनं, वदन्त्यनाचारमिहातिसक्तताम् ॥ ९ ॥ यदर्थमात्रापदवाक्यहीनं, मया प्रमादाद्यदि किञ्चनोक्तम्। तन्मे क्षमित्वा विदधातु देवी, सरस्वती केवलबोधलब्धिम् ॥ १० ॥ बोधिः समाधिः परिणामशुद्धिः, स्वात्मोपलब्धिः शिवसौख्यसिद्धिः। चिन्तामणिं चिन्तितवस्तुदाने, त्वां वंद्यमानस्य ममास्तु देवि ॥११॥ यः स्मर्यते सर्वमुनीन्द्रवृन्दैः, यः स्तूयते सर्वनरामरेन्द्रैः। यो गीयते वेदपुराणशास्त्रैः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥ १२ ॥ यो दर्शनज्ञानसुखस्वभावः, समस्तसंसारविकारवाह्यः। समाधिगम्यः परमात्मसंज्ञः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥ १३ ॥ निषूदते यो भवदुःखजालं, नि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रीक्षते यो जगदन्तरालं । योऽन्तर्गतो योगिनिरीक्षणीयः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥ १४ ॥ विमुक्तिमार्गप्रतिपादको यो, यो जन्ममृत्युव्यसनाद्यतीतः । त्रिलोकलोकी विकलोऽकलङ्कः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥ १५ ॥ क्रोडीकृताशेषशरीरवर्गा, रागादयो यस्य न सन्ति दोषाः । निरिन्द्रियो ज्ञानमयोऽनपायः, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥ १६ ॥ यो व्यापको विश्वजनीनवृत्तेः, सिद्धो विबुद्धो धुतकर्मबन्धः । ध्यातो धुनीते सकलं विकारं, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥ १७ ॥ न स्पृश्यते कर्मकलङ्कदोषैः, यो ध्वान्तसंघैरिव तिग्मरश्मिः । निरञ्जनं नित्यमनेकमेकं, तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥ १८ ॥ विभासते यत्र मरीचिमाली, न विद्यमाने भुवनावभासी । स्वात्मस्थितं बोधमयप्रकाशं तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥ १९ ॥ विलोक्यमाने सति यत्र विश्वं, विलोक्यते स्पष्टमिदं विविक्तम् । शुद्धं शिवं शान्तमनाद्यनन्तं, तं देवमाप्तं शरणं प्रपद्ये ॥ २० ॥ येन क्षता मन्मथमानमूर्च्छा, विषादनिद्राभयशोकचिन्ता । क्षयोऽनलेनेव तरुप्रपंचः [illegible] शरणं प्रपद्ये ॥ २१ ॥ न सं- [illegible] विधानतो नो फलको विनि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

र्म्मितः । यतो निरस्ताक्षकषायविद्विषः, सुधीभिरात्मैव सुनि-र्मलो मतः ॥ २२ ॥ न संस्तरो भद्रसमाधिसाधनं, न लोक-पूजा न च संघमेलनम् । यतस्ततोऽध्यात्मरतो भवानिशं, विमुच्य सर्वामपि बाह्यवासनाम् ॥ २३ ॥ न सन्ति बाह्या मम केचनार्थाः, भवामि तेषाँ न कदाचहानम् । इत्थं विनि-श्चित्य विमुच्य बाह्यं, स्वस्थः सदा त्वं भव भद्र मुक्त्यै ॥ २४ ॥ आत्मानमात्मन्यवलोकयमानः, त्वं दर्शनज्ञानमयो विशुद्धः । एकाग्रचित्तः खलु यत्र तत्र, स्थितोऽपि साधुर्लभते समाधिम् ॥२५॥ एकः सदा शाश्वतिको ममात्मा, विनिर्मल-साधिगमस्वभावः । बहिर्भवाः सन्त्यपरे समस्ताः, न शाश्व-ताः कर्मभवा स्वकीयाः ॥२६॥ यस्यास्ति नैक्यं वपुषापि सार्द्धं, तस्यास्ति किं पुत्रकलत्रमित्रैः । पृथक्कृते चर्मणि रोमकूपाः कुतो हि तिष्ठन्ति शरीरमध्ये ॥ २७ ॥ संयोगतो दुःख-मनेकभेदं, यतोऽश्नुते जन्मवने शरीरी । ततस्त्रिधासौ परिवर्जनीयो, यियासुना निर्वृतिमात्मनीनाम् ॥ २८ ॥ सर्वं निराकृत्य विकल्पजालं, संसारकान्तारनिपातहेतुम् । विविक्तमात्मानमवेक्ष्यमाणो, निलीयसे त्वं परमात्मतत्त्वे ॥ २९ ॥ स्वयं कृतं कर्म यदात्मना पुरा, फलं तदीयं लभते शुभाशुभम् । परेण दत्तं यदि लभ्यते स्फुटं, स्वयं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृतं कर्म निरर्थकं तदा ॥ ३० ॥ निजार्जितं कर्म विहाय देहिनो, न कोपि कस्यापि ददाति किञ्चन। विचारयन्नेवमनन्यमानसः, परो ददातीति विमुच्य शेमुषीम् ॥ ३१ ॥ यैः परमात्माऽमितगतिवन्द्यः, सर्वविविक्तो भृशमनवद्यः। शश्वदधीतो मनसि लभन्ते, मुक्तिनिकेतं विभववरं ते ॥३२॥

इति द्वात्रिंशतावृत्तेः परमात्मानमीक्षते।
योऽनन्यगतचेतस्को, यात्यसौ पदमव्ययम् ॥ ३३ ॥

इत्यमितगतिसूरिविरचिता द्वाविंशतिका।

लघु—सामायिक पाठ ॥

सिद्धं सम्पूर्णभव्यार्थ—सिद्धेः कारणमुत्तमम्।
प्रशस्तदर्शनज्ञानचारित्र—प्रतिपादनम् ॥ १ ॥
सुरेन्द्रमुकुटाश्लिष्ट—पादपद्मांशुकेसरं।
प्रणमामि महावीरं लोकत्रितयमंगलम् ॥ २ ॥
सिद्धवस्तुवचो भक्त्या, सिद्धान् प्रणमतां सदा।
सिद्धकार्याः शिवं प्राप्ताः सिद्धिं ददतु नोऽव्ययाम् ॥३॥
नमोस्तु धुतपापेभ्यः सिद्धेभ्यः ऋषिपरिषदम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सामायिकं प्रपद्येऽहं भवभ्रमणसूदनम् ॥ ४ ॥

समता सर्वभूतेषु संयमे शुभभावना ।
आर्तरौद्रपरित्यागः तद्धि सामायिकं मतम् ॥ ५ ॥

साम्यं मे सर्वभूतेषु, वैरं मम न केनचित् ।
आशाः सर्वाः परित्यज्य समाधिमहमाश्रये ॥ ६ ॥

रागद्वेषान्ममत्वाद्वा हा मया ये विराधिताः ।
क्षाम्यन्तु जन्तवस्ते मे, तेभ्यो मृष्याम्यहं पुनः ॥ ७ ॥

मनसा, वपुषा, वाचा कृतकारितसंमतैः ।
रत्नत्रयभवं दोषं गर्हे निंदामि वर्जये ॥ ८ ॥

तैरश्चं मानवं दैवं उपसर्गं सहेऽधुना ।
कायाहारकषायादि प्रत्याख्यामि त्रिशुद्धितः ॥ ९ ॥

रागं द्वेषं भयं शोकं प्रहर्षौत्सुक्यदीनतां ।
व्युत्सृजामि त्रिधा सर्वामरतिं रतिमेव च ॥ १० ॥

जीविते मरणे लाभेऽलाभे योगे विपर्यये ।
बंधावरा सुखे दुःखे, सर्वदा समता मम ॥ ११ ॥

आत्मैव मे सदा ज्ञाने दर्शने चरणे तथा ।
प्रत्याख्याने ममात्मैव, तथा संसारयोगयोः ॥ १२ ॥

एको मे शाश्वतश्चात्मा ज्ञानदर्शनलक्षणः ।
शेषा बहिर्भवा भावाः सर्वे संयोगलक्षणाः ॥ १३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संयोगमूला जीवेन प्राप्ता दुःखपरम्परा ।
तस्मात् संयोगसंबंधं त्रिधा सर्वं त्यजाम्यहं ॥ १४ ॥
एवं सामायिकं सम्यक् सामायिकमखण्डितम् ।
वर्ततां मुक्तिमानिन्या वशीचूर्णायितं मम ॥ १५ ॥
शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः संगतिः सर्वदार्यैः,
सद्वृत्तानां गुणगणकथा दोषवादे च मौनम् ।
सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावना चात्मतत्वे,
संपद्यन्तां मम भवभवे यावदेतेऽपवर्गः ॥ १६ ॥
तव पादौ मम हृदये मम हृदयं तव पदद्वये लीनम् ।
तिष्ठतु जिनेन्द्र तावद्यावन्निर्वाणसंप्राप्तिः ॥ १७ ॥
अक्खरपयत्थहीणं मत्ताहीणं च जंमये भणियं ।
तं खमउ णाण देव य मज्झवि दुक्खक्खयं दितु ॥१८॥
दुक्खक्खओ कम्मक्खओ समाहिमरणं च बोहिलाहो य ।
मम होउ जगतबंधव जिणवर तव चरणसरणेण ॥१९॥

॥ इति सामायिक पाठ ॥

—※—

निर्वाणकाण्ड (गाथा)

अट्ठावयम्मि उसहो, चंपाए वासुपुज्जजिणणाहो ।
उज्जंते णेमिज्जिणो, पावाए णिव्बुदो महावीरो ॥ १ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वीसं तु जिणवरिंदा, अमरासुर- वंदिदा धुदकिलेसा ।
सम्मेदे गिरिसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं ।। २ ।।
वरदत्तो य वरंगो, सायरदत्तो य तारवरणयरे ।
आहुट्ठयकोडीओ, णिव्वाण गया णमो तेसिं ।। ३ ।।
णेमिस्सामि पज्जुण्णो, संबुकुमारो तहेव अणिरुद्धो ।
वाहत्तरिकोडीओ, उज्जंते सत्तसया सिद्धा ।। ४ ।।
रामसुआ वण्णि जणा, लाडणरिंदाण पंचकोडीओ ।
पावागिरिवरसिहरे, णिव्वाण गया णमो तेसिं ।। ५ ।।
पंडुसुआ तिण्णिजणा, दविडणरिंदाण अट्ठकोडीओ ।
सित्तुंजे गिरिसिहरे, णिव्वाण गया णमो तेसिं ।। ६ ।।
संते जे वलभद्दा, जदुवणरिंदाण अट्ठकोडीओ ।
गजपंथे गिरिसिहरे, णिव्वाण गया णमो तेसिं ।। ७ ।।
रामहणूसुग्गीओ, गवयगवक्खो य णीलमहणीलो ।
णवणवदीकोडीओ, तुंगिगिरीणिव्वुदे वंदे ।। ८ ।।
णंगाणंगकुमारा, कोडिपंचद्धमुणिवरा सहिया ।
सवणागिरिवरसिहरे, णिव्वाण गया णमो तेसिं ।।९।।
दहमुहरायस्स सुआ, कोडिपंचद्धमुणिवरा सहिया ।
रेवाउहयतडग्गे, णिव्वाण गया णमो तेसिं ।। १० ।।
रेवाणइए तीरे, पच्छिमभायम्मि सिद्धवरकूटे ।
दो चक्की दहकप्पे, आहुट्ठयकोडिणिव्वुदे वंदे ।। ११ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वडवाणीवरणयरे दक्खिणभायम्मि चूलगिरिसिहरे ।
इंदजीदकुंभयणो, णिव्वाण गया णमो तेसिं ॥१२॥

पावागिरिवरणयरे, सुवण्णभद्दाइमुणिवरा चउरो ।
चलणाणईतडग्गे, णिव्वाण गया णमो तेसिं ॥१३॥

फलहोडीवरगामे पच्छिमभायम्मि दोणगिरिसिहरे ।
गुरुदत्ताइ मुणिंदा, णिव्वाण गया णमो तेसिं ॥१४॥

णायकुमारमुणिंदो, वालि महावालि चेव अज्झेया ।
अट्ठावयगिरिसिहरे, णिव्वाण गया णमो तेसिं ॥१५॥

अच्चलपुरवरणयरे, ईसाणे भायमेढगिरिसिहरे ।
आहुट्ठयकोडीओ, णिव्वाण गया णमो तेसिं ॥१६॥

वंसत्थलम्मि णयरे, पश्छिमभायम्मि कुन्थगिरिसिहरे ।
कुलदेसभूषणमुणी, णिव्वाण गया णमो तेसिं ॥१७॥

जसहररायस्स सुआ, पंचसयाइं कलिंगदेसम्मि ।
कोडिसिला कोडिमुणी, णिव्वाण गया णमो तेसिं ॥१८॥

पासस्स समवसरणे, गुरुवरदत्त पंचरिसिपमुहा ।
रेसिंदोगिरिसिहरे, णिव्वाण गया णमो तेसिं ॥१९॥

जे जिणु जित्थु तत्था, जे दु गया णिव्वुदिं परमं ।
ते बंदामि य णिच्चं, तियरणसुद्धो णमंसामि ॥२०॥

सेसाणं तु रिसीणं, णिव्वाणं जम्मि जम्मि ठाणम्मि ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ते हं वंदे सव्वे, दुक्खक्खयकारणट्ठाए ॥२
पासं तह अहिणंदण, णायद्दहि मंगलाउरे बंदे।
अस्सारंभे पट्टणि. मुणिसुव्वओ तहेव बंदामि ॥
बाहूबलि तह बंदमि, पोदनपुर हत्थिनापुरे बंदे।
संतीकुन्थुव अरिहो, वाराणसिए सुपास पासं च ॥
माहुरए अहिछित्ते, वीरं पासं तहेव बंदामि।
जंबुमुणिदो बंदे, णिव्वुइपत्तोवि जंबुवणगहणे ॥
पंचकल्लाणठाणइ, जाणि वि संजादमच्चलोयम्मि।
मणवयणकायसुद्धो सव्वे सिरसा णमंसामि ॥
अग्गलदेवं बंदमि, वरणयरे णिवणकुण्डली बंदे।
पासं सिरिपुरि बंदमि, होला गिरिसंखदेवम्मि ॥
गोम्मटदेवं बंदमि, पंचसयं धणुहउच्चं तं।
देवा कुणंति वुट्ठी, केसरकुसुमाण तस्स उवरिम्मि ॥
णिव्वाणठाण जाणिवि, अइसयठाणाणि अइसये सहिया
संजादमिच्च लोए, सव्वे सिरसा णमंसामि ॥
जो जण पठइ तियालं, णिब्बुइकंडंपि भावसुद्धीय।
भुंजदि णरसुरसुक्खं, पच्छा सो लहइ णिव्वाणं ॥

अंचलिका

इच्छामि भंते ! परिणिव्वाणभत्तिकाउस्सग्गो
तस्सा लोचेउं। इमम्मि अवसप्पिणीए चउत्थ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यस्स पच्छिमे भाये, आहुट्ठमासहीणे वासचउक्कम्मिसेस-कम्मि पावाए णयरीयकत्तियमासस्स किण्हचउद्दसिए रत्तीए सादीए णक्खत्ते पच्चूसेभयवदो महदिमहावीरो वड्ढमाणो सिद्धिंगदो, तिसुवि लोएसु भवणवासिय वाणविंतर जोयि-सिय कप्पवासियत्ति चउव्विहा देवा सपरिवारा दिव्वेण, गंधेण, दिव्वेण, पुप्फेण, दिव्वेण, धूवेण, दिव्वेण, चुण्णेण, दिव्वेण, वासेण, दिव्वेण, ण्हाणेण, णिच्चकालं अच्चंति, पूजंति, वंदंति, णमंसंति, परिणिव्वाणमहा-कल्लाणपुज्जं करेंति, अहमवि इह सन्तो तत्थ संताइं णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

—※—

श्रीपूज्यपादाद्याचार्यविरचित:

श्रीदशभक्त्यादिसंग्रह:

(कौनसी भक्ति कहाँ करनी चाहिये)

कार्य	भक्ति
जिनप्रतिमावंदन आचार्य वंदना (गवासन से)	चैत्यभक्ति पंचगुरुभक्ति लघु-सिद्धभक्ति लघुआचार्यभक्ति
सिद्धांतवेत्ता आचार्य की वंदना—	सिद्ध, श्रुत, आचार्य भक्ति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साधारण मुनियों की वंदना—सिद्धभक्ति

सिद्धांतवेत्ता मुनियों की वंदना—सिद्धभक्ति, श्रुतभक्ति

स्वाध्यायका प्रारम्भ—	लघुश्रुतभक्ति आचार्य भक्ति
स्वाध्यायकी समाप्ति—	लघुश्रुतभक्ति।
आचार्यकी अनुपस्थितिमें पहले दिन उपवास वा प्रत्याख्यान ग्रहण किया हो तो दूसरे दिन आहार के समय	सिद्धभक्तिपढ़ कर उसका त वा आहारके लिये गमन
अहार की समाप्ति पर अगले दिन के उपवास वा प्रत्याख्यान का ग्रहण करने में	सिद्धभक्ति।
आचार्य की उपस्थितिमें आहार के लिये जाने के पहले	लघुयोगिभक्ति, लघुसिद्धभ
आहार के अनंतर प्रत्याख्यान वा उपवास की प्रतिज्ञा के लिये	लघुयोगिभक्ति लघुसिद्धभ
आचार्य वंदना —	लघुआचार्यभक्ति
चतुर्दशी के दिन त्रिकालवंदना के लिये	चैत्यभक्ति, श्रुतभक्ति, पं भक्ति। अथवा सिद्धभक्ति त्य भक्ति, श्रुतभक्ति, पं भक्ति, शांतिभक्ति।
नंदीश्वर पर्व में —	सिद्धभक्ति, नंदीश्वरभक्ति गुरुभक्ति, शांतिभक्ति।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्धप्रतिमा के सामने —	सिद्धभक्ति
तीर्थंकर के जन्म दिन —	चैत्यभक्ति, श्रुतभक्ति पंचगुरुभक्ति अथवा सिद्धभक्ति चैत्यभक्ति, पंचगुरुभक्ति, श्रुतभक्ति शांतिभक्ति।
अष्टमी चतुर्दशी की क्रिया में अपूर्व चैत्य वंदना वा त्रिकाल नित्यवंदना के समय	चैत्यभक्ति, पंचगुरुभक्ति शांतिभक्ति।
अभिषेक वंदना—	सिद्धभक्ति, चैत्यभक्ति, पंचगुरुभक्ति, शांतिभक्ति।
स्थिरबिंबप्रतिष्ठा—	सिद्धभक्ति, शांतिभक्ति
चल बिंबप्रतिष्ठा के चतुर्थ अभिषेक में	सिद्धभक्ति, चैत्यभक्ति, पंचमहागुरुभक्ति शांतिभक्ति।

तीर्थंकरों के गर्भजन्मकल्याणक में-सिद्धभक्ति, चारित्रभक्ति, शांतिभक्ति।

दीक्षाकल्याणक —	सिद्धभक्ति, चारित्रभक्ति, योगिभक्ति, शांतिभक्ति।
ज्ञानकल्याणक —	सिद्ध, श्रुत, चारित्र, योगि, शांतिभक्ति।
निर्वाणकल्याणक —	सिद्ध, श्रुत, चारित्र, योगि, निर्वाण और शांतिभक्ति।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वीरनिर्वाण-सूर्योदय के समय —	सिद्धभक्ति, निर्वाण, पंचगु[...] शांतिभक्ति।
श्रुतपंचमी —	बृहत्सिद्धभक्ति, बृहत्श्रुतभक्ति[...] श्रुतस्कंध की स्थापना, बृहत्वाच[...]ना, बृहत्श्रुतभक्ति, आचार्यभक्ति[...] पूर्वक स्वाध्याय, श्रुतभक्ति द्वारा[...] स्वाध्यायकी पूर्णता अन्तमें शांति[...] भक्ति कर क्रिया की पूर्णता
श्रुतपंचमी के दिन गृहस्थों को —	सिद्ध, श्रुत, शांतिभक्ति
सिद्धांत वाचना =	सिद्ध, श्रुतभक्ति द्वारा प्रारम्[...] श्रुतभक्ति आचार्यभक्ति [...] वाचना अंत में श्रुत और शांति[...] भक्ति।
गृहस्थों को सन्यास के प्रारम्भ में—	सिद्ध, श्रुत, शांतिभक्ति।
गृहस्थों को सन्यास के अन्त में—	सिद्ध, श्रुत, शांति
वर्षायोग धारण करते समय—	सिद्ध, योगि, चैत्यभक्ति।
वर्षायोगधारण की प्रदक्षिणा में—	यावन्ति जिनचैत्यानि, स्वय[...] स्तोत्र की दो स्तुति चैत्यभक्ति[...]

यदि चतुर्दशी की क्रिया चतुर्दशी के दिन न हो सके तो पौर्णि[...] वा अमावस्या के दिन अष्टमी की क्रिया करे अर्थात् सिद्ध, श्रुत, चा[...] और शांतिभक्ति पढ़े।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्षायोग स्वीकार करते समय —	गुरुभक्ति शान्तिभक्ति।
वर्षायोग समाप्ति में	--वर्षायोग धारण करने की पूर्णविधि
आचार्यपद ग्रहण करते समय	--सिद्ध आचार्य शान्ति भक्ति।
प्रतिमायोग धारण करने वाले मुनि की वन्दना करते समय	सिद्ध, योगि, शान्ति भक्ति।
दीक्षा ग्रहण करते समय--	बृहत्सिद्धभक्ति, लघुयोगिभक्ति।
दीक्षा के अन्त में—	सिद्धभक्ति।
केशलोंच करते समय—	लघुसिद्धभक्ति, लघुयोगिभक्ति।
लोच के अन्त में—	सिद्धभक्ति।
प्रतिक्रमण में—	सिद्ध, प्रतिक्रमण, वीरभक्ति, चतुर्विंशतितीर्थंकरभक्ति।
रात्रियोग धारण—	योगिभक्ति।
रात्रियोग का त्याग—	योगिभक्ति।
देव वन्दना में दोष लगने पर—	समाधिभक्ति।
सामान्य ऋषि के स्वर्गवास होने पर उनके शरीर और निषद्या की क्रिया में	सिद्ध, योगि, शान्तिभक्ति।
सिद्धान्तवेत्ता साधुके स्वर्गवासमें—	सिद्ध, श्रुत, योगि, शान्तिभक्ति।
उत्तर गुणधारी साधु के स्वर्गवास होने पर	सिद्ध, चारित्र, योगि, शांतिभक्ति।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उत्तरगुणधारी सिद्धान्तवेत्ता साधु के स्वर्गवास पर	सिद्ध, श्रुतचारित्रयोगिशांतिभक्ति
आचार्य के स्वर्गवास होने पर —	सिद्ध, योगि, आचार्य, शांतिभक्ति
सिद्धांतवेत्ता आचार्य के स्वर्गवास पर	सिद्धश्रुत योगिआचार्यशांतिभक्ति
उत्तरगुणधारी आचार्य के स्वर्गवास पर	सिद्ध चारित्र योगि आचार्य शांति भक्ति ।
उत्तरगुणधारी सिद्धांतवेत्ता आचार्य के स्वर्गवास पर	सिद्ध, श्रुत, योगि, आचा[illegible] शान्तिभक्ति ।
पाक्षिक प्रतिक्रमण में —	सिद्ध, चारित्र, प्रतिक्रमण, वी[illegible] भक्ति, चतुर्विंशतिभक्ति, चारित्रा[illegible] लोचना, गुरुभक्ति, बृहदालोचना[illegible] गुरुभक्ति, लघुआचार्यभक्ति ।
चातुर्मासिक प्रतिक्रमण में	”
वार्षिक प्रतिक्रमण में	”

—❀—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ ईर्यापथशुद्धिः

निःसंगोऽहं जिनानां सदनमनुपमं त्रिः परीत्येत्य भक्त्या, स्थित्वा गत्वा निषद्योच्चरणपरिणतोऽन्तः शनैर्हस्तयुग्मम् । भाले संस्थाप्य बुद्धया मम दुरितहरं कीर्तये शक्रवन्द्यं, निन्दादूरं सदाप्तं क्षयरहितममुं ज्ञानभानुं जिनेन्द्रम् ॥ १ ॥ श्रीमत्पवित्रमकलङ्कमनन्तकल्पं, स्वायंभुवं सकलमङ्गलमादितीर्थम् । नित्योत्सवं मणिमयं निलयं जिनानां, त्रैलोक्यभूषणमहं शरणं प्रपद्ये ॥ २ ॥ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् । जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य, शासनं जिनशासनं ॥ ३ ॥ श्रीमुखालोकनादेव, श्रीमुखालोकनं भवेत् । आलोकनविहीनस्य, तत्सुखावाप्तयः कुतः ॥४॥ अद्याभवत्सफलता नयनद्वयस्य, देव ! त्वदीयचरणाम्बुजवीक्षणेन । अद्य त्रिलोकतिलक प्रतिभासते मे, संसारवारिधिरयं चुलुकप्रमाणं ॥ ५ ॥ अद्य मे क्षालितं गात्रं, नेत्रे च विमलीकृते । स्नातोऽहं धर्मतीर्थेषु, जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ ६ ॥ नमो नमः सत्वहितंकराय, वीराय भव्याम्बुजभास्कराय । अनन्तलोकाय सुरार्चिताय, देवाधिदेवाय नमो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनाय ॥ ७ ॥ नमो जिनाय त्रिदशार्चिताय, विनष्टदोषाय गुणार्णवाय । विमुक्तिमार्गप्रतिबोधनाय, देवाधिदेवाय नमो जिनाय ॥ ८ ॥ देवाधिदेव ! परमेश्वर ! वीतराग ! सर्वज्ञ तीर्थंकर ! सिद्ध ! महानुभाव । त्रैलोक्यनाथ जिनपुंगव ! वर्द्धमान ! स्वामिन् ! गतोऽस्मि शरणं चरणद्वयं ते ॥ ९ ॥ जितमदहर्षद्वेषा जितमोहपरीषहा जितकषायाः । जितजन्ममरणरोगा जितमात्सर्या जयन्तु जिनाः ॥ १० ॥ जयतु जिनवर्द्धमानस्त्रिभुवनहितधर्मचक्रनीरजबन्धुः । त्रिदशपतिमुकुटभासुरचूडामणिरश्मिरंजितारुणचरणः ॥ ११ ॥ जय जय जय त्रैलोक्यकाण्डशोभिशिखामणे, नुद नुद नुद स्वान्तध्वान्तं जगत्कमलार्क नः । नय नय नय स्वामिन् शांतिं नितान्तमनन्तिमाँ, नहि नहि नहि त्राता लोकैकमित्र भवत्परः ॥ १२ ॥ चित्ते मुखे शिरसि पाणिपयोजयुग्मे, भक्ति स्तुतिं विनतिमञ्जलिमञ्जसैव । चेक्रीयते चरिकरीति चरीकरीति । यश्चर्करीति तव देव स एव धन्यः ॥ १३ ॥ जन्मोन्माज्यं भजतु भवतः पादपद्मं न लभ्यं, तच्चेत्स्वैरं चरतु न च दुर्देवतां सेवतां सः । अश्नात्यन्नं यदिह सुलभं दुर्लभं चेन्मुधास्ते, क्षुद्व्यावृत्त्यै कवलयति कः कालकूटं बुभुक्षुः ॥ १४ ॥ रूपं ते निरुपाधि-सुन्दरमिदं पश्यन् सह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्त्रेक्षणः, प्रेक्षाकौतुककारि कोऽत्र भगवन्नोपत्यवस्थान्तरम् । वाणीं गद्‌गदयन्वपुः पुलकयन्नेत्रद्वयं स्त्रावयन्, मूर्द्धानं नमयन्करौ मुकुलयंश्चेतोऽपि निर्वापयन् ॥ १५ ॥ त्रस्तारातिरिति त्रिकालविदिति त्राता त्रिलोक्या इति, श्रेयःसूतिरिति श्रियाँ निधिरिति श्रेष्ठः सुराणामिति । प्राप्तोऽहं शरणं शरण्यमगतिस्त्वां तत्त्यजोपेक्षणं, रक्ष क्षेमपदं प्रसीद जिन किं विज्ञापितैर्गोपितैः ॥ १६ ॥ त्रिलोकराजेन्द्रकिरीटकोटिप्रभाभिरालीढपदारविन्दम् । निर्मूलमुन्मूलितकर्मवृक्षं, जिनेन्द्रचन्द्रं प्रणमामि भक्त्या १७ ॥ करचरणतनुविघातादटतो निहतः प्रमादतः प्राणी । ईर्यापथमिति भीत्या मुञ्चे तद्दोषहान्यर्थम् ॥ १७ ॥ ईर्यापथे प्रचलताऽद्य मया प्रमादादेकेन्द्रियप्रमुखजीवनिकायबाधा । निर्वर्तिता यदि भवेदयुगांतरेक्षा, मिथ्या तदस्तु दुरितं गुरुभक्तितो मे ॥ १८ ॥

पडिक्कमामि भंते इरियावहियाए विराहणाए अणागुत्ते, आइग्गमणे, णिग्गमणे, ठाणे, गमणे, चंकमणे, पाणुग्गमणे विज्जग्गमणे, हरिदुग्गमणे, उच्चारपस्सयणखेलसिंहाणयवियडिय पइट्ठावणियाए, जे जीवा एइंदिया वा, वेइंदिया वा, तेइंदिया वा, चउरिंदिया वा, पंचेंदिया वा, णोल्लिदा वा, पेल्लिदा वा, संघट्टिदा वा, संघादिदा वा, उद्दाविदा वा, प-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रिदाविदा वा, किरिच्छिदा वा, लेसिदा वा छिंदिदा वा, भिंदिदा वा, ठाणदो वा ठाणचंकमणदो वा तस्स उत्तरगुणं तस्स पायच्छित्तकरणं तस्स विसोहिकरणं जाव अरहंताणं भयवंताणं णमोकारं करोमि तावक्कायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि। "ॐ णमो अरहन्ताणं, णमोसिद्धाणं, णमो आयरीयाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं" ॥ जाप्यानि ॥ ९ ॥ ॐ नमः परमात्मने नमोऽनेकान्ताय शान्तये इच्छामि भंते इरयावहियस्स आलोचेउं पुव्वुत्तरद-क्खिणपच्छिमचउदिसु विदिसासु विहरमाणेण, जुगंतरदि-ट्ठिणा, भव्वेण दठ्ठव्वा, पमाददोसेण डवडवचरियाए पाण-भूदजीवसत्ताणं एदेसिं उवघादो कदो वा कारिदो वा कारिंतो वा, समणुमणिदो वा तस्स मिच्छा मे दुक्कडं। पापिष्ठेन दुरात्मना जडधिया मायाविना लोभिना, रागद्वेष-मलीमसेन मनसा दुष्कर्म यन्निर्मितम्। त्रैलोक्याधिपते, जि-नेन्द्र भवतः श्रीपादमूलेऽधुना, निन्दापूर्वमहं जहामि सततं निर्वर्तये कर्म्मणाम् ॥ १ ॥ जिनेन्द्रमुन्मूलितकर्मबन्धं प्रणम्य सन्मार्गकृतस्वरूपम्। अनन्तबोधादिभवं गुणौघं क्रिया-कलापं प्रकटं प्रवक्ष्ये ॥ २ ॥ अथार्हत्पूजारंभक्रियायां पूर्वा-चार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीमत्सिद्धभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम् । णमो अरहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं । चत्तारि मंगलं, अरहन्ता मंगलं सिद्धा मंगलं, साहूमंगलं, केवलपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरहन्ता लोगुत्तमा ,सिद्धालोगुत्तमा, साहूलोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा । चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरहन्तं सरणं पव्वज्जामि, सिद्धं सरणं पव्वज्जामि, साहूसरणं पव्वज्जामि । केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्व ज्जामि । अड्ढाइज्जदीव–दोसमुद्देसु पण्णरसकम्मभूमिसु, जाव अरहन्ताणं, भयवंताणं, आदियराणं, तित्थयराणं, जिणाणं, जिणोत्तमाणं, केवलियाणं, सिद्धाणं बुद्धाणं, परिणिव्वुदाणं, अंतगणाणं, पारयडाणं धम्माइरियाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मणाणयगाणं धम्मवरचाउरंगचक्कवट्टीणं, देवाहिदेवाणं, णाणाणं दंसणाणं, चरित्ताणं, सदा करोमि, किरियम्मं। करेमि भंते, सामायियं सव्वसावज्जजोगं पच्चक्खामि, जावज्जीवं तिविहेण मणसा-वचसा कायेण, ण करेमि णकारेमि करंतंपि ण समणुमणामि तस्स भंते अइचारं पडिक्कमामि, णिंदामि गरहामि जाव अरहंताणं भयवंताणं,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पज्जुवासं करेमि, तावकालं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि
जीवियमरणे लाहालाहे संजोगविप्पजोगेय। बंधुरिसुह
दुक्खादो समदा सामायियं णाम। त्थोस्सामि हं जिणवरे
तित्थयरे केवली अणन्तजिणे। णरपवरलोयमहिए, विहु
यरयमले महप्पणे ॥ १ ॥ लोयस्सुज्जोययरे, धम्मं
तित्थंकरे जिणे वंदे। अरहंते कित्तिस्से, चउवीसं चेव के
वलिणो ॥ २ ॥ उसहमजियं च वंदे, संभवमभिणंदणं च
सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ ३॥
सुविहिं च पुप्फयंतं, सीयल सेयं च वासुपुज्जं च। विमलम
णंतं भयवं धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ४ ॥ कुंथुं च जिण
वरिंदं, अरं च मल्लिं च सुव्वयं च णमिं। वंदाम्यरिट्ठणेमिं
तह पासं वड्ढमाणं च ॥ ५ ॥ एवं मए अभित्थुया विहु
यरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा
मे पसीयंतु ॥ ६ ॥ कित्तिय वंदिय महिया एदे लोगोत्तमा
जिणा सिद्धा। आरोग्गणाणलाहं, दिंतु समाहिं च मे बोहिं
॥ ७ ॥ चंदेहिं णिम्मलयरा, आइच्चेहिं अहियपहा सत्ता
सायरमिव गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ८ ॥

इति ईर्यापथशुद्धिः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ श्रीसिद्धभक्तिः

सिद्धानुद्धूतकर्मप्रकृतिसमुदयान्साधितात्मस्वभावान्, वंदे सिद्धिप्रसिद्ध्यै तदनुपमगुणप्रग्रहाकृष्टितुष्टः । सिद्धिः स्वात्मोपलब्धिः प्रगुणगुणगणोच्छादिदोषापहारान्, योग्योपादानयुक्त्या दृषद इह यथा हेमभावोपलब्धिः ॥ १ ॥ नाभावः सिद्धिरिष्टा न निजगुणहतिस्तत्तपोभिर्न युक्तेः, अस्त्यात्मानादिबद्धः स्वकृतजफलभुक् तत्क्षयान्मोक्षभागी । ज्ञाता दृष्टा स्वदेहप्रमितिरुपसमाहारविस्तारधर्मा, ध्रौव्योत्पत्तिव्ययात्मा स्वगुणयुत इतो नान्यथा साध्यसिद्धिः ॥ २ ॥ स त्वन्तर्बाह्यहेतुप्रभवविमलसद्दर्शनज्ञानचर्या–, संपद्धेतिप्रघातक्षतदुरिततया व्यञ्जिताचिन्त्यसारैः । कैवल्यज्ञानदृष्टिप्रवरसुखमहावीर्यसम्यक्त्वलब्धि–, ज्योतिर्वातायनादिस्थिरपरमगुणैरद्भुतैर्भासमानः ॥ ३ ॥ जानन्पश्यन्समस्तं सममनुपरतं संप्रतृप्यन्वितन्वन्, धुन्बन्ध्वान्तं नितान्तं निचितमनुपमं प्रीणयन्नीशभावम् । कुर्वन्सर्वप्रजानामपरमभिभवन् ज्योतिरात्मानमात्मा आत्मन्येवात्मनासौ क्षणमुपजनयन्सत्स्वयंभूः प्रवृत्तः ॥ ४ ॥ छिन्दन्नशेषानशेषान्निगलबलकलींस्तैरनन्तस्वभावैः, सूक्ष्मत्वाग्र्यावगाहागुरुलघुकगुणैः क्षायिकैः शोभमानः । अन्यैश्चा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न्यव्यपोहप्रवणविषयसंप्राप्तिलब्धिप्रभावै-, रूर्ध्वं व्रज्यास्वभा-
वात्समयमुपगतो धाम्नि संतिष्ठतेऽग्र्ये ॥ ५ ॥ अन्याकाराप्ति
हेतु र्न च भवति परो येन तेनाल्पहीनः, प्रागात्मोपात्तदेह
प्रतिकृतिरुचिराकार एव ह्यमूर्तः । क्षुत्तृष्णाश्वासकासज्वर
मरणजरानिष्टयोगप्रमेह-व्यापत्त्याद्युग्रदुःखप्रभवभवहृतेः को
स्य सौख्यस्य माता ॥ ६ ॥ आत्मोपादानसिद्धं स्वयमति
शयवद्वीतबाधं विशालं, वृद्धिह्रासव्यपेतं विषयविरहितं निः
तिद्वन्द्वभावम् । अन्यद्रव्यानपेक्षं निरुपममभितं शाश्वतं सर्व
कालं, उत्कृष्टानन्तसारं परमसुखमतस्तस्य सिद्धस्य जात
॥ ७ ॥ नार्थः क्षुत्तृट्विनाशाद्विविधरसयुतैरन्नपानैरशुच्या
नास्पृष्टेर्गन्धमाल्यैर्नहि मृदुशयनैर्ग्लानिनिद्राद्यभावात् ।
तङ्कार्तेरभावे तदुपशमनसद्भेषजानर्थतावद्, दीपानर्थक्यव
व्यपगततिमिरे दृश्यमाने समस्ते ॥ ८ ॥ तादृक्सम्पत्समे
विविधनयतपःसंयमज्ञानदृष्टि— चर्यासिद्धाः समन्तात्प्रवित
यशसो विश्वदेवाधिदेवाः । भूता भव्या भवन्तः सकलज
ये स्तूयमाना विशिष्टैः, तान्सर्वान्नौम्यनंतान्निजिगमिषु
तत्स्वरूपं त्रिसन्ध्यम् ॥ ९ ॥ कृत्वा कायोत्सर्गं चतु
दोषविरहितं सुपरिशुद्धम् । अतिभक्तिसंप्रयुक्तो यो वं
स लघु लभते परमसुखम् ॥ १ ॥ इच्छामि भंते सिद्धि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाणसम्मदंसणसम्मचारित्तजुत्ताणं अट्ठविहकम्मविप्पमुक्काणं अट्ठगुणसंपण्णाणं उड्ढलोयमच्छयमि पयट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं अतीताणागदवट्टमाणकालत्तयसिद्धाणं सव्वसिद्धाणं सया णिच्चकालं अंचेमि वन्दामि पूजेमि णमंस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं ।

इति सिद्धभक्तिः

श्रीश्रुतभक्तिः

स्तोष्ये संज्ञानानि परोक्षप्रत्यक्षभेदभिन्नानि । लोकालोकविलोकनलोकितसल्लोचनानि सदा ॥१॥ अभिमुखनियमितबोधनमाभिनिबोधिकमनिंद्रियेन्द्रियजम् । बह्वाद्यवग्रहादिककृतषट्त्रिंशत् त्रिशतभेदम् ॥२॥ विविधर्द्धिबुद्धिकोष्ठस्फुटबीजपदानुसारिबुद्ध्यधिकं । संभिन्नश्रोतृतया सार्धं श्रुतभाजनं वन्दे ॥३॥ श्रुतमपि जिनवरविहितं गणधररचितं द्व्यनेकभेदस्थम् । अङ्गांगवाह्यभावितमनंतविषयं नमस्यामि ॥४॥ पर्यायाक्षरपदसंघातप्रतिपत्तिकानुयोगविधीन् । प्राभृतकप्राभृतकं प्राभृतकं वस्तुपूर्वं च ॥५॥ तेषां समासतोऽपि च विंशति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भेदान्समश्नुवानं तत् । वन्दे द्वादशधोक्तं गंभीरवरशास्त्र
पद्धत्या ॥६॥ आचारं सूत्रकृतं स्थानं समवायनामधेयं च
व्याख्याप्रज्ञप्तिं च ज्ञातृकथोपासकाध्ययने ॥७॥ वंदेऽन्त
कृद्दशमनुत्तरोपपादिकदशं दशावस्थम् । प्रश्नव्याकरणं हि
विपाकसूत्रं च विनमामि ॥८॥ परिकर्म च सूत्रं च स्तौमि
प्रथमानुयोगपूर्वंगते । सार्द्धं चूलिकयापि च पंचविधं दृष्टि
वादं च ॥९॥ पूर्वंगतं तु चतुर्दशधोदितमुत्पादपूर्वमाद्यमहं
आग्रायणीयमीडे पुरुषवीर्यानुप्रवादं च ॥१०॥ संततमह
भिवंदे तथास्तिनास्तिप्रवादपूर्वं च । ज्ञानप्रवादसत्यप्रवाद
मात्मप्रवादं च ॥११॥ कर्मप्रवादमीडेऽथ प्रत्याख्याननाम
धेयं च । दशमं विद्याधारं पृथुविद्यानुप्रवादं च ॥१२
कल्याणनामधेयं प्राणावायं क्रियाविशालं च । अथ लोक
बिंदुसारं वंदे लोकाग्रसारपदं ॥१३॥ दश च चतु
चाष्टावष्टादश च द्वयोर्द्विषट्कं च । षोडश च विंशतिं
त्रिंशतमपि पंचदश च तथा ॥१४॥ वस्तूनि दश दशा
ष्वनुपूर्वं भाषितानि पूर्वाणाम् । प्रतिवस्तु प्राभृतक
विंशतिं विंशतिं नौमि ॥१५॥ पूर्वान्तं ह्यपरान्तं ध्रुवम
च्यवनलब्धिनामानि । अध्रुवसंप्रणिधिं चाप्यर्थं भौमाव
च ॥१६॥ सर्वार्थकल्पनीयं ज्ञानमतीतं त्वनागतं काल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्धिमुपाध्यं च तथा चतुर्दशवस्तूनि द्वितीयस्य ॥ १७ ॥ पंचमवस्तुचतुर्थप्राभृतकस्यानुयोगनामानि । कृतिवेदने तथैव स्पर्शनकर्मप्रकृतिमेव ॥ १८॥ बंधननिबंधनप्रक्रममथाभ्युदयमोक्षैः । संक्रमलेश्ये च तथा लेश्यायाः कर्मपरिणामौ ॥ १९ ॥ सातमसातं दीर्घं ह्रस्वं भवधारणीयसंज्ञं च । पुरुपुद्गलात्मनाम च निधत्तमनिधत्तमभिनौमि ॥ २० ॥ सनिकाचितमनिकाचितमथ कर्मस्थितिकपश्चिमस्कंधौ । अल्पबहुत्वं च यजे तद्द्वाराणां चतुर्विंशम् ॥२१॥ कोटीनां द्वादशशतमष्टापंचाशतं सहस्राणाम् । लक्षत्र्यशीतिमेव च पंच च वंदे श्रुतपदानि ॥२२॥ षोडशशतं चतुस्त्रिंशत्कोटीना त्र्यशीतिलक्षाणि । शतसंख्याष्टासप्ततिमष्टाशीतिं च पदवर्णान् ॥२३॥ सामायिकं चतुर्विंशतिस्तवं वंदनां प्रतिक्रमणं । वैनयिकं कृतिकर्म च पृथुदशवैकालिकं च तथा ॥ २४ ॥ वरमुत्तराध्ययनमपि कल्पव्यवहारमेवमभिवंदे । कल्पाकल्पं स्तौमि महाकल्पं पुंडरीकं च ॥२५॥ परिपाटचा प्रणिपतितोऽस्म्यहं महापुंडरीकनामैव । निपुणान्यशीतिकं च प्रकोर्णकान्यंगवाह्यानि ॥ २६ ॥ पुद्गलमर्यादोक्तं प्रत्यक्षं सप्रभेदमवधिं च । देशावधिपरमावधिसर्वावधिभेदमभिवंदे ॥२७॥ परमनसि स्थितमर्थं मनसा परिविद्य मंत्रिमहितगुणम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऋजुविपुलमतिविकल्पं स्तौमि मनःपर्ययज्ञानम् ॥ २८ ॥
क्षायिकमनन्तमेकं त्रिकालसर्वार्थयुगपदवभासम् । सकलसु-
खधाम सततं वंदेऽहं केवलज्ञानम् ॥२६॥ एवमभिष्टुवतो
मे ज्ञानानि समस्तलोकचक्षूंषि । लघु भवताज्ज्ञानर्द्धिर्ज्ञानफ
सौख्यमच्यवनं ॥३०॥ इच्छामि भंते ! सुदभत्तिकाउस्सग्
कओ तस्स आलोचेउं अंगोवंगपइण्णए पाहुडयपरियम्मसु
त्तपढमाणिओगपुव्वगयचूलिया चेव सुत्तत्थयथुइधम्मकहाइ
णिच्चकालं अच्चेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्ख
क्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाहो, सुगइगमणं समाहिमरणं
जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

इति श्रुतभक्तिः

---*---

अथ श्रीचारित्रभक्तिः

येनेन्द्रान्भुवनत्रयस्य विलसत्केयूरहारांगदान्, भास्वन्मौ
मणिप्रभाप्रविसरोत्तुङ्गोत्तमाङ्गान्नतान् । स्वेषां पादप
रुहेषु मुनयश्चक्रुः प्रकामं सदा, वंदे पञ्चतयं तमद्य नि
दन्नाचारमभ्यर्चितम् ॥ १ ॥ अर्थव्यंजनतद्द्वयाविकल
कालोपधाप्रश्रयाः, स्वाचार्याद्यनपन्हवो बहुमतिश्चेत्या

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व्याहृतम् । श्रीमज्ज्ञातिकुलेन्दुना भगवता तीर्थस्य कर्त्राऽऽजसा, ज्ञानाचारमहं त्रिधा प्रणिपताम्युद्धूतये कर्मणाम् ॥ २ ॥ शंकादृष्टि–विमोहकांक्षणविधिव्यावृत्ति सन्नद्धतां, वात्सल्यं विचिकित्सनादुपरतिं, धर्मोपबृंहक्रियां । शक्त्या शासनदीपनं हितपथाद्भ्रष्टस्य संस्थापनं, वंदे दर्शनगोचरं सुचरितं मूर्ध्ना नमन्नादरात् ॥३॥ एकान्ते शयनोपवेशनकृतिः संतापनं तानवम्, संख्यावृत्तिनिबन्धनामनशनं विष्वाणमर्द्धोदरम् । त्यागं चेन्द्रियदन्तिनो मदयतः स्वादो रसस्यानिशम्, षोढा बाह्यमहं स्तुवे शिवगतिप्राप्त्यभ्युपायं तपः ॥४॥ स्वाध्यायः शुभकर्मणश्च्युतवतः संप्रत्यवस्थापनम्, ध्यानं व्यापृतिरामयाविनि गुरौ वृद्धे च बाले यतौ । कायोत्सर्जनसत्क्रिया विनय इत्येवं तपः षट्विधं, वंदेऽभ्यंतरमन्तरंगबलवद्विद्वेषिविध्वंसनम् ॥५॥ सम्यग्ज्ञानविलोचनस्य दधतः श्रद्धानमर्हन्मते, वीर्यस्याविनिगूहनेन तपसि स्वस्य प्रयत्नाद्यतेः ॥ या वृत्तिस्तरणीव नौरविवरा लध्वी भवोदन्वतो, वीर्याचारमहं तमूर्जितगुणं वंदे सतामर्चितम् ॥६॥ तिस्रः सत्तमगुप्तयस्तनुमनोभाषानिमित्तोदयाः, पंचेर्यादिसमाश्रयाः समितयः पंचव्रतानीत्यपि । चारित्रोपहितं त्रयोदशतयं पूर्वं न दृष्टं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परै-राचारं परमेष्ठिनो जिनपतेर्वीरं नमामो वयम् ॥७॥
आचारं सह पंचभेदमुदितं तीर्थं वरं मंगलं, निर्ग्रंथान
सच्चरित्रमहतो वंदे समग्रान्यतीन् ॥ आत्माधीनसुखोद
यामनुपमां लक्ष्मीमविध्वंसिनीं, इच्छन्केवलदर्शनावगम-
नप्राज्यप्रकाशोज्वलाम् ॥८॥ अज्ञानाद्यदवीवृतं निय
मिनोऽवर्तिष्यहं चान्यथा, तस्मिन्नर्जितमस्यति प्रतिन
चैनो निराकुर्वंति ॥ वृत्ते सप्ततयी निधिं सुतपसामृ
नयत्यद्भुतं, तन्मिथ्या गुरु दुष्कृतं भवतु मे स्वं निंदि
निंदितम् ॥९॥ संसारव्यसनाहतिप्रचलिता नित्योदयप्रा
र्थिनः, प्रत्यासन्नविमुक्तयः सुमतयः शांतैनसः प्राणिनः
मोक्षस्यैव कृतं विशालमतुलं सोपानमुच्चैस्तराम्, आरो
हन्तु चरित्रमुत्तममिदं जैनेंद्रमोजस्विनः ॥१०॥ इच्छा
भंते चारित्तभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्स आलोचेउं सम
ण्णाणजोयस्स सम्मत्ताहिट्ठियस्य सव्वपहाणस्स णिव्वा
णमग्गस्स कम्मणिज्जरफलस्स खमाहारस्स पंचमहव्व
संपण्णस्स तिगुत्तिगुत्तस्स पंचसमिदिजुत्तस्स णाणज्झ
णसाहणस्स समया इव पवेसयस्स सम्मचारित्तस्स स
अंचेमि, पूजेमि वंदामि णमंसामि, दुक्खक्खओ कम्म

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्खओ, बोहिलाहो सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुण-संपत्ति होउ मज्झं ।

इति चारित्रभक्तिः

अथ योगभक्तिः

जातिजरोरुरोगमरणातुरशोकसहस्रदीपिताः, दुःस-हनरकपतनसन्त्रस्तधियः प्रतिबुद्धचेतसः । जीवितमंबुबिं-दुचपलं तडिदभ्रसमा विभूतयः, सकलमिदं विचिन्त्य मुनयः प्रशमाय वनान्तमाश्रिताः ॥१॥ व्रतसमितिगुप्ति-संयुताः शमसुखमाधाय मनसि वीतमोहाः । ध्यानाध्य-यनवशंगताः विशुद्धये कर्मणां तपश्चरन्ति ॥२॥ दिनकर-किरणनिकरसंतप्तशिलानिचयेषु निःस्पृहाः । मलपटलाव-लिप्ततनवः शिथिलीकृतकर्मबंधनाः ॥ व्यपगतमदनदर्पर-तिदोषकषायविरक्तमत्सराः । गिरिशिखरेषु चंडकिरणाभि-मुखस्थितयो दिगंबराः ॥३॥ सज्ज्ञानामृतपायिभिः क्षान्ति-पयःसिच्यमानपुण्यकायैः । धृतसंतोषच्छत्रकैस्तापस्तीव्रोऽपि सह्यते मुनीन्द्रैः ॥४॥ शिखिगलकज्जलालिमलिनैर्विबुधा-धिपचापचित्रितैः, भीमरवैर्विसृष्टचण्डाशनिशीतलवायु-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वृष्टिभिः । गगनतलं विलोक्य जलदैः स्थगितं सहसा तपोधनाः, पुनरपि तरुतलेषु विषमासु निशासु विशंकमा सते ॥५॥ जलधाराशरताडिता न चलन्ति चरित्रतः सद नृसिंहाः । संसारदुःखभीरवः परीषहारातिघातिनः प्रवीराः ॥६॥ अविरतबहलतुहिनकणवारिभिरंघ्रिपपत्रपातनै-रनव मुक्तसीत्काररवैः परुषैरथानिलैः शोषितगात्रयष्टयः । श्रमणा धृतिकंबलावृताः शिशिरनिशाम् । तुषारविष गमयन्ति चतुःपथे स्थिताः ॥७॥ इति योगत्रयधारि सकलतपःशालिनः प्रवृद्धपुण्यकायाः । परमानंदसुखैषि समाधिमग्र्यं दिशंतु नो भदन्ताः ॥८॥ गिह्मे गिरि हरत्था वरिसायाले रुक्खमूलरयणीसु । सिसिरे बाहिरसय ते साहू वंदिमो णिच्चं ॥१॥ गिरिकंदरदुर्गेषु ये व दिगंबराः । पाणिपात्रपुटाहारास्ते यांति परमां गतिम् ॥

इच्छामि भंते योगिभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्स लो अड्ढाइज्जदीवदोसमुद्देसु पण्णारसकम्मभूमीसु आदाव रुक्खमूलअब्भोवासठाणमोणविरासणेक्कपासकुक्कुडासण उच्छपक्खखवणादियोगजुत्ताणं सव्वसाहूणं वंदा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णमंसामि, दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, वोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ॥

इति योगभक्तिः

अथ आचार्यभक्तिः

सिद्धगुणस्तुतिनिरतानुद्धतरुषाग्निजालबहुलविशेषान् ।
गुप्तिभिरभिसंपूर्णान् मुक्तियुतः सत्यवचनलक्षितभावान् ॥१॥
मुनिमाहात्म्यविशेषात् जिनशासनसत्प्रदीपभासुरमूर्तीन् ॥
सिद्धिं प्रपित्सुमनसो बद्धरजोविपुलमूलघातनकुशलान् ॥२॥
गुणमणिविरचितवपुषः षड्द्रव्यविनिश्चितस्य धातॄन्सततम् ॥
रहितप्रमादचर्यान्दर्शनशुद्धान्—गणस्य संतुष्टिकरान् ॥ २ ॥
मोहच्छिदुग्रतपसः प्रशस्तपरिशुद्धहृदयशोभनव्यवहारान् ।
प्रासुकनिलयाननघानाशाविध्वंसिचेतसो हतकुपथान् ॥ ४ ॥
धारितविलसन्मुण्डान्वर्जितबहुदंडपिंडमंडलनिकरान् ।
सकलपरीषहजयिनः क्रियाभिरनिशं प्रमादतः परिरहितान्
॥ ५ ॥ अचलान्व्यपेतनिद्रान्स्थानयुतान्कष्टदुष्टलेश्याहीनान् । विधिनानाश्रितवासानलिप्तदेहान्विनिर्जितेंद्रियक-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रिणः ॥६॥ अतुलानुत्कुटिकासान्विविक्तचित्तानखंडितस्वाध्यायान् । दक्षिणभावसमग्रान्व्यपगतमदरागलोभशठमात्सर्यान् ॥७॥ भिन्नार्तरौद्रपक्षान्संभावितधर्मशुक्लनिर्मलहृदयान् ॥ ८॥ नित्यं पिनद्धकुगतीन्पुण्यान्गण्योदयान्विलीनगारवचर्यान् । तरुमूलयोगयुक्तानवकाशातापयोगरागसनाथान् । बहुजनहितकरचर्यानभवानन्घान्महानुभावविधानान् ॥ ९ ॥ ईदृशगुणसंपन्नान्युष्मान्भक्त्या विशालया स्थिरयोगान् विधिनानारतमग्र्यान्मुकुलीकृतहस्तकमलशोभितशिरसा ॥ १० ॥ अभिनौमि सकलकलुषप्रभवोदयजन्मजरामरणबंधनमुक्तान् । शिवमचलमनघमक्षयमव्याहतमुक्तिसौख्यमस्त्विति सततम् ॥ ११ ॥ इच्छामि भंते आइरियभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाणसम्मदंसणसम्मयचारित्तजुत्ताणं पंचविहाचाराणाण आयरियाणं आयारादिसुदणाणोवदेसयाणं उवज्झायाणं, तिरयणगुणपालनरयाणं सव्वसाहूणं सया अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, वोहिलाहो सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिनगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

इति आचार्य भक्तिः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ पंचगुरुभक्तिः

श्रीमदमरेन्द्रमुकुटप्रघटितमणिकिरणवारिधाराभिः ।
प्रक्षालितपदयुगलान्प्रणमामि जिनेश्वरान्भक्त्या ॥ १ ॥
अष्टगुणैः समुपेतान्प्रणष्टदुष्टाष्टकर्मरिपुसमितीन् । सिद्धान्सत-
तमनन्तान्तान्नमस्करोमीष्टतुष्टिसंसिद्ध्यै ॥ २ ॥ साचार-
श्रुतजलधीन्प्रतीर्य शुद्धोरुचरणनिरतानाम् । आचार्याणां पद-
युगकमलानि दधे शिरसि मेऽहम् ॥ ३ ॥ मिथ्यावादिमदो-
ग्रध्वान्तप्रध्वंसिवचनसंदर्भान् । उपदेशकान्प्रपद्ये मम दुरिता-
रिप्रणाशाय ॥ ४ ॥ सम्यग्दर्शनदीपप्रकाशका मेयबोधसंभूताः।
भूरिचरित्रपताकास्ते साधुगणास्तु मां पान्तु ॥ ५ ॥ जिन
सिद्धसूरिदेशकसाधुवरानमलगुणगणोपेतान् । पंचनमस्कार-
पदैस्त्रिसन्ध्यमभिनौमि मोक्षलाभाय ॥६॥ एष पञ्चनमस्कारः
सर्वपापप्रणाशनः । मङ्गलानां च सर्वेषां प्रथमं मंगलं
भवेत् ॥ ७ ॥ अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायाः सर्वसाधवः ।
कुर्वन्तु मंगलाः सर्वे निर्वाणपरमश्रियम् ॥ ८ ॥ सर्वान् जिने-
न्द्रचन्द्रान्सिद्धानाचार्यपाठकान् साधून् । रत्नत्रयं च वंदे रत्न-
त्रयसिद्धये भक्त्या ॥९॥ पान्तु श्रीपादपद्मानि पञ्चानां पर-
मेष्ठिनाम् । लालितानि सुराधीशचूडामणिमरीचिभिः ॥ १ ॥
प्रातिहार्यैर्जिनान् सिद्धान् गुणैः सूरीन् स्वमातृभिः । पाठ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कान् विनयेः साधून् योगांगैरष्टभिः स्तुवे ॥ ११ ॥ इच्छामि भंते पंचमहागुरुभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं अट्ठमहापाडिहेरसंजुत्ताणं अरहंताणं, अट्ठगुणसंपण्णाणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पइट्ठियाणं सिद्धाणं, अट्ठपवयणमउसंजुत्ताणं आयरियाणं, आयारादिसुदणाणोवदेसयाणं उवज्झायाणं, तिरयणगुणपालणरयाणं सव्वसाहूणं, णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाहो, सुगइगमणं समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

इति पंचगुरुभक्तिः

अथ तीर्थंकरभक्तिः

अथ देवसियपडिक्कमणाए सव्वाइचारविसोहिणिमित्तं पुव्वाइरियकमेण चउवीसतित्थयरभत्तिकाउस्सग्गं करेमि ।

चउवीसं तित्थयरे उसहाईवीरपच्छिमे वंदे । सव्वेसिं मुणिगणहरसिद्धे सिरसा णमंसामि ॥ १ ॥ ये लोकेऽष्टसहस्रलक्षणधरा ज्ञेयार्णवांतर्गता–, ये सम्यग्भवजालहेतुमथनाश्चंद्रार्कतेजोधिकाः ॥ ये साध्विद्रसुराप्सरोगणशतैर्गीतप्रणुत्यार्चिताः, तान्देवान्वृषभादिवीरचरमान्भक्त्या नमस्यामि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ २ ॥ नाभेयं देवपूज्यं जिनवरमजितं सर्वलोकप्रदीपम्, सर्वज्ञं संभवाख्यं मुनिगणवृषभं नंदनं देवदेवम् ॥ कर्मारिघ्नं सुबुद्धिं वरकमलनिभं पद्मपुष्पाभिगंधम्, क्षान्तं दांतं सुपार्श्वं सकलशशिनिभं चंद्रनामानमीडे ॥ ३ ॥ विख्यातं पुष्पदंतं भवभयमथनं शीतलं लोकनाथम्, श्रेयांसं शीलकोषं प्रवरनरगुरुं वासुपूज्यं सुपूज्यं । मुक्तं दान्तेन्द्रियाश्वं विमलमृषिपतिं सिंहसैन्यं मुनीन्द्रम्, धर्मं सद्धर्मकेतुं शमदमनिलयं स्तौमि शान्तिं शरण्यम् ॥ ४ ॥ कुंथुं सिद्धालयस्थं श्रमणपतिमरं त्यक्तभोगेषु चक्रम् । मल्लिं विख्यातगोत्रं खचरगणनुतं सुव्रतं सौख्यराशिम् । देवेन्द्रार्च्यं नमीशं हरिकुलतिलकं नेमिचन्द्रं भवान्तम्, पार्श्वं नागेन्द्रवन्द्यं शरणमहमितो वर्द्धमानं च भक्त्या ॥ ५ ॥

इच्छामि भंते चउवीसतित्थयरभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं, पंचमहाकल्लाणसंपण्णाणं अट्ठमहापाडिहेरसहियाणं चउतीसअतिसयविसेससंजुत्ताणं, बत्तीसदेविंदमणिमउडमत्थयमहियाणं, बलदेववासुदेवचक्कहररिसिमुणिजइअणगारोवगूढाणं, थुइसयसहस्सणिलयाणं, उसहाइ—वीरपच्छिममंगलमहापुरिसाणं णिच्चकालं अंचेमि, पुज्जेमि, वंदामि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो सुगइगम
समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

इति तीर्थंकर भक्तिः

अथ शान्तिभक्तिः

न स्नेहाच्छरणं प्रयान्ति भगवन्पादद्वयं ते प्रजाः
हेतुस्तत्र विचित्रदुःखनिचयः संसारघोरार्णवः । अत्यन्तस्फु
रदुग्ररश्मिनिकरव्याकीर्णभूमंडलो, ग्रैष्मः कारयतीन्दुपा
सलिलच्छायानुरागं रविः ॥ १ ॥ क्रुद्धाशीर्विषदष्टदुर्जयवि
ज्वालावलीविक्रमो, विद्याभैषजमंत्रतोयहवनैर्याति प्रशां
यथा । तद्वत्ते चरणारुणांबुजयुगस्तोत्रोन्मुखानां नृणां
विघ्नाः कायविनायकाश्च सहसा शाम्यन्त्यहो विस्मयः ॥ २
संतप्तोत्तमकांचनक्षितिधरश्रीस्पर्द्धिगौरद्युते, पुंसां त्वच्चर
प्रमाणकरणात्पीडाः प्रयान्ति क्षयं । उद्यद्भास्करविस्फुरत्क
शतव्याघातनिष्कासिताः । नानादेहिविलोचनद्युतिहरा शी
यथा शर्वरी ॥ ३ ॥ त्रैलोक्येश्वरभंगलब्धविजयादत्यंतरौ
त्मकान्, नानाजन्मशतांतरेषु पुरतो जीवस्य संसारिण
को वा प्रस्खलतीह केन विधिना कालोग्रदावानलान्न

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

च्चेत्तव पादपद्मयुगलस्तुत्यापगावारणम् ।। ४ ।। लोकालोक-
निरन्तरप्रविततसानैकमूर्ते विभो ! नानारत्नपिनद्धदन्डरुचि-
श्वेतातपत्रत्रय । त्वत्पादद्वयपूतगीतरवतः, शीघ्रं द्रवन्त्या-
मया, दर्पाध्मातमृगेंद्रभीमनिनदाद्वन्या यथा कुञ्जराः ।। ५ ।।
दिव्यस्त्रीनयनाभिरामविपुलश्रीमेरुचूड़ामणे, भास्वद्बालदिवा-
करद्युतिहरप्राणेष्टभामण्डल । अव्याबाधमचिन्त्यसारमतुलं
त्यक्तोपमं शाश्वतं, सौख्यं त्वच्चरणारविंदयुगलस्तुन्यैव
संप्राप्यते ।। ६ ।। यावन्नोदयते प्रभापरिकरः श्रीभास्करो
भासयं स्तादद्धारयतीह पंकजवनं निद्रातिभारश्रमम् । याव-
त्वच्चरणद्वयस्य भगवन्न स्यात्प्रसादोदयस्तावज्जीवनिकाय एष
वहति प्रायेण पापं महत् ।।७।। शांति शांतिजिनेन्द्रशांतमनस-
स्त्वत्पादपद्माश्रयात्, संप्राप्ताः पृथिवीतलेषु बहवः शान्त्यर्थिनः
प्राणिनः । कारुण्यान्मम भाक्तिकस्य च विभो दृष्टिं
प्रसन्नां कुरु, त्वत्पादद्वयदैवतस्य गदतः शांत्यष्टकं भक्तितः
।।८।। शांतिजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं शीलगुणव्रतसंयमपात्रं ।
अष्टशतार्चितलक्षणगात्रं नौमि जिनोत्तममम्बुजनेत्रम् ।।९।।
पञ्चमभीप्सितचक्रधराणां पूजितमिन्द्रनरेन्द्रगणैश्च । शांति-
करं गणशांतिमभीप्सुः षोडशतीर्थंकरं प्रणमामि ।।१०।। दिव्य-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तरुः सुरपुष्पसुवृष्टिर्दुन्दुभिरासनयोजनघोषौ ।। आतपवारण-
चामरयुग्मे यस्य विभाति च मंडलतेजः ।। ११ ।। तं जगद-
र्चितशान्तिजिनेन्द्रं शांतिकरं शिरसा प्रणमामि । सर्वगणाय
तु यच्छतु शान्ति मह्यमरं पठते परमां च ।। १२ ।।
येऽभ्यर्चिता मुकुटकुंडलहाररत्नैः, शक्रादिभिः सुरगणैः
स्तुतपादपद्माः । ते मे जिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपाः
तीर्थंकराः सततशांतिकरा भवन्तु ।।१३।। सम्पूजकानां प्रति-
पालकानां यतींद्रसामान्यतपोधनानाम् । देशस्य राष्ट्रस्य
पुरस्य राज्ञः करोतु शांति भगवान् जिनेंद्रः ।। १४ ।। क्षेमं
सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान्धार्मिको भूमिपालः । काले
काले च सम्यग्वर्षंतु मघवा व्याधयो यान्तु नाशम् ।
दुर्भिक्षं चौरमारिः क्षणमपि जगतां मास्म भूज्जीवलोके ।
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि ।। १५ ।।
तद्द्रव्यमव्ययमुदेतु शुभः स देशः, संतन्य तां प्रतप-
सततं स कालः । भावः स नन्दतु सदा यदनुग्रहे
रत्नत्रयं प्रतपतीह मुमुक्षुवर्गे ।। १५ ।। प्रध्वस्तघातिकर्माणः
केवलज्ञानभास्कराः । कुर्वन्तु जगतां शान्ति वृषभादि-
जिनेश्वराः ।। १६ ।। इच्छामि भंते शान्तिभत्तिकाउस्सग्ग

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कओ तस्सालोचेउं पंचमहाकल्लाणसंपण्णाणं, अट्ठमहापाडिहेरसहियाणं, चउतीसातिसयविसेससंजुत्ताणं बत्तीसदेवेंदमणिमयमउडमत्थयमहियाणं, बलदेववासुदेवचक्कहररिसिमुणिजदिअणगारोवगूढाणं, थुइसयसहस्सणिलयाणं, उसहाइवीरपच्छिममंगलमहापुरिसाणं णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति, होउ मज्झं ॥

इति शांतिभक्तिः

—*—

अथ समाधिभक्तिः

स्वात्माभिमुखसंवित्तिलक्षणं श्रुतचक्षुषा । पश्यन्पश्यामि देव त्वां केवलज्ञानचक्षुषा ॥ १ ॥ शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः संगतिः सर्वदार्यैः, सद्वृत्तानां गुणगणकथा दोषवादे च मौनम् । सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावना चात्मतत्वे, संपद्यंतां मम भवभवे यावदेतेऽपवर्गः ॥ २ ॥ जैनमार्गरुचिरन्यमार्गनिर्वेगता जिनगुणस्तुतौ मतिः । निष्कलंकविमलोक्तिभावनाः संभवन्तु मम जन्मजन्मनि ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुरुमूले यतिनिचिते चैत्यसिद्धांतवार्धिसद्घोषे । मम भवतु जन्मजन्मनि सन्यसनसमन्वितं मरणम् ॥ ४ ॥ जन्मजन्मकृतं पापं जन्मकोटिसमार्जितम् । जन्ममृत्युजरामूलं हन्यते जिनवंदनात् ॥ ५ ॥ आबाल्याज्जिनदेवदेव भवतः श्रीपादयोः सेवया, सेवासक्तविनेयकल्पलतया कालोद्ययावद्गतः। त्वां तस्याः फलमर्थये तदधुना प्राणप्रयाणक्षणे, त्वन्नामप्रतिबद्धवर्णपठने कण्ठोऽस्त्वकुण्ठो मम ॥ ६ ॥ तव पादौ मम हृदये ममहृदयं तव पदद्वये लीनम् । तिष्ठतु जिनेन्द्र तावद्यावन्निर्वाणसंप्राप्तिः ॥ ७ ॥ एकापि समर्थेयं जिनभक्तिर्दुर्गतिं निवारयितुम् । पुण्यानि च पूरयितुं दातुं मुक्तिश्रियं कृतिनः ॥ ८ ॥ पंच अरिंजयणामे पंचय मदिसायरे जिणे वंदे । पंच जसोयर णाभिये पंचय सोमंदरे वंदे ॥ ९ ॥ रयणत्तयं च वंदे, चव्वीसजिणे च सव्वदा वंदे पंचगुरूणं वंदे चारणचरणं सदा वंदे ॥१०॥ अर्हमित्यक्षरब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः । सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणिदध्महे ॥ ११ ॥ कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मीनिकेतनम् सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहम् ॥ १२ ॥ आकृष्टिं सुरसंपदां विदधते मुक्तिश्रियो वश्यतां । उच्चाटं विपदां चतुर्गतिभुवां विद्वेषमात्मैनसाम् ॥ स्तंभं दुर्गम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रति प्रयततो मोहस्य सम्मोहनम्-, पायात्पंचनमस्क्रियाक्षरमयी साराधना देवता ॥ १३ ॥ अनंतानन्तसंसारसंततिच्छेदकारणम् । जिनराजपदाम्भोजस्मरणं शरणं मम ॥१४॥ अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम । तस्मात्कारुण्यभावेन रक्ष रक्ष जिनेश्वर ॥१५॥ न हि त्राता नहि त्राता न हि त्राता जगत्त्रये । वीतरागात्परो देवो न भूतो न भविष्यति ॥ १६ ॥ जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्दिने दिने । सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु भवे भवे ॥ १७ ॥ याचेऽहं याचेऽहं जिन तव चरणारविन्दयोर्भक्तिम् । याचेऽहं याचेऽहं पुनरपि तामेव तामेव ॥१८॥

विघ्नौघाः प्रलयं यांति शाकिनीभूतपन्नगाः ।
विषो निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ॥ १६ ॥

इच्छामि भंते समाहिभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं, रयणत्तयपरूपवपरमप्पज्झाणलक्खणं समाहिभत्तीये णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

इति समाधिभक्तिः ।

—※—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ निर्वाण भक्तिः

विबुधपतिखगपनरपतिधनदोरगभूतयक्षपतिमहितम्
अतुलसुखविमलनिरुपमशिवमचलमनामयं हि संप्रातम् ॥ १ ॥
कल्याणैः संस्तोष्ये पंचभिरनघं त्रिलोकपरमगुरुम् । भव्य
जनतुष्टिजननैर्दुरवापैः सन्मतिं भक्त्या ॥ २ ॥ आषाढ
सुसितषष्ठ्यां हस्तोत्तरमध्यमाश्रिते शशिनि । आयात
स्वर्गसुखं भुक्त्वा पुष्पोत्तराधीशः ॥ ३ ॥ सिद्धार्थनृपतितन
भारतवास्ये विदेहकुंडपुरे । देव्यां प्रियकारिण्यां सुस्व
प्नान्संप्रदर्श्य विभुः ॥ ४ ॥ चैत्यसितपक्षफाल्गुनि–शशांक
योगे दिने त्रयोदश्याम् । जज्ञे स्वोच्चस्थेषु ग्रहेषु सौम्ये
शुभलग्ने ॥ ५ ॥ हस्ताश्रिते शशांके चैत्रज्योत्स्ने चतुर्द
दिवसे । पूर्वाण्हे रत्नघटैर्विबुधेन्द्राश्चक्रुरभिषेकम् ॥ ६
भुक्त्वा कुमारकाले त्रिंशद्वर्षाण्यनंतगुणराशिः । अम
पनीतभोगान्सहसाभिनिबोधितोऽन्येद्युः ॥ ७ ॥ नानावि
रूपचितां विचित्रकूटोच्छ्रितां मणिविभूषाम् । चंद्रप्रभा
शिविकामारुह्य पुराद्विनिःक्रान्तः ॥ ८ ॥ मार्गशिरकृष्णद
मीहस्तोत्तरमध्यमाश्रिते सोमे । षष्ठेन त्वपराह्णे भ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनः प्रवव्राज ॥ ९ ॥ ग्रामपुरखेटकर्वटमटंबघोषाकरान्प्र-
विजहार । उग्रैस्तपोविधानैर्द्वादशवर्षाण्यमरपूज्यः ॥ १० ॥
ऋजुकूलायास्तीरे शालद्रुमसंश्रितेशिलापट्टे । अपराह्णेपष्ठे-
नास्थितस्य खलु जृंभिकाग्रामे ॥ ११ ॥ वैशाखसितदशम्यां
हस्तोत्तरमध्यमाश्रिते चंद्रे । क्षपकश्रेण्यारूढस्योत्पन्नं केवल-
ज्ञानम् ॥१२॥ अथ भगवान् संप्रापद्दिव्यं वैभारपर्वतं रम्यम् ।
चातुर्वर्ण्यसुसंघस्तत्राभूद्गोतमप्रभृति ॥१३॥ छत्राशोकौ घोषं
सिंहासनदुंदुभीकुसुमवृष्टिम् । वरचामरभामण्डलदिव्यान्यन्या-
नि चावापत् ॥१४॥ दशविधमनगाराणामेकादशधोत्तरं तथा
धर्मम् । देशयमानो व्यहरंस्त्रिंशद्वर्षाण्यथजिनेन्द्रः ॥१५॥ पद्म-
वनदीर्घिकाकुलविविधद्रुमखण्डमण्डिते रम्ये । पावानगरोद्याने
व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः ॥१६॥ कार्तिककृष्णस्यान्ते स्वा-
तावृक्षे निहत्य कर्मरजः । अवशेषं संप्रापद्व्यजरामरमक्षयं सौ-
ख्यम् ॥१७॥ परिनिर्वृतं जिनेन्द्रं ज्ञात्वा विबुधा ह्यथाशु चा-
गम्य । देवतरुरक्तचन्दनकालागुरुसुरभिगोशीर्षैः ॥१८॥ अग्नी-
न्द्राज्जिनदेहं मुकुटानलसुरभिधूपवरमाल्यैः । अभ्यर्च्य गण-
धरानपि गता दिवं खं च वनभवने ॥ १९ ॥ इत्येवं भगवति
वर्धमान चंद्रे, यः स्तोत्रम् पठति सुसंध्ययोर्द्वयोर्हि ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सोऽनंतं परमसुखं नृदेवलोके भुक्त्वांते शिवपदमक्षयं प्रया
॥ २० ॥ यत्रार्हतां गणभृतां श्रुतपारगाणां, निर्वाणभूमि
भारतवर्षजानाम् । तामद्य शुद्धमनसा क्रियया वचो
संस्तोतुमुद्यतमतिः परिणौमि भक्त्या ॥ २१ ॥ कैला
शैलशिखरे परिनिर्वृतोऽसौ, शैलेशिभावमुपपद्य वृ
महात्मा । चंपापुरे च वसुपूज्यसुतः सुधीमान्, सि
परामुपगतो गतरागबंधः ॥ २२ ॥ यत्प्रार्थ्यते शिव
विबुधेश्वराद्यैः, पाखंडिभिश्च परमार्थगवेषशीलैः । नष्ट
कर्मसमये तदरिष्टनेमिः, संप्राप्तवान् क्षितिधरे बृहदूर्ज
॥ २३ ॥ पावापुरस्य बहिरुन्नतभूमिदेशे, पद्मोत्प
कुलवतां सरसां हि मध्ये ॥ श्रीवर्द्धमानजिनदेव
प्रतीतो, निर्वाणमाप भगवान्प्रविधूतपाप्मा ॥ २४ ॥ शेष
ते जिनवरा जितमोहमल्ला, ज्ञानार्कभूरिकिरणैरव
लोकान् । स्थानं परं निरवधारितसौख्यनिष्ठं, सम्
पर्वततले समवापुरीशाः ॥ २५ ॥ आद्यश्चतुर्दशदिनैर्विनि
योगः, षष्ठेन निष्ठितकृतिर्जिनवर्द्धमानः । शेषा वि
घनकर्मनिबद्धपाशाः, मासेन ते यतिवरास्त्वभवन्वियो
॥ २६ ॥ माल्यानि वाक्स्तुतिमयैः कुसुमैः सुदृब्धान्या

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मानसकरैरभितः किरंतः ॥ पर्येम आहृतियुता भगवन्निषद्याः, संप्रार्थिता वयमिमे परमां गतिं ताः ॥ २७ ॥ शत्रुंजये नगवरे दमितारिपक्षाः, पंडोः सुताः परमनिर्वृंति-मभ्युपेताः । तुंग्यां तु संगरहितो बलभद्रनामा, नद्यास्तटे जितरिपुश्च सुवर्णभद्रः ॥ २८ ॥ द्रोणीमति–प्रबलकुंडलमेंढ्रके च, वैभारपर्वततले वरसिद्धकूटे । ऋष्याद्रिके च विपुलाद्रिबलाहके च, विंध्ये च पौदनपुरे वृषदीपके च ॥ २९ ॥ सह्याचले च हिमवत्यपि सुप्रतिष्ठे, दंडात्मके गजपथे पृथुसारयष्टौ । ये साधवो हतमलाः सुगतिं प्रयाताः, स्थानानि तानि जगति प्रथिनान्यभूवन् ॥ ३० ॥ इक्षोर्विकार-रसपृक्तगुणेन लोके, पिष्टोऽधिकां मधुरतामुपयाति यद्वत् । तद्वच्च पुण्यपुरुषैः रुषितानि नित्यं, स्थानानि तानि जगतामिह पावनानि ॥ ३१ ॥ इत्यर्हतां शमवतां च महा-मुनीनां, प्रोक्ता मयात्र परिनिर्वृंतिभूमिदेशाः । ते मे जिना जितभया मुनयश्च शांताः, दिश्यासुराशु सुगतिं निरवद्य सौख्याम् ॥ ३२ ॥ कैलाशाद्रौ मुनींद्रःपुरुरपदुरितो मुक्तिमाप प्रणूतः चम्पायां वासुपूज्यस्त्रिदशपतिनुतो नेमिरप्यूर्जयन्ते । पावायां वर्धमानस्त्रिभुवनगुरवो विंशतिस्तीर्थनाथाः,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्मेदाग्रे प्रजग्मुर्दयतु विनमतां निर्वृतिं नो जिनेंद्राः ॥३३॥
गौर्गजोश्वः कपिः कोकः सरोजः स्वास्तिकः शशी। मकर
श्रीयुतो वृक्षो गंडो महिषशूकरौ ॥३४॥ सेघावज्रमृगच्छाग
पाठीनः कलशस्तथा। कच्छपश्चोत्पलं शंखो नागराज
केसरी ॥ ३५ ॥ शांतिकुन्थ्वरकौरव्या यादवौ नेमिसुव्रतौ
उग्रनाथौ पार्श्ववीरौ शेषा इक्ष्वाकुवंशजाः ॥ ३६ ॥ इच्छामि
भंते परिणिव्वाणभत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं इमम्मि
अवसप्पिणीये, चउत्थसमयस्स पच्छिमे भाए, आउट्ठमास
हीणे, वासचउक्कम्मि सेसकालम्मि। पावाये णयरीए, कत्ति
यमासस्स किण्हचउदसिए। रत्तीए सादीए णक्खत्ते, पच्चूसे
भयवदो महदि महावीरो वड्ढमाणो सिद्धिं गदो। तीसुवि
लोएसु, भवणवासियवाणविंतरजोइसियकप्पवासियत्ति चउ
व्विहा देवा सपरिवारा दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण पुप्फेण,
दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण वासेण, दिव्वेण
ण्हाणेण, णिच्चकालं, अच्चंति, पूजंति, वंदंति, णमंसंति,
परिणिव्वाणं, महाकल्लाणयुज्जं करंति, अहमवि इहसंतो
तत्थ संताइयं णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि,
दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं,
जिणगुणसंपत्ति, होउ मज्झं ॥

इति निर्वाण भक्तिः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ नंदीश्वर भक्तिः

त्रिदशपतिमुकुटतटगतमणिगण-करनिकरसलिलधाराधौत-क्रमकमलयुगलजिनपतिरुचिर-प्रतिबिंबविलयविरहितनिलयान् ॥ १ ॥ निलयानहमिह महसां सहसा प्रणिपतनपूर्वमवनौम्यवनौ । त्रय्यां त्रय्या शुद्धया निसर्ग-शुद्धान्विशुद्धये घनरजसाम् ॥ २ ॥ भावनसुरभवनेषु द्वासप्ततिशतसहस्र-संख्याभ्यधिकाः । कोटयः सप्त प्रोक्ता भवनानां भूरितेजसां भुवनानाम् ॥ ३ ॥ त्रिभुवनभूतविभूनां संख्यातीतान्यसंख्य-गुणयुक्तानि । त्रिभुवनजननयनमनः प्रियाणि भवनानि भौमविबुधनुतानि ॥ ४ ॥ यावन्ति सन्ति कान्तज्योतिर्लोका-धिदेवताभिनुतानि, कल्पेऽनेकविकल्पे कल्पातीतेऽहमिन्द्र-कल्पानल्पे ॥५॥ विंशतिरथ त्रिसहिता सहस्रगुणिता च सप्तन वति प्रोक्ता, चतुरधिकाशीतिरतः पंचकशून्येन विनिहतान्य-नघानि ॥ ६ ॥ अष्टापंचाशदतश्चतुःशतानीह मानुषे च क्षेत्रे । लोकालोकविभागप्रलोकनालोकसंयुजां जयभाजाम् ॥ ७ ॥ नवनवचतुःशतानि च सप्त च नवतिः संहस्रगुणिताः षट्च, पंचाशत्पंचवियत्प्रहताः पुनरत्र कोटयोऽष्टौ प्रोक्ताः ॥८॥ एता-वंत्येव सतामकृत्रिमाण्यथ जिनेशिनां भवनानि, भुवनत्रितये

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्रिभुवनसुरसमितिसमर्च्यमानसत्प्रतिमानि ॥ ९ ॥ वक्षा-
ररुचककुंडलरौप्यनगोत्तरकुलेषुकारनगेषु । कुरुषु च
जिनभवनानि त्रिशतान्यधिकानि तानि षड्विं-
शत्या ॥ १० ॥ नन्दीश्वरसद्द्वीपे नंदीश्वरजलधिपरिवृ-
धृतशोभे । चंद्रकरनिकरसन्निभरुन्द्रयशोविततदिङ्महीमं-
डलके ॥ ११ ॥ तत्रत्यांजनदधिमुखरतिकरपुरुनगवराख्य
पर्वतमुख्याः । प्रतिदिशमेषामुपरि त्रयोदशेन्द्रार्चितानि जि-
नभवनानि ॥ १२ ॥ आषाढकार्तिकाख्ये फाल्गुनमासे च
शुक्लपक्षेऽष्टम्याः । आरभ्याष्टदिनेषु च सौधर्मप्रमुखविबुध-
पतयो भक्त्या ॥ १३ ॥ तेषु महामहमुचितं प्रचुराक्षतगंधपु-
ष्पधूपैर्दिव्यैः । सर्वज्ञप्रतिमानां प्रकुर्वंते सर्वहितम् ॥ १४ ॥
भेदेन वर्णना का सौधर्मः स्नपनकर्तृतामापन्नः । परिचार-
कभावमिताः शेषेन्द्रा रुन्द्रचंद्रनिर्मलयशसः ॥ १५ ॥
मंगलपात्राणि पुनस्तद्देव्यो बिभ्रति स्म शुभ्रगुणाढ्याः
अप्सरसो नर्तक्यः शेषसुरास्तत्र लोकनाव्यग्रधियः ॥ १६ ॥
वाचस्पतिवाचामपि गोचरतां संव्यतीत्य यत्क्रममाणम्
विबुधपतिर्विहितविभवं मानुषमात्रस्य कस्य शक्तिः स्तोतुं
॥ १७ ॥ निष्ठापितजिनपूजाश्चूर्णस्नपनेन दृष्टविकृतविशेषाः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुरपतयो नंदीश्वरजिनभवनानि प्रदक्षिणीकृत्य पुनः ॥१८॥ पंचसु मंदरगिरिषु श्रीभद्रशालनंदनसौमनसम् । पांडुकवनमिति तेषु प्रत्येकं जिनगृहाणि चत्वार्येव ॥ १९ ॥ तान्यथ परीत्य तानि च नमसित्वा कृतसुपूजनास्तत्रापि । स्वास्पदमीयुः सर्वे स्वास्पदमूल्यं स्वचेष्टया संगृह्य ॥ २० ॥ सहतोरणसद्वेदीपरीतवनयागवृक्षमानस्तंभ-। ध्वजपंक्तिदशकगोपुरचतुष्टयत्रितयशालमंडपवर्यैः ॥ २१ ॥ अभिषेकप्रेक्षणिकाक्रीडनसंगीतनाटकालोकगृहैः । शिल्पिविकल्पितकल्पनसंकल्पातीतकल्पनैः समुपेतैः ॥ २२ ॥ वापीसत्पुष्करिणीसुदीर्घिकाद्यम्बुसंसृतैः समुपेतैः । विकसितजलरुहकुसुमैर्नभस्यमानैः शशिग्रहर्क्षैः शरदि ॥ २३ ॥ भृंगाराब्दककलशाद्युपकरणैरष्टशतकपरिसंख्यानैः । प्रत्येकं चित्रगुणैः कृतझणझणनिनदविततघंटाजालैः ॥२४॥ प्रविभ्राजंते नित्यं हिरण्मयानीश्वरेशिनां भवनानि । गंधकुटीगतमृगपतिविष्टररुचिराणि विविधविभवयुतानि ॥२५॥ येषु जिनानां प्रतिमाः पंचशतशरासनोच्छ्रिताः सत्प्रतिमाः । मणिकनकरजतविकृता दिनकरकोटिप्रभाधिकप्रभदेहाः ॥२६॥ तानि सदा वंदेऽहं भानुप्रतिमानि यानि कानि च तानि । यशसां महसां

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रतिदिशमतिशयशोभाविभांजि पापविभंजि ॥ २७ ॥ सप्त-
त्यधिकशतप्रियधर्मक्षेत्रगततीर्थंकरवरवृषभान् । भूतभविष्य-
त्संप्रतिकालभवान्भवविहानये विनतोऽस्मि ॥ २८ ॥ अस्या-
मवसर्पिण्यां वृषभजिनः प्रथमतीर्थंकर्ता भर्ता । अष्टापदगिरि-
मस्तकगतस्थितो मुक्तिमाप पापोन्मुक्तः ॥ २९ ॥ श्रीवासुपू-
ज्यभगवान् शिवासु पुजासु पूजितस्त्रिदशानां । चम्पायां
दुरितहरः परमपदं प्रापदापदामन्तगतः ॥३०॥ मुदितमतिब-
लमुरारिप्रपूजितो जितकषायरिपुरथ जातः । बृहदुर्जयन्तशिखरे
शिखामणिस्त्रिभुवनस्य नेमिर्भगवान् ॥ ३१ ॥ पावापुरवर-
सरसां मध्यगतः सिद्धिवृद्धितपसां महसां । वीरो नीरदनादो
भूरिगुणश्चारुशोभमास्पदमगमत् ॥ ३२ ॥ सम्मदकरिवन-
परिवृतसम्मेदगिरीन्द्रमस्तके विस्तीर्णे । शेषा ये तीर्थंकराः
कीर्तिभृतः प्रार्थितार्थसिद्धिमवापन् ॥३३॥ शेषाणां केवलिनां
अशेषमतवेदिगणभृतां साधूनां । गिरितलविवरदरीसरिदु-
वनतरुविटपिजलधिदहनशिखासु ॥ ३४ ॥ मोक्षगतिहेतुभूत-
स्थानानि सुरेन्द्ररुन्द्रभक्तिनुतानि । मंगलभूतान्येतान्यंगी-
कृतधर्मकर्मणामस्माकम् ॥ ३५ ॥ जिनपतयस्तत्प्रतिमास्त-
दालयास्तन्निषद्यकास्थानानि । ते ताश्च ते च तानि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भवन्तु भवघातहेतवो भव्यानाम् ॥३६॥ संध्यासु तिसृषु नित्यं, पठेद्यदि स्तोत्रमेतदुत्तमयशसाम् । सर्वज्ञानां सार्वं, लघु लभते श्रुतधरेडितं पदममितम् ॥३७॥ नित्यं निःस्वेदत्वं निर्मलता क्षीरगौररुधिरत्वं च । स्वाद्याकृतिसंहनने सौरूप्यं सौरभं च सौलक्ष्यम् ॥ ३८ ॥ अप्रमितवीर्यता च प्रियहितवादित्व-मन्यदमितगुणस्य, प्रथिता दशविख्याताः स्वतिशयधर्माः स्वयंभुवो देहस्य ॥ ३९ ॥ गव्यूतिशतचतुष्टयसुभिक्षतागगनगमनमप्राणिवधः । भुक्त्युपसर्गाभावश्चतुरास्यत्वं च सर्वविद्येश्वरता ॥ ४० ॥ अच्छायत्वमपक्ष्मस्पंदश्च समप्रसिद्धनखकेशत्वं । स्वतिशयगुणा भगवतो घातिक्षयजा भवंति तेपि दशैव ॥ ४१ ॥ सार्वार्धमागधीया भाषा मैत्री च सर्वजनताविषया । सर्वर्तु फलस्तबकप्रवालकुसुमोपशोभिततरुपरिणामा ॥ ४२ ॥ आदर्शतलप्रतिमा रत्नमयी जायते मही च मनोज्ञा । विहरणमन्वेत्यनिलः परमानंदश्च भवति सर्वजनस्य ॥ ४३ ॥ मरुतोऽपि सुरभिगंधव्यामिश्रा योजनांतर—भूभागं । व्युपशमितधूलिकंटकतृणकीटकशर्करोपलं प्रकुर्वन्ति ॥ ४४ ॥ तदनु स्तनितकुमारा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विद्युन्मालाविलासहासविभूषाः । प्रकिरन्ति सुरभिगंधि गंधोदकवृष्टिमाज्ञया त्रिदशपतेः ॥ ४५ ॥ वरपद्मरागकेसरमतुलसुखस्पर्शहेममयदलनिचयम् । पादन्यासे पद्मं सप्त पुरः पृष्ठतश्च सप्तभवंति ॥४६॥ फलभारनम्रशालिव्रीह्यादिसमस्तसस्यधृतरोमांचा । परिहृषितेव च भूमिस्त्रिभुवननाथस्य वैभवं पश्यंती ॥४७॥ शरदुदयविमलसलिलं सर इव गगनं विराजते विगतमलम् । जहति च दिशस्तिमिरिकां विगतरजःप्रभृतिजिह्मताभावं सद्यः ॥ ४८ ॥ एतेतेति त्वरितं ज्योतिर्व्यंतरदिवौकसाममृतभुजः । कुलिशभृदाज्ञापनया कुर्वन्त्यन्ये समन्ततो व्याह्वानम् ॥ ४९ ॥ स्फुरदरसहस्ररुचिरं विमलमहारत्नकिरणनिकरपरीतम् । प्रहसितकिरणसहस्रद्यु तिमंडलमग्रगामि धर्मसुचक्रम् ॥ ५० ॥ इत्यष्टमगलं च स्वादर्शप्रभृति भक्तिरागपरीतैः । उपकल्प्यन्ते त्रिदशैरेतेऽपि निरुपमातिशेषाः ॥ ५१ ॥ वैडूर्यरुचिरविटपप्रवालमृदुपल्लवोपशोभितशाखः । श्रीमानशोकवृक्षो वरमरकतपत्रगहनबहलच्छायः ॥ ५२ ॥ मंदारकुंदकुवलयनीलोत्पलकमलमालतीबकुलाद्यैः । समदभ्रमरपरीतैर्व्यामिश्रा पतति कुसुमवृष्टिर्नभसः ॥ ५३ ॥ कटकटिसूत्रकुंडलकेयूरप्रभृतिभूषितांगौ स्वंगौ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यक्षौ कमलदलाक्षौ परिनिक्षिपतः सलीलचामरयुगलम् ॥५४॥ आकस्मिकमिव युगपद्दिवसकरसहस्रमपगतव्यवधानम् । भामंडलमविभावितरात्रिंदिवभेदमतितरामाभाति ॥५५॥ प्रबलपवनाभिघातप्रक्षुभितसमुद्रघोषमन्द्रध्वानम् । दंध्वन्यते सुवीणावंशादिसुवाद्यदुन्दुभिस्तालसमम् ॥ ५६ ॥ त्रिभुवनपतितालांछनमिंदुत्रयतुल्यमतुलमुक्ताजालम् । छत्रत्रयं च सुबृहद्वैडूर्यविक्लृप्तदंडमधिकमनोज्ञम् ॥ ५७ ॥ ध्वनिरपि योजनमेकं प्रजायते श्रोत्रहृदयहारिगभीरः । ससलिलजलधरपटलध्वनितमिव प्रवितान्तराशावलयम् ॥ ५८ ॥ स्फुरितांशुरत्नदीधितिपरिविच्छुरितामरेंद्रचापच्छायम् । ध्रियते मृगेंद्रवर्यैः, स्फटिकशिलाघटितसिंहविष्टरमतुलम् ॥ ५९ ॥

यस्येह चतुस्त्रिंशत्प्रवरगुणा प्रातिहार्यलक्ष्म्यश्चाष्टौ ।
तस्मै नमो भगवते त्रिभुवनपरमेश्वरार्हते गुणमहते ॥६०॥

इच्छामि भंते, णंदीसरभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सा लोचेउं णंदीसरदीवम्मि, चउदिसि विदिसासु अंजणदधिमुहरदिकरपुरुणगवरेसु जाणि जिणचेइयाणि ताणि सव्वाणि तीसुवि लोएसु भवणवासियवाणवितरजोइसियकप्पवासि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यत्ति चउविहा देवा सपरिवारा दिव्वेहि गंधेहि, दिव्वेहि पुप्फेहि, दिव्वेहि धुव्वेहि, दिव्वेहि चुण्णेहि, दिव्वेहि वासेहि, दिव्वेहि ण्हाणेहि आसाढकत्तियफागुणमासाणं अट्ठमिमाइं काऊण जाव पुण्णिमंति णिच्चकालं अंचंति पूजंति, वंदंति, णमंसंति। णंदीसरमहाकल्लाणं करंति अहमवि इह संतो तत्थ संताइं णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं समाहि-मरणं जिणगुणसंपत्ति होऊ मज्झं ॥

इति नंदीश्वरभक्तिः

अथ चैत्यभक्तिः

श्रीगौतमादिपदमद्भुतपुण्यबंधमुद्योतिताखिलममोघमघ-प्रणाशम् । वक्ष्ये जिनेश्वरमहं प्रणिपत्य तथ्यं निर्वाण-कारणमशेषजगद्धितार्थम् ॥ १ ॥ जयति भगवान् हेमा-म्भोजप्रचारविजृम्भितावमरमुकुटच्छायोद्गीर्णप्रभापरिचुम्बितौ कलुषहृदया मानोद्भ्रान्ताः परस्परवैरिणः विरतकलुषाः पादौ यस्य प्रपद्य विशश्वसुः ॥ २ ॥ तदनु जयति श्रेयान्धर्म-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रवृद्धमहोदयः, कुगतिविपथक्लेशादसौ विपाशयति प्रजाः । परिणतनयस्यांगीभावाद्विविक्तविकल्पितम्, भवतु भवतस्त्रातृ त्रेधा जिनेंद्रवचोऽमृतम् ॥ ३ ॥ तदनु जयताज्जैनी वित्तिः प्रभंगतरंगिणी, प्रभवविगमध्रौव्यद्रव्यस्वभावविभाविनी । निरुपमसुखस्येदं द्वारं विघट्य निरर्गलम्, विगतरजसं मोक्षं देयान्निरत्ययमव्ययम् ॥ ३ ॥ अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायेभ्यस्तथा च साधुभ्यः । सर्वजगद्वंद्येभ्यो-नमोस्तु सर्वत्र सर्वेभ्यः ॥४॥ मोहादिसर्वदोषारिघातकेभ्यः सदा हतरजोभ्यः ॥ विरहितरहस्कृतेभ्यः पूजार्हेभ्यो नमोऽर्हद्भ्यः ॥ ५ ॥ क्षान्त्यार्जवादिगुणगणसुसाधनं सकललोकहितहेतुं । शुभधामनि धातारं वंदे धर्मं जिनेन्द्रोक्तम् ॥ ६ ॥ मिथ्याज्ञानतमोवृतलोकैकज्योतिरमितगमयोगि । सांगोपांगमजेयं जैनं वचनं सदा वंदे ॥७॥ भवनविमानज्योतिर्व्यंतरनरलोकविम्बचैत्यानि । त्रिजगदभिवंदितानां त्रेधा वंदे जिनेन्द्राणाम् ॥ ८ ॥ भुवनत्रयेऽपि भुवनत्रयाधिपाभ्यर्च्यतीर्थकर्तृणां । वंदे भवाग्निशान्त्यै विभवानामालयालीस्ताः ॥९॥ इति पंचमहापुरुषाः प्रणुता जिनधर्मवचनचैत्यानि । चैत्यालयाश्च विमलां दिशन्तु बोधिं बुधजनेष्टाम्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥१०॥ अकृतानि कृतानि चाप्रमेयद्युतिमन्ति द्युतिम
मंदिरेषु । मनुजामरपूजितानि बंदे प्रतिबिंबानि जगत्
जिनानाम् ॥ ११ ॥ द्युतिमण्डलभासुराङ्गयष्टीः प्रति
अप्रतिमा जिनोत्तमानाम् । भुवनेषु विभूतये प्रवृत्ता वपु
प्राञ्जलिरस्मि बंदमानः ॥१२॥ विगतायुधविक्रियाविभू
प्रकृतिस्थाः कृतिनां जिनेश्वराणां प्रतिमाः । प्रति
गृहेषु कान्त्या प्रतिमाः कल्मषशान्तयेऽभिबंदे ॥१
कथयन्ति कषायमुक्तिलक्ष्मीं परया शांततया भवान्तकाना
प्रणमाम्यभिरूपमूर्तिमंति प्रतिरूपाणि विशुद्धये जिना
॥१४॥ यदिदं मम सिद्धभक्तिनीतं सुकृतं दुष्कृतवर्त्मरोधि ते
पटुना जिनधर्म एव भक्तिर्भवताज्जन्मनि जन्मनि स्थिरा मे ॥
अर्हतां सर्वभावानां दर्शनज्ञानसंपदाम् । कीर्तयिष्या
चैत्यानि यथाबुद्धि विशुद्धये ॥१६॥ श्रीमद्भुवनवास
स्वयंभासुरमूर्तयः । बंदिता नो विधेयासुः प्रतिमाः प
गतिम् ॥१७॥ यावंति संति लोकेऽस्मिन्नकृतानि कृ
च । तानि सर्वाणि चैत्यानि बंदे भूयांसि भूतये ॥
ये व्यंतरविमानेषु स्थेयांसः प्रतिमागृहाः । ते च संख्या
क्रान्ताः संतु नो दोषविच्छिदे ॥१९॥ ज्योतिषामथ लो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूतयेऽद्भुतसंपदः । गृहाः स्वयंभुवः संति विमानेषु नमामि तान् ॥२०॥ बंदे सुरकिरीटाग्रमणिच्छायाभिषेचनम् । याः क्रमेणैव सेवन्ते तदर्चाः सिद्धिलब्धये ॥२१॥ इति स्तुतिपथातीतश्रीभृतामर्हतां मम । चैत्यानामस्तु संकीर्तिः सर्वास्रवनिरोधिनी ॥२२॥ अर्हन्महानदस्य त्रिभुवनभव्यजनतीर्थयात्रिकदुरित -- प्रक्षालनैककारणमतिलौकिककुहकतीर्थमुत्तमतीर्थम् ॥ २३ ॥ लोकालोकसुतत्त्वप्रत्यवबोधनसमर्थदिव्यज्ञान--प्रत्यहवहत्प्रवाहं व्रतशीलामलविशालकूलद्वितयम् ॥ २४ ॥ शुक्लध्यानस्तिमितस्थितराजद्राजहंसराजितमसकृत् । स्वाध्यायमंद्रघोषं नानागुणसमितिगुप्तिसिकतासुभगम् ॥ २५ ॥ क्षान्त्यावर्तसहस्रं सर्वदयाविकचकुसुमविलसल्लतिकम् । दुःसहपरीषहाख्यद्रुततररङ्गत्तरंगभंगुरनिकरम् ॥ २६ ॥ व्यपगतकषायफेनं रागद्वेषादिदोषशैवलरहितं । अत्यस्तमोहकर्दममतिदूरनिरस्तमरणमकरप्रकरम् ॥ २७ ॥ ऋषिवृषभस्तुतिमंद्रोद्रेकितनिर्घोषविविधविहगध्वानम् । विविधतपोनिधिपुलिनं सास्रवसंवरणनिर्जरानिःस्रवणम् ॥ २८ ॥ गणधरचक्रधरेन्द्रप्रभृतिमहाभव्यपुंडरीकैः पुरुषैः । बहुभिः स्नातुं भक्त्या कलिकलुषम-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लापकर्षणार्थममेयम् ॥ २९ ॥ अवतीर्णवतः स्नातुं ममापि दुस्तरसमस्तदुरितं दूरम् । व्यपहरतु परमपावनमनन्यजय्यस्वभावगंभीरम् ॥ ३० ॥ अताम्रनयनोत्पलं सकलकोपवन्हेर्जयात् । कटाक्षशरमोक्षहीनमविकारतोद्रेकतः । विषादमदहानितः प्रहसितायमानं सदा । मुखं कथयतीव ते हृदयशुद्धिमात्यन्तिकीम् ॥ ३१ ॥ निराभरणभासुरं विगतरागवेगोदयात्, निरंबरमनोहरं प्रकृतिरूपनिर्दोषतः ॥ निरायुधसुनिर्भयं विगतहिंस्यहिंसाक्रमात् । निरामिषसुतृप्तिमद्विविधवेदनानां क्षय ॥ ३२ ॥ मितस्थितनखांगजं गतरजोमलस्पर्शनम् । नवांबुरुहचंदनप्रतिमदिव्यगंधोदयम् ॥ रवीन्दुकुलिशादिदिव्यबहुलक्षणालंकृतम् । दिवाकरसहस्रभासुरमपीक्षणानां प्रियम् ॥ ३३ ॥ हितार्थपरिपंथिभिः प्रबलरागमोहादिभिः, कलंकितमना जनो यदभिवीक्ष्य शोशुध्यते । सदाभिमुखमेव यज्जगति पश्यतां सर्वतः, शरद्विमलचन्द्रमण्डलमिवोत्थितं दृश्यते ॥ ३४ ॥ तदेतदमरेश्वरप्रचलमौलिमालामणिस्फुरत्किरणचुंबनीयचरणारविन्दद्वयम् ॥ पुनातु भगवज्जिनेन्द्र तव रूपमन्धीकृतं जगत्सकलमन्यतीर्थगुरुरूपदोषोदयैः ॥ ३५ ॥ मानस्तम्भाः सरांसि प्रविमलजलसत्खातिका पुष्पवाटी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राकारो नाट्यशाला द्वितयमुपवनं वेदिकांतर्ध्वजाद्याः ॥
शालः कल्पद्रुमाणां सुपरिवृतवनं स्तूपहर्म्यावली च। प्राका-
रः स्फाटिकोन्तर्नृ सुरमुनिसभा पीठिकाग्रे स्वयंभूः ॥ ३६ ॥
वर्षेषु वर्षान्तरपर्वतेषु नंदीश्वरे यानि च मंदरेषु।
यावन्ति चैत्यायतनानि लोके सर्वाणि बंदे जिनपुंगवानाम्
॥ ३७ ॥ अवनितलगतानां कृत्रिमाऽकृत्रिमाणां, वनभवनग-
तानां दिव्यवैमानिकानां। इह मनुजकृतानां देवराजार्चितानां,
जिनवरनिलयानां भावतोऽहं स्मरामि ॥३८॥ जम्बूधातकिपुष्क-
रार्द्धवसुधाक्षेत्रत्रये ये भवाश्च द्रांभोजशिखंडिकंठकनकप्रावृड्घ-
नाभा जिनाः। सम्यग्ज्ञानचरित्रलक्षणधरा दग्धाष्टकर्मेन्धनाः।
भूतानागतवर्तमानसमये तेभ्यो जिनेभ्यो नमः ॥३९॥ श्रीमन्मेरौ
कुलाद्रौ रजतगिरिवरे शाल्मलौ जंबुवृक्षे,वक्षारे चैत्यवृक्षे रतिकर-
रुचके कुंडले मानुषांके। इष्वाकारेंऽजनाद्रौ दधिमुखशिखरे व्यं-
तरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोकेऽभिबंदे भुवनमहितले यानि चैत्या-
लयानि ॥४०॥ देवासुरेंद्रनरनागसमर्चितेभ्यः पापप्रणाशकर-
भव्यमनोहरेभ्यः। घंटाध्वजादिपरिवारविभूषितेभ्यो नित्यं
नमो जगति सर्वजिनालयेभ्यः ॥४१॥ इच्छामि भंते चेइयभ-
त्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं; अहलोयतिरियलोयउड्ढ-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि जिणचेइयाणि ताणि सव्वाणि तिसु वि लोएसु भवणवासियवाणविंतरजोइसियक- प्पवासियत्ति चउविहा देवा सपरिवारा दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण वासेण, दिव्वेण ण्हाणेण, णिच्चकालं अंचंति, पुज्जंति, वंदंति, णमंसंति। अहमवि इह संतो तत्थ संताइ णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि, बंदामि, णमंसामि दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ बोहिलाहो, सुगइगमणं समाहि- मरणं, जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं।

इति चैत्यभक्तिः।

—❀—

कल्याणालोयणा (प्राकृत)

परमप्पइ वड्ढमई परमेट्ठीणं करोमि णवकारं।
सगपर सिद्धिणिमित्तं कल्लाणालोयणा वोच्छे॥१॥

रे जीवा णंत भवे संसारे संसरंत बहुवारं।
पत्तो ण बोहिलाहो मिच्छत्तविजंभपयडीहिं॥२॥

संसारभमणगमणं कुणंत आराहिओ ण जिणधम्मो।
तेण विणा वर दुक्खं पत्तोसि अणंतवाराइं॥३॥

संसारे णिवसंता अणंतमरणाइ पाविओसि तुमं।
केवलिविणा ण तेसिं संखापज्जत्ति णो हवइ॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिण्णिसया छत्तीसा छावट्ठिसहस्सवार मरणाइं ।
अंतो मुहुत्तमज्झे पत्तोसि णिगोयमज्झम्मि ॥५॥
अण्णोण्णं खज्जंता जीवा पावंति दारुणं दुक्खं ।
वियलिंदिए असीदी सट्ठी चालीसमेव जाणोहि ।
पंचेंदिय चउवीसं[१] खुद्द भवंतो मुहुत्तस्स ॥६॥
पुढतिदगागणिमारुदसाहारणथूलसुहुमपत्तेया ।
एदेसु अपुण्णेसु य एक्केक्के बार खं छक्कं ॥
ण हु तेसिं पज्जत्तो कहपावइ धम्ममइसुण्णो ॥७॥
मायापिया कुडंबो सुजणजणो कोवि णायई सत्थे ।
एगागी भमइ सदा णहि वीओ अत्थि संसारे ॥८॥
आउ क्खएवि पत्ते ण समत्थो कोवि आउदाणेय ।
देवेंदो ण णरेंदो मणिओसह मंतजालाई ॥ ६ ॥
संपडि जिणवरधम्मो लद्धोसि तुमं विसुद्धजोएण ।
खामसु जीवा सव्वे पत्तेसमये पयत्तेण ॥१०॥
तिण्णिसया तेसट्ठि मिच्छत्ता दंसणस्स पडिवक्खा ।
अण्णाणे सद्दहिया मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ॥११॥
महुमज्जमंसजूआपभिदीवसणाइ सत्तभेयाइं ।
णियमो ण कयं च तेसिं मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ॥१२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अणुवयमहव्वया जे जमणियमासीलसाहुगुरुदिण्णा ।
जे जे विराहिदा खलु मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ॥१३॥
णिच्चदरधादुसत्तय तरुदसवियलिंदिएसु छच्चेव ।
सुरणरयतिरियचउरो चउदस मणुए सदसहस्सा ॥१४॥
एदे सव्वे जीवा चउरासीलक्खजोणिवसि पत्ता ।
जे जे विराहिया खलु मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ॥१५॥
पुढवीजलग्गिवाओ तेओवि वणप्फई य वियलतया ।
जे जे विराहिया खलु मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ॥१६॥
मल सत्तरा जिणुत्ता वयविसये जा विराहणा विविहा ।
सामइय खमइया खलु मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ॥१७॥
फलफुल्लछल्लिवल्ली अणगल ण्हाणं च धोवणादीहिं ।
जे जे विराहिया खलु मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ॥१८॥
णो सीलं णेव खमा विणओ तवो ण संजमोवासा ।
ण कया ण भाविकया मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ॥१९॥
कंदफलमूलबीया सचित्तरयणीयभोयणाहारा ।
अण्णाणे जे वि कया मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ॥२०॥
णो पूया जिणचरणे ण पत्तदाणं न चेइयागमणं ।
ण कया ण भाविय मये मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ॥२१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संभारंभपरिग्गह सावज्जा बहु पमाददोसेण।
जीवा विराहिया खलु मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ॥२२॥
सत्तस्सिउखित्तभवा तीदाणागयसुवट्टमाणजिणा।
जे जे विराहिया खलु मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ॥२३॥
अरुहासिद्धाइरिया उवझाया साहु पंचपरमेट्ठी।
जे जे विराहिया खलु मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ॥२४॥
जिणवयणधम्मचेइयजिणपडिमाकिट्टिमाअकिट्टिमया।
जे जे विराहिया खलु मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ॥२५॥
दंसणणाणचरित्ते दोसा अट्ठट्ठपंचभेयाइं।
जे जे विराहिया खलु मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ॥२६॥
मइसुइओहीमणपज्जयं तहा केवलं च पंचमयं।
जे जे विराहिया खलु मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ॥२७॥
आयारादी अंगा पुव्वपइण्णा जिणेंहि पण्णत्ता।
जे जे विराहिया खलु मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ॥२८॥
पंच महव्वयजुत्ता अट्ठादससहस्ससीलकयसोहा।
जे जे विराहिया खलु मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ॥२९॥
लोए पियरसमाणा रिद्धिपवण्णा महागणवइया।
जे जे विराहिया खलु मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ॥३०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णिग्गंथ अज्जियाओ सड्ढा सड्ढी व चउविहो संघो ।
जे जे विराहिया खलु मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ॥३१॥
देवासुरा मणुस्सा णेरइयातिरियजोणिगयजीवा ।
जे जे विराहिया खलु मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ॥३२॥
कोहो माणो माया लोहो एदेय रायदोसाइं ।
अण्णाणे जे वि कया मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ॥३३॥
परवत्थुं परमहिला पमादजोएण अज्जियं पावं ।
अण्णवि अकरणीया मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ॥३४॥
इक्को सहावसिद्धो सोहं अप्पा वियप्पपरिमुक्को ।
अण्णो ण मज्झ सरणं सरणं सो एक्क परमप्पा ॥३५॥
अरस अरूव अगंधो अव्वावाहो अणंतणाणमओ ।
अण्णो ण मज्झ सरणं सरणं सो एक्क परमप्पा ॥३६॥
णेयपमाणं णाणं समए इक्केण हंति ससहावे ।
अण्णो ण मज्झ सरणं सरणं सो एक्क परमप्पा ॥३७॥
एयाणेयवियप्पप्पसाहणे सयसहावसुद्धगई ।
अण्णो ण मज्झ सरणं सरणं सो एक्क परमप्पा ॥३८॥
देहपमाणो णिच्चो लोयपमाणो वि धम्मदो होदि ।
अण्णो ण मज्झ सरणं सरणं सो एक्क परमप्पा ॥३९॥
केवलदंसणणाणं समये इक्केण दुण्णिउवओगा ।
अण्णो ण मज्झ सरणं सरणं सो एक्क परमप्पा ॥४०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सगरूव सहजसिद्धो विहावगुणमुक्ककम्मवावारो।
अण्णो ण मज्झ सरणं सरणं सो एक्क परमप्पा ॥४१॥
सुण्णो णेय असुण्णो णोकम्मो कम्मवज्जिओ णाणं।
अण्णो ण मज्झ सरणं सरणं सो एक्क परमप्पा ॥४२॥
णाणाउ जो ण भिण्णो वियप्पभिण्णो सहाव सुक्खमओ।
अण्णो ण मज्झ सरणं सरणं सो एक्क परमप्पा ॥४३॥
अच्छिण्णोवच्छिण्णो पमेय रूवत्त गुरुलहू चेव।
अण्णो ण मज्झ सरणं सरणं सो एक्क परमप्पा ॥४४॥
सुहअसुहभावविगओ सुद्धसहावेण तम्मयं पत्तो।
अण्णो ण मज्झ सरणं सरणं सो एक्क परमप्पा ॥४५॥
णो इत्थी ण णउंसो पुंसो णेव पुण्णपावमओ।
अण्णो ण मज्झ सरणं सरणं सो एक्क परमप्पा ॥४६॥
ते को ण होदिसुयणो तं कस्स ण बंधवो ण सुयणो वा।
अप्पा हवेइ अप्पा एगागी जाणगो सुद्धा ॥४७॥
जिणदेवो होउ सया मई सु जिणसासणे सया होऊ।
सण्णासेण य मरणं भवे भवे मज्झ संपदओ ॥४८॥
जिणो देवो जिणो देवो जिणो देवो जिणो जिणो।
दयाधम्मो दयाधम्मो दयाधम्मो दया सया ॥४९॥
महासाहू महासाहू महासाहू दिगंबरा।
एवं तच्च सदा हुज्ज जाव णो मुत्तिसंगमो ॥५०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एवमेव गओ कालो अणंतो दुक्खसंगमे ।
जिणोवदिट्ठसण्णासे ण यत्तारोहणा कया ॥५१॥
संपइ एव संपत्ताराहणा जिणदेसिया ।
किं किं ण जायदे मज्झ सिद्धिसंदोहसंपई ॥५२॥
अहो धम्ममहो धम्मं अहो मे लद्धि णिम्मला ।
संजादा संपया सारा जेण सुक्ख मणवमं ॥५३॥
एवं आराहंतो आलोयणवंदणापडिक्कमणं ।
पावइ फलं य तेसिं णिद्दिट्ठं अजियवंभेण ॥५४॥

॥ समाप्तम ॥

अथ चतुर्दिग्वन्दना ।

प्राग्दिग्विदिगन्तरे केवलिजिनसिद्धसाधुगणदेवाः। ये सर्वर्द्धिसमृद्धा योगिगणास्तानऽहं बन्दे ॥ १ ॥ दक्षिणदिग्विदिगन्तरे केवलिजिनसिद्धसाधुगणदेवाः । ये सर्वर्द्धिसमृद्धा योगिगणास्तानऽहं बन्दे ॥ २ ॥ पश्चिमदिग्विदिगन्तरे केवलिजिनसिद्धसाधुगणदेवाः । ये सर्वर्द्धिसमृद्धा योगिगणास्तानऽहं बन्दे ॥ ३ ॥ उत्तरदिग्विदिगन्तरे केवलिजिनसाधुगणदेवाः । ये सर्वर्द्धिसमृद्धा योगिगणास्तानऽहं बन्दे ॥ ४ ॥

इति चतुर्दिग्वन्दना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ सर्वदोषप्रायश्चित्तविधिः ।

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसात्रयस्त्रिंशदत्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अहिंसामहाव्रतस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं सत्यमहाव्रतस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अचौर्यमहाव्रतस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंब्रह्मचर्यमहाव्रतस्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अपरिग्रहमहाव्रतस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं ईर्यासमितेरत्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः॥७॥ ॐ ह्रीं अर्हं भाषासमितेरत्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं एषणासमितेरत्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं आदाननिक्षेपणासमितेरत्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं उत्सर्गसमितेरत्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्हं मनोगुप्तेरत्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय न-
मः ॥१२॥ ॐ ह्रीं अर्हं वचनगुप्तेरत्यासादनात्यागायानुष्ठि-
तप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं कायगुप्तेर-
त्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ १४ ॥
ॐ ह्रीं अर्हं जीवास्तिकायिकस्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोष-
धोद्योतनाय नमः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं पुद्गलास्तिका-
यस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥
१६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं धर्मास्तिकायस्यात्यासादनात्यागा-
यानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ १७ ॥ ओं ह्रीं अर्हं
अधर्मास्तिकायस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय
नमः ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं आकाशास्तिकायस्या-
त्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ १९ ॥
ॐ ह्रीं अर्हं पृथ्वीकायिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-
प्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अप्कायिक-
स्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ २१ ॥
ॐ ह्रीं अर्हं तेजःकायिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित-
प्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं वायुकायिक-
स्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ २३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं अर्हं वनस्पतिकायिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय नमः ॥२४॥ ॐ ह्रीं अर्हं त्रसकायिकस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ २५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं जीवपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ २६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अजीवपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥२७॥ ॐ ह्रीं अर्हं आस्त्रवपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥२८॥ ॐ ह्रीं अर्हं बंधपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ २९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं संवरपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ ३० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं निर्जरापदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठित – प्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ ३१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं मोक्षपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥ ३२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥३३॥ ॐ ह्रीं अर्हं पापपदार्थस्यात्यासादनात्यागायानुष्ठितप्रोषधोद्योतनाय नमः ॥३४॥ ॐ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ह्लीं अर्हं सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ ३५ ॥ ॐ ह्लीं अर्हं सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥ ३६ ॥ ॐ ह्लीं अर्हं सम्यक्चारित्राय नमः ॥३७॥

इति सर्वदोषप्रायश्चित्तविधिः।

दैवसिकरात्रिकप्रतिक्रमणम् ।

जीवे प्रमादजनिताः प्रचुराः प्रदोषाः
यस्मात् प्रतिक्रमणतः प्रलयं प्रयान्ति ।
तस्मात्तदर्थममलं मुनिबोधनार्थं—
वक्ष्ये विचित्रभवकर्मविशोधनार्थं ॥१॥
पापिष्ठेन दुरात्मना जडधिया मायाविना लोभिना
रागद्वेषमलीमसेन मनसा दुष्कर्म यन्निर्मितम्।
त्रैलोक्याधिपते जिनेन्द्र ! भवतः श्रीपादमूलेऽधुना
निन्दापूर्वमहं जहामि सततं वर्वर्तिषुः सत्पथे ॥२॥
खम्मामि सव्वजीवाणं सव्वे जीवा खमंतु मे ।
मित्ती मे सव्वभुदेसु वेरं मज्झ ण केण वि ॥३॥
रागबंधपदोसं च हरिसं दीणभावयं ।
उस्सुगत्तं भयं सोगं रदिमरदिं च वोस्सरे ॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हा ! दुट्ठकयं हा ! दुट्ठचिंतियं च हा दुट्ठं ।
अंतोअंतो डज्झमि पच्छुत्तावेण वेदंतो ॥ ५ ॥
दव्वे खेत्ते काले भावे य कदावराहसोहणयं ।
णिंदणगरहणजुत्तो मणवचकाएण पडिकमणं ॥ ६ ॥

एइंदिया, वेइंदिया, तेइंदिया, चतुरिंदिया, पंचिंदिया, पुढविकाइया, आउकाइया, तेउपरिदावणंकाइया, वाउकाइया, वणप्फदिकाइया, तसकाइया, एदेसिं उद्दावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

समिदिंदियरोधो लोचो आवासयमचेलमण्हाणं ।
खिदिसयणमदंतवणं ठिदिभोयणमेयभत्तं च ॥ १ ॥
एदे खलु मूलगुणा समणाणं जिणवरेंहि पण्णत्ता ।
एत्थ पमादकदादो अइचारादो णियत्तो हं ॥ २ ॥
छेदोवट्ठावणं होदु मज्झं ।

पंचमहाव्रत-पंचसमिति--पंचेंद्रियरोध--लोच--षडावश्यकक्रियाअष्टाविंशतिमूलगुणाः, उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्याणि दशलाक्षणिको धर्मः, अष्टादशशीलसहस्राणि, चतुरशीतिलक्षगुणाः, त्रयो-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दशविधं चारित्रं, द्वादशविधं तपश्चेति सकलं सम्पूर्णं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुसाक्षिकं सम्यक्त्वपूर्वकं दृढव्रतं सुव्रतं समारूढं ते मे भवतु ।

अथ सर्वातिचारविशुद्ध्यर्थं दैवसिकप्रतिक्रमणक्रियायां कृतदोषनिराकरणार्थं पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं आलोचनासिद्धभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम्——

इति प्रतिज्ञाप्य

—※—

णमो अरहंताणमित्यादि (सामायिकदंडकं पठित्वा कायोत्सर्गं कुर्यात्) ।

थोसामीत्यादि (चतुर्विंशतिस्तवं पठेत्)

श्रीमते वर्धमानाय नमो नमितविद्विषे ।
यज्ज्ञानान्तर्गतं भूत्वा त्रैलोक्यं गोष्पदायते ॥ १ ॥
तवसिद्धे णयसिद्धे संजमसिद्धे चरित्तसिद्धेय ।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमंसामि ॥ २ ॥

इच्छामि भंते ! सिद्धभत्तिकाओसग्गो कओ तस्सालोचेउं, सम्मणाणसम्मदंसणसम्मचरित्तजुत्ताणं, अट्ठविह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

...मुक्काणं, अट्ठगुणसंपण्णाणं, उड्ढलोयमत्थयम्मि पयि-ट्ठियाणं, तवसिद्धाणं, णयसिद्धाणं, संजमसिद्धाणं, चरित्तसिद्धाणं, अतीदाणागदवट्टमाणकालत्तयसिद्धाणं, सव्वसिद्धाणं, णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ती होउ मज्झं ।

आलोचना—

इच्छामि भंते ! चरित्तायारो तेरसविहो परिविहाविदो, पंचमहव्वदाणि पंचसमिदीओ तिगुत्तीओ चेदि । तत्थ पढमे महव्वदे पाणादिवादादो वेरमणं, से पुढविकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, आउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, तेउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, वाउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, वणप्फदिकाइया जीवा अणंता हरिआ बीआ अंकुरा छिण्णा भिण्णा, तेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कीरंतो वा समणुमणिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ १ ॥

वेइंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा कुक्खिकिमि संख-खुल्लुय-वराडय—अक्ख रिट्ठबाल संबुक्क—सिप्पि-पुलविका-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इया तेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ १ ॥

तेइंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा कुंथु-द्देहिय-विछि-यगोंभिद–गोजुव-मक्कुण–पिपीलियाइया, तेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ ३ ॥

चउरिंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा दंसमसय-मक्खि-पयगकीड-भमर-महुयर-गोमच्छियाइया, तेसि उद्दा-वणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ ४ ॥

पंचिंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा अंडाइया पादाइया जराइया रसाइया संसेदिमा सम्मुच्छिमा उब्भे-दिमा उववादिमा अवि चउरासीदिजोणिपमुहसदसहस्सेसु, एदेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ ५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रतिक्रमणपीठिकादण्डकः—

इच्छामि भंते ! देवसियम्मि (राईयम्मि) आलोचेउं, पंचमहव्वदाणि तत्थ पढमं महव्वदं पाणादिवादादो वेरमणं, विदियं महव्वदं मुसावादादो वेरमणं, तिदियं महव्वदं अदत्तादाणादो वेरमणं, चउत्थं महव्वदं मेहुणादो वेरमणं, पंचमं महव्वदं परिग्गहादो वेरमणं, छट्ठं अनुव्वदं राईभोयणादो वेरमणं, ईरियासमिदीए, भासासमिदीए, एसणासमिदीए, आदाननिक्खेवणसमिदीए, उच्चारपस्सवणखेलसिंहाणवियडिपइट्ठावणियासमिदीए, मणगुत्तीए वचिगुत्तीए कायगुत्तीए, णाणेसु दंसणेसु चरित्तेसु, बावीसाए परीसहेसु, पणवीसाए भावणासु, पणवीसाए किरियासु, अट्ठार सीलसहस्सेसु चउरासीदिगुण सयसहस्सेसु वारसण्हं, संजमाणं, वारसण्हं तवाणं, वारसण्हं अंगाणं चोदसण्हं पुव्वाणं, दसण्हं मुंडाणं, दसण्हं समणधम्माणं, दसण्हं धम्मज्झाणाणं णवण्हं बंभचेरगुत्तीणं, णवण्हं णोकसायाणं, सोलसण्हं कसायाणं, अट्ठण्हं कम्माणं, अट्ठण्हं पवयणमाउयाणं, अट्ठण्हं सुद्धीणं, सत्तण्हं भयाणं, सत्तविह संसाराणं, छण्हं जीवणिकायाणं, छण्हं आवासयाणं, पंचण्हं महव्वयाणं, चरित्ताणं, च-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उण्हं सण्णाणं, चउण्हं पच्चयाणं, चउण्हं उवसग्गाणं, मूलगुणाणं, उत्तरगुणाणं, दिट्ठियाए पुट्ठियाए पदोसियाए परदावणियाए, से कोहेण वा माणेण वा माएण वा लोहेण वा रागेण वा दोसेण वा मोहेण वा हस्सेण वा भएण वा पदोसेण वा पमादेण वा पिम्मेण वा पिवासेण व लज्जेण वा गारवेण वा एदेसिं अच्चासणदाए, तिण्हं दंडाणं, तिण्हं लेस्साणं, तिण्णं गारवाणं, दोण्हं अट्टरुद्दसंकिलेसपरिणामाणं, तिण्हं अप्पसत्थसंकिलेस परिणामाणं, मिच्छणाण-मिच्छदंसण-मिच्छचरित्ताणं, मिच्छत्तपाउग्गं, असंयमपाउग्गं, कसायपाउग्गं, जोगपाउग्गं, अपाउग्गसेवणदाए, पाउग्गगरहणदाए, इत्थं मे जो कोई देवसिओ राईओ अदिक्कमो वदिक्कमो अइचारो अणाचारो आभोगो अणाभोगो । तस्स भंते ! पडिक्कमामि, मए पडिक्कंतं तस्स मे सम्मत्तमरणं समाहिमरणं पंडिय मरणं वीरियमरणं दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होऊ मज्झं । २

वदसमिदिंदियरोधो लोचो आवासयमचेलमण्हाणं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खिदिसयणमदंतवणं ठिदिभोयणमेयभत्तं च ॥ १ ॥
एदे खलु मूलगुणा समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता।
एत्थ पमादकदादो अइचारादो णियत्तो हं ॥ २ ॥
छेदोवट्ठावणं होदु मज्झं।

(इति प्रतिक्रमण पीठिकादंडकः)

अथ सवातिचारविशुद्ध्यर्थं दैवसिक (रात्रिक) प्रतिक्रमणक्रियायां कृतदोषनिराकरणार्थं पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं श्रीप्रतिक्रमणभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम्——

णमो अरहंताणं (इत्यादि दंडकं पठित्वा कायोत्सर्गं कुर्यात्। अनन्तरं) थोस्सामीत्यादि (पठेत्)।

(निषिद्धकादंडकाः)

—*—

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरीयाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ३ ॥

णमो जिणाणं ३, णमोणिस्सिहीए ३, णमोत्थु दे ३, अरहंत! सिद्ध! बुद्ध! णीरय! णिम्मल! समसण! सुभमण! सुसमत्थ! समजोग! समभाव! सल्लघट्ठाण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सल्लघत्ताण ! णिब्भय ! णीराय ! णिद्दोस ! णिम्मोह ! णिम्मम ! णिस्संग ! णिस्सल्ल ! माण-माय मोस-मूरण ! तवप्पहावण ! गुणरयण सीलसायर ! अणंत ! अप्पमेय ! महदिमहावीरवड्ढमाणबुद्धरिसिणो चेदि णमोत्थु ए णमो-त्थु ए णमोत्थु ए ।

मम मंगलं अरहंता य सिद्धा य बुद्धा य जिणा य केवलिणो ओहिणाणिणो मणपज्जवणाणिणो चउदसपुव्वं-गमिणो सुदसमिदिसमिद्धा य तवो य बारहविहो तवस्सी, गुणा य गुणवंतो य. महरिसी तित्थं तित्थंकराय, पवयणं पवयणी य, णाणं णाणी य, दंसणं दंसणी य, संजमो संजदा य, विणओ विणदा य, बंभचेरवासो बंभचारी य, गुत्तीओ चेव गुत्तिमंतो य, मुत्तीओ चेव मुत्तिमंतो य, समि-दीओ चेव समिदिमंतो य, सुसमयपरसमयविद्, खंतिख-वगा य खंतिवंतो य, खीणमोहा य खीणवंतो य, बोहि-यबुद्धा य बुद्धिमंतो य, चेइयरुक्खा य चेइयाणि ।

उड्ढमहतिरियलोए सिद्धायदणाणि णमसामि, सिद्ध-णिसीहियाओ अट्ठावयपव्वए सम्मेदे उज्जंते चंपाए पावाए मज्झिमाए हत्थिवालियसहाए जाओ अण्णाओ काओवि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णिसीहियाओ जीवलोयम्मि, इसिपब्भारतलग्गयाणं सिद्धाणं बुद्धाणं कम्मचक्कमुक्काणं णीरयाणं णिम्मलाणं, गुरु-आइरिय-उवज्झायाणं पव्वत्ति-त्थेर-कुलयराणं, चाउवण्णो य समणसंघो य भरहेरावएसु दससु पंचसु महाविदेहेसु। जे लोए संति साहवो संजदा तवसी एदे मम मंगलं पवित्तं। एदेहूं मंगलं करेमि भावदो विसुद्धो सिरसाअ हि-वंदिऊण सिद्धे काऊण अंजलिं मत्थयम्मि, तिविहूं तियर-णसुद्धो ॥ ६ ॥

(इति निषिद्धिका दण्डका:)

पडिक्कमामि भंते ! देवसियस्स अइचारस्स अणाचार-स्स मणदुच्चरियस्स वचिदुच्चरियस्स कायदुच्चरियस्स णाणा-इचारस्सदंसणाइचारस्स तवाइचारस्स वीरियाइचारस्स चारि-त्ताइचारस्स पंचण्हं महव्वयाणं पंचण्हं समिदीणं तिण्हं गुत्तीणं छण्हं आवासयाणं छण्हं जीवणिकायाणं विरा-हणाए पील कदो वा कारिदो व कीरंतो वा समणुमणिदो तस्स मिच्छामे दुक्कडं ॥ १ ॥

पडिक्कमामि भंते ! अइगमणे णिग्गमणे ठाणे गमणे चंकमणे उव्वत्तणे आउँटणे पसारणे आमासे परिमासे कुइदे कक्क-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राइदे चलिदे णिसण्णे सयणे उव्वट्टणे परियट्टणे एइंदियाणं वेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाणं जीवाणं संघट्टणाए संघादणाए उद्दावणाए परिदावणाए विराहणाए एत्थ मे जो कोई देवसिओ अदिक्कमो वदिक्कमो अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ २ ॥

पडिक्कमामि भंते ! इरियावहियाए विराहणाए उड्ढमुहं चरंतेण वा अहोमुहं चरंतेण वा तिरिमुहं चरंतेण वा दिसिमुहं चरंतेण वा विदिसिमुहं चरंतेण वा पाणचंकमणदाए वीयचंकमणदाए हरियचंकमणदाए उत्तिंगपणय दयमहि मक्कडय तंतु-सत्ताण चंकमणदाए पुढविकाइयसंघट्टणाए आउकाइयसंघट्टणाए तेऊकाइयसंघट्टणाए वाउकाइयसंघट्टणाए वणप्फदिकाइयसंगट्टणाए तसकाइयसंघट्टणाए उद्दावणाए परिदावणाए विराहणाए इत्थ मे जो कोई इरियावहियाए अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ ३ ॥

पडिक्कमामि भंते ! उच्चार-पस्सवण-खेल-सिंहाण-वियडियपइट्ठावणियाए पइट्ठावंतेण जो कोई पाणा वा भूदा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वा जीवा वा सत्ता वा संघट्टिदा वा संघादिदा वा उद्दाविदा वा परिदाविदा वा इत्थ मे जो कोई देवसिओ राईओ अईचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ ४ ॥

पडिक्कमामि भंते ! अणेसणाए पाणभोयणाए पण-यभोयणाए वीयभोयणाए हरियभोयणाए आहाकम्मेण वा पच्छाकम्मेण वा पुराकम्मेण वा उद्दिट्ठयडेण वा णिद्दिट्ठयडेण वा दयसंसिट्ठयडेण वा रससंसिट्ठयडेण वा परिसादणियाए पइट्ठावणियाए उद्देसियाए निद्देसियाए कीदयडे मिस्से जादे ठविदे रइदे अणसिट्ठे वलिपाहुडदे पाहुडदे घट्टिदे मुच्छिदे अइमत्तभोयणाए इत्थ मे जो कोई गोयरिस्स अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ५

पडिक्कमामि भंते ! सुमणिंदियाए विराहणाए इत्थि-विप्परियासियाए दिट्ठिविप्परियासियाए मणविप्परियासि-याए वचिविप्परियासियाए कायविप्परियासियाए भोयण-विप्परियासियाए उच्चावयाए सुमणदंसणविप्परियासियाए-पुव्वरए पुव्वखेलिए णाणाचिंतासु विसोतियासु इत्थ मे जो कोई देवसिओ राईओ अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ ६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पडिक्कमामि भंते ! इत्थीकहाए अत्थकहाए भत्तकहाए रायकहाए चोरकहाए वेरकहाए परपासंडकहाए देसकहाए भासकहाए अकहाए विकहाए णिट्ठुल्लकहाए परपेसुण्णकहाए कंदप्पियाए कुक्कुच्चियाए डंवरियाए मोक्खरियाए अप्पपसंसणदाए परपरिवादणदाए परदुगंछणदाए परपीडाकराए सावज्जाणुमोयणियाए इत्थ मे जो कोई देवसीओ राईओ अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छ मे दुक्कडं ॥७॥

पडिक्कमामि भंते ! अट्टज्झाणे रुद्दज्झाणे इहलोयसण्णाए परलोयसण्णाए आहारसण्णाए भयसण्णाए मेहुणसण्णाए परिग्गहसण्णाए माणसल्लाए कोहसल्लाए मायसल्लाए लोहसल्लाए पेम्मसल्लाए पिवाससल्लाए णियाणसल्लाए मिच्छादंसणसल्लाए कोहकसाए माणकसाए मायकसाए लोहकसाए किण्हलेस्सपरिणामे णीललेस्सपरिणामे काउलेस्सपरिणामे आरंभपरिणामे परिग्गहपरिणामे पडिसयाहिलासपरिणामे मिच्छादंसणपरिणामे असंजमपरिणामे पावजोगपरिणामे कायसुहाहिलासपरिणामे सद्देसु रूवेसु गंधेसु रसेसु फासेसु काइयाहिकरणियाए पदोसियाए परिदावणियाए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णाइवाइयासु, इत्थ मे जो कोई देवसिश्रो राईश्रो अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ ८ ॥

पडिक्कमामि भंते ! एक्के भावे अणाचारे, वेसुरायदोसु, तीसु दंडेसु, तीसु गुत्तीसु, तीसु गारवेसु, चउसु कसाएसु, चउसु सण्णासु, पंचसु महव्वएसु, पंचसु समितीसु, छसु जीवणिकाएसु, छसु आवासएसु, सत्तसु भएसु, अट्ठसु मएसु, णवसु बंभचेरगुत्तीसु, दसविहेसु समणधम्मेसु, एयारसविहेसु उवासयपडिमासु, वारसविहेसु भिक्खुपडिमासु, तेरसविहेसु किरियाट्ठाणेसु चउदसविहेसु भूदगामेसु, पण्णारसविहेसु पमायठाणेसु, सोलसविहेसु पवयणेसु, सत्तारसविहेसु, असंजमेसु, अट्टारसविहेसु असंपराएसु उणवीसाए णाहज्भाणेस्सु, वीसाए असमाहिट्ठाणेसु, एक्कवीसाए सवलेसु, बावीसाए परीसहेसु, तेवीसाए सुद्दयडज्भाणेसु, चउवीसाए अरहंतेसु, पणवीसाए भावणासु, पणवीसाए किरियाट्ठाणेसु, छव्वीसाए पुढवेसु, सत्तावीसाए अणगारगुणेसु, अट्ठावीसाए आयारकप्पेसु, एउणतीसाए पावसुत्तपसंगेसु तीसाए मोहणीठाणेसु, एक्कत्तीसाए कम्मविवाएसु वत्तीसाए जिणोवएसेसु तेत्ती-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साए अच्चासणदाए, संखेवेण जीवाण अच्चासणदाए, अजीवाण अच्चासणादाए, अजीवाण अच्चासणदाए, णाणस्स अच्चासणदाए, दंसणस्स अच्चासणदाए, चरित्तस्स अच्चासणदाए, तवस्स अच्चासणदाए, वीरियस्स अच्चासणदाए, तं सव्वं पुव्वं दुच्चरियं गरहामि, आगामेसीएसु पच्चुपण्णं इक्कंतं पडिक्कमामि, अणागयं पच्चक्खामि, अगरहियं गरहामि, अणिंदियं णिंदामि, अणालोचियं आलोचेमि, आराहणमब्भुट्ठेमि विराहणं पडिक्कमामि इत्थ मे जो कोई देवसिओ राईओ अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ ६ ॥

इच्छामि भंते ! इमं णिग्गंथं पावयणं अणुत्तरं केवलियं पडिपुण्णं णेगाइयं सामाइयं संसुद्धं सल्लघट्टाणं सलघत्ताणं सिद्धिमग्गं सेढिमग्गं खंतिमग्गं मुत्तिमग्गं पमुत्तिमग्गं मोक्खमग्गं पमोक्खमग्गं णिज्जाणमग्गं णिव्वाणमग्गं सव्वदुक्खपरिहाणिमग्गं सुचरियपरिणिव्वाणमग्गं अवित्तहं अविसंतिपवयणं उत्तमं तं सद्दहामितं पत्तियामि तं रोचेमि तं फासेमि इदोत्तारं अण्णं ण त्थि भूदं (ण भेव) ण भविस्सदि णाणेण वा दंसणेण वा चरित्तेण वा सुतेण वा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इदो जीवा सिज्झंति बुज्झंतिमुच्चंतिपरिणिव्वायंतिसव्वदुक्खाणमंतं करेंति षडिवियाणंति समणोमि संजदोमि उवरदोमि उवसंतोमि उवहिणियडिमाणमायमोसमिच्छणाण-मिच्छदंसणमिच्छचरित्तं च पडिविरदोमि, सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित्तं च रोचेमि जं जिणवरेहिं पण्णत्तं, इत्थ मे जो कोई देवसिओ राईओ अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥१०॥

पडिक्कमामि भंते! सव्वस्स सव्वकालियाए इरियासमिदीए भासासमिदीए एसणासमिदीए आदाणनिक्खेवणासमिदीए उच्चारपस्सवणखेलसिंहाणयवियडिपइट्ठावणिसमिदीए मणगुत्तीए वचिगुत्तिए कायगुत्तीए पाणादिवादादो वेरमणाए मुसावादादो वेरमणाए, अदिण्णदाणादो वेरमणाए, मेहुणादो वेरमणाए, परिग्गहादो वेरमणाए, राईभोयणदो वेरमणाए, सव्वविराहणाए सव्वधम्मअइक्कमणदाए सव्वमिच्छाचरियाए इत्थ मे जो कोई देवसिओ राईओ अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥११॥

इच्छामि भंते! वीरभत्तिकाउस्सग्गो जो मे देवसिओ राईओ अणाचारो आभोगो अणाभोगो काइओ वाइओ माणसिओ दुच्चिंतीओ दुब्भासिओ दुप्परिणामीओ दुस्स-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिणीओ, णाणे दंसणे चरित्ते सुत्ते सामाइए, पंचण्हं महव्वयाणं पंचण्हं समिदीणं, तिण्हं गुत्तीणं, छण्हं जीवणिकायाणं, छण्हं आवासयाणं विराहणाए अट्ठविहस्स कम्मस्स णिग्घादणाए अण्णहा उस्सासिएण णिस्सासिएण वा उम्मिसीएण वा णिम्मिसिएण वा खासिएण वा छिंकिएण वा जंभाइएण वा सुहुमेहिं अंग चलाचलेहिं दिट्ठिचलाचलेहिं, एदेहिं सव्वेहिं असमाहिपत्तेहिं आयरेहिं जाव अरहंताणं भयवताणं पज्जुवासं करेमि ताव कायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

वदसमिदिंदियरोधो लोचो आवसयमचेलमण्हाणं।
खिदिसयणमदंतवणं ठिदिभोयणमेयभत्तं च ॥ १ ॥
एदे खलु मूलगुणा समणाणं जिणवरेहिं पण्हत्ता।
एत्थ पमादकदादो अइचारादो णियत्तो हं ॥ २ ॥
छेदोवट्ठावणं होहु मज्झं।

अथ सर्वातिचारविशुद्ध्यर्थं दैवसिकप्रतिक्रमणक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं निष्ठितकरणवीरभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं।

इति प्रतिज्ञाप्य

—❀—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिवसे १०८ रात्रौ च ५४ उच्छ्वासेषु णमो अरहंताणं इत्यादि (दंडकं पठित्वा कायोत्सर्गं कुर्यात् पश्चात्) थोस्सामीत्यादि (चतुर्विंशतिस्तवं पठेत्)

यः सर्वाणि चराचराणि विधिवद्द्रव्याणि तेषां गुणान्
पर्यायानपि भूतभाविभवतः सर्वान् सदा सर्वदा।
जानीते युगपत् प्रतिक्षणमतः सर्वज्ञ इत्युच्यते,
सर्वज्ञाय जिनेश्वराय महते वीराय तस्मै नमः ॥ १ ॥

वीरः सर्वसुरासुरेन्द्रमहितो वीरं बुधाः संश्रिताः,
वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयो वीराय भक्त्या नमः।
वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं वीरस्य वीरं तपो,
वीरे श्रीद्युतिकांतिकीर्तिधृतयो हे वीर भद्रं त्वयि ॥२॥

ये वीरमादौ प्रणमंति नित्यं,
ध्यानस्थितः संयमयोगयुक्ताः।
ते वीतशोका हि भवंति लोके,
संसारदुर्गं विषमं तरंति ॥ ३ ॥

व्रतसमुदयमूलः संयमस्कंधवंधो,
यमनियमपयोभिर्वर्धितः शीलशाखः।
समितिकलिकभारो गुप्तिगुप्तप्रवालो,
गुणकुसुमसुगंधिः सत्तपश्चित्रपत्रः ॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिवसुखफलदायी यो दयाछाययोद्यः,
शुभंजनपथिकानां खेदनोदे समर्थः।
दुरितरविजतापं प्रापयन्नन्तभावं,
स भवविभवहान्यै नोऽस्तु चारित्रवृक्षः ॥५॥

चारित्रं सर्वजिनैश्चरितं प्रोक्तं च सर्वशिष्येभ्यः।
प्रणमामि पंचभेदं पंचमचारित्रलाभाय ॥६॥

धर्मः सर्वसुखाकरो हितकरो धर्मं बुधाश्चिन्वते,
धर्मेणैव समाप्यते शिवसुखं धर्माय तस्मै नमः।
धर्मान्नास्त्यपरः सुहृद्भवभृतां धर्मस्य मूलं दया,
धर्मे चित्तमहं दधे प्रतिदिनं हे धर्म ! मां पालय ॥७॥

धम्मो मंगलमुद्दिट्ठं अहिंसा संयमो तवो।
देवा वि तस्स पणमंति जस्स धम्मे सया मणो ॥८॥

अंचलिका—

इच्छामि भंते ! पडिक्कमणादिचारमालोचेउं, सम्मण्णाणसम्मदंसण-सम्मचारित्त-तव-वीरियाचारेसु जम-णियम-संजमसीलमूलुत्तरगुणेसु सव्वमईचारं सावज्जजोगं पडिविरदोमि असंखेज्जलोगअज्झवसाठाणाणि अप्पसत्थजोगसण्णाणिंदियकसायगारवकिरियासु मणवयणकायकरणदुप्पणिहाणाणि परिचिंतियाणि किण्हणीलकाउलेस्साओ विकहापलिकुं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एण उम्मगहस्सरदिअरदिसोयभयदुगंछवेयण विज्झंभजंभाइ-आणि अट्टरुद्दसंकिलेसपरिणामाणि परिणामदाणि अणिहुदकरचरणमणवयणकायकरणेण अक्खित्तबहुलपरायणेण अपडिपुण्णेणवासरक्खरावयपरिसंघायपडिवत्तिए वा अच्छाकारिदं मिच्छा मेलिदं आमेलिदं वा मेलिदं वा अण्णहादिण्णं अण्णहापडिच्छदं आवासएसु परिहीणदाए कदो वा कारिदो वा कोरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

वदसमिदिंदियरोधो लोचो आवासयमचेलमण्हाणं ।
खिदिसयणमदंतवणं ठिदिभोयणमेयभत्तं च ॥ १ ॥
एदे खलु मूलगुणा समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता ।
एत्थ पमादकदादो अइचारादो णियत्तो हं ॥ २ ॥
छेदोवट्ठावणं होउ मज्झं ।

अथ सर्वातिचारविशुद्ध्यर्थं दैवसिकप्रतिक्रमणक्रियायां कृतदोषनिराकरणार्थं पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावंदनास्तवसमेतं चतुर्विंशतितीर्थंकरभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम् ।

इति प्रतिज्ञाप्य

—❀—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णमो अरहंताणं इत्यादि (दंडक पठित्वा कायोत्सर्गं कुर्यात्)

थोस्सामीत्यादि (चतुर्विंशतिस्तवं पठेत्)

चउवीसं तित्थयरे उसहाइवीरपच्छिमे वंदे ।
सव्वे सगणगणहरे सिद्धे सिरसा णमंसामि ।। १ ।।

ये लोकेऽष्टसहस्रलक्षणधरा ज्ञेयार्णवान्तर्गता,
ये सम्यग्भवजालहेतुमथनाश्चन्द्रार्कतेजोधिकाः ।
ये साध्विन्द्रसुराप्सरोगणशतैर्गीतप्रणुत्यार्चिता–
स्तान् देवान् वृषभादिवीरचरमान् भक्त्या नमस्याम्यहम् ॥२॥

नाभेयं देवपूज्यं जिनवरमजितं सर्वलोकप्रदीपं,
सर्वज्ञं संभवाख्यं मुनिगणवृषभं नंदनं देवदेवं ।
कर्मारिघ्नं सुबुद्धिं वरकमलनिभं पद्मपुष्पाभिगंधं
क्षांतं दांतं सुपार्श्वं सकलशशिनिभं चंद्रनामानमीडे ॥३॥

विख्यातं पुष्पदन्तं भवभयमथनं शीतलं लोकनाथं,
श्रेयांसं शीलकोशं प्रवरनरगुरुं वासुपूज्यं सुपूज्यं ।
मुक्तं दांतेन्द्रियाश्वं विमलमृषिपतिं सिंहसैन्यं मुनीन्द्रं
धर्मं सद्धर्मकेतुं शमदमनिलयं स्तौमि शान्तिं शरण्यम् ॥४॥

कुंथुं सिद्धालयस्थं श्रमणपतिमरं त्यक्तभोगेषु चक्रं,
मल्लिं विख्यातगोत्रं खचरगणनुतं सुव्रतं सौख्यरा...

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वेन्द्राच्यं नमीशं हरिकुलतिलकं नेमिचंद्रं भवांतं
पाश्वं नागेन्द्रवंद्यं शरणमहमितो वर्धमानं च भक्त्या ।५।

अंचलिका—

इच्छामि भंते ! चउवीसतित्थयरभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं, पंचमहाकल्लाणसंपण्णाणं अट्ठमहापाडिहेरसहियाणं चउतीसातिसयविसेससंजुत्ताणं वत्तीसदेविंदमणिमउडमत्थयमहिदाणं वलदेववासुदेवचक्कहररिसिमुणिजइअणगारोवगूढाणं थुइसहस्सणिलयाणं उसहइवीरपच्छिममंगलमहापुरिसाणं णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामिदुक्खक्खओ कम्मक्खओ वोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ती होउ मज्झं ।

वदसमिदिंदियरोधो लोचो आवासयमचेलमण्हाणं ।
खिदिसयणमदंतवणं ठिदिभोयणमेयभत्तं च ॥ १ ॥
एदे खलु मूलगुणा समणाणं जिणवरेंहि पण्णत्ता ।
एत्थ पमादकदादो अइचारादो णियत्तो हं ॥ २ ॥
छेदोवट्ठावणं होदु मज्झम् ।

अथ सर्वातिचारशुद्ध्यर्थं दैवसिकप्रतिक्रमणक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण ...सिद्धभक्ति–प्रतिक्रमणभक्ति-निष्ठितकरणवीरभक्ति—चतु–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विंशतितीर्थंकरभक्तीः कृत्वा तद्धीनादिकदोषविशुद्ध्यर्थं आत्मपवित्रीकरणार्थं समाधिभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम् ।

(इति विज्ञाप्य)

णमो अरहंताणं इत्यादि । (दंडकं पठित्वा कायोत्सर्गं कुर्यात्) ।

थोस्सामीत्यादि (स्तवं पठेत्)

अथेष्टप्रार्थनेत्यादि (पूर्वोक्तां समाधिभक्तिं पठेत्) ।

इति दैवसिकप्रतिक्रमणं वा समाप्तम् ।

---*---

२—पाक्षिकादि-प्रतिक्रमणम् ।

(शिष्यसधर्माणः पाक्षिकादिप्रतिक्रमे लघ्वीभिः सिद्धश्रुताचार्यभक्तिभिराचार्यं वन्देरन् ।)

नमोऽस्तु आचार्यवन्दनायां प्रतिष्ठापनसिद्धभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम्—

(जाप्य ६)

सम्मत्तणाणदंसणवीरियसुहुमं तहेव अवगहणं ।
अगुरुलहुमव्वावाहं अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं ॥ १ ॥

तदसिद्धे णयसिद्धे संजमसिद्धे चरित्तसिद्धे य ।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमंसामि ॥ २ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नमोऽस्तु आचार्यवन्दनायां प्रतिष्ठापनश्रुतभक्तिका-
योत्सर्गं करोम्यहम्—

(जाप्य ९)

कोटीशतं द्वादश चैव कोट्या लक्षाण्यशीतित्र्यधिकानि चैव।
पंचाशदष्टौ च सहस्रसंख्यमेतच्छ्रुतं पंचपदं नमामि ॥ १ ॥
अरहंतभासियत्थं गणहरदेवेहिं गंथियं सम्म।
पणमामि भत्तिजुत्तो सुदणाणमहोवहिं सिरसा ॥ २ ॥

नमोऽस्तु आचार्यवन्दनायां प्रतिनिष्ठापनाचार्यभक्तिका-
योत्सर्गं करोम्यहम्—

(जाप्य ९)

श्रुतजलधिपारगेभ्यः स्वपरमतविभावनापटुमतिभ्यः।
सुचरिततपोनिधिभ्यो नमो गुरुभ्यो गुणगुरुभ्यः ॥१॥
छत्तीसगुणसमग्गे पंचविहाचारकरणसदरिसे।
सिस्साणुग्गहकुसले धम्माइरिए सदा वंदे ॥ २ ॥
गुरुभत्तिसंजमेण य तरंति संसारसायरं घोरं।
छिण्णंति अट्ठकम्मं जम्मणमरणं ण पावेंति ॥ ३ ॥
नित्यं व्रतमंत्रहोमनिरता ध्यानाग्निहोत्राकुलाः,
षट्कर्माभिरतास्तपोधनधनाः साधुक्रियाः साधवः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शीलप्रावरणा गुणप्रहरणाश्चन्द्रार्कतेजोधिका,
मोक्षद्वारकपाटपाटनभटाः प्रीणंतु मां साधवः ॥ ४ ॥
गुरवः पान्तु नो नित्यं ज्ञानदर्शननायकाः ।
चारित्रार्णवगंभीरा मोक्षमार्गोपदेशकाः ॥ ५ ॥

(ततः इष्टदेवतानमस्कारपूर्वकं "समता सर्वभूतेषु" इत्यादि पठित्वा गणी शिष्यसधर्मगणयुक्तः "सिद्धानुद्धूतकर्म" इत्यादिकां गुर्वीं सिद्धभक्तिं सांचलिकां, "येनन्द्रान्,, इत्यादिकां च चारित्रभक्तिं बृहदालोचनासहितां, अर्हद्भट्टारकस्याग्रे कुर्यात् । सैषा सूरेः शिष्यासधर्मणां च साधारणी क्रिया ।)

नमः श्रीवर्धमानाय निर्धूतकलिलात्मने ।
सालोकानां त्रिलोकानां यद्विद्या दर्पणायते ॥ १ ॥
समता सर्वभूतेषु संयमः शुभभावना ।
आर्तरौद्रपरित्यागस्तद्धि सामायिकं मतम् ॥ २ ॥

सर्वातिचारविशुद्ध्यर्थं पाक्षिकप्रतिक्रमणायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजा वन्दनास्तवसमेतं सिद्धभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम्—

(णमो अरहंताणं इत्यादिदंडकं पठित्वा कायोत्सर्गं कृत्वा थोस्सामि इत्यादिकं विधाय सिद्धानुद्धूतकर्म इत्यादिसिद्धभक्तिं सांचलिकां पठेत् ।)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्धभक्तिः--

सिद्धानुद्धूतकर्मप्रकृतिसमुदयान्साधितात्मस्वभावान्,
वन्दे सिद्धिप्रसिद्ध्यै तदनुपमगुणप्रग्रहाकृष्टितुष्टः ।
सिद्धिः स्वात्मोपलब्धिः प्रगुणगुणगणाच्छादिदोषापहारा,
द्योग्योपादानयुक्त्या दृषद इह यथा हेमभावोपलब्धिः ॥ १ ॥
नाभावः सिद्धिरिष्टा न निजगुणहतिस्तत्तपोभिर्न युक्ते,
रस्त्यात्मनादिबद्धः स्वकृतजफलभुक्तत्क्षयान्मोक्षभागी ।
ज्ञाता दृष्टा स्वदेहप्रमितिरुपसमाहारविस्तारधर्मा,
ध्रौव्योत्पत्तिव्ययात्मा स्वगुणयुत इतो नान्यथा साध्यसिद्धिः ।२।
स त्वन्तर्बाह्यहेतुप्रभवविमलसद्दर्शनज्ञानचर्या-,
संपद्धेतिप्रघातक्षतदुरिततया व्यञ्जिताचिन्त्यसारः ।
कैवल्यज्ञानदृष्टिप्रवरसुखमहावीर्यसम्यक्त्वलब्धि-,
ज्योतिर्वातायनादिस्थिरपरमगुणैरद्भुतैर्भासमानः ॥३॥
जानन्पश्यन्समस्तं सममनुपरतं सम्प्रतृप्यन्वितन्वन्
धुन्वन्ध्वांतं नितांतं निचितमनुसभं प्रीणयन्नीशभावं ।
कुर्वन्सर्वप्रजानामपरमभिभवन् ज्योतिरात्मानमात्मा-
आत्मन्येवात्मनासौक्षणमुपजनयन्सतस्वयम्भूः प्रवृत्तः ।४।
छिन्दन् शेषानशेषान्निगलबलकलींस्तैरनंतस्वभावैः,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सूक्ष्मत्वाग्र्यावगाहागुरुलघुकगुणैः क्षायिकैः शोभमानः।
अन्यैश्चान्यव्यपोहप्रवणविषयसंप्राप्तिलब्धिप्रभावै,
ऊर्ध्वंव्रज्यस्वभावात्समयमुपगतो धाम्नि संतिष्ठतेग्र्ये ॥५॥
अन्याकाराप्तिहेतुर्न च भवति परो येन तेनाल्पहीनः,
प्रागात्मोपात्तदेहप्रतिकृतिरुचिराकार एव ह्यमूर्तः।
क्षुत्तृष्णाश्वासकाशज्वरमरणजरानिष्टयोगप्रमोह-,
व्यापत्याद्युग्रदुःखप्रभवभवहृतेः कोस्य सौख्यस्य माता ।६।
आत्मोपादानसिद्धं स्वयमतिशयवद्वीतबाधं विशालं,
वृद्धिह्रासव्यपेतं विषयविरहित निष्प्रतिद्वन्द्वभावं।
अन्यद्रव्यानपेक्षं निरुपममिमितं शाश्वतं सर्वकाल-,
मुत्कृष्टानन्तसारं परमसुखमतस्तस्य सिद्धस्य जातम् ॥ ७॥
नार्थः क्षुत्तृड्विनाशाद्विविधरसयुतैरन्नपानैरशुच्या--
नास्पृष्टेर्गन्धमाल्यैर्न हि मृदुशयनैर्ग्लानिनिद्राद्यभावात्।
आतङ्कार्तेरभावे तदुपशमनसद्भेषजानर्थतावद्,
दीपानर्थक्यवद्वा व्यपगततिमिरे दृश्यमाने समस्ते ॥ ८॥
तादृक्सम्पत्समेता विविधनयतपःसंयमज्ञानदृष्टि-
चर्यासिद्धाः समन्तात्प्रविततयशसो विश्वदेवाधिदेवाः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूता भव्या भवंतः सकलजगति ये स्तूयमाना विशिष्टै--
तान्सर्वान्नौम्यनंतान्निजिगमिषुररं तत्स्वरूपं त्रिसंध्यं ॥६॥

(अंचलिका—)

इच्छामि भंते ! सिद्धभत्ति-काउस्सग्गो कओ तस्सालो-चेउंसम्मणाणसम्मदंसणसम्मचारित्तजुत्ताणं, अट्ठविहकम्मवि-पमुक्काणं, अट्ठगुणसंपण्णाणं, उड्ढलोयमत्थयम्मि पइट्ठि-याणं, तवसिद्धाणं, णयसिद्धाणं, संजमसिद्धाणं, अतीताणा-गदवट्टमाणकालत्तसिद्धाणं सव्वसिद्धाणं सया णिच्चकालं अंचेमि, वंदामि, पूजेमि, णमंसामि दुक्खक्खओ कम्म-क्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ती होउ मज्झं ।

सर्वातिचारविशुद्ध्यर्थं आलोचनाचारित्रभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम्—

(इत्युच्चार्य "णमो अरहंताणं" इत्यादि दंडकं पठित्वा कायमुत्सृज्य "थोस्सामि" इत्यादि दण्डकमधीत्य "येनेन्द्रान" इत्यादि चारित्रभक्ति मालोचनां पठेत्—)

येनेन्द्रान्भुवनत्रयस्य विलसत्केयूरहारांगदान्
भास्वन्मौलिमणिप्रभाप्रविसरोत्तुंगोत्तमाङ्गान्नतान् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वेषां पादपयोरुहेषु मुनयश्चक्रुः प्रकामं सदा,
वन्दे पंचतयं तमद्य निगदन्नाचारमभ्यर्चितम् ॥ १ ॥

अर्थव्यंजनतद्द्वयाविकलताकालोपधाप्रश्रयाः,
स्वाचार्याद्यनपह्नवो बहुमतिश्चेत्यष्टधा व्याहृतम् ।
श्रीमज्ज्ञातिकुलेन्दुना भगवता तीर्थस्य कर्त्राऽञ्जसा,
ज्ञानाचारमहं त्रिधा प्रणिपताम्युद्धूतये कर्मणां ॥२॥

शंकादृष्टिविमोहककांक्षणविधिव्यावृत्तिसन्नद्धतां
वात्सल्यं विचिकित्सनादुपरतिं धर्मोपबृंहक्रियाम् ।
शक्त्या शासनदीपनं हितपथाद्भ्रष्टस्य संस्थापनम्
वन्दे दर्शनगोचरं सुचरितं मूर्ध्ना नमन्नादरात् ॥३॥

एकांते शयनोपवेशनकृतिः सन्तापनं तानवम्,
संख्यावृत्तिनिबन्धनामनशनं विष्वाणमर्द्धोदरम् ।
त्यागं चेन्द्रियदन्तिनो मदयतः स्वादो रसस्यानिशम्,
षोढा बाह्यमहं स्तुवे शिवगतिप्राप्त्यभ्युपायं तपः ॥४॥

स्वाध्यायः शुभकर्मणश्च्युतवतः संप्रत्यवस्थापनं,
ध्यानं व्यापृतिरामयाविनि गुरौ वृद्धे च बाले यतौ ।
कायोत्सर्जनसत्क्रिया विनय इत्येवं तपः षड्विधं,
वन्देऽभ्यंतरमंतरंगबलवद्विद्वेषिविध्वंसनम् ॥ ५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्यग्ज्ञानविलोचनस्य दधतः श्रद्धानमर्हन्मते,
वीर्यस्याविनिगूहनेन तपसि स्वस्य प्रयत्नाद्यतेः ।
या वृत्तिस्तरणीव नौरविवरा लघ्वी भवोदन्वतो,
वीर्याचारमहं तमूर्जितगुणं वन्दे सतामर्चितम् ॥ ६ ॥
तिस्रः सत्तमगुप्तयस्तनुमनोभाषानिमित्तोदयाः,
पंचेर्यादिसमाश्रयाः समितयः पंचव्रतानीत्यपि ।
चारित्रोपहतं त्रयोदशतयं पूर्वं न दृष्टं परै-,
राचारं परमेष्ठिनो जिनपतेर्वीरं नमामो वयम् ॥ ७ ॥
आचारं सहपंचभेदमुदितं तीर्थं परं मंगलं,
निर्ग्रंथानपि सच्चरित्रमहतो वदे समग्रान्यतीन् ।
आत्माधीनसुखोदयामनुपमां लक्ष्मीमविध्वंसिनो-,
मिच्छन्केवलदर्शनावगमनप्राज्यप्रकाशोज्वलाम् ॥ ८ ॥
अज्ञानाद्यदवीवृतं नियमिनोऽवर्तिष्यहं चान्यथा,
तस्मिन्नर्जितमस्यति प्रतिनवं चैनो निराकुर्वति ।
वृत्ते सप्ततयीं निधिं सुतपसामृद्धिं नयत्यद्भुतं,
तन्मिथ्या गुरुदुष्कृतं भवतु मे स्वं निंदतो निंदितम् ॥ ९ ॥
संसारव्यसनाहतिप्रचलिता नित्योदयप्रार्थिनः,
प्रत्यासन्नविमुक्तयः सुमतयः शांतैनसः प्राणिनः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोक्षस्येव कृतं विशालमतुलं सोपानमुच्चैस्तरा,
मारोहन्तु चरित्रमुत्तममिदं जैनेन्द्रमोजस्विनः ॥ १० ॥

आलोचना

इच्छामि भंते ! अट्ठमियम्मि आलोचेउं, अट्ठण्हं दिवसाणं अट्ठण्हं राईणं अब्भंतरादो पंचविहो आयारो णाणायारो दंसणायारो तवायारो वीरियायारो चरित्तायारो चेदि ।

इच्छामि भंते ! पक्खियम्मि आलोचेउं, पण्णरसण्हं दिवसाणं पण्णरसण्हं राईणं अब्भंतराओ पंचविहो आयारो णाणायारो दंसणायारो तवायारो वीरियायारो चरित्तायारो चेदि ।

इच्छामि भंते ! चाउमासियम्मि आलोचेउं, चउण्हं मासाणं, अट्ठण्हं पक्खाणं, वीसुत्तरसयदिवसाणं वीसुत्तरसयराईणं अब्भंतराओ पंचविहो आयारो णाणायारो दंसणायारो तवायारो वीरियायारो चरित्तायारो चेदि ।

इच्छामि भंते संवच्छरियम्मि आलोचेउं, बारसण्हं मासाणं, चउवीसण्हं पक्खाणं, तिण्हं छावट्ठिसयदिवसाणं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिण्हं छावट्ठिसयराईणं अब्भंतराओ पंचविहो आयारो णाणायारो दंसणायारो तवायारो वीरियायारो चरित्तायारो चेदि ।

तत्थ णाणायारो, काले, विणए, उवहाणे, बहुमाणे, तहेव अणिण्हवणे, विंजण-अत्थ-तदुभये चेदि णाणायारो अट्ठविहो परिहाविदो, से अक्खरहीणं वा, सरहीणं वा, पदहीणं वा, विंजणहीणं वा, अत्थहीणं वा, गंथहीणं वा, थएसु वा, थुईसु वा, अत्थक्खाणेसु वा, अणियोगेसु वा, अणियोगद्दारेसु वा, अकाले सज्झाओ कओ वा, कारिदो वा, कीरंतो वा समणुमण्णिदो, काले वा परिहाविदो, अच्छाकारिदं, मिच्छा मेलिदं, आमेलिदं, वामेलिदं, अण्णहादिण्णं अण्णहा पडिच्छिदं, आवासएसु परिहीणदाए, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥१॥

दंसणायारो अट्ठविहो, णिस्संकिय णिकंक्खिय णिव्विदिगिंछा अमूढदिट्ठी य, उवगूहण ठिदिकरणं वच्छल्ल पहावणा चेदि । अट्ठविहो परिहाविदो, संकाए कंखाए विदिगिंछाए अण्णादिट्ठीपसंसणदाए, परपाखण्डपसंसणदाए अणायदणसेवणदाए अवच्छल्लदाए अप्पहावणदाए, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ २ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तवायारोवारसविहो, अब्भंतरोछव्विहो बाहिरो छव्विहो चेदि। तत्थ बाहिरो अणसणं आमोदरियं वित्तिपरिसंखा रसपरिच्चाओ सरीरपरिच्चाओ विवित्तसयणासणं चेदि। तत्थ अब्भंतरो पायच्छित्तं विणओ वेज्जावच्चं सज्झाओ झाणं विउस्सग्गो चेदि। अब्भंतरं बाहिरं बारसविहं तवो-कम्मं ण कदं णिसण्णेण, पडिक्कंतं, तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ ३ ॥

वीरियायारो पंचविहो परिहाविदो वरवीरियपरिक्कमेण जहुत्तमाणेण बलेण वीरिएण परिक्कमेण णिगूहियं तवोकम्मं ण कमं णिसण्णेण, पडिक्कंतं तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥४॥

चरित्तायारो तेरसविहो परिहाविदो, पंचमहव्वयाणि, पंच समिदीओ, तिगुत्तीओ चेदि। तत्थ पढममहव्वदं पाणादिवादादो वेरमणं। से पुढविकाइया जीवा असंखेज्जा-संखेज्जा, आउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, तेउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, वाउकाइया जीवा असंखेज्जा-संखेज्जा, वणप्फदिकाइया जीवा अणंताणंता, हरिया बीया अंकुरा छिण्णा भिण्णा, तस्स उदावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बेइंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, कुक्खिकिमि-शंख-खुल्लय-वराडय-अक्ख-रिट्ठ गंडवाल-संबुक्क-सिप्पि-पुलवि-काइया तेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

तेइंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, कुंथु-देहिय विंछिय-गोंभिद-गोजूव-मक्कुण-पिपीलियाइया, तेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

चउरिंदिय जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, दंसमंसय-मक्खिय-पयंग-कीड--भमर--महुयरि-गोमच्छियाइया, तेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

पंचिदिए जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, अंडाइदा पोदाइया जराइया रसाइया संसेदिमा सम्मुच्छिमा उब्भेदिमा उववा-दिमा अवि चउरासीदिजोणिपमुहसदसहस्सेसु, एदेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ १ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आहावरे दुव्वे महव्वदे मुसावादादो वेरमणं, से कोहेण वा माणेण वा माएण वा लोहेण वा राएण वा दोसेण वा मोहेण वा हस्सेण वा भएण वा पमादेण वा पेम्मेण वा पिवासेण वा लज्जेण वा गारवेण वा अणादरेण वा केणवि कारणेण जादेण वा सव्वो मुसावादो भासिओ भासाविओ भासिज्जंतो वि समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥२॥

आहावरे तव्वे महव्वदे अदिण्णदाणादो वेरमणं, से गामे वा णयरे वा खेडे वा कव्वडे वा मडंवे वा मंडले वा पट्टणे वा दोणमुहे वा घोसे वा आसमे वा सहाए वा संवाहे वा सण्णिवेसे वा तिणं वा कट्ठं वा वियडि वा मणि वा एवमाइयं अदत्तं गिण्हियं गेण्हावियं गेण्हिज्जंतं समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ ३ ॥

आहावरे चउत्थे महव्वदे मेहुणादो वेरमणं, से देविएसु वा माणुसिएसु वा तेरिच्छिएसु वा अचेयणिएसु वा मणुणाम-णुणेसु रूवेसु मणुणामणुणेसु सद्देसु मणुणामणुणेसु गंधेसु मणुणामणुणेसु रसेसु मणुणामणुणेसु फासेसु चक्खिदियप-रिणामे सोदिंदियपरिणामे घाणिंदियपरिणामे जिब्भिदियप-रिणामे फासिंदियपरिणामे णोइंदियपरिणामे अगुत्तेण अगु-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्तिदिएण णवविहं बंभचरियं ण रक्खियं ण रक्खावियं ण रक्खिज्जंतो वि समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥४॥

आहावरे पंचमे महव्वदे परिग्गहादो वेरमणं, सो वि परिग्गहो दुविहो, अब्भंतरो बाहिरो चेदि तत्थ अब्भंतरो परिग्गहो णाणावरणीयं दंसणावरणीयं वेयणीयं मोहणीयं आउग्गं णामं गोदं अंतरायं चेदि अट्ठविहो, तत्थ बाहिरो परिग्गहो उवयरण-भंड-फलह-पीढ कमंडलु-संथार सेज्ज-उवसेज्ज-भत्त-पाणादिभेएण अणेयविहो, एदेण परिग्गहेण अट्ठविहं कम्मरयं बद्धं बद्धावियं बद्धज्जंत पि समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ ५ ॥

आहावरे छट्ठे अणुव्वदे राइभोयणादो वेरमणं, से असणं पाणं खाइयं रसाइयं चेदि चउव्विहो आहारो, से तित्तो वा कडुओ वा कसाइलो वा अमिलो महुरो वा लवणो वा दुच्चिंतिओ दुब्भासिओ दुप्परिणामिओ दुस्सिमिणिओ रत्तीए भुत्तो भुंजवियो भुंज्जिजंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ ६ ॥

पंचसमिदीओ ईरियासमिदी भासासमिदी आदावणणिक्खेवणसमिदी उच्चारपस्सवणखेलसिंहाणयवियडिपइट्टाव-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णासमिदी चेदि । तत्थ ईरियासमिदी पुव्वुत्तरदक्खिणपच्छिम-चउदिसिविदिसासु विहरमाणेण जुगंतरदिट्ठिणा दठ्ठव्वा डवडवचरियाए पमाददोसेण पाण-भूद-जीव-सत्ताणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ ६ ॥

तत्थ भासासमिदी कक्कसा कडुया परुसा णिठ्ठुरा परकोहिणी मज्झंकिसा अइमाणिणी अणयंकरा छेयंकरा भूयाण वहंकरा चेदि दसविहा भासा भासिया भासाविया भासिज्जंतो पि समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥७॥

तत्थ एसणासमिदी आहाकम्मेण वा पच्छाकम्मेण वा पुराकम्मेण वा उद्दिट्ठयडेण वा णिद्दिट्ठयडेण वा कीडयडेण वा साइया रसाइया सइंगाला सधूमिया अइगिद्धीए अग्गिव छण्हं जीवणिकायाणं विराहणं काऊण अपरिसुद्धं भिक्खं अण्णं पाणं आहारादियं आहारियं आहाराविय आहारिज्जंतं पि समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ ८ ॥

तत्थ आदावणणिक्खवणसमिदी चक्कलं वा फलहं पोथयं वा कमंडलं वा वियडिं वा मणि वा एवमाइयं उवय-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रणं अप्पडिलेहिऊण गेण्हंतेण वा ठवंतेण वा पाण-भूद-जीव-सत्ताणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ ९ ॥

तत्थ उच्चार-पस्सवण-खेल-सिंहाणय-वियडिपइट्ठावणिया समिदी रत्तीए वा वियाले वा अचक्खुविसए अवत्थंडिले अब्भोवयासे सणिद्धे सबीए सहरिए एवमाइएसु अप्पासुगट्ठाणेसु पइट्ठावंतेण पाण-भूद-जीव-सत्ताणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ १० ॥

तिण्ण गुत्तीओ, मणगुत्तीओ वचिगुत्तीओ कायगुत्तीओ चेदि, तत्थ मणगुत्ती अट्टे झाणे रुद्दे झाणे इहलोयसण्णाए परलोयसण्णाए आहारसण्णाए भयसण्णाए मेहुणसण्णाए परिग्गहसण्णाए एवमाइयासु जा मणगुत्ती ण रक्खिया ण रक्खाविया ण रक्खिज्जंतं पि समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ ११ ॥

तत्थ वचिगुत्ती इत्थिकहाए अत्थकहाए भत्तकहाए रायकहाए चोरकहाए वेरकहाए परपासंडकहाए एवमाइयासु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जा वचिगुत्ती ण रक्खिया ण रक्खाविया ण रक्खिज्जंतं पि समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ १२ ॥

तत्थ कायगुत्ती चित्तकम्मेसु वा पोत्तकम्मेसु वा कट्ठकम्मेसु वा लेप्पकम्मेसु वा एवमाइयासु जा कायगुत्ती ण रक्खिया ण रक्खाविया ण रक्खिज्जंतं पि समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ १३ ॥

णवसु बंभचेरगुत्तीसु, चउसु सण्णासु, चउसु पच्चएसु, दोसु अट्टरुद्दसंकिलेसपरिणामेसु, तीसु अप्पसत्थसंकिलेसपरिणामेसु, मिच्छाणाण–मिच्छादंसण–मिच्छाचरित्तेसु, चउसु उवसग्गेसु, पंचसु चरित्तेसु, छसु जीवणिकाएसु, छसु आवासएसु, सत्तसु भएसु, अट्ठसु सुद्धीसु, (णवसु बंभचेरगुत्तीसु) दससु समणधम्मेसु, दससु धम्मज्झाणेसु, दससु मुडेसु, वारसेसु संजमेसु, वावीसाए परीसहेसु, पणवीसाए भावणासु, पणवीसाए किरियासु, अट्ठारससीलसहस्सेसु, चउरासीदिगुणसयसहस्सेसु, मूलगुणेसु, उत्तरगुणेसु, अट्ठमियम्मि पक्खियम्मि चउमासियम्मि संवच्छरियम्मि अदिक्कमो वदिक्कमो अइचारो अणाचारो आभोगो अणाभोगो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो तं पडिक्कमामि मए पडिक्कंतं तस्स मे सम्मत्तमरणं समाहिमरणं पंडियमरणं वीरियमरणं दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ती होउ मज्झं।

(केवलमाचार्यो "णमो अरहंताणं" इत्यादि पंचपदान्युच्चार्य कायोत्सर्गं कृत्वा "थोस्सामि" इत्यादि भणित्वा "तवसिद्धे" इत्यादिगाथां साञ्चलिकां पठित्वा, पुनः प्रागुक्तविधिं कृत्वा "प्रावृट्काले सविद्युत्" इत्यादिकां योगिभक्तिं सांचलिकां पठित्वा "इच्छामि भंते! चरित्ताचारो तेरसविहो" इत्यादि दण्डकपंचमकधीत्य तथा "वदसमिदिंदिय" इत्यादिकं "छेदोवट्ठावणं होदु मज्झं" इत्यन्तं त्रिःपठित्वा स्वदोषान् देवस्याग्रे आलोचयेत्। दोषानुसारेण प्रायश्चित्तं च गृहीत्वा "पंचमहाव्रत" इत्यादि पाठं त्रिभणित्वा योग्यशिष्यादेः प्रायश्चित्तं निवेद्य देवाय गुरुभक्तिं दद्यात्। ततः पुनः आचार्ययुक्ताः शिष्यसधर्माणः सूरग्रे इममेव पाठं पठित्वा प्रतिक्रान्तिस्तुतिं कुर्युः। तद्यथा—)

नमोऽस्तु सर्वातीचारविशुद्ध्यर्थं सिद्धभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम्—

("णमो अरहंताणं" इत्यादि पंचपदान्युच्चार्य कायोत्सर्गं कृत्वा थोस्सामीत्यादि भणित्वा—)

सम्मत्तणाणदंसणवीरियसुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरुलहुमव्वावाहं अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं ॥ १ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तवसिद्धे णयसिद्धे संजमसिद्धे चरित्तसिद्धे य ।

णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमंसामि ॥ २ ॥

इच्छामि भंते ! सिद्धभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं, सम्मणाणसम्मदंसणसम्मचारित्तजुत्ताणं अट्ठविहकम्मविप्पमुक्काणं अट्ठगुणसंपण्णाणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पइट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं अतीताणागदवट्टमाणकालत्तयसिद्धाणं सव्वसिद्धाणं सया णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

नमोऽस्तु सर्वातिचारविशुद्ध्यर्थमालोचनायोगिभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम्——

("णमो अरहंताणं" इत्यादि पंचपदान्युच्चार्य कायोत्सर्गं कृत्वा थोस्सामीति पठित्वा—)

प्रावृट्काले सविद्युत्प्रपतितसलिले वृक्षमूलाधिवासाः,

हेमन्ते रात्रिमध्ये प्रतिविगतभयाः काष्ठवत्त्यक्तदेहाः ।

ग्रीष्मे सूर्यांशुतप्ता गिरिशिखरगताः स्थानकूटान्तरस्था—

स्ते मे धर्मं प्रदद्युर्मुनिगणवृषभामोक्षनिःश्रेणिभूताः ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गिम्हे गिरिसिहरत्था वरिसायाले रुक्खमूलरयणीसु।
सिसरे बाहिरसयणा ते साहू वंदिमो णिच्चं ॥२॥
गिरिकन्दरदुर्गेषु ये वसंति दिगम्बराः।
पाणिपात्रपुटाहारास्ते यांति परमां गतिम् ॥३॥

इच्छामि भंते! योगिभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं, अड्ढाइज्जदीवदोसमुद्देसु पण्णारसकम्मभूमिसु आदावणरुक्खमूलअब्भोवासठाणमोणवीरासणेक्कपासकुक्कुडासणचउछपक्खखवणादिजोगजुत्ताणं सव्वसाहूणं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं।

(आलोचना—)

इच्छामि भंते! चरित्तायारो तेरसविहो परिहाविदो, पंचमहव्वदाणि पंचसमिदीओ तीगुत्तीओ चेदि। तत्थ पढमे महव्वदे पाणादिवादादो वेरमणं से पुढवीकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा आउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, तेउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, वाउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेजा, वणप्फदिकाइया जीवा अणंताणंता हरिया बीया अंकुरा छिण्णा भिण्णा, एदेसिं उद्दावणं परिदावणंविरा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥१॥

बेइंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा कुक्खिकिम्मि-संख-खुल्लय-बराडय--अक्ख-रिट्ठ-गंडवाल-संबुक्क-सिप्पि पुलवि-काइया, एदेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥२॥

तेइंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा कुन्थु देहियविंछिय-गोंभिद-गोजुव मक्कुण पिपीलिया, एदेसिं उद्दावणं परिदावणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदोवा तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥३॥

चउरिंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा दंसमसयमक्खिय-पयंगकीडभमरमहुयरगोमक्खिया, एदेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥४॥

पंचिंदिया जीवा संखेज्जासंखेज्जा अंडाइया पोदाइया रसाइया संसेदिमा सम्मुच्छिमा उब्भेदिमा उववादिमा अवि चउरासीदिजोणिपमुहसदसहस्सेतु, एदेसिं उद्दावणं परिदावणं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुम-
ण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥५॥

वदसमिदिंदियरोधो लोचो आवासयमचेलमण्हाणं ।
खिदिसयणमदंतवणं ठिदिभोयणमेयभत्तं च ॥१॥
एदे खलु मूलगुणा समणाणं जिणवरेंहि पण्णत्ता ।
एत्थ पमादकदादो अइचारादो णियत्तो हं ॥२॥
छेदोवट्ठावणं होउ मज्झं ॥३॥

प्रायश्चित्तशोधनरसपरित्यागः क्रियते ।

पंचमहाव्रत–पंचसमिति--पंचेन्द्रियरोध--लोच-षडावश्यक-क्रियादयोऽष्टाविंशतिमूलगुणाः, उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौच-सत्यसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्याणि दशलाक्षणिको धर्मः, अष्टादशशीलसहस्राणि, चतुरशीतिलक्षगुणाः, त्रयोदशविधं चारित्रं, द्वादशविधं तपश्चेति सकलसम्पूर्णं अर्हत्सिद्धाचार्यो-पाध्यायसर्वसाधुसाक्षिकं सम्यक्त्वपूर्वकं दृढव्रतं सुव्रतं समारूढं ते मे भवतु ॥३॥

नमोऽस्तु निष्ठापनाचार्यभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम्-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(६ जाप्य)

श्रुतजलधिपारगेभ्यः स्वपरमतविभावनापटुमतिभ्यः ।

सुचरिततपोनिधिभ्यो नमो गुरुभ्यो गुणगुरुभ्यः ॥१॥

छत्तीसगुणसमग्गे पंचविहाचारकरणसंदरिसे ।

सिस्साणुग्गहकुसले धम्माइरिए सदा वंदे ॥१॥

गुरुभत्तिसंजमेण य तरंति संसारसायरं घोरं ।

छिण्णंति अट्ठकम्मं जम्मणमरणं ण पावेंति ॥३॥

ये नित्यं व्रतमंत्रहोमनिरता ध्यानाग्निहोत्राकुलाः

षट्कर्माभिरतास्तपोधनधनाः साधुक्रियासाधवः ।

शीलप्रावरणा गुणप्रहरणाश्चन्द्रार्कतेजोऽधिका

मोक्षद्वारकपाटपाटनभटाः प्रीणन्तु मां साधवः ॥४॥

गुरवः पांतु नो नित्यं ज्ञानदर्शननायकाः ।

चारित्रार्णवगम्भीरा मोक्षमार्गोपदेशकाः ॥५॥

इच्छामि भंते पक्खियम्मि आलोचेउं, पंचमहव्वयाणि तत्थ पढमं महव्वदं पाणादिवादादो वेरमणं, विदियं महव्वदं मुसावादादो वेरमणं, तिदियं महव्वदं अदिण्णदाणादो वेरमणं, चउत्थं महव्वदं मेहुणादो वेरमणं, पंचमं महव्वदं परिग्गहादो वेरमणं, छट्ठं अणुव्वदं राईभोयणादो वेरमणं,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तिस्सु गुत्तीसु णाणेसु दंसणेसु चरित्तेसु बावीसाए परिसहेसु पणवीसाए भावणासु पणवीसाए किरियासु अट्ठारससीलसहस्सेसु चउरासीदिगुणसयसहस्सेसु बारसण्हं संजमाणं बारसण्हं तवाणं बारसण्हं अंगाणं तेरसण्हं चरित्ताणं चउदसण्हं पुव्वाणं एयारण्हं पडिमाणं दसविहमुंडाणं दसविहसमणधम्माणं दसविहधम्मज्झाणाणं णवण्हं बंभचेरगुत्तीणं णवण्हं णोकसायाणं सोलसण्हं कसायाणं अट्ठण्हं कम्माणं अट्ठण्हं पउयणमाउयाणं सत्तण्हं भयाणं सत्तविहसंसाराणं छण्हं जीवणिकायाणं छण्हं आवासयाणं पंचण्हं इंदियाणं पंचण्हं महव्वयाणं पंचण्हं समिदीणं पंचण्हं चरित्ताणं चउण्हं सण्णाणं चउण्हं पच्चयाणं चउण्हं उवसग्गाणं मूलगुणाणं उत्तरगुणाणं अट्ठण्हं सुद्धीणं दिट्ठियाए पुट्ठियाए पदोसियाए से कोहेण वा माणेण वा माएण वा लोहेण वा रागेण वा दोसेण वा वा मोहेण वा हस्सेण वा भएण वा पदोसेण वा पमादेण वा पिम्मेण वा पिवासेण वा लज्जेण गारवेण वा एदेसिं अच्चासणदाए तिण्हं दंडाणं तिण्हं लेस्साणं तिण्हं गारवाणं तिण्हं अप्पसत्थसंकिलेसपरिणामाणं दोण्हं अट्टरुद्दसंकिलेसपरिणामाणं मिच्छणाण-मिच्छदंसण-मिच्छचरित्ताणं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिच्छत्तापाउग्गं असञ्जमपाउग्गं कसायपाउग्गं जोगपाउग्गं अप्पपाउग्गसेवणदाए पाउग्गगरहणदाए इत्थ मे जो कोई वि पक्खियम्मि चउमासीयम्मि संवच्छरियम्मि अदिक्कमो वदिक्कमो अइचारो अणाचारो आभोगो अणाभोगो तस्स भंते ! पडिक्कमामि पडिक्कमंतस्स मे सम्मत्तमरणं समाहिमरणं पंडियमरणं वीरियमरणं दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

वदसमिदिंदियरोधो लोचो आवासयमचेलमण्हाणं ।
खिदिसयणमदंतवणं ठिदिभोयणमेयभत्तं च ॥ १ ॥
एदे खलु मूलगुणा समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्तो ।
एत्थ पमादकदादो अइचारादो णियत्तो हं ॥ २ ॥

छेदोवट्ठावणं होदु मज्झं ।

पञ्चमहाव्रतपञ्चसमितिपञ्चेन्द्रियरोधलोचषडावश्यकक्रियादयोऽष्टाविंशतिमूलगुणाः, उत्तमक्षमामार्दवार्जवसत्यशौचसंयमयतपस्त्यागाकिञ्चन्यब्रह्मचर्याणि दशलाक्षणिको धर्मः, अष्टादशशीलसहस्राणि, चतुरशीतिलक्षगुणाः त्रयोदशविधं चारित्रं, द्वादशविधं तपश्चेति सकलसम्पूर्णं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुसाक्षिकं सम्यक्त्वपूर्वकं दृढव्रतं सुव्रतं समारूढं ते मे भवतु ॥ ३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रतिक्रमण भक्ति

सर्वातिचारविशुद्ध्यर्थं पाक्षिकप्रतिक्रमणायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावंदनास्तवसमेतं प्रतिक्रमणभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम्:—

इत्युच्चार्य "णमो अरहंताणं" इत्यादि दण्डकं पठित्वा कायोत्सर्गं सूरयः साधवः विदध्युः)

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमोआइरियाणं।

णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥१॥

चत्तारि मंगलं——अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहु मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा-अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि—अरहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहु सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

अढाइज्जदीवदोसमुद्देसु पण्णारसकम्मभूमिसु जाव अरहंताणं भयवंताणं आदियराणं तित्थयराणं जिणाणं जिणोत्तमाणं केवलियाणं, सिद्धाणं बुद्धाणं परिणिव्वुदाणं अंतयडाणं पारयडाणं, धम्माइरियाणं, धम्मदेसगाणं,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धम्मणायगाणं, धम्मवरचाउरंगचक्कवट्टीणं देवाहिदेवाणं णाणाणं दंसणाणं चरित्ताणं सदा करेमि किरियम्मं।

करेमि भंते! सामायियं सव्वसावज्जोगं पच्चक्खामि, जावज्जीवं तिविहेण मणसा वचसा काएण ण करेमि ण कारेमि कीरंतं ण समणुमणामि, तस्स भंते! अइचारं पच्चक्खामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं जाव अरहंताणं भयवंताणं पज्जुवासं करेमि ताव कालं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

(सप्तविंशत्युच्छ्वासेषु ९ जाप्यं)

(यथोक्तपरिकर्मानन्तरं आचार्यः "थोस्सामि" इत्यादि दंडकं गणधरवलयं च पठित्वा प्रतिक्रमणदंडकान् पठेत्। शिष्यसधर्माणस्तु तावत्कालं कायोत्सर्गेण तिष्ठन्तः प्रतिक्रमणदंडकान् शृणुयुः)

थोस्सामि हं जिणवरे तित्थयरे केवली अणंतजिणे।
णरपवरलोयमहिए विहुयरयमले महप्पण्णे ॥१॥
लोयसुज्जोययरे धम्मं तित्थंकरे जिणे वंदे।
अरहंते कित्तिस्से चोवीसं चेव केवलिणो ॥२॥
उसहमजियं च वंदे संभवमभिणंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुविहिं च पुप्फयंतं सीयलसेयं च वासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं भयवं धम्मं संतिं च वंदामि ॥४॥

कुंथुं च जिणवरिंदं अरं च मल्लिं च सुव्वयं च णमिं ।
वंदामि रिट्ठणेमिं तह पासं वड्ढमाणं च ॥५॥

एवं मए अभित्थुआ विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।
चोवीसं पि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु ॥६॥

कित्तियं वंदिय महिया एदे लोगोत्तमा जिणा सिद्धा ।
आरोग्गणाणलाहं दिंतु समाहिं च मे बोहिं ॥७॥

चंदेहिं णिम्मलयरा आइच्चेहिं अहियपयासंता ।
सायरमिव गंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥८॥

गणधरवलयः—

जिनान् जितारातिगणान् गरिष्ठान् देशावधीन् सर्वपरावधींश्च ।
सत्कोष्ठबीजादिपदानुसारीन्, स्तुवे गणेशानपि तद्गुणाप्त्यै ॥१॥
संभिन्नश्रोत्रान्वितसन्मुनीन्द्रान्, प्रत्येकसम्बोधितबुद्धधर्मान् ।
स्वयंप्रबुद्धांश्च विमुक्तमार्गान्, स्तुवे गणेशानपि तद्गुणाप्त्यै ॥२॥
द्विधा मनःपर्ययचित्प्रयुक्तान्, द्विपंचसप्तद्वयपूर्वसक्तान् ।
अष्टाङ्गनैमित्तिकशास्त्रदक्षान् स्तुवे गणेशानपि तद्गुणाप्त्यै ॥३॥
विकुर्वणाख्यर्द्धिमहाप्रभावान्, विद्याधरांश्चारणर्द्धिप्राप्तान् ।
प्रज्ञाश्रितान्नित्यखगामिनश्च स्तुवे गणेशानपि तद्गुणाप्त्यै ॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आशीर्विषान् दृष्टिविषान्मुनीन्द्रानुग्रातिदीप्तोत्तमतप्ततप्तान् ।
महातिघोरप्रतपःप्रसक्तान् स्तुवे गणेशानपि तद्गुणाप्त्यै ॥५॥
वन्द्यान् सुरैर्घोरगुणांश्च लोके पूज्यान् बुधैर्घोरपराक्रमांश्च ।
घोरादिसंसद्गुणब्रह्मयुक्तान् स्तुवे गणेशानपि तद्गुणाप्त्यै ॥६॥
आमर्द्धिखेलर्द्धिप्रजल्लविट्प्र–सर्वर्द्धिप्राप्तांश्च व्यथादिहंतॄन् ।
मनोवचःकायबलोपयुक्तान् स्तुवे गणेशानपि तद्गुणाप्त्यै ॥७॥
सत्क्षीरसर्पिर्मधुरामृतर्द्धीन् यतीन् वराक्षीणमहानसांश्च ।
प्रवर्धमानांस्त्रिजगत्प्रपूज्यान् स्तुवे गणेशानपि तद्गुणाप्त्यै ॥८॥
सिद्धालयान् श्रीमहतोऽतिवीरान् श्रीवर्द्धमानर्द्धिविबुद्धिदक्षान्
सर्वान् मुनीन् मुक्तिवरानृषीन्द्रान् स्तुवे गणेशानपि तद्गुणाप्त्यै

नृसुरखचरसेव्या विश्वश्रेष्ठर्द्धिभूषा,
विविधगुणसमुद्रा मारमातङ्गसिंहाः ।
भवजलनिधिपोता वन्दिता मे दिशन्तु,
मुनिगणसकलान् श्रीसिद्धिदाः सदृषीन्द्रान् ॥१०॥

प्रतिक्रमणदण्डकः—

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णमो जिणाणं, णमो ओहिजिणाणं, णमो परमोहिजिणाणं, णमो सव्वोहिजिणाणं, णमो अणंतोहिजिणाणं, णमो कोट्ठबुद्धीणं, णमो बीजबुद्धीणं, णमो पादाणुसारीणं, णमो संभिण्णसोदाराणं, णमो सयबुद्धाणं, णमो पत्तेयबुद्धाणं, णमो बोहियबुद्धाणं, णमो उजुमदीणं, णमो विउलमदीणं, णमो दसपुव्वीणं, णमो चउदसपुव्वीणं, णमो अट्टंगमहाणिमित्तकुसलाणं, णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं, णमो विज्जाहराणं, णमो चारणाणं, णमो पण्णसमणाणं, णमो आगासगामीणं, णमो आसीविसाणं, णमो दिट्ठविसाणं, णमो उग्गतवाणं, णमो दित्ततवाणं, णमो तत्ततवाणं, णमो महातवाणं, णमो घोरतवाणं, णमो घोरगुणाणं, णमो घोरपरक्कमाणं, णमो घोरगुणबंभयारीणं, णमो आमोसहिपत्ताणं, णमो खेल्लोसहिपत्ताणं, णमो जल्लोसहिपत्ताणं, णमो विप्पोसहिपत्ताणं, णमो सव्वोसहिपत्ताणं, णमो मणबलीणं, णमो वचिबलीणं, णमो कायबलीणं, णमो खीरसवीणं, णमो सप्पिसवीणं, णमो महुरसवीणं, णमो अमियसवीणं, णमो अक्खीणमहाणसाणं, णमो बड्ढमाणाणं णमो सिद्धायदणाणं, णमो भयवदो महदि महावीरवड्ढमाणबुद्धरिसीणो चेदि ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जस्संतियं धम्मपहं णियच्छे तस्संतियं वेणइयं पउंजे।
काएण वाचा मणसावि णिच्चं सक्कारए तं सिरपंचमेण ॥१॥

सुदं मे आउस्संतो ! इह खलु समणेण भयवदो महदिमहावीरेण महाकस्सवेण सव्वण्हुणा सव्वलोगदरिसिणा सदेवासुरमाणुसस्स लोयस्स आगदिगदिचवणोववादं बंधं मोक्खं इड्ढि ठिदिं जुदिं अणुभागं तक्कं कलं मणोमाणसियं भूतं कयं पडिसेवियं आदिकम्मं अरुहकम्मं सव्वलोए सव्वजीवे सव्वभावे सव्वं समं जाणंता पस्संता विहरमाणेण समणाणं पंचमहव्वदाणि राईभोयणवेरमणछट्ठाणि सभावणाणि समाउगपदाणि सउत्तरपदाणि सम्मं धम्मं उवदेसिदाणि। तं जहा—

पढमे महव्वदे पाणादिवादादो वेरमणं, विदिए महव्वदे मुसावादादो वेरमणं, तिदिए महव्वदे अदिण्णदाणादो वेरमणं, चउत्थे महव्वदे मेहुणादो वेरमणं, पंचमे महव्वदे परिग्गहादो वेरमणं, छट्ठे अणुव्वदे राईभोयणादो वेरमणं चेदि।

तत्थ पढमे महव्वदे सव्वं भंते ! पाणादिवादं पच्चक्खामि जावज्जीवं तिविहेण मणसा वचिया काएण, से एइन्दिया

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ा, वेइंदिया वा, तेइंदिया वा, चउरिंदिया वा, पंचिंदिया
ा, पुढविकाइए वा वाउकाइए वा तेउकाइए वा वणप्फदि-
ाइए वा तसकाइए वा अंडाइए वा पोदाइए वा जराइए
ा रसाइए वा संसेदिमे वा सम्मुच्छिमे वा उब्भेदिमे वा
ववादिमे वा तसे वा थावरे वा बादरे वा सुहुमे वा पाणे
ा भूदे वा जीवे वा सत्ते वा पज्जत्ते वा अपज्जत्ते वा अवि
उरासीदिजोणिपमुहसदसहस्सेसु, णेव सयं पाणादिवादिज्ज
ो अण्णेहि पाणे अदिवादावेज्ज अण्णेहिं पाणे अदिवादि-
ज्जंतो वि ण समणुमण्णेज्ज तस्स भंते ! अइचारं पडिक्क-
ामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं, वोस्सरामि पुव्विचणं
ंते ! जं पि मए रागस्स वा दोसस्स वा मोहस्स वा वसंग-
ण सयं पाणे अदिवादाविदे अण्णेहिं पाणे अदिवादाविदे
ण्णेहिं पाणे अदिवादिज्जंते वि समणुमण्णिदे तं पि इमस्स
गंथस्स पावयणस्स अणुत्तरस्स केवलियस्स केवलिपण्ण-
स्स धम्मस्स अहिंसालक्खणस्स, सच्चाहिट्ठियस्स विणय-
ूलस्स खमाबलस्स अट्ठारससीलसहस्सपरिमंडियस्स चउ-
ासीदिगुणसय सहस्सविहूसियस्स णवबंभचेरगुत्तस्स नियति-
क्खणस्स परिचायफलस्स उवसमपहाणस्स खंतिमग्गदे-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सयस्स मुत्तिमग्गपयासयस्स सिद्धिमग्गपज्जवसाहणस्स, से कोहेण वा माणेण वा माएण वा लोहेण वा अण्णाणेण वा अदंसणेण वा अविरिएण वा असंयमेण वा असमणेण वा अणहिगमणेण वा अभिसंसिदाएण वा अबोहिदाएण वा रागेण, वा दोसेण वा मोहेण वा हस्सेण वा भएण वा पदोसेण वा पमादेण वा पेम्मेण वा पिवासेण वा लज्जेण वा गारवेण वा अणादरेण वा केण वि कारणेण जादेण वा आलसदाए कम्मभारिगदाए कम्मगुरुगदाए कम्मदुच्चरिदाए कम्मपुरुक्कड-दाए तिगारवगुरुगदाए अवहुसुददाए अविदिदपरमट्ठदाए तं सव्वं पुव्वं दुच्चरियं गरिहामि आगमेंसिच, अपच्चक्खियं पच्चक्खामि, अणालोचियं आलोचेमि, अणिंदियं णिंदामि, अगरहियं गरहामि, अपडिक्कंतं पडिक्कमामि, विराहणं वोस्सरामि आराहणं अब्भुट्ठेमि, अण्णाणं वोस्सरामि सण्णाणं अब्भुट्ठेमि, कुदंसणं वोस्सरासि सम्मदंसणं अब्भुट्ठेमि, कुचरियं वोस्सरामि सुचरियं अब्भट्ठेमि, कुतवं वोस्सरामि सुतवं अब्भुट्ठेमि, अकरणिज्जं वोस्सरामि करणिज्जं अब्भुट्ठेमि, अकिरियं वोस्सरामि किरियं अब्भुट्ठेमि, पाणादिवादं वोस्सरामि अभयदाणं अब्भु-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मि, मोसं वोस्सरामि सच्चं अब्भुट्ठेमि, अदत्तादाणं वोस्स-
मि दिण्णंकप्पणिज्जं अब्भुट्ठेमि, अबंभे वोस्सरामि बंभ-
रियं अब्भुट्ठेमि, परिग्गहं वोस्सरामि अपरिग्गहं अब्भु-
ठेमि, राई भोयणं वोस्सरामि दिवाभोयणमेगभत्तं पच्चुप्पणं
सुगं अब्भुट्ठेमि, अट्टरुद्दज्झाणं वोस्सरामि धम्मसुक्क-
झाणं अब्भुट्ठेमि, किण्हणीलकाउलेस्सं वोस्सरामि तेउपम्म-
क्कलेस्सं अब्भुट्ठेमि, आरंभं वोस्सरामि अणारंभं अब्भु-
मि असंजमं वोस्सरामिसंजमं अब्भुट्ठेमि, सग्गंथं वोस्सरामि
गंथं अब्भुट्ठेमि, सचेलं वोस्सरामि अचेलं अब्भुट्ठेमि,
लोचं वोस्सरामि लोचं अब्भुट्ठेमि, एहाणं वोस्सरामि
ण्हाणं अब्भुट्ठेमि अखिदिसयणं वोस्सरामि खिदिसयणं
ब्भुट्ठेमि, दंतवणं वोस्सरामि अदंतवणं अब्भुट्ठेमि,
ट्ठिदि भोयणं वोस्सरामि ठिदिभोयणमेगभत्तं अब्भु-
ठेमि अपाणिपत्तं वोस्सरामि पाणिपत्तं अब्भुट्ठेमि,
हं वोस्सरामि खंति अब्भुट्ठेमि, माणं वोस्सरामि मद्दवं
ब्भुट्ठेमि, मायं वोस्सरामि अज्जवंअब्भुट्ठेमि, लोहंवोस्स-
मि संतोसं अब्भुट्ठेमि, अतवं वोस्सरामि दुवादसविहतवो-
मं अब्भुट्ठेमि, मिच्छत्तं परिवज्जामि सम्मत्तं उवसंप-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्जामि, असीलं परिवज्जामि सुसीलं उवसंपज्जामि, ससल्लं परिवज्जामि णिसल्लं उवसंपज्जामि, अविणयं परिवज्जामि विणयं उवसंपज्जामि, अणाचारं परिवज्जामि आचारं उवसंपज्जामि, उम्मग्गं परिवज्जामि जिणमग्गं उवसंपज्जामि अखंतिं परिवज्जामि खंतिं उवसंपज्जामि, अगुत्तिं परिवज्जामि, गुत्तिं उवसंपज्जामि, असुत्तिं परिवज्जामि सुसुत्तिं उवसंपज्जामि, असमाहिं परिवज्जामि सुसमाहिं उवसंपज्जामि, ममत्तिं परिवज्जामि णिममत्तिं उवसंपज्जामि, अभावियं भावेमि भावियंण भावेमि, इमं णिग्गंथं पव्वयणं अणुत्तरं केवलियं पडिपुण्णं णेगाइयं सामाइयं संसुद्धं सल्लघट्टाणं सल्लघत्ताणं सिद्धिमग्गं सेढिमग्गं खंतिमग्गं मुत्तिमग्गं पमुत्तिमग्गं मोक्खमग्गं पमोक्खमग्गं णिज्जाणमग्गं णिव्वाणमग्गं सव्वमुक्खपरिहाणिमग्गं सुचरियपरिणिव्वाणमग्गं जत्थ ठिया जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुंचंति परिणिव्वायंति सव्वदुक्खाणमंतं करेंति तं सद्दहामि तं पत्तियामि तं रोचेमि तं फासेमि, इदो उत्तरं अण्णं णत्थि ण भूदं ण भवं ण भविस्सदि, णाणेण वा दंसणेण वा चरित्तेण वा सुत्तेण वा सीलेण वा गुणेण वा तवेण वा णियमेण वा वदेण वा विहारेण वा आलएण वा

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अज्जवेण वा लाहवेण वा अण्णेण वा वोरिएण वा समणोम्हि संजदोम्हि उवरदोम्हि उवसंतोम्हि उवधिणियडि-माण माया-मोस-मूरण-मिच्छाणाण मिच्छादंसण-मिच्छाचरित्तं च पडिविरदोम्हि, सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित्तं च रोचेम्हि, जं जिणवरेहिं पण्णत्तो जो मए देवसिय-राइय-पक्खिय-चाउम्मासियसंवच्छरिय इरियावहिकेसलोचाइचारस्स संथारादिचारस्स पंथादिचारस्स सव्वादिचारस्स उत्तमट्ठस्स सम्मचरित्तं च रोचेम्हि । पढमे महव्वदे पाणादिवादादो वेरमणं उवट्ठावणमंडले महत्थे महागुणे महाणुभावे महाजसे महापुरिसाणुचिन्ने अरहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं अप्पसक्खियं परसक्खियं देवतासक्खियं उत्तमट्ठम्हि इदं मे महव्वदं सुव्वदं दढव्वदं होदु, णित्थारयं पारयं तारयं आराहियं चावि ते मे भवतु ।

प्रथमं महाव्रतं सर्वेषां व्रतधारिणां सम्यक्त्वपूर्वकं दृढव्रतं सुव्रतं समारूढं ते मे भवतु ॥३॥

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरीयाणं ।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आहावरे विदिए महव्वदे सव्वं भंते ! मुसावादं पच्चक्खामि जावज्जीवं तिविहेण मणसा वचिया काएण, से काहेण वा माणेण वा माएण वा लोहेण वा रागेण वा दोसेण वा मोहेण वा हस्सेण वा भएण वा पदोसेण वा पमादेण वा पिम्मेण वा पिवासेण वा लज्जेण वा गारवेण वा अणादरेण वा केणवि कारणेण जादेण वा णेव सयं मोसं भासेज्ज ण अण्णेहिं मोसं भासाविज्ज अण्णेहि मोसं भासिज्जंतं पि ण समणुमणिज्ज तस्स भंते ! अइचारं पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं, वोस्सरामि पुव्विचरणं भंते ! जं पि मए रागस्स वा दोसस्स वा मोहस्स वा वसंगदेण सयं मोसं भासियं अण्णेहिं मोसं भासावियं अण्णेहिं मोसं भासिज्जंतं पि समणुमण्णिदं इमस्स णिग्गंथस्स पवयणस्स अणुत्तरस्स केवलियस्स केवलिपण्णत्तस्स धम्मस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खमाबलस्स अट्ठारससीलसहस्सपरिमंडियस्स चउरासीदिगुणसयसहस्सविहूसियस्स णवसुबंभचेरगुत्तस्स णियदिलक्खणस्स परिचागफलस्स उवसमपहाणस्स खंतिमग्गदेसगस्स मुत्तिमग्गपयासयस्स सिद्धमग्गपज्जवसाहणस्स.......

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

म्मणाण-सम्मदंसण—सम्मचरित्तं च रोचेमि जं जिणवरेहिं
ण्णत्तो इत्थ जो मए देवसिय-राइय-पक्खिय-चउमासिय-
वच्छरियइरियावहिकेसलोचाइचारस्स पंथादिचारस्स
व्वातिचारस्स उत्तमट्ठस्स सम्मचरित्तं च रोचेमि, विदिए
हव्वदे मुसावादादो वेरमणं उवट्ठाणमंडले महत्थे महागुणे
हाणुभावे महाजसे महापुरिसाणुचिण्णे अरहंतसक्खियं
सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं अप्पसक्खियं परसक्खियं
देवतासक्खियं उत्तमट्ठम्मि इदं मे महव्वदं सुव्वदं दढव्वदं
होदु, णित्थारयं पारयं तारयं आराहियं चावि ते मे भवतु।

द्वितीयं महाव्रतं सर्वेषां व्रतधारिणां सम्यक्त्वपूर्वकं
दृढ़व्रत सुव्रत समारूढं ते मे भवतु ॥३॥

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरीयाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥३॥

आधावरे तदिये महव्वदे सव्वं भंते ! अदत्तादाणं
च्चक्खामि जावज्जीवं तिविहेण मणसा वचिया काएण
से देसे वा गामे वा णगरे वा खेडे वा कव्वडे वा मंडवे वा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मंडले वा पट्टणे वा दोणमुहे वा घोसे वा आसणे वा सहाए वा संवाहे वा सण्णिवसे वा तिणं वा कट्ठं वा वियडिं वा मणिं वा खेत्ते वा खले वा जले वा थले वा पहे वा उप्पहे वा रण्णे वा अरण्णे वा णट्ठं वा पमुट्ठं वा पडिदं वा अपडिदं वा सुणिहिदं वा दुण्णिहिदं वा अप्पं वा बहुं वा अणुयं वा थूलं वा सचित्तं वा अचित्तं वा मज्झत्थं वा बहित्थं वा अवि दंतंतरसोहणमित्तं पि णेव सयं अदत्तं गेण्हिज्ज णो अण्णेहिं अदत्तं गेण्हाविज्ज अण्णेहिं अदत्तं गेण्हिज्जतं पि ण समणुमणिज्जा, तस्स भंते ! अइचारं पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं वोस्सरामि पुव्विंचणं भंते ! जं पि मए रागस्स वा दोसस्स वा मोहस्स वा वसंगदेण सयं अदत्तं गेण्हिदं अण्णेहिं अदत्तं गेण्हाविदं अण्णेहिं अदत्तं गेण्णिज्जंतं पि समणुमण्णिदो तं पि इमस्स णिग्गंथस्स पवयणस्स अणुत्तरस्स केवलियस्स केवलिपण्णत्तस्स धम्मस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खमाबलस्स अट्ठारससीलसहस्सपरिमंडियस्स चउरासीदिगुणसयसहस्स-विहूसियस्स णवसुबंभचेरगुत्तस्स णियदिलक्खणस्स परिचागफलस्स उवसमपहाणस्स खंतिमग्गदेसियस्स

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुत्तिमग्गपयासयस्स सिद्धिमग्गपज्जवसाहणस्स..........
सम्मणाण सम्मदंसण-सम्मचरित्तं च रोचेमि, जं जिणवरेहिं
पण्णत्तो इत्थ जो मए देवसिय राईय-पक्खिय चउमासिय
संवच्छरियइरियावहिकेसलोचाइचारस्स संथारादिचारस्स
पंथादिचारस्स सव्वाइचारस्स उत्तमट्ठस्स सम्मचरित्तं
रोचेमि। तदिए महव्वदे अदत्तादाण दो वेरमणं उवट्ठावण-
मंडले महत्थे महागुणे महाणुभावे महाजसे महापुरिसाणु-
चिण्णे अरहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं अप्पसक्खियं
परसक्खियं देवतासक्खियं उत्तमट्ठम्हि इदं मे महव्वदं
सुव्वदं दढव्वदं होदु, णित्थारयं पारयं तारयं अराहियं चावि
ते मे भवतु ॥३॥

तृतीयं महाव्रतं सर्वेषां व्रतधारिणां सम्यक्त्वपूर्वकं दृढव्रतं सुव्रतं समारूढं ते मे भवतु ॥३॥

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥३॥

आधावरे चउत्थे महव्वदे सव्वं भंते! अबंभं पच्चक्खामि
जावज्जीवं तिविहेण मणसा वचिया काएण से देविएसु वा
माणुसिएसु तिरिच्छिएसु वा अचेयणिएसु वा कट्ठकम्मेसु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वा चित्तकम्मेसु वा पोत्तकम्मेसु वा लेप्पकम्मेसु वा लयकम्मेसु वा सिल्लाकम्मेसु वा गिहकम्मेसु वा भित्तिकम्मेसु वा भेदकम्मेसु वा भंडकम्मेसु वा धादुकम्मेसु वा दंतकम्मेसु वा हत्थसंघट्टणदाए पादसंघट्टणदाए पुग्गलसंघट्टणदाए मणुणामणुणेसु सद्देसु मणुणामणुणेसु रूवेसु मणुणामणुणेसु गंधेसु मणुणामणुणेसु रसेसु मणुणामणुणेसु फासेसु सोदिंदियपरिणामे चक्खिंदियपरिणामे घाणिंदियपरिणामे जिब्भिंदियपरिणामे फासिंदियपरिणामे णोइंदियपरिणामे अगुत्तेण अगुत्तिंदिएण णेव सयं अबंभं सेविज्ज णो अण्णेहिं अबंभं सेवाविज्ज णो अण्णेहिं अबंभं सेविज्जंतं पि समणुमणिज्ज तस्स भंते ! अइचारं पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं, वोस्सरामि पुव्विचणं भंते ! जंपि मए रागस्स वा दोसस्स वा वसंगदेण सयं अबंभं सेवियं अण्णेहिं अबंभं सेवावियं अण्णेहिं अबंभं सेविज्जंतं पि समणुमणिदं तं पि इमस्स णिग्गंथस्स पवयणस्स अणुत्तरस्स केवलिपण्णत्तस्स धम्मस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चारिट्ठि-यस्स विणयमूलस्स खमावलस्स अट्ठारससीलसहस्सपरिमंडि-यस्स चउरासीदिगुणसयसहस्सविहूसियस्स णवसुवंभचेरगुत्तस्स

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णियदिलक्कणस्स परिचागफलस्स उवसमपहाणस्स खंति-मग्गंदेसयस्स मुत्तिमग्गपयासयस्स सिद्धिमग्गपज्जवसाहणस्स ......सम्मणाण सम्मदंसण-सम्मचरित्तं च रोचेमि, जं जिण-वरेहिं पण्णत्तो इत्थ जो मए देवसिए-राइय पक्खि-चउमा-सिय-संवच्छरिय-इरियावहिकेसलोचाइचारस्स संथारादिचार-स्स पंथादिचारस्स सव्वादिचारस्स उत्तमट्ठस्स सम्मचरित्तं च रोचेमि। चउत्थे महव्वदे अबंभादो वेरमणं उवट्ठावणमंडले महत्थे। महागुणे महाणुभावे महाजसे महापुरिसाणु चिण्णो अरहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं अप्पसक्खियं पर-सक्खियं देवतासक्खियं उत्तमट्ठम्हि इदं मे महव्वदं सुव्वद दिढव्वदं होदु णित्थारयं पारयं तारयं आरहियं चावि ते मे भवतु ॥ ३ ॥

चतुर्थं महाव्रतं सर्वेषां व्रतधारिणां सम्यक्त्वपूर्वकं दृढ-व्रतं सुव्रतं समारूढं ते मे भवतु ॥ ३ ॥

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।

णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ३ ॥

आधावरे पंचमे महव्वदे सव्वंदे सव्वं भंते ! दुविहं परिग्गहं पच्चक्खामि तिविहेण मणसा वचिया काएण। सो परिग्गहो दुविहो अब्भिंतरो बाहिरो चेदि। तत्थ अब्भिन्तरं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परिग्गहं—"मिच्छत्तावेयराया तहेव हस्सादिया य छद्दोसा। चत्तारि तह कसाया चउदस अब्भंतरं गंथा ॥ १ ॥" तत्थ बाहिरं परिग्गहं, से हिरण्णं वा सुवण्णं वा धणं वा खेत्तं वा खलं वा वत्थुं वा पवत्थुं वा कोसं वा कुठारं वा पुरं वा अंतउरं वा बलं वा वाहणं वा सयडं वा जाणं वा जपाणं वा जुगं वा गड्डियं वा रहं वा सदणं वा सिवियं वा दासीदासगोमहिसगवेडयं मणिमोत्तियसंखसिप्पिपवालयं मणिभाजणं वा सुवण्णभाजणं वा रजतभाजणं वा कंसभाजणं वा लोहभाजणं वा तंबभाजणं वा अंडजं वा वोंडजं रोमजं वक्कजं वा चम्मजं वा अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं सच्चित्तं वा अच्चित्तं वा अमुत्थं वा बहित्थं वा अवि वालग्गकोडिमित्तंपि णेव सयं असमणपाउग्गं परिग्गहं गिण्हिज्ज णो अण्णेहिं असमणपाउग्गं परिग्गहं गेण्हाविज्ज णो अण्णेहिं असमणपाउग्गं परिग्गहं गिण्हज्जजतंपि समणुमणिज्ज तस्स भंते ! अइचारं पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं, वोस्सरामि पुव्विच्चणं भंते ! जं पि मए रागस्स वा दोसस्स वा मोहस्स वा वसंगदेण सयं असमणपाउग्गं परिग्गहं गिण्हिज्ज, अण्णेहिं असमणपाउग्गं परिग्गहं गेण्हावियं, अण्णेहिं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मणपाउग्गं परिग्गहं गेण्हिज्जतं पि समणुमण्णिदं,
पि इमस्स णिग्गंथस्स पवयणस्स अणुत्तरस्स केवलि-
स केवलिपण्णत्तस्स धम्मस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चा-
ट्ठियस्स विणयमूलस्स खमावलस्स अट्ठारससीलहस्स-
रिमंडियस्स चउरासीगुणसयसहस्सविहूसियस्स णवसुबं-
रगुत्तस्स णियदिलक्खणस्स परिचागफलस्स उवसम-
णस्स खंतिमग्गदेसयस्स मुत्तिमग्गपयासयस्स सिद्धि-
गपज्जवसाहणस्स.....................सम्मणाण-सम्मदंसण-
म्मचरित्तं च रोचेमि, जं जिणवरेंहि पण्णत्ते इत्थ जो
ए देवसिय-राइय-पक्खिय-चउमासिय-संवच्छरिय इरिया-
हिकेसलोचाइचारस्स संथाराइचारस्स पंथाइचारस्स सव्वा-
चारस्स उत्तमट्ठस्स सम्मच्चरित्तं रोचेमि। पंचमे महव्वदे
रिग्गहादो वेरमणं उवट्ठावणमंडले महत्थे महागुणे महा-
भावे महापुरिसाणुच्चिण्णे अरहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं
हुसक्खियं अप्पसक्खियं परसक्खियं देवतासक्खियं
समट्ठम्हि इदं मे महव्वदं सुव्वदं दिढव्वदं होदु, णित्थारयं
रयं तारयं आराहियं चावि ते मे भवतु ॥ ३ ॥

पंचमं महाव्रतं सर्वेषां व्रतधारिणां सम्यक्त्वपूर्वकं दृढ-
ं समारूढं ते मे भवतु ॥ ३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरीयाणं।

णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ३ ॥

आधावरे छट्ठे अणुव्वदे सवं भंते ! राईभोयणं पच्च-क्खामि जावज्जीवं तिविहेण मणसा वचिया काएण, से असणं वा पाणं वा खादियं वा सादियं वा कडुयं वा कसायं वा आमिलं वा महुरं वा लवणं वा अलवणं वा सचित्तं वा अचित्तं वा तं सव्वं चउव्विहं आहारं णेव-सयं रत्तिं भुंजिज्ज णो अण्णेंहि रत्तिं भुंजाविज्ज णो अण्णेंहि रत्तिं भुंजिज्जंतं पि समणुमण्णिज्ज, तस्स भंते ! अइचारं पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं, बोसि-रामि पुव्विचणं भंते ! जं पि मए रागस्स वा दोसस्स वा मोहस्स वा वसंगदेण चउव्विहो आहारो सयं रत्ति भुत्तो अण्णेंहि रत्तिं भुंजाविदो अण्णेंहि रत्तिं भुंजिज्जंतो वि समणुमण्णिदो, तं पि इमस्स णिग्गंथस्स पवयणस्स अणुत्तरस्स केवलियस्स केवलिपण्णत्तस्स धम्मस्स अहिं-सालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खमावलस्स अट्ठारससोलसहस्सपरिमंडियस्स चउरासीदिगुणसयसहस्स विहूसियस्स णवसुबंभचेरगुत्तस्स णियदिलक्खणस्स परि-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फलस्स उपसमपहाणस्स खंतिमग्गदेसयस्स मुत्तिम-यासयस्स सिद्धमग्गपच्चवसाहणस्स'''सम्मणाण—सम्म-णसम्मचरित्तं च रोचेमि जं जिणवरेहिं पण्णत्तो इत्थ मए देवसिय-राइय-पक्खिय-चउमासिय-संवच्छरिय-यावहि केसलोचाइयारस्स संथारादिचारस्स पंथादिचा-सव्वाइचारस्स उत्तमट्ठस्स सम्मचरित्तं च रोचेमि, ठे अणुव्वदे राईभोयणादो वेरमणं उवट्ठावणमंडले त्थे महागुणे महाणुभावे महाजसे महापुरिसाणचिण्णे हंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं परसक्खियं सक्खियं उत्तमट्ठम्हि इदं मे अणुव्वदं सुव्वदं व्वदं होदु णित्थारयं पारयं तारयं आराहियं चावि भवतु ॥ ३ ॥

षष्ठं अणुव्रतं सर्वेषां व्रतधारिणां सम्यक्त्वपूर्वकं तं समारूढं ते मे भवतु ॥ ३ ॥

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरीयाणं ।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥३॥

चूलियंतु पवक्खामि भावणा पंचविंसदी ।
पंच पंच अणुण्णादा एक्केक्कम्हि महव्वदे ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मणगुत्तो वचिगुत्तो इरिया–कायसंयदो ।
एसणासमिदिसंजुत्तो पढमं वदमस्सिदो ॥ २ ॥
अकोहणो अलोहो य भयहस्सविवज्जिदो ।
अणुवीचिभासकुसलो विदियं वदमस्सिदो ॥ ३ ॥
अदेहणं भावणं चावि उग्गहं या परिग्गहे ।
संतुट्ठो भत्तपाणेसु तिदियं वदमस्सिदो ॥ ४ ॥
इत्थिकहा इत्थिसंसग्गहासखेडपलोयणे ।
णियमम्मि ट्ठिदो णियतो य चउत्थं वदमस्सिदो
सच्चित्ताचित्तदव्वेसु बज्झंब्भंतरेसु य ।
परिग्गहादो विरदो पंचमं वदमस्सिदो ॥ ६
धिदिमंतो खमाजुत्तो झाणजोगपरिट्ठिदो ।
परीसहाणउरं देंत्तो उत्तमं वदमस्सिदो ॥ ७
जो सारो सव्वसारेसु सो सारो एस गोयम ।
सारं झाणंति णामेण सव्वं बुद्धेहिं देसिदं ॥ ८

इच्चेदाणि पंचमहव्वयाणि राईभोयणादो वेरमणछट्ठा
सभावणाणि समाउग्गपदाणि सउत्तरपदाणि सम्मं ध
अणुपालइत्ता समणा भयवंता णिग्गंथादोओण सिज्झं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्झंति मुच्चंति परिणियंति सव्वदुक्खाणमंतं करेंति
परिविज्जाणंति। तं जहा—

पाणादिवादं चहि मोसगं च अदत्तमेहुण्णपरिग्गहं च।
वदाणि सम्मं अणुपालइत्ता णिव्वाणमग्गं विरदा उवेंति १

णि काणि वि सल्लाणि गरहिदाणि जिणसासणे।
ताणि सव्वाणि वोसरित्ता णिसल्लो विहरदे सया मुणो २

ण्णाणुप्पण्णा माया अणुपुव्वं सो णिहंतव्वा।
आलोयण पडिकमणं णिंदणगरहणदाए ॥ ३ ॥

भुट्ठिदकरणदाए अब्भुट्ठिदकरणदाए दुक्कडणिराकरणदाए।
वं भावपडिक्कमणं सेसा पुण दव्वदो भणिदा ॥४॥

ो पडिकमणविही पण्णत्तो जिणवरेहिं सव्वेहिं।
जसतवट्ठिदाणं णिग्गंथाणं महरिसीणं ॥ ५ ॥

रपयत्थहीणं मत्ताहीणं च जं भवे एत्थ।
खमउ णाणदेवय! देउ समाहिं च बोहिं च ॥ ६ ॥

ण णमोक्कारं अरहंताणं तहेव सिद्धाणं।
इरिय-उवज्झायाणं लोयम्मि य सव्वसाहूणं ॥ ७ ॥

इच्छामि भंते! पडिक्कमणमिदं, सुत्तस्स मूलपदाणं
रपदाणमच्चासणदाए। तं जहा—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णमोक्कारपदे अरहंतपदे सिद्धपदे आइरियपदे उवज्झा-पदे साहूपदे मंगलपदे लोगोत्तमपदे सरणपदे सामाइयपदे चउवीसतित्थयरपदे बंदणपदे पडिक्कमणपदे पच्चक्खाणपदे काउसग्गपदे असीहियपदे निसीहियपदे अंगंगेसु पुव्वंगेसु पइण्णएसु पाहुडेसु पाहुडपाहुडेसु कदकम्मेसु वा भूदक-म्मेसु वा णाणस्स अइक्कमणदाए दंसणस्स अइक्कमणदाए चरित्तस्स अइक्कमणदाए तवस्स अइक्कमणदाए बीरियस्स अइक्कमणदाए, से अक्खरहीणं वा पदहीणं वा सरहीणं वा वंजणहीणं वा अत्थहीणं वा गंथहीणं वा थएसु वा थुईसु वा अट्टक्खाणेसु वा अणियोगेसु वा अणियोगद्दारेसु वा भावा त्ता पण्णा अरहंतेहिं भयवंतेहिं तित्थयरेहिं आदियरेहिं तिलोगणाहेहिं तिलोगबुद्धेहिं तिलोगदरसीहिं ते सद्दहामि ते पत्तियामि ते रोचेमि ते फासेमि, ते सद्दहंतस्स ते पत्तयंतस्स ते रोचयंतस्स ते फासयंतस्स जो मए देवसिओ राईओ पक्खिओ संवच्छरिओ अदिक्कमो वदिक्कमो अइचारो अणाचारो आभोगो अणाभोगो अकाले सज्झाओ कओकाले सज्झाओ परिहाविदो अत्थाकारिदं मिच्छामेलिदं वा मेलिदं अण्णहादिण्णं अण्णाहापडिच्छदं आवसएसु पडिहीणदाए तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अह पडिवादाए विदिए तदिए चउत्थीए पंचमीए छट्ठीए सत्तमीए अट्ठमीए णवमीए दसमीए एयारसीए वारसीए तेरसीए चउद्दसीए पुण्णमासीए पण्णरसदिवसाणं पण्णरसराईणं, छउण्हं मासाणं अट्ठण्ह पक्खाणं वीसुत्तरसय दिवसाणं वीसुत्तरसय राईणं, वारसण्हं मासाणं चउवीसण्हं पक्खाणं तिण्हं छावट्ठिसयदिवसाणं तिण्हं छावट्ठिसयराईणं, संवच्छरिसादो परदो अब्भिंतरदो वा दोण्हं अट्टरुद्दसंकिलेपरिणामाणं तिण्हं अप्पसत्थसंकिलेसपरिणामाणं तिण्हं दंडाणं तिण्हं लेस्साणं तिण्हं गुत्तीणं तिण्हं गारवाणं तिण्हं सल्लाणं चउण्हं सण्णाणं चउण्हं कसायाणं चउण्णं उवसग्गाणं पंचण्हं महव्वयाणं पंचण्हं इंदियाणं पञ्चण्हं समिदीणं पञ्चण्हं चरित्ताणं छण्हं आवासयाणं सत्तण्हं भयाणं सत्तविहसंसाराणं अट्ठण्हं मयाणं अट्ठण्हं सुद्धीणं अट्ठण्हं कम्माणं अट्ठण्हं पवयणमाउयाणं णवण्हं बंभचेरगुत्तीणं णवण्हं णोकसायाणं दसविहमुडाणं दसविहसमणधम्माणं दसविहधम्मज्झाणाणं बारसण्हं संजमाणं वारसण्हं तवाणं बारसण्हं अंगाणं तेरसण्हं किरियाणं चउदसण्हं पुव्वाण्हं पण्णरसण्हं पमायाणं सोलसण्ह कसायाणं पणवीसाए किरियासु पणवीसाए भावणासु वाबी-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साए परिसहेसु अट्ठारसीलसहस्सेसु चउरासीदिगुणसयसहस्सेसु मूलगुणेसु उत्तरगुणेसु अदिक्कम्मो वदिक्कम्मो अइचारो अणाचारो आभोगो अणाभोगो तस्स भंते ! अइचारं पडिक्कमामि पडिक्कंतं कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदं तस्स भंते ! अइचारं पडिक्कमामि णिंदामि गरहामि अप्पाणं वोस्सरामि जाव अरहंताणं भयवंताणं णमोक्कारं करेमि पज्जुवासं करेमि ता॰व कायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि ।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं ।

णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ १ ॥

पढमं ताव सुदं मे आउस्संतो ! इह खलु समणेण भयवदा महदिमहावीरेण महाकस्सवेण सव्वण्हणाणेण सव्वलोयदरसिणा सावयाणं सावियाणं खुड्डयाण खुड्डियाणं कारणेण पंचाणुव्वदाणि तिण्णि गुणव्वदाणि चत्तारि सिक्खावदाणि बारसविहं गिहत्थधम्मं सम्मं उवदेसियाणि । तत्थ इमाणि पंचाणुव्वदाणि पढमे अणुव्वदे थूलयडे पाणादिवादादो वेरमणं, विदिए अणुव्वदे थूलयडे मुसावादादो वेरमणं, तदिए अणुवदे थूलयडे अदत्तादा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णादो वेरमणं, चउत्थे अणुवदे थूलयडे सदारसंतोसपरदारागमणवेरमणं कस्स य पुणु सव्वदो विरदी, पंचमे अणुव्वदे थूलयडे इच्छाकदपरिमाणं चेदि, इच्चेदाणि पंच अणुव्वदाणि ।

तत्थ इमाणि तिण्णि गुणव्वदाणि, तत्थ पढमे गुणव्वदे दिसिविदिसि पच्चक्खाणं, विदिए गुणव्वदे विविध-अणत्थदंडादो वेरमणं, तदिए गुणव्वदे भोगोपभोगोपरिसंखाणं चेदि, इच्चेदाणि तिण्णि गुणव्वदाणि ।

तत्थ इमाणि चत्तारि सिक्खावदाणि, तत्थपढमे सामाइयं विदिए पोसहोवासयं, तदिए अतिथिसंविभागो, चउत्थे सिक्खावदे पच्छिमसल्लेहणामरणं, तिदियं अब्भोवस्साणं चेदि ।

से अभिमदजीवाजीव-उवलद्धपुण्णपाव-आसवबंधसंवर--णिज्जर-मोक्खमहिकुसले धम्माणुरायरत्तो पि माणुरागरत्तो अट्ठिमज्जाणुरायरत्तो मुच्छिदट्टे गिहिदट्ठे विहिदट्ठें पालिदट्ठे सेविदट्ठें इणमेव णिग्गंथपावयणे अणुत्तरे सेअट्ठे सेवणुट्ठे-णिस्संकियणिक्कंखिय णिव्विदिगिछी य अमूढदिट्ठी य।

उवगूहण ट्ठिदिकरणं वच्छल्लपहावणा य ते अट्ठ ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सव्वेदाणि पंचाणुव्वदाणि तिण्णि गुणव्वदाणि चत्तारि सिक्खावदाणि बारसविहं गिहत्थधम्ममणुपालइत्ता—

दंसण वय सामाइय पोसह सचित्त राइभत्ते य ।
बंभारंभ परिग्गह अणुमणमुद्दिट्ठ देसविरदो य ॥१॥
महुमंसमज्जजूआ वेसादिविवज्जणासीलो ।
पंचाणुव्वयजुत्तो सत्तेहि सिक्खावएहि संपुण्णो ॥२॥

जो एदाइं वदाइं धरेइ सावया सवियाओ वा खुड्डय खुड्डियाओ व अट्ठदह भवणवासियवाणवितरजोइसिय-सोहम्मीसाणदेवीओ वदिक्कमित्तउवरिमअण्णदरमहड्ढियासु देवेसु उववज्जंति ।

तं जहा—सोहम्मीसाणसणक्कुमारमाहिंदबंभबंभुत्तर-लांतवकापिट्ठसुक्कमहासुक्कसतारसहस्सारआणतपाणत----आरणअच्चुतकप्पेसु उववज्जन्ति,

अडयंबरसत्थधरा कडयङ्गदबद्धनउडकयसोहा ।
भासुरवरबोहिधरा देवा य महड्ढिया होंति ॥१॥

उक्कस्सेण दोतिण्णभवगहणाणि जहण्णे सत्तट्ठभव-गहणाणि तदो समणुसुत्तादो सुदेवत्तं सुदेवत्तादो सुमाणु-सत्तं तदो साइहत्था पच्छा णिग्गंथा होऊण सिज्झन्ति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बुज्झंति मुंचंति परिणिव्वाणयंति सव्वदुक्खाणमंतं करेंति। जाव अरहंताणं भयवंताण णमोकारं करेमि पज्जुवासं करेमि ताव कायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि।

—❀—

(अनन्तरं साधवः "थोस्सामि" इत्यादि दंडकं पठित्वा सूरिणा सहिताः 'वदसमिदिंदियरोधो' इत्यादिकं चाधीत्य वीरस्तुतिं कुर्युः)

वीरभक्तिः

सर्वातिचारविशुद्ध्यर्थं पाक्षिकप्रतिक्रमणक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं निष्ठितकरणवीरभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम्— इत्युच्चार्य, "णमो अरहंताणं" इत्यादि दण्डकं पठित्वा कायोत्सर्गं यथोक्तानुच्छ्वासान् ३०० कृत्वा "थोस्सामि" इत्यादिदण्डकं पठित्वा "चंद्रप्रभं चन्द्रमरीचिगौरं" इत्यादि स्वयंभुवं "या सर्वाणि चराचराणि" इत्यादि वीरभक्तिं सांचलिका पठित्वा "वदंसमिदिंदियरोधो" इत्यादिकं पठेयुः। तद्यथा—)

चंद्रप्रभं चन्द्रमरीचिगौरं चन्द्रं द्वितीयं जगतीवकांतम्
वंदेऽभिवंद्यं महतामृषींद्रं जिनं जितस्वांतकषायबंधं ।१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यस्याङ्गलक्ष्मीपरिवेषभिन्नं तमस्तमोरेरिव रश्मिभिन्नम् ।
ननाशबाह्यं बहु मानसं च ध्यानप्रदीपातिशयेन भिन्नं ।२।
स्वपक्षसौस्थित्यमदावलिप्ता वाक्सिंहनादैर्विमदा बभूवुः ।
प्रवादिनो यस्स मदार्द्रगंडागजा यथा केसरिणो निनादैः ।३।
यः सर्वलोके परमेष्ठितायाः पदं बभूवाद्भु तकर्मतेजाः ।
अनंतधामाक्षरविश्वचक्षुः समस्तदुःखक्षयशासनश्च ॥४॥
स चंद्रमा भव्यकुमुद्वतीनां विपन्नदोषाभ्रकलङ्कलेपः ।
व्याकोशवाङ्न्यायमयूखमालः पूयात्पवित्रो भगवान्मनोमे ।५।
यः सर्वाणि चराचराणि विधिवद्द्रव्याणि तेषां गुणान्,
पर्यायानपि भूतभाविभवतः सर्वान् सदा सर्वदा ।
जानीते युगपत्प्रतिक्षणमतः सर्वज्ञ इत्युच्यते ।
सर्वज्ञाय जिनेश्वराय महते वीराय तस्मै नमः ॥१॥
वीरः सर्वसुरासुरेन्द्रमहितो वीरं बुधाः संश्रिता
वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयो वीराय भक्त्या नमः ।
वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं वीरस्य वीरं तपो
वीरे श्री-द्युति-कांति-कीर्ति-धृतयो हे वीर ! भद्रं त्वयि ॥२॥
ये वीरमादौ प्रणमन्ति नित्यं,
ध्यानस्थिताः संयमयोगयुक्ताः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ते वीतशोका हि भवन्ति लोके,
    संसारदुर्गं विषमं तरन्ति ॥ ३ ॥

व्रतसमुदयमूलः संयमस्कन्धबन्धो,
    यमनियमपयोभिर्वर्धितः शीलशाखः ।
समितिकलिकभारो गुप्तिगुप्तप्रवालो,
    गुणकुसुमसुगन्धिः सत्तपश्चित्रपत्रः ॥ ४ ॥

शिवसुखफलदायी यो दयाछाययौघः
    शुभजनपथिकानां खेदनोदे समर्थः ।
दुरितरविजतापं प्रापयन्नन्तभावं
    स भवविभवहन्त्यै नोऽस्तु चारित्रवृक्षः ॥ ५ ॥

चारित्रं सर्वजिनैश्चरितं प्रोक्तं च सर्वशिष्येभ्यः ।
    प्रणमामि पंचभेदं पंचमचारित्रलाभाय ॥ ६ ॥

धर्मः सर्वसुखाकरो हितकरो धर्मं बुधाश्चिन्वते
    धर्मेणैव समाप्यते शिवसुखं धर्माय तस्मै नमः ।
धर्मान्नास्त्यपरः सुहृद्भवभृतां धर्मस्य मूलं दया,
    धर्मे चित्तमहं दधे प्रतिदिनं हे धर्म ! मां पालय ॥७॥

धम्मो मंगलमुद्दिट्ठं अहिंसा संयमो तवो ।
    देवा वि तस्स पणमंति जस्स धम्मे सया मणो ॥८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अञ्चलिका

इच्छामि भंते ! पडिक्कमणादिचारमालोचेउं, सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित्त तव वीरियाचारेसु यम-नियम संजम-सीलमूलुत्तरगुणेसु सव्वमईचारं सावज्जजोगं पडिविरदोमि असंखेज्ज लोगअज्झवसाणठाणाणि अप्पसत्थजोगसण्णा-णिदियकसायगारवकिरियासु मणवयणकायकरणदुप्पणिहाणि परिचिंतियाणि किण्हणीलकाउलेस्साओ विकहापलिकुंचि-एण उम्मगहस्सरदि अरदिसोयभयदुगंछवेयणविज्जंभजभाई-आणि अट्टरुद्दसंकिलेसपरिणामाणि परिणामिदाणि अणिह-दकरचरणमणवयणकायकरणेण अक्खित्तबहुलयरायणेण अपडिपुण्णेण वा सक्खरावयसंघायपडिवत्तिएण अच्छा-कारिदं मिच्छामेलिदं आमेलिदं अण्णहादिण्णं अण्णहा पडिच्छदं आवसएसु परिहीणदाए कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

वदसमिदिंदियरोधो लोचो आवासयमचेलमण्हाणं ।
खिदिसयणमदंतवणं ठिदिभोयणमेयभत्तं च ॥ १ ॥

एदे खलु मूलगुणा समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता ।
एत्थ पमादकदादो अइयारादो णियत्तोहं ॥ २ ॥
छेदोवट्ठावणं होदु मज्झं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शांतिचतुर्विंशति—स्तुतिः—

सर्वातिचारविशुद्ध्यर्थं पाक्षिकप्रतिक्रमणक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं शांतिचतुर्विशतितीर्थंकरभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं (इत्युच्चार्य "णमो अरहंताणं" इत्यादि दंडकं पठित्वा कायमुत्सृज "थोस्सामि" इत्यादिदंडकमधीत्य शांतिकीर्तनां "विधाय रक्षां" इत्यादिकां चतुर्विंशतिकीर्तनां च "चउवीसं तित्थयरे" इत्यादिकां सांचलिका "वदसमिदिंदियरोधो" इत्यादिकं च ससूरयः संयताः पठेयुः। तद्यथा

विधाय रक्षां परतः प्रजानां राजा चिरं योऽप्रतिमप्रतापः।
व्यधात्पुरस्तात्स्वत एव शान्तिर्मुनिर्दयामूर्तिरिवाघशान्तिम् १

चक्रेण यः शत्रुभयंकरेण जित्वा नृपः सर्वनरेन्द्रचक्रम्।
समाधिचक्रेण पुनर्जिगाय महोदयो दुर्जयमोहचक्रम् ॥२॥

राजश्रिया राजसु राजसिंहो रराज यो राजसुभोगतंत्र।
आर्हन्त्यलक्ष्म्या पुनरात्मतन्त्रो देवासुरोदारसभे रराज ॥३॥

यस्मिन्नभूद्राजनि राजचक्रं मुनौ दयादीधितिधर्मचक्रम्।
पूज्ये मुहुः प्रांजलिदेवचक्रं ध्यानोन्मुखे ध्वंसिकृतान्तचक्रम् ४

स्वदोषशान्त्यावहितात्मशान्तिःशान्तेर्विधाता शरणं गतानाम्
भूयाद्भवक्लेशभयोपशान्त्यैः शान्तिर्जिनो मे भगवाञ्छरण्यः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चउतीसे तित्थयरे उसहाइवीरपच्छिमे वंदे ।
सव्वेसिं गुणगणहरसिद्धे सिरसा णमंसामि ॥१॥

ये लोकेऽष्टसहस्रलक्षणधरा ज्ञेयार्णवान्तर्गता,
ये सम्यग्भवजालहेतुमथनाश्चन्द्रार्कतेजोऽधिकाः ।
ये साध्विन्द्रसुराप्सरोगणशतैर्गीतप्रणुत्यार्चिता-
स्तान् देवान् वृषभादिवीरचरमान् भक्त्या नमस्याम्यहम् २

नाभेयं देवपूज्यं जिनवरमजितं सर्वलोकप्रदीपं,
सर्वज्ञं सम्भवाख्यं मुनिगणवृषभं नन्दनं देवदेवम् ।
कर्मारिघ्नं सुबुद्धिं वरकमलनिभं पद्मपुष्पाभिगन्धं,
क्षान्तं दान्तं सुपार्श्वं सकलशशिनिभं चन्द्रनामानमीडे ३

विख्यातं पुष्पदन्तं भवभयमथनं शीतलं लोकनाथं
श्रेयांसं शीलकोशं प्रवरनरगुरुं वासुपूज्यं सुपूज्यम् ।
मुक्तं दान्तेन्द्रियाश्वं विमलमृषिपतिं सिंहसैन्यं मुनीन्द्रं,
धर्मं सद्धर्मकेतुं शमदमनिलयं स्तौमि शान्तिं शरण्यम् ४

कुन्थुं सिद्धालयस्थं श्रमणपतिमरं त्यक्तभोगेषु चक्रं,
मल्लिं विख्यातगोत्रं खचरगणनुतं सुव्रतं सौख्यराशिम्
देवेन्द्रार्च्यं नमीशं हरिकुलतिलकं नेमिचन्द्रं भवान्तं,
पार्श्वं नागेन्द्रवन्द्यं शरणमहमितो वर्धमानं च भक्त्या ५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अञ्चलिका

इच्छामि भंते ! चउवीसतित्थयरभत्तिकाउस्सग्गो कओ
स्सालोचेउं, पंचमहाकल्लाणसंपण्णाणं अट्ठमहापाडिहेरसहि-
ाणं चउतीसातिसयविसेससंजुत्ताणं बत्तीसदेविंदमणिमउड-
त्थयमहिदाणं बलदेव-वासुदेव-चक्कहर-रिसिमुणिजइअण-
ारोवगूढाणं थुइसहस्सणिलयाणं उसहाइवीरपच्छिमसंगल-
हापुरिसाणं णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि
ुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहि-
रणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

वदसमिदिंदियरोधो लोचो अवासयमचेलमण्हाणं।
खिदिसयणमदंतवणं ठिदिभोयणमेयभत्तं च ॥१॥
एदे खलु मूलगुणा समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता।
एत्थ पमादकदादो अइचारादो णियत्तो हं ॥२॥
छेदोवट्ठावणं होदु मज्झं।

चारित्रालोचनासहिता बृहदाचार्यभक्तिः—

सर्वातिचारविशुद्ध्यर्थं चारित्रालोचनाचार्यभक्तिकायो-
ार्गं करोम्यहम्—

(अत्रापि "णमो अरहंताणं" इत्यादि दंडकं पठित्वा
ायोत्सर्गं विधाय "थोस्सामि" इत्यादि दण्डकं पठेत्।)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्धगुणस्तुतिनिरतानुद्धूतरुषाग्निजालबहुलविशेषान् ।
गुप्तिभिरभिसंपूर्णान्मुक्तियुतः सत्यवचनलक्षितभावान् ॥

मुनिमाहात्म्यविशेषाज्जिनशासनसत्प्रदीपभासुरमूर्तीन् ।
सिद्धिं प्रपित्सुमनसो बद्धरजोविपुलमूलघातनकुशलान् ॥

गुणमणिविरचितवपुषः षड्द्रव्यविनिश्चितस्य धातॄन्सततम् ।
रहितप्रमादचर्यान्दर्शनशुद्धान् गणस्य संतुष्टिकरान् ॥३

मोहच्छिदुग्रतपसः प्रशस्तपरिशुद्धहृदयशोभनव्यवहारान् ।
प्रासुकनिलयाननघानाशाविध्वंसिचेतसो हतकुपथान् ॥

धारितविलसन्मुण्डान्वर्जितबहुदंडपिंडमंडलनिकरान् ।
सकलपरीषहजयिनः क्रियाभिरनिशं प्रमादतः परिरहितान् ॥

अचलान् व्यपेतनिद्रान् स्थानयुतान्कष्टदुष्टलेश्याहीनान् ।
विधिनानाश्रितवासानलिप्तदेहान्विनिर्जितेंद्रियकरिणः ॥

अतुलानुत्कुटिकासान्विविक्तचित्तानखंडितस्वाध्यायान् ।
दक्षिणभावसमग्रान्व्यपगतमदरागलोभशठमात्सर्यान् ॥

भिन्नार्तरौद्रपक्षान् संभावितधर्मशुक्लनिर्मलहृदयान् ।
नित्यं पिनद्धकुगतीन् पुण्यान् गण्योदयान् विलीनगारवचर्यान् ॥

तरुमूलयोगयुक्तानवकाशातापयोगरागसनाथान् ।
बहुजनहितकरचर्यानभयाननघान्महानुभावविधानान् ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दृशगुणसंपन्नान्युष्मान् भक्त्या विशालया स्थिरयोगान् ।
विधिनानारतमग्र्यान् मुकुलीकृतहस्तकमलशोभितशिरसा ॥ १०
भिनौमि सकलकलुषप्रभवोदयजन्मजरामरणबंधनमुक्तान् ।
शिवमचलमनघमक्षयमव्याहतमुक्तिसौख्यमस्त्विति सततम् ॥ ११

लघुचारित्रालोचना—

इच्छामि भंते ! चरित्तायारो तेरसविहो परिहाविदो, पंचमहव्वदाणि, पंच समिदीओ, तिगुत्तीओ चेदि । तत्थ पढमे महव्वदे पाणादिवादादो वेरमणं, से पुढविकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, आउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, तेउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, वाउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, वणप्फदिकाइया जीवा अणंता, हरिया बीया अंकुरा छिण्णा भिण्णा, तेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

बेइंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, कुक्खि-किमी-संख-खुल्लय-वराडय-अक्ख-रिट्ठ-बाल-संबुक्क-सिप्पि-पुलविकाइया, तेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

तेइंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, कुंथु-देहिय-विंछिय-गोंभिद-गोजव-मक्कुण-पिपीलियाइया, तेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

चउरिंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, दंसमसय-मक्खिपयंग-कीड भमर-महुयर गोमच्छिआइया, तेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

पंचिंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, अंडाइय-पोदाइया-जराइया-रसाइया-संसेदिमा-सम्मुच्छिमा-उब्भेदिमा-उववादिमा अवि चउरासीदिजोणिपमुहसदसहस्सेसु, एदेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

इच्छामि भंते ! काओसग्गो कओ तस्सालोचेउं, सम्मणाणसम्मदंसणसम्मचारित्तजुत्ताणं पंचविहाचाराणं आइरियाणं आयारादिसुदणाणोवदेसयाणं उवज्झायाणं ति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुणपालणरयाणं सव्वसाहूणं णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि
मि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ वोहिलाहो
इगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।
दसमिंदियरोधो लोचो अवासयमचेलमण्हाणं ।
खिदिसयणमदंतवणं ठिदिभोयणमेयभत्तं च ॥१॥
दे खलु मूलगुणा समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता ।
एत्थ पमादकदादो अइचारादो णियत्तो हं ॥२॥
छेदोवट्ठावणं होहु मज्झं ।

बृहदालोचनासहिता मध्याचार्यभक्तिः—

सर्वातिचारविशुद्ध्यर्थं बृहदालोचनाचार्यभक्तिकायोत्सर्गं
ग्रहम् ।

(इत्युच्चार्य "णमो अरहंताणं" इत्यादि दंडकं पठित्वा कायो-
र्गं "थोस्सामि" इत्यादिदंडकमधीत्य "देसकुलजाइसुद्धा"
यादिकां मध्याचार्यनुतिं "इच्छामि भंते ! पक्खियम्मि" आलो-
ं पण्णरसण्हं दिवसाणं" इत्यादिबृहदालोचनां च ससूरयः
वः पठेयुः)

सकुलजाइसुद्धा विसुद्धमणवयणकायसंजुत्ता ।
तुम्हं पायपयोरुहमिह मंगलमत्थु मे णिच्चं ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सगपरसमयविदण्हूं आगमहेदूहिं चावि जाणित्ता ।
सुसमत्था जिणवयणे विणये सत्ताणुरूवेण ॥२॥
बालगुरुबुड्ढसेहे गिलाणथेरे य खमणसंजुत्ता ।
वट्टावयगा अण्णे दुस्सीले चावि जाणित्ता ॥३॥
वयसमिदिगुत्तिजुत्ता मुत्तिपहे ठाविया पुणो अण्णे ।
अज्झावयगुणणिलये साहुगुणेणावि संजुत्ता ॥४॥
उत्तमखमाए पुढवी पसण्णभावेण अच्छजलसरिसा ।
कम्मिंधणदहणादो अगणी वाऊ असंगादो ॥५॥
गयणमिव णिरुवलेवा अक्खोहा सायरुव्व मुणिवसहा ।
एरिसगुणणिलयाणं पायं पणमामि सुद्धमणो ॥६॥
संसारकाणणे पुण बंभममाणेहिं भव्वजीवेहिं ।
णिव्वाणस्स हु मग्गो लद्धो तुम्हं पसाएण ॥७॥
अविसुद्धलेस्सरहिया विसुद्धलेस्साहि परिणदा सुद्धा ।
रुद्दट्टे पुण चत्ता धम्मे सुक्के य संजुत्ता ॥८॥
उग्गहईहावायाधारणगुणसंपदेहिं संजुत्ता ।
सुत्तत्थभावणाए भावियमाणेहिं वंदामि ॥९॥
तुम्हं गुणगणसंथुदि अजाणमाणेण जो मया वुत्तो ।
देउ मम बोहिलाहं गुरुभत्तिजुदत्थओ णिच्चं ॥१०॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वृहदालोचना—

इच्छामि भंते ! पक्खियम्मि आलोचेउं, पण्णरसण्हं दिवसाणं पण्णरसण्हं राईणं अब्भिंतरदो पंचविहो आयारो णाणायारो दंसणायारो तवायारो वीरियायारो चरित्तायारो चेदि ।

इच्छामि भंते ! चउमासिम्मि आलोचेउं, चउण्हं मासाणं अट्ठण्हं पक्खाण्हं वीसुत्तरसयदिवसाणं वीसुत्तरसयराईणं अब्भिंतरदो पंचविहो आयारो णाणायारो दंसणायारो तवायारो वीरियायारो चरित्तायारो चेदि ।

इच्छामि भंते ! संवच्छरियं आलोचेउं, बारसण्हं मासाणं चउवीसण्हं पक्खाणं तिण्णिछावट्ठिसयदिवसाणं तिण्णिछावट्ठिसयराईणं अब्भिंतरदो पंचविहो आयारो णाणायारो दंसणायारो तवायारो वीरियायारो चरित्तायारो चेदि ।

तत्थ णाणायारो काले विणए उवहाणे बहुमाणे तहेव णिण्हवणे, वंजण अत्थ तदुभये चेदि, तत्थ णाणायारो अट्ठविहो परिहाविदो से अक्खरहीणं वा सरहीणं वा वंजणहीणं वा पदहीणं वा अत्थहीणं वा गंथहीणं वा थएसु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वा थुएसु वा अट्ठक्खाणेसु वा अणियोगेसु वा अणियोग-द्दारेसु वा अकाले सज्झाओ कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो काले वा परिहाविदो अत्थाकारिदं वा मिच्छामेलिदं वा आमेलिदं वा मेलिदं वा अण्णहादिण्णं, अण्णहापडिच्छदं आवासएसु परिहीणदाए तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

दंसणायारो अट्ठविहो-णिस्संकिय णिक्कंखिय णिव्वि-दिगिंछा अमूढदिट्ठीय । उवगूहण ठिदिकरणं वच्छल पहावणा चेदि ॥ १ ॥

अट्ठविहो परिहाविदो संकाए कंखाए विदिगिंछाए अण्णदिट्ठिपसंसणदाए परपाखंडपसंसणदाए अणायद-णसेवणदाए अवच्छल्लदाए अप्पहावणदाए तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

तवायारो वारसविहो, अब्भंतरो छव्विहो बाहिरो छव्विहो चेदि, तत्थ बाहिरो अणसणं आमोदरियं वित्तिप-रिसखा रसपरिच्चाओ सरीरपरिच्चाओ विवित्तसयणासणं चेदि, तत्थ अब्भंतरो पायच्छित्तं विणओ वेज्जावच्चं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सज्झाओ झाणं विउस्सग्गो चेदि । अब्भंतरं बाहिरं बारसविहं तवोकम्मं ण कदं णिसण्णेण पडिक्कंतं तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

वीरियायारो पंचविहो परिहाविदो वरवीरियपरिक्कमेण जहुत्तमाणेण बलेण वीरिएण परिक्कमेण णिगूहियं तवोकम्मं ण कयं णिसण्णेण पडिक्कंतं तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

इच्छामि भंते ! चरित्तायारो तेरसविहो परिहाविदो पंच महव्वदाणि पंचसमिदीओ तिगुत्तीओ चेदि । तत्थ पढमे महव्वदे पाणादिवादादो वेरमणं से पुढविकाइया असंखेज्जासंखेज्जा, आउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, तेउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, वाउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा, वणप्फदिकाइया जीवा अणंताणंता हरिया, बीया, अंकुरा, छिण्णा, भिण्णा, एदेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

बेइंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा कुक्खि-किम्मि-संख-खुल्लय-वराडय-अक्ख--रिट्ठ-गंडवाल--संबुक्क-सिप्पि-पुल-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विकाइया, तेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

तेइंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा कुंथु-देहिय-विंछिय-गोंभिद-गोजूव-मक्कुण-पिपीलियाइया, तेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

चउरिंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा दंसमयस-पयंग कीड-भमर-महुयर गोमच्छिया तेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

पंचिंदिया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा अंडाइया-पोदाइया–जराइया–संसेदिमा–सम्मुच्छिमा-उब्भेदिमा उववादिमा अवि चउरासीदिजोणीपमुहसदसहस्सेसु, एदेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

वदसमिदिंदियरोधो लोचो अवासयमचेलमण्हाणं ।

खिदिसयणमदंतवणं ठिदिभोयणमेयभत्तं च ॥ १ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एदे खलु मूलगुणा समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता ।
एत्थ पमादकदादो अइचारादो णियत्तो हं ॥ २ ॥
छेदोवट्ठावणं होदु मज्झं ।

क्षुल्लकालोचनासहिता क्षुल्लकाचार्यभक्तिः—

सर्वातिचारविशुद्ध्यर्थं क्षुल्लकालोचनाचार्यभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम् ।

(इत्युच्चार्य पूर्ववद्दंडकादिकं विधाय "प्राज्ञः प्राप्तसमस्तशास्त्रहृदयः" इत्यादिकां "श्रुतजलधीत्यादि मोक्षमार्गोपदेशका" इत्येवमन्तकां ससूरयः संयताः पठेयुः)

प्राज्ञः प्राप्तसमस्तशास्त्रहृदयः प्रव्यक्तलोकस्थितिः,
प्रास्ताशः प्रतिभापरः प्रशमवान् प्रागेव दृष्टोत्तरः ।
प्रायः प्रश्नसहः प्रभुः परमनोहारी परानिन्दया,
ब्रूयाद्धर्मकथां गणी गुणनिधिः प्रस्पष्टमिष्टाक्षरः ॥१॥
श्रुतमविकलं शुद्धा वृत्तिः परप्रतिबोधने,
परिणातिरुरूद्योगो मार्गप्रवर्तनसद्विधौ ।
बुधनुतिरनुत्सेको लोकज्ञता मृदुताऽस्पृहा,
यतिपतिगुणा यस्मिन्नन्ये च सोऽस्तु गुरुः सताम् ॥२॥
श्रुतजलधिपारगेभ्यः स्वपरमतविभावनापटुमतिभ्यः ।
सुचरिततपोनिधिभ्यो नमो गुरुभ्यो गुणगुरुभ्यः ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छत्तीसगुणसमग्गे पंचविहाचारकरणसंदरिसे ।
सिस्साणुग्गहकुसले धम्माइरिए सदा बंदे ॥ ४ ॥
गुरुभत्तिसंजमेण य तरंति संसारसायरं घोरं ।
छिण्णंति अट्ठकम्मं जम्मणमरणं ण पावेंति ॥ ५ ॥
ये नित्यं व्रतमंत्रहोमनिरता ध्यानाग्निहोत्राकुला;,
षट्कर्माभिरतास्तपोधनधनाः साधुक्रियासाधवः ।
शीलप्रावरणा गुणप्रहरणाश्चन्द्रार्कतेजोधिका,
मोक्षद्वारकपाटपाटनभटा प्रीणन्तु मां साधवः ॥६॥
गुरवः पान्तु नो नित्यं ज्ञानदर्शननायकाः ।
चारित्रार्णवगंभीरा मोक्षमार्गोपदेशकाः ॥ ७ ॥

आलोचना

इच्छामि भंते ! आइरियभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं, सम्मणाण--सम्मदंसण--सम्मचारित्तजुत्ताणं पंचविहाचाराणं आयरियाणं, आयारादिसुदणाणोवदेसियाणं उवज्झायाणं, तिरयणगुणपालणरयाणं सव्वसाहूणं णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिनगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वदसमिदिंयरोधो लोचो आवासयमचेलमण्हाणं ।
खिदिसयणमदंततणं ठिदिभोयणमेयभत्तं च ॥ १ ॥
एदे खलु मूलगुणा समणाणं जिणवरेहिं पण्णत्ता ।
एत्थपमादकदादो अइचारादो णियत्तो हं ॥ २ ॥
छेदोवट्ठावणं होदु मज्झं ।

समाधिभक्तिः ।

सर्वातिचारविशुद्ध्यर्थं सिद्ध-चारित्र-प्रतिक्रमण-निष्ठित-करणवीर—शान्तिचतुर्विंशतितीर्थंकर—चारित्रालोचनाचार्य-बृहदालोचनाचार्य-क्षुल्लकालोचनाचार्यभक्तिः कृत्वा तद्धीनाधिकत्वादिदोषविशुद्ध्यर्थं समाधिभक्तिं कायोत्सर्गं करोम्यहम्

(इत्युच्चार्य पूर्ववद्दंडकादिकं कृत्वा "शास्त्राभ्यासो जिनपति" इत्यादीष्टप्रार्थनांससूरयः सावयः पठेयुः)।

अथेष्टप्रार्थना—प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः

शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः संगतिः सर्वदार्यैः,
सद्वृत्तानां गुणगणकथा दोषवादे च मौनम् ।
सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावना चात्मतत्त्वे ।
सम्पद्यन्तां मम भवभवे यावदेतेऽपवर्गः ॥ १ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तव पादौ मम हृदये मम हृदयं तव पदद्वये लीनं ।
तिष्ठतु जिनेन्द्र ! तावद्यावन्निर्वाणसम्प्राप्तिः ॥ २ ॥
अक्खरपयत्थहीणं मत्ताहीणं च जं मए भणियं ।
तं खमहु णाणदेव ! य मज्झवि दुक्खक्खयं कुणउ ॥३॥

आलोचना

इच्छामि भंते ! समाहिभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं, रयणत्तयपरूवपरमप्पज्झाणलक्खणसमाहिभत्तीए णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

ततः (समाधिभक्तेरन्तरं) सिद्धश्रुताचार्यभक्तिभिः (पूर्वोक्ताभिः) आचार्यसाधवो वन्देरन् ।

—❀—

३—श्रावक-प्रतिक्रमणम् ।

जीवे प्रमादजनिताः प्रचुराः प्रदोषा,
यस्मात्प्रतिक्रमणतः प्रलयं प्रयान्ति ।
तस्मात्तदर्थममलं मुनिबोधनार्थं,
वक्ष्ये विचित्रभवकर्मविशोधनार्थम् ॥ १ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पापिष्ठेन दुरात्मना जडधिया मायाविना लोभिना,
रागद्वेषमलीमसेन मनसा दुष्कर्म यन्निर्मितम् ।
त्रैलोक्याधिपते जिनेन्द्र ! भवतः श्रीपालमूलेऽधुना,
निन्दापूर्वमहं जहामि सततं वर्वर्तिषुः सत्पथे ॥ २ ॥

खम्मामि सव्वजीवाणं सव्वे जीवा खमंतु मे ।
मेत्तो मे सव्वभूदेसु वेरं मज्झं ण केणवि ॥ ३ ॥

रागबंधपदोसं च हरिसं दीणभावयं ।
उस्सुगत्तं भयं सोगं रदिमरदिं च वोस्सरे ॥ ४ ॥

हा दुट्ठकयं हा दुट्ठचिंतियं भासियं च हा दुट्ठं ।
अंतो अंतो डज्झमि पच्छत्तावेण वेयंतो ॥ ५ ॥

दव्वे खेत्ते काले भावे य कदावराहसोहणयं ।
णिंदणगरहणजुत्तो मणवयकाएण पडिकमणं ॥ ६ ॥

एइंदिय-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-पंचेंदिय पुढविकाइय-आउकाइय-तेउकाइय-वाउकाइय- वणप्फदिकाइय-तसकाइया, एदेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दंसणवयसामाइयपोसहसचित्तरायभत्ते य ।
बंभारंभपरिग्गहअणुमणुद्दिट्ठ देसविरदेदे ॥१॥

एयासु जधाकहिदपडिमासु पमादाइकयाइचारसोहणट्ठं छेदोवट्ठावणं होदु मज्झं ।

अरहंतसिद्धआइरिय उवज्झायसव्वसाहुसक्खियं सम्मत्तपुव्वगं सुव्वदं दिढव्वदं समारोहियं मे भवदु मे भवदु मे भवदु ।

देवसियपडिक्कमणाए सव्वाइचारविसोहिणिमित्तं पुव्वाइरियकमेण आलोयणसिद्धभत्तिकाउस्सग्गं करेमि ।

सामायिकदण्डकः—

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ १ ॥

चत्तारि मंगलं—अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहु मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं ।

चत्तारि लोगुत्तमा—अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धालोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धमो लोगुत्तमा ।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि—अरहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्धं सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अड्ढाइज्जदीवदोसमुद्देसु पण्णारसकम्मभूमीसु जाव
रहंताणं भयवंताणं आदियराणं तित्थयराणं जिणाणं
णोत्तमाणं केवलियाणं, सिद्धाणं बुद्धाणं परिणिव्वुदाणं
यडाणं पारयडाणं, धम्माइरियाणं, धम्मदेसयाणं धम्म-
यगाणं, धम्मवरचाउरंगचक्कवट्टीणं देवाहिदेवाणं, णा-
णं दंसणाणं चरित्ताणं सदा करेमि किरियम्भं ।

करेमि भंते ! सामाइयं सव्वं सावज्जजोगं पच्च-
ामि, जावजीवं तिविहेण मणसा वचिया काएण ण
मि ण कारेमि अण्णं करंतं पि ण समणुमणामि ।
स भंते ! अइचारं पडिक्कमामि, णिंदामि, गरहामि
पाणं, जाव अरहंताणं भयवंताणं पज्जुवासं करेमि
त कायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि ।

णमोकार ६ गुणिया । कायोत्सर्ग उच्छ्वास २७ ।

चतुर्विंशतिस्तवः—

सामि हं जिणवरे तित्थयरे केवलीअणंतजिणे ।
णरपवरलोयमहिए विहुयरयमले महापण्णे ॥ १ ॥
स्सुज्जोययरे धम्मं तित्थंकरे जिणे वंदे ।
अरहंते कित्तिस्से चउवीसं चेव केवलिणो ॥ २ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उसहमजियं च वंदे संभवमभिणंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ ३ ॥

सुविहं च पुप्फयंतं सीयल सेयंस वासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं भयवं धम्मं संति च वंदामि ॥ ४ ॥

कुंथुं च जिणवरिंदं अरं च मल्लि च सुव्वयं च णमिं ।
वंदामि रिट्ठणेमिं तह पासं वड्ढमाणं च ॥ ५ ॥

एवं मए अभित्थुआ विहुयरयमला पहीणजरमरणा ।
चउवीसं पि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ६ ॥

कित्तिय वंदिय महिया एए लोगोत्तमा जिणा सिद्धा ।
आरोग्गणाणलाहं दिंतु समाहिं च मे बोहिं ॥ ७ ॥

चंदेहिं णिम्मलयरा आइच्चेहिं अहियं पयासंता ।
सायरंमिव गंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ८ ॥

श्रीमते वर्धमानाय नमो नमितविद्विषे ।
यज्ज्ञानान्तर्गतं भूत्वा त्रैलोक्यं गोष्पदायते ॥ १ ॥

सिद्धभक्तिः

तवसिद्धे णयसिद्धे संयमसिद्धे चरित्तसिद्धे य ।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमंसामि ॥ २

इच्छामि भंते ! सिद्धभत्तिकाउस्सग्गो कओ त
लोचेउं, सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्मचरित्तजुत्ताणं अ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हकम्ममुक्काणं अट्ठगुणसंपण्णाणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पइट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं सम्मणाण--सम्मदंसण--सम्मचरित्तसिद्धाणं अदीदाणागदवट्ट-माणकालत्तयसिद्धाणं सव्वसिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहि-लाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

आलोचना—

इच्छामि भंते ! देवसियं आलोचेउं । तत्थ—

चुंबरसहियाइं सत्त वि वसणाइं जो विवज्जेइ।
सम्मत्तविसुद्धमई सो दंसणसावओ भणियो ॥ १ ॥

पंच य अणुव्वयाइं गुणव्वयाइं हवंति तह तिण्णि।
सिक्खावयाइं चत्तारि जाण विदियम्मि ठाणम्मि ॥२॥

जणवयणधम्मचेइयपरमेट्ठिजिणयालयाण णिच्चं पि।
जं वंदणं तियालं कीरइ सामाइयं तं खु ॥ ३ ॥

त्तमभज्झजहण्णं तिविहं पोसहविहाणमुद्दिट्ठं।
सगसत्तीए मासम्मि चउसु पव्वेसु कायव्वं ॥ ४ ॥

वज्जिज्जदि हरिदं तयपत्तपवालकंदफलबीयं।
अप्पासुगं च सलिलं सच्चित्तणिव्वत्तिमं ठाणं ॥ ५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मणवयणकायकदकारिदाणुमोदेहिं मेहुणं णवधा ।
दिवसम्मि जो विवज्जदि गुणम्मि सो सावओ छट्ठो ॥६
पुव्वुत्तणवविहाणं णि मेहुणं सव्वदा विवज्जंतो ।
इत्थिकहादिणिवित्ती सत्तमगुणबंभचारी सो ॥ ७ ॥
जं किंपि गिहारंभं बहु थोवं वा सया विवज्जेदि ।
आरंभणिवित्तमदी सो अट्ठमसावओ भणिओ ॥८॥
मोत्तूण वत्थमित्तं परिग्गहं जो विवज्जदे सेसं ।
तत्थ वि मुच्छं ण करदि वियाण सो सावओ णवमो ॥६
पुट्ठो वापुट्ठो वा णियगेहिं परेहिं सग्गिहकज्जे ।
अणुमणणं जो ण कुणदि वियाण सो सावओ दसमो ॥१०
णवकोडीसु विसुद्धं भिक्खायरणेण भुंजदे भुंजं ।
जायणरहियं जोग्गं एयारस सावओ सो दु ॥ ११ ॥
एयारसम्मि ठाणे उक्किट्ठो सावओ हवे दुविहो ।
वत्थेयधरो पढमो कोवीणपरिग्गहो विदिओ ॥ १२ ॥
तववयणियमावासयलोचं कारेदि पिच्छ गिण्हेदि ।
अणुवहाधम्मझाणं करपत्ते एयठाणम्मि ॥ १३ ॥
इत्थ मे जो कोई देवसिओ अइचारो अणाचारो त
भंते ! पडिक्कमामि पडिक्कम्मंतस्स मे सम्मत्तमरणं स

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हिमरणं पंडियमरणं वीरियमरणं दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

दंसणवयसामाइयपोसहसच्चित्तरायभत्ते य ।
बंभारंभपरिग्गह अणुमणमुद्दिट्ठ देसविरदेदे ॥ १ ॥

एयासु यधाकहिदपडिमासु पमादाइकयाइचारसोहणट्ठं छेदोवट्ठावणं होदु मज्झं ।

प्रतिक्रमणभक्तिः—

श्रीपडिक्कमणभत्ति–काउस्सग्गं करेमि—

णमो अरहंताणमित्यादि—थोस्सामीत्यादि ।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ३ ॥

णमो जिणाणं ३, णमो णिस्सहीए ३, णमोत्थु दे ३, अरहंत ! सिद्ध ! बुद्ध ! णीरय ! णिम्मल ! सम-मण ! सुभमण ! सुसमत्थ ! समजोग ! समभाव ! सल्ल-घट्टाणं सल्लघत्ताणं ! णिब्भय ! णिराय ! णिद्दोस ! णिम्मोह ! णिम्मम ! णिस्संग ! णिस्सल ! माणमायमो-समूरण ! तवप्पहावण ! गुणरयण ! सीलसायर ! अणंत !

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अप्पमेय ! महदिमहावीरवड्ढमाण ! बुद्धिरिसिणो चेदि णमोत्थु दे णमोत्थु दे णमोत्थु दे ।

मम मंगलं अरहंता य सिद्धा य बुद्धा य जिणा य केवलिणो ओहिणाणिणो मणपज्जयणाणिणो चउदसपुव्वंगामिणो सुदसमिदिसमिद्धा य, तवो य बारसविहो तवसी, गुणा य गुणवंतो य महारिसी तित्थं तित्थकरा य, पवयणं पवयणी य, णाणं णाणी य, दंसणं दंसणी य, संजमो संजदा य, विणओ विणीदा य, बंभचेरवासी बंभचारी य, गुत्तीओ चेव गुत्तिमंतो य, मुत्तीओ चेव मुत्तिमंतो य समिदीओ चेव समिदिमंतो य, ससमयपरसमयविदूखंति खवगा य, खीणमोहा य खीणवंतो य, बोहियबुद्धा य बुद्धिमंतो य, चेईयरुक्खाय चेईयाणि ।

उड्ढमहतिरियलोए सिद्धायदणाणि णमंसामि सिद्धिणिसोहियाओ अट्ठावपव्वे य सम्मेदे उज्जते चंपाए पावाए मज्झिमाए हत्थिवालियसहाए जाओ अण्णाओ का वि णिसीहियाओ जीवलोयम्मि ईसिपब्भारतलगयाणं सिद्धाणं बुद्धाणं कम्मचक्कमुक्काणं णीरयाणं णिम्मलाणं गुरुआइरियउवज्झायाणं पव्वत्ति-त्थेर कुलयराणं चाउवण्णाय सम-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संघा य भरहेरावएसु दससु पंचसु महाविदेहेसु जे लोए ति साहवो संजदा तवसी एदे मम मंगलं पवित्तं एदे मंगलं करेमि भावदो विसुद्धो सिरसा अहिवंदिऊण सिद्धे ऊण संजलिमत्थयम्मि पडिलेहिय अट्ठकत्तरिओ तिविहं यरणसुद्धो ।

पठिक्कमामि भंते ! दंसणपडिमाए संकाए कंखाए दिगिंछाए परपासंडाण पसंसाए पसंथुए जो मए देवसिओ इचारो मणसा वचिया काएण कदो वा कारिदो वा रंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ १ ॥

पडिक्कमामि भंते ! वदपडिमाए पढमे थूलयडे सावरिदिवदे वहेण वा बंधेण वा छेएण वा अइभारारो-णेण वा अण्णपाणणिरोहणेण वा जो मए देवसिओ इचारो मणसा वचिया काएण कदो वा कारिदो वा रंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥२-१॥

पडिक्कमामि भंते ! वदपडिमाए विदिए थूलयडे सच्चविरदिवदे मिच्छोवदेसेण वा रहोअब्भक्खाणेण वा डलेहणकरणेण वा णायापहारेण वा सायारमंत्रभेएण जो मए देवसिओ अइचारो मणसा वचिया काएण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ २-२ ॥

पडिक्कमामि भंते ! वदपडिमाए तिदिए थूलयडे थेणविरदिवदे थेणपओगेण वा थेणहरियादाणेण वा विरुद्धरज्जाइक्कमणेण वा होणाहियमाणुम्माणेण वा पडिरूवयववहारेण वा जो मए देवसिओ अइचारो मणसा वचिया काएण कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ २-३ ॥

पडिक्कमामि भंते ! वदपडिमाए चउत्थे थूलयडे अबंभविरदिवदे परविवाहकरणेण वा इत्तरियागमणेण वा परिग्गहिदापरिग्गाहिदागमणेण वा अणंगकीडणेण वा कामतिव्वाभिणिवेसेण वा जो मए देवसिओ अइचारो मणसा वचिया काएण कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ २-४ ॥

पडिक्कमामि भंते ! वदपडिमाए पंचमे थूलयडे परिग्गहपरिमाणवदे खेत्तवत्थूणं परिमाणाइक्कमणेण वा धणधाणाणं परिमाणाइक्कमणेण वा दासीदासाणं परिमाणाइक्कमणेण वा हिरण्णसुवण्णाणं परिमाणाइक्कमणेण वा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुप्पभांडपरिमाणाइक्कमणेण वा जो मए देवसिओ अइचारो मणसा वचिया काएण कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ २-५ ॥

पडिक्कमामि भंते ! वदपडिमाए पढमे गुणव्वदे उड्ढवइक्कमणेण वा अहोवइक्कमणेण वा तिरियवइक्कमणेण वा खेत्तउड्ढीएण वा सदिअंतराधाणेण वा जो मए देवसिओ अइचारो मणसा वचिया काएण कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं २-६-१

पडिक्कमामि भंते ! वदपडिमाए विदिए गुणव्वदे आणयणेण वा विणिजोगेण वा सद्दाणुवाएण वा रूवाणुवाएण वा पुग्गलखेवेण वा जो मए देवसिओ अइचारो मणसा वचिया काएण कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ २-७-२ ॥

पडिक्कमामि भंते ! वदपडिमाए तिदिए गुणव्वदे कंदप्पेण वा कुकुवेएण वा मोक्खरिएण वा असमक्खियाहिकरणेण वा भोगोपभोगाणत्थकेण वा जो मए देवसिओ, अइचारो मणसा वचिया काएण कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ २-८-३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पडिक्कमामि भंते ! वदपडिमाए पढमे सिक्खावदे फासिंदियभोगपरिमाणाइक्कमणेण वा रसणिंदियभोगपरिमाणाइक्कमणेण वा घाणिंदियभोगपरिमाणाइक्कमणेण वा चक्खिंदियभोगपरिमाणाइक्कमणेण वा सवणिंदियभोगपरिमाणाइक्कमणेण वा जो मए देवसिओ अइचारो मणसा वचिया काएण कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ २-९-१ ॥

पडिक्कमामि भंते ! वदपडिमाए विदिए सिक्खावदे फासिंदियपरिभोगपरिमाणाइक्कमणेण वा रसणिंदियपरिभोगपरिमाणाइक्कमणेण वा घाणिंदियपरिभोगपरिमाणाइक्कमणेण वा चक्खिंदियपरिभोगपरिमाणाइक्कमणेण वा सवणिंदियपरिभोगपरिमाणाइक्कमणेण वा जो मए देवसिओ अइचारो मणसा वचिया काएण कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ २-१०-२॥

पडिक्कमामि भंते ! वदपडिमाए तिदिए सिक्खावदे सचित्तणिक्खेवेण वा सचित्तापिहाणेण वा परउवएसेण वा कालाइक्कमणेण वा मच्छिरिएण वा जो मए देवसिओ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अइचारो मणसा वचिया काएण कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥ २-११-३ ॥

पडिक्कमामि भंते ! वदपडिमाएचउत्थे सिक्खावदे जीविदासंसणेण वा मरणासंसणेण वा मित्ताणुराएण वा सुहाणुबंधेण वा णिदाणेण वा जो मए देवसियो अइचारो मणसा वचिया काएण कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥२-१२-४॥

पडिक्कमामि भंते ! सामाइयपडिमाए मणदुप्पणिधाणेण वा वायदुप्पणिधाणेण वा कायदुप्पणिधाणेण वा अणादरेण वा सदिअणुवट्ठावणेण वा जो मए देवसियो अइचारो मणसा वचिया काएण कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥३॥

पडिक्कमामि भंते ! पोसहपडिमाए अप्पडिवेक्खिया-पमज्जियोस्सग्गेण वा अप्पडिवेक्खियापमज्जियादाणेण वा अप्प डिवेक्खियापमज्जियासंथारोवक्कमणेण वा आवस्स-याणादरेण वा सदिअणुवट्ठावणेण वा जो मए देवसिओ अइचारो मणसा वचिया काएण कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पडिक्कमामि भंते ! सच्चित्तविरदिपडिमाए पुढविकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा आउक्काइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा तेउक्काइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा वाउकाइया जीवा असंखेज्जासंखेज्जा वणप्फदिकाइया जीवा अणंताणंता हरिता वीया अंकुरा छिण्णा भिण्णा एदेसिं उद्दावणं परिदावणं विराहणं उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥५॥

पडिक्कमामि भंते ! राइभत्तपडिमाए णवविहबंभचरियस्स दिवा जो मए देवसिओ अइचारो अणाचारो मणसा वचिया काएण कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥६॥

पडिक्कमामि भंते ! बंभपडिमाए इत्थिकहायत्तणेण वा इत्थिमणोहरांगणिरक्खणेण वा पुव्वरयाणुस्सरणेण वा कामकोवणरसासेवणेण वा सरीरमंडणेण वा जो मए देवसिओ अइचारो अणाचारो मणसा वचिया काएण कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥७॥

पडिक्कमामि भंते ! आरंभविरदिपडिमाए कसायवसंगएण जो मए देवसिओ आरम्भो मणसा वचिया काएण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥८॥

पडिक्कमामि भंते ! परिग्गहविरदिपडिमाए वत्थमेत्तपरिग्गहादो अवरम्मि परिग्गहे मुच्छापरिणामे जो मए देवसिओ अइचारो अणाचारो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥९॥

पडिक्कमामि भंते ! अणुमणुविरदिपडिमाए जं किं पि अणुमणणं पुट्ठापुट्ठेण कदं वा कारिदं वा कीरंतं वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥१०॥

पडिक्कमामि भंते ! उद्दिट्ठविरोदपडिमाए उद्दिट्ठदोसबहुलं अहोरदियं आहारयं आहाराविंयं आहारिज्जंतं वा समणुमण्णिदा तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ॥११॥

इच्छामि भंते ! इमं णिग्गंथं पावयणं अणुत्तरं केवलियं पडिपुण्णं णेगाइयं सामाइयं संसुद्धं सल्लवट्टाणं सल्लघत्ताणं सिद्धिमग्गं सेढिमग्गं खंतिमग्गं मोत्तिमग्गं पमोत्तिमग्गं मोक्खमग्गं पमोक्खमग्गं णिज्जाणमग्गं णिव्वाणमग्गं सव्वदुक्खपरिहाणिमग्गं सुचरियपरिणिव्वाणमग्गं अवितहमविसंतिपव्वयणमुत्तमं तं सद्दहामि तं पत्तियामि तं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रोचेमि तं फासेमि इदो उत्तरं अण्णं णत्थि भूदं ण भयं ण भविस्सदि णाणेण वा दंसणेण वा चरित्तेण वा सुत्तेण वा इदो जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वाणयंति सव्व दुक्खाणमंतं करंति परिवियाणंति समणोमि संजदोमि उवरदोमि उवसंतोमि उवधिणियडिमाणमायामोसमूरण मिच्छणाणमिच्छदंसणमिच्छचरित्तं च पडिविरदोमि सम्मणाणसम्मदंसणसम्मचरित्तं च रोचेमि जं जिणवरेहिं पण्णत्तो इत्थ मे जो कोई देवसिओ अइचारो अणाचारो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

इच्छामि भंते ! वीरभत्तिकाउस्सग्गं करेमि जो मए देवसिओ अइचारो अणाचारो आभोगो अणाभोगो काइओ वाइओ माणसिओ दुच्चरिओ दुच्चारिओ दुब्भासिओ दुप्परिणामिओ णाणे दंसणे चरित्ते सुत्ते सामाइए एयारसण्हं पडिमाणं विराहणाए अट्ठविहस्स कम्मस्स णिग्घादणाए अण्णहा उस्सासिदेण णिस्सासिदेण वा उम्मिस्सिदेण णिम्मिस्सिदेण खासिदेण वा छिंकिदेण वा जंभाइदेण वा सुहुमेहिं अंगचलाचलेहिं दिट्ठिचलाचलेहिं एदेहिं सव्वेहिं असमाहिं पत्तेहिं आयारेहिं जाव अरहंताणं भयवंताणं पज्जुवासं करेमि ताव कायं पाव कम्मं दुच्चरियं वोस्सरामि ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दंसणवयसामाइयपोसहसचित्तराइभत्ते य ।

बंभारंभपरिग्गहअणमणुमुद्दिट्ठदेसविरदेदे ॥ १ ॥

वीरभत्तिकाउस्सग्गं करेमि—

(णमो अरहंताणमित्यादि, थोस्सामीत्यादि जाप्य ३६)

यः सर्वाणि चराचराणि विधिवद्द्रव्याणि तेषां गुणान्

पर्यायानपि भूतभाविभवतः सर्वान् सदा सर्वदा ।

जानीते युगपत्प्रतिक्षणमतः सर्वज्ञ इत्युच्यते,

सर्वज्ञाय जिनेश्वराय महते वीराय तस्मै नमः ॥ १ ॥

वीरः सर्वसुरासुरेन्द्रमहितो वीरं बुधाः संश्रिताः

वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयो वीराय भक्त्या नमः ।

वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं वीरस्य वीरं तपो,

वीरे श्रीद्युतिकांतिकीर्तिधृतयो हे वीर ! भद्रं त्वयि ॥२॥

ये वीरमादौ प्रणमंति नित्यं ध्यानस्थिताः संयमयोगयुक्ताः ।

ते वीतशोका हि भवन्ति लोके संसारदुर्गं विषमं तरन्ति ॥३॥

व्रतसमुदयमूलः संयमस्कन्धबन्धो,

यमनियमपयोभिर्वर्धितः शीलशाखः ।

समितिकलिकभारो गुप्तिगुप्तप्रवालो

गुणकुसुमसुगन्धिः सत्तपश्चित्रपत्रः ॥ ४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिवसुखफलदायी यो दयाछाययौघः
शुभजनपथिकानां खेदनोदे समर्थः ।
दुरितरविजतापं प्रापयन्नन्तभावं
स भवविभवहान्यै नोऽस्तु चारित्रवृक्षः ॥ ५ ॥

चारित्रं सर्वजिनैश्चरितं प्रोक्तं च सर्वशिष्येभ्यः ।
प्रणमामि पञ्चभेदं पंचमचारित्रलाभाय ॥ ६ ॥

धर्मः सर्वसुखाकरो हितकरो धर्मं बुधाश्चिन्वते
धर्मेणैव समाप्यते शिवसुखं धर्माय तस्मै नमः ।
धर्मान्नास्त्यपरः सुहृद्भवभृतां धर्मस्य मूलं दया
धर्मे चित्तमहं दधे प्रतिदिनं हे धर्म मां पालय ॥७॥

धम्मो मंगलमुद्दिट्ठं अहिंसा संयमो तवो ।
देवा वि तस्स पणमंति जस्स धम्मो सया मणो ॥८॥

इच्छामि भंते ! पडिकमणाइचारमालोचेउं तत्थ देसासिओ आसणासिओ ठाणासिआ कालासिआ मुद्दासिआ काओस्सग्गासिआ पाणामासिआ आवत्तासिआ पडिक्कमासिआ छसु आवासएसु परिहीणदा जो मए अच्चासणा मणसा वचिया काएण कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा समणुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कडं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दंसण-वय-सामाइय-पोसह-सच्चित्त रायभत्तेय
बंभारंभ-परिग्गह-अणुमणसुद्दिट्ठ देसविरदो य ॥१॥

चउवीसतित्थयरभत्तिकाउस्सग्गं करेमि—
(णमो अरहंताणमित्यादि, थोस्सामीत्यादि)

चउवीसं तित्थयरे उसहाइवीरपच्छिमे वंदे।
सव्वेसिं गुणगणहरसिद्धे सिरसा णमंसामि ॥१॥

ये लोकेष्टसहस्रलक्षणधरा ज्ञेयार्णवान्तर्गता,
ये सम्यग्भवजालहेतुमथनाश्चन्द्रार्कतेजोधिकाः।
ये साध्विन्द्रसुराप्सरोगणशतैर्गीतप्रणुत्यार्चिता,
स्तान् देवान् वृषभादिवीरचरमान् भक्त्या नमस्याम्यहं २

नाभेयं देवपूज्यं जिनवरमजितं सर्वलोकप्रदीपं,
सर्वज्ञं संभवाख्यं मुनिगणवृषभं नन्दनं देवदेवं।
कर्मारिघ्नं सुबुद्धिं वरकमलनिभं पद्मपुष्पाभिगन्धं,
क्षान्तं दांतं सुपार्श्वं सकलशशिनिभं चन्द्रनामानमीडे ॥३॥

विख्यातं पुष्पदन्तं भवभयमथनं शीतलं लोकनाथं,
श्रेयांसं शीलकोशं प्रवरनरगुरुं वासुपूज्यं सुपूज्यं।
मुक्तं दांतेन्द्रियाश्वं विमलमृषिपतिं सिंहसैन्यं मुनींद्रं,
धर्मं सद्धर्मकेतुं शमदमनिलयं स्तौमि शांतिं शरण्यं ॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुंथुं सिद्धालयस्थं श्रमणपतिमरं त्यक्तभोगेषु चक्रं,
मल्लिं विख्यातगोत्रं खचरगणनुतं सुव्रतं सौख्यराशिम् ।
देवेन्द्राच्यं नमीशं हरिकुलतिलकं नेमिचन्द्रं भवांतं,
पार्श्वं नागेन्द्रवन्द्यं शरणमहमितो वर्धमानं च भक्त्या ।५।

अञ्चलिका

इच्छामि भंते ! चउवीसतित्थयरभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं, पंचमहाकल्लाणसंपण्णाणं अट्ठमहापाडिहेरस-हिदाणं चउतीसातिसयविसेससंजुत्ताणं बत्तीसदेविंदमणिम-उडमत्थयमहिदाणं बलदेव-वासुदेव-चक्कहर-रिसिमुणिजइअ-णगारोवगूढाणं, थुइसहस्सणिलयाणं उसहाइवीरपच्छिममंग-लमहापुरिसाणं णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिनगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

दंसण-वय-सामाइय-पोसह-सचित्त-रायभत्ते य ।
बंभारंभ-परिग्गह-अणुमणमुद्दिट्ठं देसविरदो य ॥१॥

श्री सिद्धभक्ति-श्रीप्रतिक्रमणभक्ति--श्रीवीरभक्ति-श्रीचतुर्विंशतिभक्तिः कृत्वातद्धीनाधिकत्वादिदोषविशुद्ध्यर्थं समाधिभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहम्—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(णमोकार ६ गुणिवा)

अथेष्टप्रार्थना-प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः ।

शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः संगतिः सर्वदार्यैः,
सद्वृत्तानां गुणगणकथा दोषवादे च मौनम् ।
सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावना चात्मतत्त्वे
सम्पद्यन्तां मम भवभवे यावदेतेऽपवर्गः ॥ १ ॥

तव पादौ मम हृदये मम हृदयं तव पदद्वये लीनम् ।
तिष्ठतु जिनेन्द्र ! तावद्यावन्निर्वाणसम्प्राप्तिः ॥ २ ॥

अक्खरपयत्थहीणं मत्ताहीणं च जं मए भणियं ।
तं खमउ णाणदेव य मज्झ वि दुक्खक्खयं दिंतु ॥३॥

दुक्खक्खओ कम्मक्खओ वोहिलाहो सुगइगमणं
समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

इति श्रीश्रावकप्रतिक्रमणं समाप्तम् ।

—❀—

दीक्षा-नक्षत्राणि

प्रणम्य शिरसा वीरं जिनेन्द्रममलव्रतम् ।
दीक्षा ऋक्षाणि वक्ष्यन्ते सतां शुभफलाप्तये ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भरण्युत्तरफाल्गुन्यौ मघाचित्राविशाखिका:।
पूर्वाभाद्रपदा भानि रेवती मुनि-दीक्षणे ॥२॥
रोहिणी चोत्तराषाढा उत्तराभाद्रपत्तथा।
स्वाति: कृत्तिकया सार्धं वर्ज्यंते मुनिदीक्षणे ॥३॥
अश्विनी-पूर्वाफाल्गुन्या हस्तस्वात्यनुराधिका:।
मूलं तथोत्तराषाढा श्रवण: शतभिषक्तथा ॥ ४ ॥
उत्तराभाद्रपच्चापि दशेति विशदाशया:।
आर्यिकाणां व्रते योग्यान्युषन्ति शुभहेतव: ॥ ५ ॥
भरण्यां कृत्तिकायां च पुष्ये श्लेषार्द्रयोस्तथा।
पुनर्वसौ च नो दद्युरार्यिकाव्रतमुत्तमा: ॥ ६ ॥
पूर्वाभाद्रपदा मूलं धनिष्ठा च विशाखिका।
श्रवणश्चैषु दीक्ष्यन्ते क्षुल्लका: शल्यवर्जिता: ॥ ७ ॥

इति दीक्षानक्षत्रपटलम्

—❀—

दीक्षा ग्रहणक्रिया

सिद्धयोगिवृहद्भक्तिपूर्वकं लिङ्गमर्प्यताम्।
लुञ्चाख्यानाग्न्यपिच्छात्म क्षम्यतां सिद्धभक्तित: ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथदीक्षाग्रहण क्रियायां·····सिद्धभक्तिकायोत्सर्गं करोमि :—

('सिद्धानुद्धूत' इत्यादि)

अथ दीक्षाग्रहण क्रियायां·····योगिभक्तिकायोत्सर्गं करोमि ('थोस्सामि गुणधराणां इत्यादि' जातिजरोरूरोग इत्यादि वा) अनन्तरं लोचकरणं, नामकरणं, नाग्न्यप्रदानं, पिच्छप्रदानं च अथ दीक्षा निष्ठापनक्रियायां·····सिद्धभक्ति कायोत्सर्गं करोमि ।

दीक्षादानोत्तरकर्त्तव्यम्—

व्रतसमितीन्द्रियरोधाः पंच पृथक् क्षितिशयोरदाघर्षः ।
स्थितिसकृदशने लुञ्चावश्यकषट्के विचेलताऽस्नानम् ॥
इत्यष्टविंशति मूलगुणान् निक्षिप्य दीक्षिते ।
संक्षेपेण सशीलादीन् गणी कुर्यात्प्रतिक्रमम् ॥

लोचक्रिया

लोचो द्वित्रिचतुर्मासैर्वरो मध्योऽधमः क्रमात् ।
लघु प्राग्भक्तिभिः कार्यः सोपवास-प्रतिक्रमः ॥

अथ लोच-प्रतिष्ठापनक्रियायां·····सिद्धभक्तिकायोत्सर्गं करोमि—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

('तवसिद्धे' इत्यादि)

अथ लोच प्रतिष्ठापनक्रियायां······योगिभक्तिकायोत्सर्गं करोमि अनन्तरं स्वहस्तेन परहस्तेनापि वा लोचः कार्यः ।

अथ लोच निष्ठापनक्रियायां······सिद्धभक्तिकायोत्सर्गं करोमि ('तवसिद्धे' इत्यादि) अनन्तरं प्रतिक्रमणं कर्तव्यम् ।

वृहद् (मुनि) दीक्षा विधि

दीक्षकः पूर्वदिने भोजन समये भाजनादि तिरस्कार विधिं विधाय आहारं गृहीत्वा चैत्यालये आगच्छेत् ततो वृहत्प्रत्याख्यान प्रतिष्ठापने सिद्धयोग भक्ति पठित्वा गुरु पार्श्वे प्रत्याख्यानं सोपवासं गृहीत्वा, आचार्य-शांति-समाधि भक्तिः पठित्वा गुरोः प्रणामं कुर्यात् ।

भावार्थ—दीक्षा के पहले दिन दीक्षा लेने वाला भोजन के समय पात्रादिक की त्याग विधि करके और आहार ग्रहण करके अर्थात्—दीक्षा के पहले दिन दीक्षा लेने वाला पात्रादिक में भोजन नहीं करके कर पात्र में आहार करके चैत्यालय में आवे, फिर वृहत्प्रत्याख्यान प्रतिष्ठापन में सिद्ध, योगभक्ति को पढ़कर गुरु के पास में चारों प्रकार का आहार का त्याग करके उपवास ग्रहण करे । फिर आचार्य, शांति समाधि भक्ति का पाठ पढ़कर गरु को प्रणाम करे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ—दीक्षादाने दीक्षादातृजनः शांतिकगणधर वलय पूजादिकं यथाशक्ति कारयेत्। अथ दातातं स्नानादिकं कारयित्वा यथायोग्यालङ्कार युक्तं महा महोत्सेवन चैत्यालये समानयेत्। स देवशास्त्र गुरुणां पूजां विधाय वैराग्य भावना परः सर्वैः सहक्षमां कृत्वा गुरोरग्रे तिष्ठेत्। ततो गुरोरग्रे संघस्याग्रे च दीक्षायै यांचां कृत्वा तदाज्ञया सौभाग्यवती स्त्री विहित स्वस्तिकोपरिश्वेतवस्त्रं प्रच्छाद्य तत्र पूर्वदिशाभिमुखः पर्यंकासनं कृत्वा आसते, गुरोश्चोत्तराभिमुखो भूत्वा,([1]संघाष्टकं संघं) च परिपृच्छाय लोचं कुर्यात्॥

भावार्थ—दीक्षा के कुछ दिन पहले दीक्षा दिलवाने वाले दाता मन्दिर में शांतिक एवं गणधरवलय तथा किसी विधान की पूजन यथाशक्ति करावे, फिर दीक्षा के दिन दीक्षा लेने वाले सज्जन को दाता अपने घर स्नानादिक कराकर यथायोग्य सुन्दर वस्त्राभूषण पहनाकर बड़े समारोह के साथ गाजे बाजे से मन्दिर में लावे और वह आनन्दपूर्वक देवशास्त्रगुरु सिद्धादिक की पूजन समारोह के साथ करके वैराग्य भावना में तत्पर वह दीक्षक सर्व गृहस्थ एवं अपने कुटुम्बिजनों से क्षमा करावे, व स्वयं क्षमा करके गुरुदेव के सामने बैठ जावे, तदनन्तर संघ के सामने गुरु महाराज से दीक्षा की याचना करके गुरु की आज्ञा से सौभाग्यवती स्त्री द्वारा बनाये गये चांवल के स्वस्तिक पर श्वेत वस्त्र डालकर उस समय पूर्वाभिमुख पद्मासन से बैठ जावे और गुरु महाराज उत्तराभिमुख बैठ जावें फिर दीक्षा लेने वाला गुरुमहाराज से पूछकर केश लुंच करे।

१-इति पदं पुस्तकान्तरे नास्ति।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्धभक्तिः

सिद्धानुद्धूत कर्म प्रकृति समुदयान्साधितात्म स्वभावान्।
वन्दे सिद्धि प्रसिद्ध्यै तदनुपम गुण प्रग्रहाकृष्टि तुष्टः ॥
सिद्धि स्वात्मोपलब्धिः प्रगुणगुण गणोच्छादि दोषापहारात्
योग्योपादान युक्त्या दृषद इह यथा हेम भावोपलब्धिः ॥१॥

नाभावः सिद्धिरिष्टा न निज गुण हतिस्तत्तपोभिर्न युक्तेः।
अस्त्यात्मानादिबद्धः स्वकृतजफलभुक्तत्क्षयान मोक्षभागी ॥
ज्ञातादृष्टा स्वदेह प्रमिति रुपसमाहार विस्तार धर्मा।
ध्रौव्योत्पत्तिव्ययात्मा स्वगुणयुत इतो नान्यथा साध्यसिद्धिः ॥२

सत्वन्तर्बाह्य हेतु प्रभव विमल सद्दर्शन ज्ञान चर्या-
संपद्धेतिप्रघात क्षतदुरित तया व्यञ्जिताचिन्त्य सारैः।
कैवल्य ज्ञानदृष्टि प्रवर सुख महावीर्य सम्यक्त्वलब्धि-
ज्योतिर्वाता यनास्थिर परमगुणैरद्भुतैर्भासमानः ॥ ३ ॥

जानन्पश्यन्समस्तं सममनुपरतं सं प्रतृप्यन्वितन्वन्।
धुन्वन्ध्वान्तं नितान्तं निचितमनुपमं प्रीणयन्नीश भावम्।
कुर्वन्सर्व प्रजानामपरमभिभवन् ज्योतिरात्मा नमात्मा।
आत्मन्येवामनासौ क्षणमुपजनेयन्सत्स्वयंभूः प्रवृत्तः ॥ ४ ॥

छिन्दन्नशेषानशेषान्निगलवल कलींस्तैरनन्त स्वभावैः।
सूक्ष्मत्वाग्रयावगाहागुरु लघुक गुणैः क्षायिकैः शोभमानः ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्यैश्चान्य व्यपोह प्रवण विषय संप्राप्तिलब्धिप्रभावै ।
रूर्ध्वं ब्रज्या स्वभावात्समय मुपगतो धाम्नि संतिष्ठतेऽग्र्ये ॥५॥

अन्याकाराप्ति हेतुर्न च भवति परो येन तेनाल्पहीनः ।
प्रागात्मोपात्तदेहप्रतिकृति रुचिराकार एव ह्यमूर्तः ॥
क्षुत्तृष्णाश्वास कास ज्वर मरण जरा निष्ट योगप्रमेह ।
व्यापत्त्याद्युग्र दुःख प्रभवभवहतेः कोऽस्य सौख्यस्य माता ॥६॥

आत्मो पादानसिद्धं स्वयमतिशयवद्वीतबाधं विशालम् ।
वृद्धिह्रास व्यपेतं विषय विरहितं निःप्रतिद्वन्द भावम् ॥
अन्य द्रव्यानपेक्षं निरुपममभितं शास्वतं सर्व कालम् ।
उत्कृष्टानन्तसारं परम सुखमतस्तस्य सिद्धस्य जातम् ॥ ७॥
नार्थः क्षुत्तृट्विनाशाद्विविधरस युतैरन्नपानैरशुच्या ।
नास्पृष्टेर्गन्धमाल्यैर्नहि मृदुशयनैर्ग्लानि निद्राद्यभावात् ॥
आतङ्कार्तेरभावे तदुपशमन सद्भेजानर्थं तावद् ।
दीपानर्थक्यवद्वा व्यपगत तिमिरे दृश्यमाने समस्ते ॥ ८ ॥
तादृक्संपत्समेता विविधनयतपः संयम ज्ञान दृष्टि ।
चर्या सिद्धाः समन्तात्प्रवितत यशसो विश्व देवाधिदेवाः ।
भूता भव्या भवन्तः सकल जगति ये स्तूयमाना विशिष्टैः ।
तान्सर्वान्नौम्यनंतान्निजगमिषुररं तत्स्वरूपं त्रिसन्ध्यं ॥ ९ ॥
कृत्वा कायोत्सर्गं चतुरष्टदोषविरहितं सुपरिशुद्धं ।
अति भक्ति संप्रयुक्तो यो वन्दते सलघु लभते परम सुखम् ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इच्छामि भंते सिद्धिभत्ति काउस्सग्गोकवो तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचारित्त जुत्ताणं अट्ठविहकम्म विप्पमुक्काणम् अट्ठगुण संपण्णाणं उड्ढलोए मच्छयमि पयट्टियाणं तव सिद्धाणम् णयसिद्धाणं संजम सिद्धाणं सयाणिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वन्दामि णमस्सामि दुक्खक्खवो कम्मक्खवो बोहिलाहो सुगई गमणं समाहिमरणं जिण गुणसम्पत्ति होउमज्झम् ॥

योग भक्तिः

[1]जाति जरोरुरोग मरणातुर शोक सहस्रदीपिताः ।
दुःसहनरक पतन सन्त्रस्तधियः प्रतिबुद्ध चेतसः ॥
जीवितमम्बुविन्दचपलं तडिदभ्रसमा विभूतयः ।
सकलमिदं विचिन्त्य मुनयः प्रशमाय वनान्तमाश्रिताः ।१।
व्रत समिति गुप्ति संयुताः शम सुखमाधाय मनसिवीतमोहाः ।
ध्यानाध्ययनवशंगताः विशुद्धयेकर्मणां तपश्चरन्ति ॥२॥

१ यदि समय कम हो तो यह पाठ बोले—
वृहद्दीक्षायां लोचस्वीकारक्रियां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल कर्मक्षयार्थं भावपूजा-वन्दना स्तवसमेतं श्रीमद्योगभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं । इति ९ बार णमोकार मन्त्र का जाप करे । केशलुंच करते समय दोनों भक्ति बोले ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिनकर किरणनिकर सन्तप्तशिलपनिचयेषु निस्पृहाः ।
मलपटलावलिप्ततनवः शिथिलीकृत कर्मबन्धनाः ॥२॥

व्यपगतमदनदर्परतिदोष कषाय विरक्त मत्सराः ।
गिरिशिखरेषु चण्ड किरणाभिमुखस्थितयो दिगम्बराः ॥३॥

सज्ज्ञानामृतपायिभिः क्षान्तिपयः सिंच्यमानपुण्यकायैः ।
धृत सन्तोषच्छत्रकैस्तापस्तीव्रोऽपि सह्यते मुनीन्द्रैः ॥४॥

शिखिगलकज्जलालिमलिनैर्विबुधाधिप चाप चित्रितैः ।
भीमरवैर्विसृष्ट चण्डाशनि शीतलवायुवृष्टिभिः ।
गगन तलं विलोक्य जलदैः स्थगितं सहसा तपोधनाः ।
पुनरपितरुतलेषु विषमासु निशासु विशंकमासते ॥५॥

जलधाराशरताडिता न चलन्ति चरित्रतः सदा नृसिंहाः ।
संसार दुःख भीरवः परीषहारातिघातिनः प्रवीराः ॥६॥

अविरत बहलतुहिनकणवारिभिरंघ्रिप पत्रपातनैरनवरत-
मुक्त सीत्काररवैः परुषैरथानिलैः शोषितगात्रयष्टयः ॥

इह श्रमणा धृति कंबलावृताः शिशिर निशाम् ।
तुषार विषमां गमयन्ति चतुःपथे स्थिताः ॥७॥

इति योग त्रय धारिणः सकलतपः शालिनः प्रवृद्धपुण्यकायाः ।
परमानन्द सुखैषिणः समाधिमग्र्यं दिशंतुनो भदन्ता ॥८॥
गिह्मे गिरी सिंहरत्थावरिसायाले रुक्खमूल रयणीसु ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिसिरे बाहिरसयणाते साहू वन्दिमोणिच्चम् ॥

गिरिकन्दर दुर्गेषु ये वसन्ति दिगम्बराः ।

पाणिपात्रपुटाहारास्ते यान्ति परमां गतिम् ॥८॥

इच्छामि भन्ते योगभत्ति काउस्सग्गो कओ तस्स लोचेउ अड्ढाइज्जदीवदोसमुद्देसु पण्णरसकम्मभूमीसु आदावण रुक्खमूल अब्भोवासठाणमोण विरासणेक्कपास कुक्कुडासण चउछ्पक्खखवणादि योग जुत्ताणं सःवसाहूणं बन्दामिणमं-सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगईगमणं समाहिमरणं जिण गुण सम्पत्ति होउमज्झं ।

शान्ति मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषकल्मषाय दिव्यतेजो-मूर्तये श्री शांतिनाथाय शांतिकराय सर्व विघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्यु विनाशनाय सर्वपरकृत क्षुद्रोपद्रव विनाशनाय सर्वक्षामडामर विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आउसा [1]अमुकस्य·······सर्व शांति कुरु कुरु स्वाहा——

इत्यनेनमन्त्रेण गन्धोदकादिकं त्रिवारं मन्त्रयित्वा शिर-सिनिक्षिपेत् । शांतिमन्त्रेण गन्धोदकं त्रिपरिषिच्य मस्तकं वाम हस्तेन स्पृशेत् ।

१ यहां दीक्षा लेने वाले का नाम लेवे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावार्थ—इस शान्ति मन्त्र को बोलते हुए आचार्य तीन बार दीक्षक के मस्तक पर गन्धोदक डाले और बायें हाथ से दीक्षक के मस्तक को स्पर्श करे।

वर्द्धमान मन्त्र

ॐ नमो भयवदो बड्ढमाणस्स रिसहस्सचक्कं जलंतं गच्छई आयासं लोयाणं जये वा विवादे वा थंभणे वा रणंगणे वा रायंगणे वा मोहेण वा सव्वजीव सत्ताणं अपराजिदो भवदु रक्ख रक्ख स्वाहा।

इति वर्द्धमान मन्त्र

ततोदध्यक्षत गोमय दूर्वांकुरान् मस्तके वर्धमान मन्त्रेण निक्षिपेत्—

भावार्थ—इस वर्धमान मन्त्र को बोल कर आचार्य दधि अक्षत गोमयभस्म दूब अंकुर दीक्षक के मस्तक पर डाले।

मन्त्र

ॐ णमो अरहंताणं रत्नत्रयपवित्रिकृतोत्तमांगाय ज्योतिर्मयाय मतिश्रुतावधिमनःपर्यय केवल ज्ञानाय असि आ उसा स्वाहा।

इदं मन्त्रं पठित्वा भस्म पात्रं गृहीत्वाकर्पूर मिश्रितं भस्म शिरसि निक्षिप्य निम्नमन्त्रं उच्चार्य प्रथमं केशोत्पाटनं कुर्यात्

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावार्थ—इस ऊपर के मन्त्र को पढ़कर भस्म पात्र हाथ में लेते हुए आचार्य कपूर मिली भस्म दीक्षक के सिर पर डाल कर निम्न मन्त्र बोल कर मस्तक के पहले स्थान का केश लुन्च करे।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा स्वाहा

पुनः ॐ ह्रां अर्हद्भ्यो नमः

ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यो नमः

ॐ ह्रूं पाठकेभ्यो नमः

ॐ ह्रः सर्व साधुभ्यो नमः

इत्युच्चरन् गुरुः स्वहस्तेन पंचवारान् केशान् उत्पाटयेत्।

इस प्रकार बोलते हुए अपने हाथों से पाँचवार दीक्षक के केशों का उत्पाटन करके निम्न पाठ पढ़े।

वृहद्दीक्षायां लोचनिष्ठापनक्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल कर्म क्षयार्थं भावपूजाबन्दनास्तवसमेतं श्रीमत्सिद्धभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहं ॥ इति ९ बार महामन्त्र जपे।

लघुसिद्ध भक्ति

इच्छामि भंते सिद्धिभत्ति काउस्सग्गोकओ तस्सा लोचेउं सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचारित्तजुत्ताणं अट्ठविहकम्म विप्पमुक्काणं अट्ठगुण संपण्णाणं उड्ढलोय मच्छयमि पयट्ठियाणं तव सिद्धाणं णय सिद्धाणं संजम सिद्धाणं अतीता-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

णागदवट्टमाण कालत्तय सिद्धाणं सव्वसिद्धाणं सयाणिच्च-कालं अंचेमि पूजेमि बन्दामि णमंस्सामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिनगुण सम्पत्ति होउ मज्झं ॥ इति ॥

ततः शीर्षं प्रक्षाल्य गुरु भक्ति दत्वावस्त्राभरण यज्ञो-पवीतादिकं परित्यज्य तत्रैवावस्थाय दीक्षां याचयेत् ॥

भावार्थ——दीक्षा लेने वाला सज्जन अपने सिर को धो कर गुरु भक्ति पढ़कर वस्त्राभूषण यज्ञोपवीतादिक का त्याग करके उसी अवस्था के लिए गुरु महाराज को हाथ जोड़कर दीक्षा की याचना (प्रार्थना) करे।

ततो गुरु शिरसि श्रीकारं लिखित्वा——

फिर गुरु महाराज दीक्षा लेने वाले सज्जन के सिर पर श्रीकार लिखकर निम्नलिखित मन्त्र का १०८ बार जाप्य देवे।

मन्त्र

ॐ ह्रीं अर्हं असि आ उसा ह्रीं स्वाहा ॥ १०८

ततो गुरुस्तस्यांजलौकेशर कर्पूर श्रीखंडेन श्रीकारं कुर्यात्——

भावार्थ——अर्थात् गुरु महाराज उस शिष्य की दोनों हाथों की अंजुली में केशर कपूर आदिक से बना हुआ श्रीखंड द्वारा श्रीकार लिखे फिर——श्रीकारस्यचतुर्दिक्षु——

रयणत्तयं च वन्दे चउवीसजिणं तहा वन्दे ।
पंचगुरूणं वन्दे चारणजुगलं तहा वन्दे ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इति पठन् अंकान् लिखेत् पूर्वे ३ दक्षिणे २४ पश्चिमे ५ उत्तरे २ लिखित्वा--

सम्यग्दर्शनायनमः सम्यग्ज्ञानाय नमः सम्यक्चारित्राय नमः।

इति पठन् तन्दुलैरञ्जालिं पूरयेत् तदुपरिनालिकेरं पूगाफलं च धृत्वा सिद्धचारित्त योगभक्तिं पठित्वा व्रतादिकं दद्यात्।

भावार्थ---श्री लिखकर उसके चारों तरफ ऊपर लिखी हुई गाथा बोलकर पूर्व में ३ दक्षिण में २४ पश्चिम में ५ उत्तर दिशा में २ अंकों को लिखकर सम्यग्दर्शनाय नमः इत्यादि बोलकर शिष्य की अंजुलि में चावल भरकर ऊपर नारियल, सुपारी धरकर समय हो तो पूरी सिद्ध चारित्त योगभक्ति पढ़कर व्रत देवे नहीं तो लघु भक्तियां पढ़े।

अथ श्रीसिद्धभक्तिः

सिद्धानुद्धूतकर्मप्रकृतिसमुदयान्साधितात्मस्वभावान्, वंदे सिद्धिप्रसिद्ध्यै तदनुपमगुणप्रग्रहाकृष्टितुष्टः। सिद्धिः स्वात्मोपलब्धिः प्रगुणगुणगणोच्छादिदोषापहारात्, योग्योपादानयुक्त्या दृषद इह यथा हेमभावोपलब्धिः ॥ १ ॥ नाभावः सिद्धिरिष्टा न निजगुणहतिस्तत्तपोभिर्न युक्तेः, अस्त्यात्मानादिवद्धः स्वकृतजफलभुक् तत्क्षयान्मोक्षभागी। ज्ञाता द्रष्टा स्वदेहप्रमितिरुपसमाहारविस्तारधर्मा, ध्रौव्योत्पत्तिव्ययात्मा स्वगुणयुत इतो नान्यथा साध्यसिद्धिः ॥ २ ॥ स त्वन्तर्बाह्यहेतुप्रभवविमलसद्दर्शनज्ञानचर्या—, संपद्धेतिप्रघातक्षतदुरित-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तया व्यञ्जिताचिन्त्य सारैः । कैवल्यज्ञानदृष्टिप्रवरसुख महावीर्यं सम्यक्त्वलब्धि-, ज्योतिर्वातायनास्थिरपरमगुणैरद्भुतैर्भासमानः ॥ ३ ॥

जानन्पश्यन्समस्तं सममनुपरतं संप्रतृप्यन्वितन्वन् ।
धुन्वन्ध्वान्तं नितान्तं निचितमनुपमं प्रीणयन्नीशभावम् ।
कुर्वन्सर्वं प्रजानामपरमभिभवन् ज्योतिरात्मानमात्मा ।
आत्मन्येवात्मनासौ क्षणमुपजनयन्सत्स्वयंभूः प्रवृत्तः ॥ ४ ॥
छिन्दन्शेषानशेषान्निगलवलकलींस्तैरनन्तस्वभावैः ।
सूक्ष्मत्वाग्र्यावगाहागुरुलघुकगुणैः क्षायिकैः शोभमानः ॥
अन्यैश्चान्यव्यपोहप्रवणविषयसंप्राप्तिलब्धिप्रभावै ।
रूर्ध्वं व्रज्या स्वभावात्समय मुपगतो धाम्नि संतिष्ठतेऽग्र्ये ॥५॥
अन्याकाराप्तिहेतुर्न च भवति परो येन तेनाल्पहीनः ।
प्रागात्मोपात्तदेहप्रतिकृति रुचिराकार एव ह्यमूर्तः ॥
क्षुत्तृष्णाश्वास कास ज्वर मरण जरानिष्टयोगप्रमेह ।
व्यापत्त्याद्युग्र दुःख प्रभवभवहतेः कोऽस्य सौख्यस्य माता ॥६॥
आत्मोपादानसिद्धं स्वयमतिशयवद्वीतबाधं विशालम् ।
वृद्धिह्रासव्यपेतं विषयविरहितं निःप्रतिद्वन्द भावम् ॥
अन्यद्रव्यानपेक्षं निरुपमममितं शास्वतं सर्व कालम् ।
उत्कृष्टानन्तसारं परमसुखमतस्तस्य सिद्धस्य जातम् ॥ ७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नार्थः क्षुत्तृट्विनाशाद्विविधरसयुतैरन्नपानैरशुच्या ।
नास्पृष्टेर्गन्धमाल्यैर्नहि मृदुशयनैर्ग्लानि निद्राद्यभावात् ॥
आतङ्कार्तेरभावे तदुपशमनसद्भेषजानर्थतावद् ।
दीपानर्थक्यवद्वा व्यपगत तिमिरे दृश्यमाने समस्ते ॥ ८ ॥

तादृक्संपत्समेता विविधनयतपः संयम ज्ञान दृष्टि ।
चर्या सिद्धाः समन्तात्प्रवितत यशसो विश्व देवाधिदेवाः ।
भूता भव्या भवन्तः सकल जगति ये स्तूयमाना विशिष्टैः ।
तान्सर्वान्नौम्यनंतान्निजिगमिषुररं तत्स्वरूपं त्रिसन्ध्यं ॥ ९ ॥

कृत्वा कायोत्सर्गं चतुरष्टदोषविरहितं सुपरिशुद्धम् ।
अतिभक्तिसंप्रयुक्तो यो वन्दते सलघु लभते परमसुखम् ॥

इच्छामि भंते सिद्धिभत्ति काउस्सग्गोकओ तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचारित्त जुत्ताणं अट्ठविहकम्म विप्पमुक्काणम् अट्ठगुण संपण्णाणं उड्ढलोय मचछयमि पयट्ठि याणं तव सिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं अतीताणा गदवट्टमाणकालत्तयसिद्धाणं सव्वसिद्धाणं सयाणिच्च कालं अंचेमि पूजेमि वन्दामि णमस्सामि दुक्खक्खओ कम्म क्खओ बोहिलाहो सुगइ गमणं समाहिमरणं जिण गुण सम्पत्ति होउमज्झम् ॥

इति सिद्धभक्तिः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ श्रीचारित्रभक्तिः

येनेन्द्रान्भुवनत्रयस्य विलसत्केयूरहारांगदान्, भास्वन्मौ-
मणिप्रभाप्रविसरोत्तुङ्गोत्तमाङ्गान्नतान्। स्वेषां पादपयो-
रु मुनयश्चक्रुः प्रकामं सदा, वंदे पञ्चतयं तमद्य निग-
ाचारमभ्यर्चितम् ॥ १ ॥ अर्थव्यंजनतद्द्वयाविकलता-
लोपधाप्रश्रयाः, स्वाचार्याद्यनपन्हवो बहुमतिश्चेत्यष्टधा
ाहृतम्। श्रीमज्ज्ञातिकुलेन्दुना भगवता तीर्थस्य कर्त्राऽ-
ा, ज्ञानाचारमहं त्रिधा प्रणिपताम्युद्धूतये कर्मणाम्
२ ॥ शंकादृष्टि-विमोहकांक्षणविधिव्यावृत्ति सन्नद्धतां,
त्सल्यं विचिकित्सनादुपरतिं, धर्मोपबृंहक्रियां। शक्त्या
ासनदीपनं हितपथाद्भ्रष्टस्य संस्थापनं, वंदे दर्शनगोचरं
रितं मूर्ध्ना नमन्नादरात् ॥ ३ ॥ एकान्ते शयनोपवे-
कृतिः संतापनं तानवम्, संख्यानिवृत्तिनिबन्धनामनशनं
वाणमर्द्धोदरम्। त्यागं चेन्द्रियदन्तिनो मदयतः,
ादो रसस्यानिशम्, षोढा वाह्यमहं स्तवे शिवगतिप्रा-
भ्युपायं तपः ॥ ४ ॥ स्वाध्यायः शुभकर्मणश्च्युतवतः
त्यवस्थापनम्, ध्यानं व्यापृतिरामयाविनि गुरौ वृद्धे
वाले यतौ। कायोत्सर्जनसत्क्रिया विनय इत्येवं तपः
विधं, वंदेऽभ्यंतरमन्तरंगबलवद्विद्वेषिविध्वंसनम् ॥ ५ ॥
यग्ज्ञानविलोचनस्य दधतः श्रद्धानमर्हन्मते, वीर्यस्या-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विनिगूहनेन तपसि स्वस्य प्रयत्नाद्यतेः ।। या वृत्तिस्तरण
णीव नौरबिवरा लघ्वी भवोदन्वतो, वीर्याचारमहं तमू
जितगुणं बंदे सतामर्चितम् ।। ६ ।। तिस्रः सत्तमगुप्तयस्त
नुमनोभाषानिमित्तोदयाः, पंचेर्यादिसमाश्रयाः समितय
पंचव्रतानीत्यपि । चारित्रोपहितं त्रयोदशतयं पूर्वं न दृ
परै-राचारं परमेष्ठिनो जिनपतेर्वीरं नमामो वयम् ।। ७
आचारं सह पंचभेदमुदितं तीर्थं वरं मंगलं, निर्ग्रंथान
सच्चरित्रमहतो बंदे समग्रान्यतीन् ।। आत्माधीनसुखो
यामनुपमां लक्ष्मीमविध्वंसिनीं, इच्छन्केवलदर्शनावग
नप्राज्यप्रकाशोज्वलाम् ।। ८ ।। अज्ञानाद्यदवीवृतं नि
मिनोऽवर्तिष्यहं चान्यथा, तस्मिन्नर्जितमस्यति प्रतिन
चैनो निराकुर्वंति ।। वृत्ते सप्ततयी निधिं सुतपसाम्
नयत्यद्भुतं, तन्मिथ्या गुरु दुष्कृतं भवतु मे स्वं निंदि
निंदितम् ।।९।। संसारव्यसनाहतिप्रचलिता नित्योदयप्र
र्थिनः, प्रत्यासन्नविमुक्तयः सुमतयः शांतैनसः प्राणिनः
मोक्षस्यैव कृतं विशालमतुलं सोपानमुच्चैस्तराम्, आ
हन्तु चरित्रमुत्तममिदं जैनेंद्रमोजस्विनः ।। १० ।। इच्छा
भंते चरित्रभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्स आलोचेउं स
ण्णाणजोयस्स सम्मत्ताहिट्ठियस्स सव्वपहाणस्स णिव्वा
णमग्गस्स कम्मणिज्जरफलस्स खमाहारस्स पंचमह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रण्णस्स तिगुत्तिगुत्तस्स पंचसमिदिजुत्तस्स णाणज्झा-
ण्णाहणस्स समया इव पवेसयस्स सम्मचारित्तस्स सया
च्चेमि, पूजेमि वंदामि णमंसामि, दुक्खक्खग्रो कम्म-
क्खग्रो बोहिलाहो सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुण-
संपत्ति होउ मज्झं।

इति चारित्रभक्तिः

अथ योग भक्तिः

...ति जरोरुरोग मरणातुर शोक सहस्रदीपिताः।
...हनरक पतन सन्त्रस्तधियः प्रतिबुद्ध चेतसः॥
...तमम्बुविन्दुचपलं तडिदभ्रसमा विभूतयः।
...लमिदं विचिन्त्य मुनयः प्रशमाय वनान्तमाश्रिताः।१।
...समिति गुप्ति संयुताः शमसुखमाधाय मनसिवीतमोहाः।
...ाध्ययनवशंगताः विशुद्धये कर्मणां तपश्चरन्ति॥
...कर किरणनिकर सन्तप्तशिलानिचयेषु निःस्पृहाः।
...टलावलिप्ततनवः शिथिलीकृत कर्मबन्धनाः॥२॥

...यदि समय कम हो तो यह पाठ बोले—
...यां लोचस्वीकारक्रियां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल कर्मक्षयार्थं भावपूजा-
...स्तवसमेतं श्रीमद्योगभक्तिकायोत्सर्गं करोम्यहं। इति ९ बार णमोकार मन्त्र
...करे। केशलुंच करते समय दोनों भक्ति बोले।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व्यपगतमदनदर्परतिदोष कषायविरक्त मत्सराः ।
गिरिशिखरेषु चण्डकिरणाभिमुखस्थितयो दिगम्बराः ॥३॥
सज्ज्ञानामृतपायिभिः क्षान्तिपयः सिंच्यमानपुण्यकायैः ।
धृतसन्तोषच्छत्रकैस्तापस्तीव्रोऽपि सह्यते मुनीन्द्रैः ॥४॥
शिखिगलकज्जलालिमलिनैर्विबुधाधिप चाप चित्रितैः ।
भीमरवैर्विसृष्टचण्डाशनि शीतलवायुवृष्टिभिः ।
गगन तलं विलोक्य जलदैः स्थगितं सहसा तपोधनाः ।
पुनरपितरुतलेषु विषमासु निशासु विशंकमासते ॥५॥
जलधाराशरताडिता न चलन्ति चरित्रतः सदा नृसिंहाः ।
संसार दुःख भीरवः परीषहारातिघातिनः प्रवीराः ॥६॥
अविरत बहलतुहिनकणवारिभिरंध्रिप पत्रपातनैरनवरत
मुक्तसीत्काररवैः परुषैरथानिलैः शोषितगात्रयष्टयः ॥
इह श्रमणा धृति कंबलावृताः शिशिरनिशाम् ।
तुषार विषमां गमयन्ति चतुःपथे स्थिताः ॥७॥
इति योग त्रय धारिणः सकलतपः शालिनः प्रवृद्धपुण्यकायाः
परमानन्दसुखैषिणः समाधिमग्र्यं दिशंतुनो भदन्ताः ॥८॥
गिह्मे गिरि सिहरत्थावरिसायाले रुक्खमूल रयणीसु ।
सिसिरे बाहिरसयणते साहू वन्दिमोणिच्चम् ॥
गिरिकन्दर दुर्गेषु ये वसन्ति दिगम्बराः ।
पाणिपात्रपुटाहारास्ते यान्ति परमां गतिम् ॥८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इच्छामि भन्ते योगभत्ति काउस्सग्गो कओ तस्स लोचेउं अड्ढाइज्जदीवदोसमुद्देसु पण्णरसकम्मभूमीसु आदावण रुक्खमूल अब्भोवासठाणमोण विरासणेक्कपास कुक्कुडासण चउछपक्खखवणादि योग जुत्ताणं सव्वसाहूणं बन्दामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ वोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ति होउमज्झं ।

इति योगभक्तिः

वदसमिदिंदिय रोधो लोचो आवासय मचेलमण्हाणं ।
खिदिसयणमदं तवणंठिदिभोयणमेयभत्तं च ॥१॥

पंच महाव्रत पंच समिति पंचेन्द्रियरोध लोचषडावश्यक क्रियादयोऽष्टाविंशति मूलगुणाः उत्तमक्षमामार्दवार्जवसत्यशौच संयमतपस्त्यागाकिञ्चन्य ब्रह्मचर्याणि दशलाक्षणिको धर्मः अष्टादश शील सहस्राणि चतुरशीतिलक्षगुणाः त्रयोदशविधं चारित्रं, द्वादशविधं तपश्चेति सकल सम्पूर्णं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुसाक्षिकं सम्यक्त्वपूर्वकं दृढ़व्रतं समारूढं ते मे भवतु ।

अर्थात्—यह उपरोक्त पाठ तीन बार पढ़कर शिष्य को व्रतों की व्याख्या समझाकर व्रत देवे और शांतिभक्ति का पाठ पढ़े ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ शान्तिभक्तिः

न स्नेहाच्छरणं प्रयान्ति भगवन्पादद्वयं ते प्रजाः, हेतुस्तत्र विचित्रदुःखनिचयः संसारघोरार्णवः। अत्यन्तस्फुरदुग्ररश्मिनिकरव्याकीर्णभूमण्डलो, ग्रैष्मः कारयतीन्दुपादसलिलच्छायानुरागं रविः ॥ १ ॥ क्रुद्धाशीर्विषदष्टदुर्जयविषज्वालावलीविक्रमो, विद्याभैषजमंत्रतोयहवनैर्याति प्रशांतिं यथा। तद्वत्ते चरणारुणांबुजयुगस्तोत्रोन्मुखानां नृणाम्, विघ्नाः कायविनायकाश्च सहसा शाम्यन्त्यहो विस्मयः ॥ २ ॥ संतप्तोत्तमकांचनक्षितिधरश्रीस्पर्द्धिगोरद्युते, पुंसां त्वच्चरणप्रमाणकरणात्पीडाः प्रयान्ति क्षयं। उद्यद्भास्करविस्फुरत्करशतव्याघातनिष्कासिताः। नानादेहिविलोचनद्युतिहरा शीघ्रं यथा शर्वरी ॥ ३ ॥ त्रैलोक्येश्वरभंगलब्धविजयादत्यंतरौद्रात्मकान्, नानाजन्मशतांतरेषु पुरतो जीवस्य संसारिणः। को वा प्रस्खलतीह केन विधिना कालोग्रदावानलान्न स्याच्चेत्तव पादपद्मयुगलस्तुत्यापगावारणम् ॥ ४ ॥ लोकालोकनिरन्तरप्रविततसानैकमूर्ते विभो ! नानारत्नपिनद्धदन्डरुचिरोश्वेतातपत्रत्रय। त्वत्पादद्वयपूतगीतरवतः शीघ्रं द्रवन्त्यामया, दर्पाध्मातमृगेंद्रभीमनिनदाद्वन्या यथा कुञ्जराः ॥ ५ ॥ दिव्यस्त्रीनयनाभिरामविपुलश्रीमेरुचूड़ामणे, भास्वद्बालदिवाकरद्युतिहरप्राणेष्टभामण्डल। अव्याबाधमचिन्त्यसारमतुलं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्यक्तोपमं शाश्वतं, सौख्यं त्वच्चरणारविंदयुगलस्तुत्यैव संप्राप्यते ॥ ६ ॥ यावन्नोदयते प्रभापरिकरः श्रीभास्करो भासयं स्तावद्धारयतीह पंकजवनं निद्रातिभारश्रमम्। यावत्वच्चरणद्वयस्य भगवन्न स्यात्प्रसादोदयस्तावज्जीवनिकाय एष वहति प्रायेण पापं महत् ॥७॥ शांतिं शांतिजिनेन्द्रशांतमनसस्त्वत्पादपद्माश्रयात्, संप्राप्ताः पृथिवीतलेषु बहवः शांत्यर्थिनः प्राणिनः। कारुण्यान्मम भाक्तिकस्य च विभो दृष्टिं प्रसन्नां कुरु, त्वत्पादद्वयदैवतस्य गदतः शांत्यष्टकं भक्तितः ॥ ८ ॥ शांतिजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं शीलगुणव्रतसंयमपात्रं। अष्टशतार्चितलक्षणगात्रं नौमि जिनोत्तममम्बुजनेत्रम् ॥ ९ ॥ पञ्चममीप्सितचक्रधराणां पूजितमिन्द्रनरेन्द्रगणैश्च। शांतिकरं गणशांतिमभीप्सुः षोडशतीर्थकरं प्रणमामि ॥ १० ॥ दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टिर्दुन्दुभिरासनयोजनघोषौ ॥ आतपत्रारणचामरयुग्मे यस्य विभाति च मंडलतेजः ॥ ११ ॥ तं जगदर्चितशान्तिजिनेन्द्रं शांतिकरं शिरसा प्रणमामि। सर्वगणाय तु यच्छतु शान्तिं मह्यमरं पठते परमां च ॥ १२ ॥ येऽभ्यर्चिता मुकुटकुंडलहाररत्नैः, शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुतपादपद्माः। ते मे जिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपाः, तीर्थंकराः सततशांतिकरा भवन्तु ॥ १३ ॥ सम्पूजकानां प्रतिपालकानां यतींद्रसामान्यतपोधनानाम्। देशस्य राष्ट्रस्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान् जिनेन्द्रः ॥१४॥ क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान्धार्मिको भूमिपालः । काले काले च सम्यग्वर्षतु मघवा व्याधयो यान्तु नाशम् । दुर्भिक्षं चौरमारिः क्षणमपि जगतां मास्म भूज्जीवलोके ॥ जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्यंप्रदायि ॥ १५ ॥ तद्द्रव्यमव्ययमुदेसु शुभः स देशः, संतन्य तां प्रतपतां सततं स कालः । भावः स नन्दतु सदा यदनुग्रहेण, रत्नत्रयं प्रतपतीह मुमुक्षुवर्गे ॥ १५ ॥ प्रध्वस्त घातिकर्माणः केवलज्ञानभास्कराः । कुर्वन्तु जगतां शान्ति वृषभाद्या जिनेश्वराः ॥ १६ ॥ इच्छामि भंते शान्तिभत्तिकाउस्सग्गो कश्रो तस्सालोचेउं पंचमहाकल्लाणसंपण्णाणं, श्रट्ठमहापाडिहेरसहियाणं, चउतीसातिसयविसेससंजुत्ताणं बत्तोसदेवेंदमणिमयमउडमत्थयमहियाणं, बलदेववासुदेवचक्कहररिसिमुणिजदिश्रणगारोवगूढाणं, थुइसयसहस्सणिलयाणं उसहाइवीरपच्छिममंगलमहापुरिसाणं णिच्चकालं श्रंचेमि, पूजेमि, वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खश्रो, कम्मक्खश्रो, बोहिलाहो सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ॥

इति शांतिभक्तिः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ आशीर्वाद श्लोक ॥

श्लोकः—धर्मः सर्व सुखाकरो हितकरो धर्मंबुधाश्चिन्वते ।
धर्मेणैव समाप्यते शिवसुखं धर्मायतस्मै नमः ॥
धर्मान्नास्त्यपरः सुहृद्भवभृतां धर्मस्य मूलं दया ।
धर्मेचित्तमहं दधे प्रतिदिनं हे धर्म ! मां पालय ॥

इति आशीः श्लोकं पठित्वा अंजलिस्थ तंडुलादिकं दात्रे प्रदेयं ।

अर्थात्—दीक्षा लेने वाला सज्जन अपने हाथ में रखे हुए तंडुल नारियल सुपारी वगैरह उपरोक्त आशीर्वादात्मक श्लोक बोलकर दातार को देवे ।

अथ षोडश संस्कारारोपणं

अयं सम्यग्दर्शन संस्कार इह मुनौ स्फुरतु ॥१॥
अयं सम्यग्ज्ञान संस्कार इह मुनौ स्फुरतु ॥२॥
अयं बाह्याभ्यन्तरतपः संस्कार इह मुनौ स्फुरतु ॥३॥
अयं चतुरंगवीर्यं संस्कार इह मुनौ स्फुरतु ॥४॥
अयं अष्ट मातृमंडल संस्कार इह मुनौ स्फुरतु ॥५॥
अयं शुद्ध्यष्टकोष्टं संस्कार इह मुनौ स्फुरतु ॥६॥
अयं अशेष परीषह जय संस्कार इह मुनौ स्फुरतु ॥७॥
अयं त्रियोगा संगमनिवृत्तिशीलता संस्कार इह मुनौ स्फुरतु
अयं त्रिकरणा संयमनिवृत्ति शीलता संस्कार इह मुनौ स्फुरतु
अयं दशासंयमनिवृत्ति शीलता संस्कार इह मुनौ स्फुरतु ११

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अयं चतुः संज्ञानिग्रह शीलता संस्कार इह मुनौ स्फुरतु ।१२
अयं पंचेन्द्रिय जय शीलता संस्कार इह मुनौ स्फुरतु ॥१३॥
अयं दशधर्मधारण शीलता संस्कार इह मुनौ स्फुरतु ॥१४॥
अयमष्टादश सहस्रशीलता संस्कार इह मुनौ स्फुरतु ॥१५॥
अयं चतुरशीति लक्षण संस्कार इह मुनौ स्फुरतु ॥१६॥

इति प्रत्येकमुच्चार्य शिरसि लवंग पुष्पाणि क्षिपेत् ।

अर्थात्—इन प्रत्येक मन्त्र को बोलते हुए आचार्य दीक्षक के मस्तक पर पुष्पादि क्षेपण करके संस्कार करे। फिर निम्न मन्त्र पढ़कर दीक्षक के मस्तक पर पुनः पुष्प डाले—

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ॐ परम हंसाय परमेष्ठिने हंस हं स हं ह्रां ह्रं ह्रौं ह्रीं ह्रैं ह्रः जिनाय नमः जिनं स्थापयामि संवौषट् ॥

अथ गुर्वावलि

[1]स्वस्तिश्रीवीर निर्वाण संवत्सर २४......मासानांमासोत्तमे..........मासे......पक्षे......तिथौ......वासरे मूलसंघे सरस्वति गच्छे सेनगणे श्रीकुन्दकुन्दाचार्य परम्परायां आचार्य शांतिसागर तत्शिष्य आचार्य वीरसागर जी तस्य शिष्य क्षेमसागर नामधेयः त्वं शिष्योऽसि ।

१ गुर्वावलि में नाम बदल भी सकते हैं जैसे वीरसागरजी की जगह दीक्षा देने वाले का नाम (क्षेम सागर) के स्थान में दीक्षा लेने वाले का नाम ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथोपकरण प्रदान

ॐ णमो अरहंताणं भो अन्तेवासिन् ? षड्जीवनिकाय रक्षणाय मार्दवादि गुणोपेतमिदंपिच्छोपकरणं गृहाण गृहाण इति पिच्छिकादान ।

शास्त्रदान

ॐ णमो अरहंताणं मति श्रुतावधिमनःपर्यय केवल ज्ञानाय द्वादशांग श्रुताय नमः भो अन्तेवासिन् ! इदं ज्ञानोपकरणं गृहाण गृहाण ।। इति शास्त्रदानं ।।

शौचोपकरणं (कमण्डलु)

ॐ णमो अरहंताणं रत्नत्रय पवित्रीकरणांगाय बाह्याभ्यन्तरमलशुद्धाय नमः भो अन्तेवासिन् ! इदं शौचोपकरणं गृहाण गृहाण ।

इति गुरु महाराज बांये हाथ से कमण्डल दान देवे ।

लघु समाधि भक्तिः

[1]इच्छामि भंते समाहिभत्तिकाउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं रयणत्तयपरूपवपरमप्पज्झाण लक्खणं समाहिभत्तीयेणिच्चकालं अंचेमि पूजेमि बन्दामि णमस्सामि दुक्खक्खओ,

१ समयानुकूल समाधिभक्ति पूरी पढ़ी जावे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिण गुण सम्पत्ति होउ मज्झं ।

ततो नवदीक्षितोमुनिर्गुरुभक्त्या गुरुं प्रणम्य अन्यान् मुनीन् प्रणम्योपविशति यावदव्रतारोपणं न भवति तावदन्ये मुनयः प्रतिवन्दनां न ददति ।

ततो दातृ प्रमुखा जना उत्तम फलानि अग्रे निधाय तस्मै नमोऽस्तु त्वेति प्रणामं कुर्वन्ति ।

भावार्थ—समाधि भक्ति पढ़ने के बाद नवदीक्षित मुनि गुरु भक्ति से गुरु देव को प्रणाम (नमस्कार) करके अन्य मुनियों को भी नमस्कार करके बैठ जावे, जब तक व्रतों का आरोपण नहीं होवे तब तक दूसरे मुनि वृन्द के प्रति वन्दना नहीं करे। इसके बाद दाता प्रधान मनुष्य उत्तम फलों को आगे धरकर उन नव दीक्षित मुनिराज को नमोस्तु करे।

ततस्तत्पक्षेद्वितीयपक्षे वा सुमुहूर्ते व्रतारोपणं कुर्यात्, तदा रत्न-त्रय पूजां विधाय पाक्षिक प्रतिक्रमणपाठः पठनीयः। तत्र पाक्षिक नियम ग्रहण समयात् पूर्वं यदा वदसमिदीत्यादि पठ्यते तदा पूर्ववत् व्रतादि दद्यात् । नियम ग्रहण समये यथायोग्यं एकं तपो दद्यात् । (पल्यविधानादिकं) दातृ प्रभृति श्रावकेभ्योऽपि एकं एकं तपोदद्यात् । ततोऽन्ये मुनयः प्रतिवंदनां ददति ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुखशुद्धि मुक्तकरणे विधिः

त्रयोदशसु पंचसु त्रिषुवा कच्चोलिकासु लवंग एला पूगी फलादिकं निक्षिप्यताः कचचोलिकाः गुरोरग्रे स्थापयेत् । मुख शुद्धि मुक्तकरण पाठक्रियायामित्थाद्युच्चार्य सिद्धयोग-आचार्य-शान्ति समाधिभक्ति विधाय ततः पश्चान्मुखशुद्धि गृह्णीयात् ।

क्षुल्लक दीक्षा विधिः

अथ लघुदीक्षायां सिद्ध-योगी-शांति-समाधिभक्तोः पठेत् । "ओं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं नमः" अनेन मंत्रेण जाप्यं वार २१ अथवा १०८ दीयते ।

अन्यच्च विस्तारेण लघुदीक्षाविधिः

अथ लघुदीक्षानेतृजनः पुरुषः स्त्री वा दाता संस्थापयति । यथायोग्यमलंकृतं कृत्वा चैत्यालये समानयेत्, देवं वन्दित्वा सर्वैं सह क्षमां कृत्वा गुरोरग्रे च दीक्षां याचयित्वा तदाज्ञया सौभाग्यवतीस्त्री विहितस्वस्तिकोपरि श्वेतवस्त्रं प्रच्छाद्य तत्र पूर्वाभिमुखः पर्यंकासनो गुरुश्चोत्तराभिमुखः संघाष्टं संघं पृच्छ्य च परिपृच्छय लोचं.....

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये शांतिनाथाय शांतिकराय सर्वविघ्नप्रणाशकाय सर्वरोगापमृत्युविनाशनाय सर्वं परकृत क्षुद्रोपद्रव विनाशनाय सर्वक्षाम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

डामर विनाशनाय ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अमुकस्य सर्वशांतिं कुरु कुरु स्वाहा अनेन मन्त्रेण गंधोदकादिकं त्रिवारं शिरसि निक्षिपेत्। शांतिमंत्रेण गंधोदकं त्रि० परिषिच्य वामहस्तेन स्पृशेत्। ततो दध्यक्षतगोमयतद्रूस्म दूर्वांकुरान् मस्तके वर्धमानमंत्रेण निक्षिपेत् "ॐ णमो भयवदो वड्ढयमाणस्सेत्यादि वर्धमानमंत्रः पूर्वं कथितः। लोचादिविधिं महाव्रतंविधाय सिद्धभक्ति योगभक्ति पठित्वा व्रतं दद्यात्—

दंसणवयेत्यादि वारत्रयं पठित्वा व्याख्यां विधाय च गुर्वावलीं पठेत्। ततः संयमाद्युपकरणं दद्यात्।

ओं णमो अरहंताणं भो क्षुल्लक ! (आर्य-ऐलक) क्षुल्लके वा षट्जीवनिकायरक्षणाय मार्दवादिगुणोपेतमिदं पिच्छोपकरणं गृहाण गृहाण इत्यादि पूर्ववत्कमण्डलु ज्ञानोपकरणादिकं च मन्त्र पठित्वा दद्यात्।

इति लघुदीक्षा विधानं समाप्तम्

अथोपाध्यायदीक्षादानविधिः

सु मूहूर्ते दाता गणधरवलयार्चनं द्वादशांगश्रुतार्चनं च कारयेत्। ततः श्रीखण्डादिना छटान् दत्वा तन्दुलैः स्वस्तिकं कृत्वा तदुपरि पट्टकं संस्थाप्य तत्र पूर्वाभिमुखं तमुपाध्यायपद-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

योग्यं मुनिमासयेत् अथोपाध्यायपदस्थापनक्रियायां पूर्वाचार्ये-त्याद्युच्चार्य सिद्ध-श्रुतभक्ति पठेत्। तत आवहनादिमंत्रानुच्चार्य शिरसि लवंग पुष्पाक्षतं क्षिपेत् तद्यथा-ओं ह्रौं णमो उवज्झायाणं उपाध्यायपरमेष्ठिन्! अत्र एहि एहि संवौषट् आह्वाननं स्थापनं सन्निधिकरणं। ततश्च "ओं ह्रौं णमो उवज्झायाणं उपाध्यायपरमेष्ठिने नमः" इमं मंत्रं सहेंदुना चन्दनेन शिरसि न्यसेत्। ततश्च शान्तिसमाधिभक्ती पठेत्। ततः स उपाध्यायो गुरूभक्तिं दत्वा प्रणम्य दात्रे आशिषं दद्यादिति।

इत्युपाध्यायपदस्थापनविधिः

अथाचार्यपदस्थापनविधिः

सुमुहूर्ते दाता शांतिकं गणधरवलयार्चनं च यथाशक्ति कारयेत्। ततः श्रीखंडादिना छटादिकं कृत्वा आचार्य-पदयोग्यं मुनिमासयेत्। आचार्यपदप्रतिष्ठापन क्रियायां इत्या-द्युच्चार्य सिद्धाऽचार्यभक्तिं पठेत्। "ओं ह्रूं परमसुरभि-द्रव्यसन्दर्भपरिमलगर्भतीर्थाम्बुसम्पूर्णसुवर्णकलशपंचकतोयेन परिषेचयामीति स्वाहा" इति पठित्वा कलशपंचकतोयेन पादौपरिसेचयेत् ततः पंडिताचार्यो "निर्वेद सौष्ठी इत्यादि महर्षिस्तवनं पठनपादौ समंतात्परामृश्य गुणारोपणं कुर्यात्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ततश्च ओं ह्रूं णमो आइरियाणं धर्माचार्याधिपतये नमः" अनेन मंत्रेण सहेन्दुना चन्दनेन पादयोर्द्वयोस्तिलकं दद्यात्। ततः शान्तिसमाधिभक्तिं कृत्वा गुरुभक्त्या गुरुं-प्रणम्योपविशति। तत उपासकास्तस्य पादयोरष्टतयिमिष्टिं कुर्वन्ति। यतयश्च गुरुभक्तिं दत्वा प्रणमन्ति। स उपासकेभ्य आशीर्वादं दद्यात्।

इत्याचार्यपदद्दानविधिः

ओं ह्रां ह्रीं श्रीं अर्हं हं सः आचार्यायनमः आचार्यवचनमंत्रः अन्यच्च—

ओं ह्रीं श्रीं अर्हं हं सः आचार्याय नमः आचार्यमंत्रः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi